हाल लिख सके जिसका कुछ बयान बाबर, हुमायूं, अकबर और जहांगीर जैसे शाहनशाहोंकी तवारीखोंमें नहीं है। खानखानाके दादे परदादे तो दूर रहे उनके बाप बैरामखांका नाम भी अकबरनामे जैसी बड़ी तवारीखमें सन ८४१ स० १५८१—८२ से पहले नहीं मिलता।

अकबरनामेके पहले खण्डमें जो तवारीख हुमायूं बादशाहकी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल चापानेरकी चढाईमें आया है। इसके पेश्तर उनका कुछ हाल नहीं लिखा है।

हम खानखानाके खानदान और उसके पुराने हालकी तवारीख "रोजेतुलसफा" और "हबीबउलसियर"से शुरू करेंगे, उनके बाप दादोंके नाम और वृतांत "तुजुकबाबरी" और "मुआसिरउलउमरा"से लिखेंगे, फिर अकबरनामे और तुजकजहांगीरीसे कुल हाल इन दोनों बाप बेटोंका खींचकर इस सांचेमें ढालेंगे तब कहीं सांगोपांग मूर्ति इनके जीवन चरित्रकी तय्यार होगी।

२८

खानखानानामा।

पहला भाग।

खानखानां बैरामखां।

नव्वाब मिर्ज़ा अबदुलरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहले उनके बाप बैरामखां खानखानाका हाल लिखना ज़रूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताब कुरसीनामे और समयका पता दिया जाय। फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे वसीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिससे पढ़नेवालोंको कोई शक न रहे। इसलिये हम पहले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं, फिर खानखानाके लफज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे।

खानदान।

मआसिर उल उमरामें खानखानाकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराक़ूयलू लिखा है। इससे जाना जाता है कि खानखाना असलमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराक़ूयलू था। तुर्कमानके माने हैं तुर्कों की मानिन्द, क्योंकि मानके माने फारसी ज़बानमें मानिन्द है जैसे इस ज़मानेमें हिन्दुस्थानके जन्मे हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

जन्मे हुए तुर्कों को तुर्कमान कहते थे अर्थात् जो तुर्क(१) अपने देश तुर्किस्तान(२)से आकर कबीलों सहित ईरानमें बस गये थे और वहां उनकी जो औलाद हुई थी वह तुर्कमान कहलायी।

फिर तुर्कमानोंकी नस्ल (सन्तति) बढ़नेसे उनमें कई खानदान हो गये, जिनके नाम लिखनेकी ज़रूरत नहीं, क्योंकि यह तुर्कमानोंकी तवारीख नहीं है, केवल उनकी १ शाखा कराकूयनलू २ नम्बरकी आदमियोंकी कुछ हकीकत है।

"कराकूयनलू"के मानी काली बकरीवालेके हैं। ये लोग पहले काली बकरियां रखा करते थे और इनके भाई जो सफेद बकरियां रखते थे वे आककूयलू कहलाते थे। तुरकी बोलीमें कराके मानी काले और अककेके सफेद तथा कूयके बकरी और लूके वाले हैं।

ये लोग आजरबायजानमें रहते थे जो ईरानका १ सूबा रूम और रूसकी सरहदसे मिला हुआ है जिसको अब आरमीनिया कहते हैं। जब वहां इलकानी जातिके बादशाहोंका राज्य हुआ तो सुलतान हुसैन इलकानीने सन् ७७७ सं० १४३२ में तुर्कमानों पर चढ़ाई करके वे किले और शहर छुड़ा लिये जो उनके सरदारों बैरामख्वाजा और करामुहम्मदने दबा लिये थे और हर साल

(१) तुर्क बहुत पुरानी जाति है। मुसलमान तुर्कों के मूल पुरुष तुरकको नूह पैगम्बरका पोता बताया जाता है और संस्कृत रूप तुर्क शब्दका तुरुष्क है। हिन्दू ग्रन्थोंमें तुर्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशज माने जाते हैं—तुर्ककी छठी पीढ़ीमें मुगलखां हुआ जिसकी सन्तान मुगल कहलायी। मुगलखांकी बहुतसी पीढ़ियोंके पीछे तैमूरताश हुआ। उसकी १२वीं पीढ़ीमें बरतान बहादुर और काचूली बहादुर दोभाई हुए। बरतानका पोता चंगेजखां था और काचूलीकी नवीं पीढ़ीमें अमीर तैमूर हुआ। इन दोनोंकी औलादमें बड़े बड़े बादशाह ईरान, तूरान और हिन्दुस्थानमें हुए हैं।

(२) मध्य एशिया—तूरान।

२०००० बकरियां देनेका कर भी उनसे ठहरा लिया था। सुलतान हुसैनके बेटे सुलतान अहमदजलायरने करामुहम्मदके ५०००
तुर्कमानोंकी मददसे अपने भाई शेखअलीको भगाकर बगदाद राजधानीमें अमल कर लिया।

फिर अमीरतैमूरने सन् ७८५के शव्वाल महीने भादों कुआर संवत १४५० में बगदाद पर चढ़ाई करके सुलतान अहमदको भगा दिया जिसने सन् ७८७ यानी संवत १४५१—५२में अमीरतैमूरका तुरानमें होना सुनकर बगदाद फिर ले लिया, मगर जब सन ८०२ यानी संवत १४५६—५७ में अमीर तैमूर फिर ईरान आया तब सुलतान अहमद करायूसुफ तुर्कमानको अपनी मदद पर लाया, तब भी फिर ये दोनोंही तैमूरके डरसे रूमको भाग गये और जब तैमूरने रूम भी फतह कर लिया तब ये मिश्रदेशमें चले गये और सन ८०७ यानी संवत १४६१ में तैमूरके मरनेकी खबर सुनकर ईराकको लौटे। मिश्रमें यह बात ठहरी थी कि बगदाद(१)को तो सुलतान अहमद ले ले और तबरेज(२)मेंजो आजरबायजानकी राजधानी है उस पर करायूसुफ अमल करे। सो इसके मुवाफिक दोनोंने दोनों मुल्क तैमूरके हाकिमोंसे छीन लिये, मगर सन ८१३ यानी संवत १४६७में सुलतान अहमदने अपने वचनसे फिरकर तबरेज पर चढ़ाई की तो करायूसुफने लड़ाईमें उसको मारकर बगदाद भी ले लिया। इस वक्तसे कराकूयनलु तुर्कमानोंमें बादशाही आयी और करायूसुफ इस घरानेका पहला बादशाह हुआ।

(१) इराक अरबके सूबेका सदर मुकाम जो अब सुलतान रूमकी अमल्दारीमें है और ईराक अरब ईरान राज्यके उस सूबेका नाम है जिसकी सीमा अरब देशसे मिलती है।

(२) तबरेज अब शाह ईरानके राज्यमें है। प्रोफेसर वेमबरीने सन् १८६१ ई०में जब उसे देखा था तब उसे खूब आबाद पाया था। इस प्रोफेसरका सफरनामा उर्दूमें तर्जुमा होकर तो छपा है, पर हिन्दीमें मालूम नहीं।

तैमूरके बेटे पोते उससे और उसके खानदानोंसे बराबर लड़ते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सल्तनत ६५ वर्ष तक बढ़ती चली गयी और सन ८७३ यानी संवत १५२५में "आककूयन्लू" घरानेके अमीर, हसन बेगके हाथसे खतम हुई।

काराकूयन्लूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरबेगको करायूसुफने हमदान, देनूर, और कुर्दिस्तानके इलाके जागीरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी-अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे।

यह अलीशकरबेगही खानखानाका मूल पुरुष था। इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढ़ियां नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा।

नं०	मुगल	नं०	काराकूयन्लू	नं०	बहारलू
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरबेग
२	मीरांशाह	२	करासिकंदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारबेग
४	सुलतानअबूसईद	४	जहांशाह नं०१का बेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखां
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखां
७	हुमायूं				
८	अकबर				
९	जहांगीर				

मीरांशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था। वह सन ८१० यानी संवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया। जब करायूसुफके बेटे जहांशाहको सन ८७२ यानी संवत १५२४में हसनबेग आककूयनलूने लड़ाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूसईदको अपनी मदद पर बुलाया। हसनबेगने उसको भी धोखा दिया और

(१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं।

उसने गफलतमें हमला करके १६ रज्जब सन ८७३ यानी फागुन बदी ३ संवत १५२५ में उसे पकड़ लिया और मरवा डाला। हुसनअली इस तरह अपने दुश्मनोंका जोर देखकर आत्मघात करके मरगया और अलीशकरके बेटे जो तुर्कमानोंके चार पांच हजार घरोंसे सुलतान अबूसईदके नौकर होगये थे वे उसके पकड़े जानेके पीछे तूरानमें आ गये और सुलतान अबूसईदके बेटे महम्मद मिरजा(१) ने उनकी बहन बेगा बेगमसे शादी की जिससे एक लड़का बायसङ्गर मिरजा और ३ लड़कियां पैदा हुईं। इस प्रसंगसे बहारल जातिका मुगल बादशाहोंसे पूरा संबंध हो गया और वे उनके निज अमीरोंमें मिलकर रहने लगे।

पीरअली।

अलीशकरबेगके बेटोंमेंसे पीरअली कुछ बहादुर और हिम्मत वाला था। वह पहले तो हिसारशादमां(२) में महमूद मिरजाके पास रहा फिर फारस(३) देशमें चला गया जहां [illegible] पकड़ अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके हाकिमसे लड़ा, मगर हारकर खुरासानमें भाग आया जो उस वक्त सुलतानहुसैन(४) मिरजाके

---

(१) महमूद मिरजा उमरशेखका बड़ा भाई और तूरानका बादशाह था तथा उमरशेख फरगानेका जो १ जिला तूरानका है वह अब रूसके अमलमें है।

(२) हिसारशादमां १ जिला तूरानका है जहां अब अमीर बुखाराकी अमलदारी है।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका सदर मुकाम है।

(४) सुलतानहुसैन मिरजा मीरानशाहके बड़े भाई उमरशेख मिरजा की चौथी पीढ़ीमें था और सन ८७३ संवत १५२५ में खुरासानका बादशाह हुआ था। तवारीख रोजतुस्सफा इसके राज्यमें बनी है।

नीचे था गया था। मिरजाके अमीरोंने पीरअलीको और और उद्योगो देखकर मार डाला।

यारबेग।

पीरअलीका बेटा यारबेग इरानमें रहता था। जब यह मुल्क इसनबेग आककुयलू के पोतोंसे सन ८०६ यानी संवत १५५७ में शाहइसमाइल सफवी(५)ने छीनकर वहां अपना राज्य जमाया तब यारअली इरान छोडकर बदखशां(६)में चला आया और यहासे कुदुज(७)में जाकर अमीर खुसरो शाहके पास रहने लगा। जब मुहम्मदखांशैबानी(८) उजबक(९)ने तूरानका मुल्क अमीरतैमूरके पोतोंसे छीन लिया और बाबर बादशाह भी फरगाने(१०)में रहना मुशकिल देखकर सन ९१० यानी संवत

(५) शाह इसमाइल कौमका सैयद और शेख सफीकी औलादमें था। इसलिये सफवी कहलाता था। तवारीख हयौवुलसियर इसके राजमें सन ९२९ संवत १५७९।८० में बनी है।

(६) बदखशां १ जिला तूरानका है जो अब अमीर काबुलके कबजेमें है।

(७) कुदुज बदखशांका १ शहर है।

(८) मुहम्मदखां शैबानी चंगेजखांके पोते और जूजीखांके बेटे शैबानकी औलादमें था। इसलिये शैबानी कहलाता था।

(९) उजबकखां जूजीखांसे ७ वीं पीढीमें मगूलिस्तान यानी मंगोलियाका बादशाह था। उसकी औलादका नाम उजबक हुआ। उसके बहुत बढ जानेसे जूजीखांकी बहुतसी औलाद भी उजबक कहलाने लगी थी। जैसे शैबानी वगैरह।

(१०) फरगाना भी १ जिला तूरानका काशगर समरकंद बदखशांके बीचमें था और १ हद उसकी मंगोलियासे मिली हुई थी। अब मंगोलिया और काशगर चीनके समरकंद फरगाना और बुखारा रूसके तथा बलख बदखशां अमीर काबुलके तावेमें हैं। चंगेजखां और अमीर तैमूरकी औलादके पास अब कोई मुल्क नहीं है।

१५६१में बदख्शामें आये तो खुसरोशाहने (जो १ बागी अमीर उनके दादा सुलतान अबूसईदका था और सुलतानके पीछे तूरानमें उनके बेटोंकी आपाधापीसे मैदान खाली पाकर बदख्शाका मालिक बन बैठा था) बदख्शाका सूबा उनको सौंप दिया तब यार बेग भी अपने बेटे सैफअली समेत बाबर बादशाहका नौकर हो गया।

सैफअली।

यह बाबर बादशाहका नौकर होकर बदख्शामें रहा। वहां उसके घरमें एक लड़का पैदा (१) हुआ जिसका नाम बैरमबेग रखा यही पीछे भाग्यबलसे बैरामखां खानखानां कहलाया।

बैरमबेग तथा बैरामखां।

बैरमबेगने बदख्शासे बलखमें जाकर विद्या पढी और १६ वर्षकी अवस्थामें हुमायू(२) बादशाहकी खिदमतमें पहुंचकर नौकरी की जिसमें बढते बढते मुसाहबी और अमीरीके दरजे तक तरक्की पायी।

यह सब अहवाल यहां तक तवारीख रोजेतुलसफा हबीबुल सियर, तुजुकबबर, और मुआसिरुलउमरासे लिखा है। अब अकबरनामेसे लिखेंगे।

अकबरनामेमें इनका नाम कहीं बैरामखां, कहीं बैरामबेग और कहीं खानखाना लिखा है। उससे यह भी नहीं मालूम होता कि इनको खानखानाका खिताब कब मिला। खाका खिताब तो ईरानके बादशाहने सवत १६ १ में दिया था जबकि ये

(१) पदा होनेका साल सवत किसी तवारीखमें नहीं मिला और न हुमायू बादशाहके पास आने और नौकर होनेका, पर आगे एक नोट उनकी अवस्था पर लिखा गया है। उससे कुछ अनुमान उनके जन्म कालका हो सकता है।

(२) उस समय हुमायू तख्त पर नहीं बैठे थे, उनके बाप बाबर बादशाह विद्यमान थे ऐसा जाना जाता है।

हुमायू बादशाहके साथ वहां गये थे। खानखानाका खिताब हुमायू बादशाहने ईरानसे आकर कंधार काबुल या हिन्दुस्थान लेनेके पीछे संवत १६०२ से संवत १६१२ तक किसी वर्षमें दिया होगा, ऐसा जाना जाता है। अकबरनामा बैरामखांके बहुत पीछे बना है। बैरामखां तो संवत १६१८मेंही मर गये थे अबुलफज्ल जो अकबरनामेका रचयिता है संवत १६३१के लगभग बादशाही नोकर हुआ था जिसके १८ वर्ष पीछे ७ उर्दी बहिश्त सन४१ इलाही २१ शाबान सन १००४ बैशाख वदी १४ संवत १६५३ को उसने अकबरनामेका दूसरा दफतर खतम किया था। इस समयसे उसने बैरामबेगको उन वर्षोंमें भी बैरा मखां और खानखानां लिख दिया है कि जिनमें ये खिताब उनको मिले भी नहीं थे, पर ये उस समयमें जब अकबरनामा लिखा गया है खानखानांके नामसे प्रसिद्ध हो चुके थे। इसलिये अबुल फज्लसे यथार्थ समयमें यथार्थ नाम लिखनेका यथार्थ प्रबन्ध न हो सका।

बेग,खान, और खानखानाका अर्थ।

तुरकी भाषामें बेगके माने सरदार और खानके माने बाद शाहके हैं। तुर्क और मुगल बादशाह सब खान कहलाते थे। सरदा रोंको बे और बेग कहते थे ऐसेही बादशाहों और सरदारोंकी औरतें खानम और बेगम कहलाती थीं। बाबरने तो अपने परदादा तैमूरको भी तमूर बेगही लिखा है।

तैमूर और उसके बाप दादे काचूली बहादुर तक खान नहीं कहलाते थे क्योंकि वे चंगेजखांके बाप दादोंके सेनापति थे और चंगेजखांके पीछे तक उसके बेटे चगताईखांकी औलादके भी रहे थे।

तैमूर अपने खानदानमें पहला बादशाह हुआ, पर उसके बेटे पोते बाबर तक बादशाह नहीं कहलाते थे, वे मिरजा(१) कहलाते

(१) मिरजा असलमें अमीरजा शब्द है। इसका अर्थ है अमीरका

थे। बाबरने अपनेको बादशाह कहलाना शुरू किया। तबसे बादशाहका खिताब उनकी औलादमें भी जारी हुआ और अमीरोंको खानके खिताब मिलने लगे। सबसे बड़े अमीरको खानखाना का खिताब मिलता था, जिसका अर्थ है सब खानोंका खान। मुगलोंकी बादशाहीमें पहला खानखाना दिलावरखां लोदी था। इसका बाप दौलतखां लोदी दिल्लीके सुलतान सिकंदर लोदीकी तरफसे पंजाबका सूबेदार था। मगर सिकंदरके मरनेके पीछे उसने बाबर बादशाहसे जब वे काबुलमें थे मेल करके उनका अमल पंजाबमें करा दिया था। इस खैरख्वाहीसे बाबर बादशाहने उसके मरने पर उसके बेटे दिलावरखांको पंजाबका सूबा और खानखानाका खिताब दिया था। दूसरे खानखाना बैरामखां तीसरे, मुनअमखां और चौथे अबदुल रहीमखां (२) हुए।

बैरामखां अकबरनामेमें।

हुमायूं बादशाहका समय।

अकबरनामेके पहले दफ्तरमें (खंडमें) जो हुमायूं बादशाहकी तवारीख लिखी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल गुजरातकी चढ़ाईमें आता है, इसके पूर्व नहीं आता जिससे ठीक समय उसके बादशाहके पास आने और नौकर होनेका मालूम हो।

बेटा। तैमूरका खिताब अमीर था जिससे उसके बेटे अमीरजा, मीरजा और मिरजा कहलाते थे। जब बाबरने बादशाहका खिताब अपने लिये तजवीज किया तब दो पीढ़ी पीछे अकबरके समयमें उनके बेटे शाहजादे, शाह और सुलतान कहलाने लगे और मिरजाका खिताब बड़े बड़े अमीरोंके लिये छोड़ दिया गया। खानखाना अबदुल रहीमखां भी बहुत वर्षों तक मिरजा और मिरजाखां कहलाते थे।

(२) इनके पीछे पांचवें खानखाना जहांगीर और शाहजहांके राजमें महाबतखां हुए। इस तरह औरंगजेबके बेटे शाहआलम बहादुरशाह तक कई खानखाना हुए। आखिरी खानखानाका नाम भी मुनअमखां था जो सन ११२३ संवत १७६८ में मरे थे।

और इनका यही कारण है कि ये पहले साधारण अवस्थामें थे और कोई बड़ा काम उनसे नहीं हुआ था कि जिससे उनका नाम लिखा जाता।

• बाबर बादशाहकी तवारीखमें भी असीमककरके पीछेका कुछ हाल नहीं है।

बाबरका हाल हम सन ९१० यानी संवत १५६१ तक लिख आये हैं। फिर उन्होंने इसी सालमें काबुल, सन ९१३ संवत १५६४ में कंधार और सन ९३२ यानी संवत १५८२।८३में हिन्दुस्थान फतह किया। सन ९३७ संवत १५८७।८८में उनके गुजर जाने पर हुमायूँ बादशाह तख्त पर बैठे। सन ९४१ संवत १५९१। ९२में गुजरात जीतनेको गये। सन ९४२ संवत १५९२।९३में वहाके बादशाह सुलतान बहादुरको(१) भगाकर किले चापाने रको ४ महीने तक घेरे रहे। निदान एक दिन किलेके आसपास फिरते फिरते एक जगह ६०।७० गज ऊंची भीत देखकर एक एक गजकी छेटीसे उसमें लोहेकी खूटिया गड़वायी और अपने सिपा हियोंको उन परसे ऊपर चढ़नेका हुक्म दिया। जब ३९ जवान चढ़ चुके तब बादशाह चढ़ने लगे। बैरामखाने अर्ज की कि हज रत जरा ठहरें। जब वे लोग रास्तेसे चले जावें तब पधारें। बैरा-मखा यह कहकर आगे हो गये,बादशाह पीछे चढ़े। इस तरहसे ३०० जवानोंने कोट पर चढ़कर वह मजबूत किला फतह कर लिया।

जब बादशाह गुजारत फतह करके आगरेमें आये तब बिहार और बंगालसे शेरखां पठानके उन दोनों सूबोंमें अमल कर लेनेकी

(१) गुजरातका सूबेदार सुलतान मुहम्मद तुगलकके समयमें जफरखा था। वह सुलतानके पीछे दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर खुदमुख्तार हो गया था। यह सुलतान बहादुर उसीके उत्तराधिकारियोंमेंसे था। गुजरातके बादशाह सन ७९३से सन ९८० संवत १४४७ से १६२९ तक कायम थे। फिर अकबर बाद शाहने गुजरातको दिल्लीमें मिला लिया।

खबर पायी और कुछ दिनों पीछे बंगालका बादशाह नसीबशाह (१) भी शेरखांसे हारकर आगरेमें आया।

शेरखां अर्थात् शेरशाहका जीवनचरित्र हम छपा चुके हैं। यहां अकबरनामेसे कुछ हाल उसका लिखते हैं। शेरखांका असली नाम फरीद, बापका हसन और दादाका इब्राहीम था। इब्राहीम जिले मेवात परगने नारनोल गांव शिमले-में रहता था और घोड़ोंकी सौदागरी करता था। हसन सौदागरी छोड़कर सिपाही बना और बहुत मुद्दत तक रायसाल शेखावतका नौकर रहा जो आमेरके राज्यका एक बड़ा जागीरदार था। फिर सहसराम जिले बिहारमें जाकर सुलतान सिकंदर लोदीके अमीर नसीरखां लोहानीका नौकर हुआ। उस वक्त फरीद अपने बापसे रूठकर बाबर बादशाहके अमीर सुलतान जुनेदकी नौकरी करने लगा। एक दिन बाबरने उसको देखकर जुनेदसे कहा कि इस पठानकी आखोंमें बदमाशी पायी जाती है। इसको कैद रखना चाहिये। फरीद यह सुनकर भाग गया और बापके मरने पर उसके मालका मालिक होकर सहसराम और रुहतासके बीचमें लूट मार करने लगा। सुलतान बहादुर गुजरातीने खर्च भेजकर उसे बुलाया। उसने खर्च तो ले लिया और कुछ बहाना करके उसके पास नहीं गया। इतनेहीमें बिहारका हाकिम मर गया और शेरखां मैदान खाली देखकर वहांका मालिक बन बैठा। फिर एक वर्ष तक बंगालके बादशाह नसीबशाहसे बराबर लड़ता रहा। उन दिनों हुमायूं बादशाह मालवा(२) और गुजरात फतह करनेमें लगे हुए थे जिससे उसको खूब मौका मिल गया था।

(१) बंगाला सन ७१८ संवत १३८५से खुदमुख्तार हो गया था और नसीबशाह सन ८२७ संवत १५११ में बादशाह हुआ था। बंगालेकी बादशाही सन ९८३ संवत १६३२ तक दिल्लीसे अलग रही। फिर अकबर बादशाहने फतह कर ली।

(२) मालवेमें भी अलग बादशाहत सन ८०४ संवत १४५८ से सन ९७० संवत १६१९ तक थी। फिर अकबर बादशाहने दिल्लीमें मिला ली। मालवेके बादशाह गोरी और खिलजी जातिके थे।

गिदार बादशाह सन ८४५ संवत १५८५में बंगालको रवाना हुए। बैरामखां भी साथ थे और इस समय इनको नाम मसौदोंमें लिखा गया है जिससे जाना जाता है कि यह दरजा इनको खानखानेरकी फतहके पीछे मिल गया था।

शेरखां उस समय बिहार देशके प्रसिद्ध गढ़ चिनारमें (१) था मगर बादशाहके पहुंचने पर बंगालको चल दिया और अपने बेटे जलालखांको गढ़ीमें(२) छोड़ गया जो उस समय बंगालका दरवाजा माना जाता था।

बादशाहने बिहारमें पहुंचकर भागलपुरसे बैरमबेग वगैरह कई अमीरोंको ५।६ हजार आदमियोंके साथ गढ़ी फतह करनेको भेजा मगर वहां हार हुई। बैरमखां कई बार पीछे फिर फिर कर जलालखांसे लड़े और उसकी सेनाका मुंह भी फेर दिया परन्तु मदद न पहुंचनेसे कुछ बन न पड़ा।

फिर हुमायूं बादशाह भी ८ सफर सन८४६ आषाढ़ सुदी ११ संवत १५८६ को परगने भोजपुरके गांव भईयामें शेरखांसे लड़ाई हारकर आगरेमें आये। दूसरी लड़ाई १० मोहर्रम ८४७ ज्येष्ठ सुदी १२ संवत १५८७ को कन्नौजमें हुई। वहां भी शेरखां जीता और बादशाह शिकस्त खाकर दिल्लीको चल दिये।

बैरामखां इस लड़ाईमें भी बहादुरी करके हार होनेके पीछे संभलकी तरफ चले गये और कमवे लखनौरमें जाकर राजा मित्रसेनके आश्रित हुए जो उस जिलेके नामी जमींदारोंमेंसे था। जब यह खबर शेरखांको पहुंची तब उसने अपना आदमी

(१) यहां नाम चुनार है। यह बहुत पुराना गढ़ है। इसका सविस्तर हालात इसी स्थानके रईस बाबू हनुमानप्रसादजीने सन् १८८० ई०में लिखकर छपवाया था। उसमें लिखा है कि यह किला सन् १५३० ई० संवत १५८७में हुमायूंके और सन् १५३७ दसवीं संवत १५९४ में शेरशाहके दखलमें आया था।

(२) गढ़ी बंगालकी सीमा पर एक प्रसिद्ध जगह थी।

भेजकर बैरामखांको राजासे मागा। राजाने लाचारीसे इसको उसके पास भेज दिया। बैरामखा मालवेके रास्तेमें शेरखांसे मिले। वह पहली मजलिसमें उठकर मिला और उसका मन मनानेके लिये चिकनी चुपड़ी बातें करने लगा जिनमें यह भी कह गया कि "जो इखलास (भक्ति) रखता है वह खता नहीं करता।" इस पर इन्होंने भी कहा कि हां जो इखलास रखेगा वह खता नहीं करेगा। फिर बुरहानपुरके पाससे ग्वालियरके हाकिम अबुलकासिम(के१) साथ गुजरातको भागे। रास्तेमें शेरखांका वकील गुजरातसे आता था उसने खबर पाकर आदमी भेजा और अबुलकासिमको जो चेहरे मुहरेसे दीदारू जवान था पकड़ लिया। बैरामखाने नेकजातीसे (सज्जनतासे) उठ करके कहा कि मैं बैरामखां हूं। मगर अबुलकासिमने भलमनसीसे कहा कि यह तो मेरा नौकर है और चाहता है कि मेरे वास्ते अपनेको कुरबान करे। तुम इसको जाने दो।

इस तरह बैरामखा बचकर गुजरातमें सुलतान महमूदके पास पहुंचे और अबुल कासिमको जब शेरखांके पास ले गये तो उसने बेसमझीसे ऐसे सज्जन पुरुषको मरवा डाला।

शेरखा कहा करता था कि जब बैरामखांने उस मजलिसमें यह कहा था—"जो इखलास रखता है। खता नहीं करता है।" तो मैंने समझ लिया था कि यह हमसे मेल नहीं करेगा।

गुजरातके सुलतान महमूदने २) भी बैरामखांको अपने पास रखनेके वास्ते बहुत कहा। मगर बैरामखांने कबूल नहीं किया और मक्के जानेकी छुट्टी लेकर सूरत बन्दरमें आये।

---

(१) यह हुमायूंकी तर्फसे ग्वालियरका हाकिम था। जब शेरशाह हुमायूं पर फतह पाकर ग्वालियर पर गया तब इसने कुछ दिनों तक लड़कर किला सौंप दिया और आप उसके साथ हो गया।

(२) बहादुरके पीछे यह सुलतान महमूद सन् ९४४ संवत १५९४ में गुजरातका बादशाह हुआ था।

वहांसे मारवाड होकर कसवे जूनमें ७ मोहर्रम सन् ८५० यानी (ग्रेशाख सुदी ८ संवत १६००को अपने मालिक हुमायूं बादशाहके पास जा पहुचे।

बादशाह दिल्लीसे पंजाब और पंजाबसे सिंध २८ रमजान सन् ८४७ माघ सुदी ३ संवत १६०१को पहुंच कर कसवे बाहरीमें उतरे थे। दूसरे वर्ष सन् ८४८ यानी संवत १६०८ में हमीदा बानू बेगमसे निकाह करके वहांसे ठट्टे को गये। रास्ते में कुछ दिनों तक सेवान किलेसे लडे, परन्तु लडाईमे लाभ न देखकर जोधपुरके राव मालदेवके बुलानेसे मारवाडको चले गये। वहांसे भी निराश हो कर जैसलमेर होते हुए १० जमादिउलअव्वल यानी भादों सुदी १२ संवत १५९८ को उमरकोटमें लौट आये और बेगमको वहीं छोड कर फिर सिंधमें गये। १५ दिन पीछे ५ रज्जब रविवार कार्तिक सुदी ६ संवत १५९८ को रातको उमरकोटमें शाहजादेका जन्म हुआ। बादशाहने कसवे जून इलाके भक्करमें यह बधाई सुनकर शाहजादे का नाम मिरजा अकबर रखा और सिंधियोंसे लडाई शुरू की जो भक्करके सुलतान महमूदकी तरफसे उनके मुकाबिलेको आये थे। यह सुलतान महमूद ठट्टेके शाह हुसेनबेगके अधीन था। शाहहुसेन मिरजाशाहबेग अरगूका बेटा था। जब बाबर बादशा हने इसके भाई मुहम्मद मुकीमसे काबुल लिया उसके दो तीन वर्ष पीछे इसको भी कंधारसे निकाल दिया था तब यह सिंधमें आकर इस मुल्कका मालिक बन गया। इसके पीछे हुसेनबेग ठट्टका सुलतान हुआ। इसीके आश्रित सुलतान महमूदसे वह लडाई हो रही थी।

बैरामखां जिस वक्त वहां पहुंचे उस वक्त भी लडाई हो रही थी और वे सीधे रणस्थलमें जाकर शत्रुओंसे लडने लगे। बादशाहकी फौजको बडी हैरत हुई कि क्या यह कोई लश्करगैब (दैव माया) है? पर जब मालूम हुआ कि वे बैरामखां हैं तब सब खिल उठे और बादशाहको भी बहुत खुशी हुई।

बादशाहके पाव सिंधमें भी नहीं जमे। निदान वे सुलतान महमूदसे सुलह करके ७ रबीउलअव्वल सन् ८५० हि॰ जेठ सुदी ८ सवत १६००को सेवीके (१) रास्ते से कंधारको रवाने हुए, उनका इरादा ईरान जानेका था। मगर उनके छोटे भाई मिरजाअसकरीने जो कंधारका हाकिम था मझले भाई मिरजा कामरा हाकिम काबुलकी सलाहसे उनके पकडनेका इरादा किया। बादशाह यह खबर पाकर कंधारके पाससे मस्तगको(२) लौट गये। मिरजा असकरी इनके ईराम जानेमें अपना बहुतसा नुकसान देखकर रास्ता रोकनेके लिये कंधारसे निकला जिसकी खबर जी बहादुर(३) नाम एक भले आदमीने आकर बैरामखांको दी। बैरामखां उसको बादशाहके पास ले गये बादशाहने सवारी निकाल जानेके लिये तरदी बेग(४) वगैरह अमीरोंसे घोडे मगाये और जब उन्होंने नहीं दिये तब वे उनको दण्ड देनेके लिये जाने लगे, बैरामखांने कहा कि वक्त तग होगया है पर इतनी फुरसत नहीं रही है। इन नमकहरामोंको गजबइलाहीके (ईश्वर कोपके) हवाले करके यहांसे चल देना चाहिये।

बादशाह उनका कहना मानकर तथा काबुल और कंधारका इरादा छोडकर मक्के(५) जानेके विचारसे ईरानको रवाने हुए

(१) सेवी बलूचिस्तानमें है जहा अब अंगरेजी अमलदारी है।

(२) मस्तग कंधारके पास है।

(३) जी बहादुर मिरजा असकरीका नौकर था पहले बादशाहके पास भी रह चुका था।

(४) तरदी बेग बादशाहके बडे अमीरोंमें खानखानासे दूसरे दरजे पर था।

(५) मक्का अरब देशमें मुसलमानोंका बडा पुनीत धाम है जो वहां हो आता है उसको हाजी कहते हैं। हाजीके माने यात्रीके हैं मक्केकी यात्राका नाम हज है।

और ख्वाजा मुअज्ज़म(१) वगैरहसे कह आये कि शाहजादे और बेगमको लेकर पीछसे जल्दी आजावें। कुछ दूर गये होंगे कि रात हो गयी। तब बैरामखाने बादशाहसे अर्ज की कि हजरतको मालूम है कि मिरजा असकरी कितना लालची है और वह इस वक्त दो तीन मुशियोंके साथ बैठा हुआ हजरतके डेरेके माल असबाबकी फर्द देखता होगा। इस वास्ते अभी अकस्मात् वहां पहुंच कर उसका काम तमाम कर देवें। जब मिरजा न रहेगा तब उसके नौकरोंको जो सब आपके नमकसे पले हैं आपकी खिदमतमें आनाही पड़ेगा।

बादशाहने इस सलाहको तारीफ तो बहुत की मगर वैसा करना मुनासिब न समझा और आगेको कूच कर दिया। तरदी बेग वगैरह तमाम नौकर मिरजा असकरीके पास चले गये मगर बैरामखां बादशाहके साथ रहे।

बैरामखांने अपनी दानाईसे जैसा समझकर कहा था वैसाही हुआ। मिरजाअसकरी रातको मस्तंगमें आकर अपने डेरेमें बादशाहके माल असबाबकी याददाश्त (सूची) लिखने लगा। जो उसके पास लाया गया था और फिर शाहजादे अकबरको लेकर कंधारमें आया और शाहजादेकी मां हमीदा बानूबेगम बादशाहके पास चली आई।

बादशाहने विलायत गर्मसेरमें(२) पहुंच कर ९ शव्वाल सन ९५० पोष सुदी ३ संवत १६०० को ईरानके बादशाह तुह मास्प सफवीके नाम खत भेजा जिसमें लिखा था कि तकदीरसे कुछ ऐसी बात बन आयी है कि आपका मिलाप जल्दी हो। पीछे अपनी ईरानकी अमलदारीके जिले सीसतां(३) वगैरह

---

(१) मरयममकानी अर्थात् हमीदा बानूबेगमका भाई जो मोअज्जम सुलतान भी कहलाता था।

(२) कंधार और सीस्तानके बीचका मुल्क।

(३) सीस्तान अब ईरानके, और कंधार काबुलके नीचे है।

होते हुए फराहमें पहुचे। वहां शाहतुहमास्पका(१) एलची खतका जवाब लेकर आया जिसमें आने और मिलनेकी बहुत लालसा लिखी थी तथा अपने सब सूबेदारोंके नाम अच्छी तरहसे पेशवाई और मेहमानदारी करनेके हुक्म भी जारी कर दिये थे। जो फरमान खुरासानके हाकिमको पहुचा था उसमें लिखा था कि हर रोज एक अमीर मेहमानदारी करे और बादशाहोंके खानेके लायक नाना प्रकारकी भोजनकी सामग्रीके १२०० थाल भेजे। इनके सिवा ८ घोड़े भी भेट करे जिनमें ३ तो खास बादशाहके वास्ते हों एक बड़े अमीर मुहम्मद बैरामखा बहादुरको दिया जाय और ५ दूसरे अमीरोंको जो इस लायक हों दिये जावें।

७ बादशाह जब इस तरहसे शाह ईरानके मेहमा न होकर रास्तेमें ईरानी अमीरों और शाहजादोंकी नजरें और जियाफतें लेते हुए हिरातसे(२) कजवीनमें(३) पहुचे तब बैरामखांको शहर सुलतानियेमें(४) भेजकर शाहको अपने आनेकी खबर भेजी।

८ बैरामखा शाहतुहमास्पको बादशाहका सलाम देकर लौट आये और शाह तुहमास्पने बड़ी धूम धामसे पेशवाई करके जमादिउलसानी सन् ९५१ भादों सवत १६०१ में हुमायूं बादशाहसे मुलाकात की तथा बड़े आदर सत्कारसे सुलतानियेमें ले जाकर ठहराया। कई दिन तक राग रग होता रहा और शिकारकी भी ऐसी भारी तैयारी हुई कि शाही फौज १० दिनके रास्तेसे जानवरोंको घेरकर लायी। दोनों बादशाह घोड़ेपर सवार होकर

(१) यह शाह इसमाईलका बेटा था और सन् ९३० स० १५८१ में तख्त पर बैठा था।

(२) हिरात अब अमीर काबुलके कबजेमें है।

(३) कजवीन ईरानका एक शहर है और उन दिनों वहां राजधानी थी।

(४) कजवीनके पास एक शहर है जहा ईरानके सफवी बादशाह गर्मियोंमें रहा करते थे।

गये और शिकार मारे। फिर शाहके भाई बहरामगिरजा और सामगिरजाने आज्ञा पाकर शिकार खेला। उनके पीछे बैरा खाँ वगैरह बादशाहके अमीरोंको भी शिकार करनेका हुक्म हुआ।

इसके पीछे फिर एक और वैसाही बडा शिकार हुआ जिसमें दोनों बादशाहोंने चोगानबाजी और कबलभदाजी को अर्थात् घोड़े दौड़ा कर गेंद खेले और निशाने उड़ाये। इसी दिन बैरामबेगको खानखा(१) और हाजी मुहम्मद कूकीको(२) सुलतानका खिताब मिला। फिर शाहने १२००० सवार अपने बेटे मिरजा मुरादके साथ मददके वास्ते तैयार करके उनका तूमार (दफतर) बादशाहको दिखाया और सफरका सब सामान कर दिया। तीसरी बार फिर वैसाही शिकार होकर दोनों बादशाहोंकी सवारी तथा मुलाकात हुई और शाह बादशाहके डेरे पर आये और दोनों बादशाह एक दूसरेसे विदा हुए।

आते समय बादशाह तबरेज होकर कधारको लौटे। इस रास्तेमें भी उनको वैसीही पेशवाई और मेहमानदारी हुई।

जो लोग इस सफरमें बादशाहके साथ थे अकबरनामेमें उन सबका नाम और थोड़ा थोड़ा परिचय भी लिखा है जिनमें सबसे पहला नाम बैरामखाका है कि "सब साथ देने वालोंमें शिरोमणि, जो इस विषयमें हमेशा नेकनीयतीसे बादशाहके साथ रहा वह बैरामखां"।

बादशाहने ७ मुहर्रम सन् ९५२ चैत सुदी ८ संवत १६०२ को कवार पहुंचकर मोरचे लगाये और मिरजाकामराके कोका

(१) बैरामबेग बैरामखा तो पहलेसे कहे जाने लगे थे जैसा कि शाहके फरमानमें भी बैरामखां लिखा है परन्तु राज रीतिसे उनको खानखा खिताब अब मिला था।

(२) हाजी मुहम्मदखां भी इसका नाम था।

(धाभाई) "रफ़ीय"का जमीनदावरमें(१) मौजूद होना सुनकर व रामखांको उसके ऊपर भेजा यह गये और फतह करके लोकाको पकड़ लाये।

फिर बादशाहने मिरजा कामराके नाम फरमान लिखकर बैरामखांके हाथ काबुलमें भेजा। इस फरमानके साथ शाह तुहमा-सका भी फरमान था जिसमें उन्होंने मिरजाको आपसमें मेल रखनेका उपदेश लिखा था।

बैरामखां जब काबुल पहुंचे तब बाबूस(२) वगैरह बहुतसे आदमी पेशवाई करके इनको ले गये। मिरजा कामराने चार-बागमें दरबार करके बैरामखांको बुलाया। इन्होंने सोचा कि ये दोनों फरमान मिरजाको बैठे हुए देना तो ठीक नहीं है और मिरजा उठकर ले ऐसी उससे उम्मेद भी नहीं। इसलिये वे भेट करने-के लिये एक कुरान साथ ले गये। जब मिरजा कुरानको ताजी-मको खड़ा हुआ तब वे दोनों फरमान भी उसको दे दिये। इस तरह दानाईसे उन दानों फरमानोंकी ताजीम कराई। फिर दोनों बादशाहोंकी मैत्री हुई सौगातें मिरजाको दीं और मिरजाके पास बैठकर मेल मिलापकी बातें कीं। जब दरबार हो चुका तब मिरजासे इजाजत लेकर शाहजादे अकबर, मिरजा हि-न्दाल, मिरजा सुलेमान(३), मिरजा इब्राहीम, यादगार(४) नासिर मिरजा और उलग(५) मिरजा वगैरहसे अलग अलग मिले और सबको बादशाहके भेजे हुए खत और खिलअत दिये तथा मिहर

(१) कंधारके पास एक कसबा।

(२) मिरजा कामराका एक अमीर।

(३) मिरजा सुलेमान और इब्राहीम दोनों बाप बेटे बादशाहके छुट भाईयोंमेंसे थे। बाबर बादशाहने मिरजा सुलेमानको बदख़-शांका मुल्क दे रखा था।

(४) यह बादशाहका चाचा था।

(५) उलग मिरजा भी बादशाहका छुट भाई था।

बागोंके सदेंमें कहे। मिरजा कामरांने बैरामखांको एक महीना ठहरा कर बिदा किया और अपनी फूफी खानजादा बेगमको मिरजा असकरीके समझानेके बहानेसे कंधार भेजा जिसकी सिफारिशसे बादशाहने मिरजाके कसूर मुआफ कर दिये। गुरुवार २५ जमादिउलसानी कातिक बदी १२ को दीवान खानेमें बड़ा भारी दरबार किया जिसमें चगताई(१) और कजलबाश(२) अमीर अपने अपने दरजेसे परा बांधकर खड़े हुए और बैरामखां हुक्मके मुवाफिक मिरजा असकरीको गलेमें तलवार डालकर लाये। बादशाहने मेहरबानीसे तलवार निकलवा दी और जब मिरजा आदाब बजा ला चुका तब उसको बैठनेका हुक्म दिया और कंधारको दखल करके मुहम्मद मुरादमिरजाको सौंप दिया जो शाह तुहमास्पका बेटा था और मददके लिये ईरानी फौजके साथ आया था। उसने अपनी तरफसे शाह बदागखांको(३) अधारका हाकिम किया।

शाहजादा मुराद मर गया तब बादशाहने कंधारका किला बेगमोंके रहनेके वास्ते शाह बदागखांसे मांगा। उसने देनेमें उजर किया, तब मिरजा असकरीको(४) कैद रखनेके वास्ते उसके पास किलेमें भेजनेका बहाना करके अपने अमीरोंको रातके वक्त किलेके आस पास बैठा दिया जो सुबह होतेही अंदर घुस

(१) मुगल।

(२) ईरानी लाल टोपी वाले, क्योंकि कजल बासके मानी तुर्की बोलीमें लाल टोपीके हैं, जो सफवी बादशाहोंके नौकर दिया करते थे।

(३) शाह बदागखां शाह ईरानका नौकर और शाहजादे मुरादका अतालीक था।

(४) मिरजा असकरीको बादशाहने संवत १६०८ में मिरजा सुलेमानके पास भेजकर कहला दिया कि, बलखके रास्तेसे इसको मक्के भेज दे। मिरजा सुलेमानने ऐसाही किया और असकरी वहीं पहुंचकर संवत १६१५ में मर गया।

गये। कासलखान इससे लड़ने लगा, मगर बैरामखांने दूसरे दरवाजेसे जाकर किला फतह कर लिया। शाह बदागखांने बादशाहके पास हाजिर होकर माफी मांगी। बादशाहने उसको राजी करके बिदा किया और वह किला बैरामखांको सौंपकर शाह ईरानको लिख दिया कि शाह बदागखांने हुक्म नहीं माना था इसलिये हमने, कंधार उससे लेकर बैरामखांको दे दिया है।

फिर बादशाहने बैरामखांको कंधारमें छोड़कर काबुल पर चढ़ाई की। १२ रमजान सन् ९५२ अगहन सुदी १४ संवत १६०२ बुधको रातको काबुल भी फतह होगया और मिरजा कामरां गजनीन होकर सिंधको भाग गया। सन् ९५३ के लगतेही बादशाह काबुलसे बदखशां फतह करनेको गये जो मिरजा कामरांने मिरजा सुलेमानसे छीन लिया था। पीछेसे मिरजा कामरांने सिंधसे आकर गजनीनको घेर लिया। बादशाहने खबर पाकर बैरामखांको लिखा। बैरामखांने यादगारनासिर मिरजा और उलग(१) मिरजाको मिरजा कामरांके ऊपर भेजा। मिरजा उस समय तो सिंधको चला गया मगर फिर वहांसे फौज लेकर आया और कंधार लेनेका इरादा किया। पर काबू न पाकर काबुलको चला गया क्योंकि बैरामखांने कंधारको खूब मजबूत कर रखा था।

मिरजा कामरांने पहले गजनीन लिया, फिर काबुल फतह किया। मगर बादशाहने बदखशांसे आकर फिर मिरजाको निकाल दिया। मिरजा भागकर बलखमें पीर मुहम्मदखां(२) उजबकके पास पहुंचा और उसको साथ लेकर बदखशां पर गया।

---

(१) उलग मिरजा इस समय जमीन दावरका हाकिम था।

(२) पीर मुहम्मदखां तूरानका बादशाह मुहम्मदखां शैबानीकी औलादमें था। मुहम्मदखां सन् ९१६ ई० १५१० में ईरानके शाह इसमाइल सफवीके मुकाबिलेमें मारा गया था। उसके पीछे इतने बादशाह समरकन्द और बुखाराके तख्त पर बैठे:—

१—कोंजमखां सन ९१६ (१५१०)में २—अबूसईदखां

बादशाहने यह सुनकर सोमवार ५ जमादिउलसानी सन् ९५५ आषाढ सुदी ७ संवत १६०५ को फिर बदख्शांको कूच किया। वहां मिरजा कामरांसे मिलाप होगया और सब भाई मिलकर सन् ९५६ के लगतेही अपने बाप दादाका राज्य लेनेके लिये बलखके ऊपर गये, मगर आपसमें फूट पड जानेसे बादशाह काबुलको लौट आये। मिरजा कामरां बदख्शांको चला गया और वहांसे फिर काबुल पर आया। बादशाह काबुलसे जाकर उससे लडे। मगर शिकस्त खाकर बदख्शांको चले गये और मिरजा कामरां फिर काबुलके तख्त पर आ बैठा। बादशाहने बदख्शांसे आकर फिर मिरजाको लडाईमें जीता और काबुल फतह किया।

मिरजा भागकर अफगानिस्तानमें गया और अफगानोंको लेकर जलालाबाद पर आया। बादशाहने गजनीनके हाकिम हाजी मुहम्मदको बुलाया, मगर वह इधर तो न आया और मिरजा कामराका रस्ता देखने लगा, जिसको उसने गजनीन देनेका इकरार कर लिया था।

इतनेमें बैरामखां बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होनेके लिये काबुलको जाते हुए गजनीनमें आ निकले। हाजी मुहम्मदने पेशवाई करके मुलाकात की और जियाफतके बहानेसे कैद करनेके लिये किलेमें ले जाना चाहा, मगर १ आदमीने इशारेसे मना किया, जिससे बैरामखां दगा समझ कर किलेमें नहीं गये और हाजी मुहम्मदखांको नर्मी गर्मीसे राजी करके काबुलमें ले आये। लेकिन वहांके हाकिमने उसको शहरमें जाने नहीं दिया। क्योंकि बादशाह मिरजा कामरांके पीछे गये हुये थे और हाकिमसे कह गये थे कि कोई शहरमें न आने पावे। हाजी मुहम्मद दगा समझकर शिकारके

(१५८६।८०) ३—हबीदुल्लाहखां ९३८(१५९८) ४—असदुल्लहखां और ५—असदुल्लालीफखां सन् ९४६। (१५६६) ६—मराकखां और ७—बुरहानखां ९४८ (१५९८) ८—पीरमुहम्मदखां ९५२ (१६०२) में।

पहानेसे गजनीनको चला गया। फिर मिरजा कामरा भी खानखाने और हाजी मुहम्मदका आना सुनकर भाग निकला। जब बादशाह काबुलको लौटे तब बैरामखा सगमिपाहमें(१) आकर आदाब बजा लाये। बादशाहने उनको हाजी मुहम्मदके ऊपर भेजा, पर वे जाकर फिर उसको मना लाये और बादशाहसे कुसूर मुआफ करा दिये।

बादशाह मिरजा कामरांके ऊपर फिर जलालाबादको गये और मिरजा फिर पहाड़ोंमें भागा। बादशाहने बैरामखांको उसके पीछे भेजा। वे गये और जब मिरजा कावुलको सरहद्दसे निकलकर नीलाब(२)की तरफ चला गया तब वे दर्के(३)में बादशाहके पास लौट आये।

बादशाहने काबुलमें वापस आकर बैरामखांको कधार जानेके लिये बिदा किया। वे वहां पहुंचकर अपना काम करने लगे।

मिरजा कामरां फिर अफगानोंको लेकर काबुलके इलाकेमें आया। बादशाह उसके रोकनेको सुरखाबमें(४) आये। २१ जीकाद सन् ९५८ इतवार मगसर बदी ८ संवत १६०८ को रातको मिरजाने गाव चरयारमें(५) बादशाही लशकर पर छापा मारा, जिसमें बादशाहको फतह तो हुई मगर मिरजा हिंदाल मारा गया; जिसको बादशाहने मुहम्मदकी(६) जगह गजनीका हाकिम बनाया था, और वह इस वक्त बादशाहके साथ था।

(१) यह स्थान काबुलके पास है।

(२) अटक अर्थात् सिन्धु नदी।

(३) काबुल और जलालाबादके बीचमें एक गाव है।

(४) नीलाब और काबुलके बीचमें एक नदी है।

(५) यह गाव काबुलके परगने नेकनिहारमें था।

(६) वही, बाबरबादशाहका जिसे सुलतानको पदवी मिली थी। यद्यपि इसके अपराध खानखानाने क्षमा करा दिये थे तो भी फिर बद ख्वाही (बुराचेतना) करने लगा था। इसलिये बादशाहने इसको और इसके भाई शाह मुहम्मदको कैद करके हुक्म दिया कि इन्हों-

फिर बादशाहने अफगानोंके ऊपर चढ़ाई करके मिरजा कामराको हिन्दूस्तानकी तरफ भगा दिया।

मिरजा कामरा पंजाबमें जाकर शेरखांके बेटे सलीमखांसे मिला जो उस वक्त हिन्दुस्तानका बादशाह था। मगर फिर उससे मदद मिलनेकी उम्मेद न देखकर पंजाबके पहाडी राज्योंमें फिरता फिरता आदम गक्कड(१) के पास पहुचा। उसने मिरजाके आनेकी खबर देकर बादशाहको बुलाया। बादशाह गक्कड़ोंके मुल्कमेंसे जो सिंध और भट नदियोंके बीचमें था हिन्दुस्तानके ऊपर चढाई करनेका मौका देखकर काबुलसे बगशमें(२) आये। फिर सन् ८६० संवत १६०८। १० में आगे बढकर सिंध नदीमें उतरे। सुलतान आदम मिरजा कामराको लेकर आया।

बादशाहने उसकी जान तो बख्श दी मगर आंखोंमें सलाई फिराकर मक्केको भेज दिया, जहां वह ४ वर्ष पीछे ११ जिलहज्ज ८६४ कुआर सुदी १२ संवत १६१४ को मर गया।

फिर बादशाह पेशावरमें अमल करके सन् ८६१ सं० १६१० के लगते ही काबुलमें लौट आये। उनका विचार जाडेमें हिन्दुस्तान पर चढाई करनेका था। मगर कुछ चुगलखोरोंने खानखानाकी तरफसे ऐसी बातें बनायी कि बादशाह हिन्दुस्तान जानेसे कधार

ने जो खिदमत खुशी या नाखुशीसे की हो उसको तो ये लिखे और एक बादशाही गुमी इनके अपराधोंको लिखे वह इनसाफकी तराजूमें तुलकर दुनियाको इनका हाल मालूम हो जावे। उनके अच्छे काम तो कुछ भी नही निकले और बड़े बड़े जुर्म १८२ तक थे जिनकी सजामें ये मारे गये और गजनीको हुकूमत बहादुरखांको दी गयी। उसके पीछे मिरजा हिन्दाल हाकिम हुआ था।

(१) गक्कड़ १ जातिका नाम है जो पहले हिन्दू थी फिर मुसलमान हो गयी वह भट और झेलम नदियोंके आसपास रहती है।

(२) बङ्गश एक पहाडी इलाका अफगानिस्तानमें है जहांके रहने वाले पठान भी बङ्गश कहलाते है।

जाना जरूरी समझकर उधर ही गये। खानखाना तो नेकवख्त लोका जामा पहने हुए थे। बादशाहका आना सुनकर बहुत शुक्रगुजार हुए और बडे ठाटबाटसे २ कोस तक पेशवाईको आये तथा जमीन चूमकर, आदाब बजा लाये। जिससे बादशाहको यकीन हो गया कि जो कुछ उनकी बाबत कहा गया है सब मिथ्या है।

फिर बादशाह एक अच्छा मुहूर्त देखकर कंधार पधारे और जाडे भर वहीं मौज उडाते रहे। बैरामखाने खिदमतमें कुछ कसर नहीं रखी। बादशाहकी सरकारमें जिस चीजकी जरूरत हुई निछोर करके दी और साथके सब छोटे बडे बन्दोंको अपने नौकरोंके घरोंमें उतारा और उनको खातिर तवाजअ करना भी उन्ही लोगोंके जिम्मे कर दिया।

बडे आदमियोंमेंसे, शाह अबुलमुआली, मुनअमखां, खिजरख्वाजा, मुहब्बअली और मीरखलीफा वगेरह थे।

जब बैरामखांकी नमकहलाली साबित हो गयी और सब लोगोंने जान लिया कि वह पूरा तावेदार है तब बादशाह कन्धार उन्हींके जिम्मे छोडकर हिन्दुस्तान जानेके वास्ते काबुलमें आ गये और बैरामखांसे कह आये कि इस चढाईका सामान करके जल्दीसे लश्करमें आ जावें।

बैरामखां २ अव्वल भादों सुदी ३ संवत १६११ को काबुल पहुंचकर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गये। यह रोजा ईदका दूसरा दिन था तो भी बादशाहने अति आनन्द और मेहरबानीसे जो बैरामखांके ऊपर थी उस दिन भी ईदकीसी खुशी मनाकर ऐसी बडी सभा सजायी कि ईदकी सभासे जियादा सुन्दर और सुहावनी थी। उसी दिन पहले पहल शाहजादे अकबरने निशाना उडाया अर्थात् चांदीकी गेंदको तीरसे गिरा लिया। बैरामखांने इस "कबकअंदाजी"की तारीफमें एक उमदा कसीदा (काव्य) बनाया और भरे दरबारमें सुनाया।
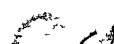
इन्हीं दिनों हिन्दुस्तानमें सलीमखांके मरनेकी खबर आयी और वहां जो बादशाहके चाहने वाले थे उन्होंने बादशाहको बुलानेके वास्ते अर्जियां भेजीं।

हिन्दुस्तानका कुछ हाल और हुमायूं बादशाहका फिर आकर दिल्लीके तख्त पर बैठना।

बादशाहको हिन्दुस्तान छोड़ १५ वर्ष हो गये थे। इस मुद्दतमें शेरखां (शेरशाह) ५ वर्ष २ महीने १३ दिन बादशाही करके ११ रबीउल अव्वल सन् ८५२ यानी जेठ सुदी १३ संवत १६०२ को मर गया था—फिर उसका बेटा सलीमखां (सलीमशाह) तख्त पर बैठा। वह ८ वर्ष २ महीने ८ दिन अपना हुक्म चलाकर २२ जीकाद सन् ८६० यानी मगसर बदी ८ संवत १६११ को फौत हुआ। उसने अपने बापके अधूरे छोड़े हुए बहुतसे किलेको पूरा किया और सवालख पहाड़में मानकोटका किला मुगलोंको रोकनेके लिये बनाया।

सलीमखांके पीछे उसका बालक बेटा और सलीमखांका साला मुबारिजखां उसको मारकर आप बादशाह होगया। उसने अपना नाम मुहम्मदशाह अदली रखा और हेमू दूसरको अपना वकील (बड़ा वज़ीर) बनाया। यह रवाड़ीका(१) रहनेवाला था और लड़कपनमें नमक बेचते बेचते सलीमखांके मोदियोंमें दाखिल होकर बादशाही नौकर [illegible] सलीमखांके मुंह लगकर मुल्क और माल के [illegible] दखल देने लगा था। अब जो वकील हुआ [illegible] राज काजका करता धरता वही होगया। पहले बसन्तरायका खिताब पाया था परन्तु अब राजा बिक्रमाजित कहे जाने लगा। [illegible] आगरेमें अहमदखां, बङ्गालमें मुहम्मदखां, मालवेमें सजावलखां और बयानेमें गाजीखां सूर हाकिम थे। मगर फिरोजखांको मारकर तख्त छीन लेनेसे ये सब अदलीके

(१) रेवाड़ी अलवर और दिल्लीके बीचमें राजपूताना मालवा रेलवे लाइन पर दिल्लीसे [illegible] कमिश्नरीमें है। [illegible]

दुश्मन हो गये थे। अहमदखां सूर अपना नाम सिकंदर रखकर पंजाबसे, इब्राहीम सूर्व बयानेसे आगरे पर आ गये, तब अदली तो हेमूको सनाहसे पूरबको चल दिया और आगरेके पास इब्राहीम और सिकन्दरको (जो अदलीके दोनों बहनोई थे) लड़ाई हुई। इब्राहीम हारा और सिकन्दर जीता। जिससे सिन्ध और गङ्गाके बीचका तमाम मुल्क उसके कबजेमें आ गया। वह अदली और मुहम्मदखांसे लड़नेके लिये पूर्वको ओर जानेके विचारमें था, मगर हुमायूं बादशाहका आना सुनकर ठहर गया और तातारखां तथा हबीबखां वगैरहको पंजाबका रखवाली पर भेज दिया।

उधर मुहम्मदखांने बङ्गालसे अदली पर चढ़ाई की जो चुनार गढ़में था और हेमूसे लड़ाईमें हारकर जानसे जाता रहा। शेरखां और सलीमखांके खजाने हेमूके हाथ आये। फिर हेमूसे और इब्राहीमसे कई लड़ाइयां हुई जिनमें सब जगह हेमूको जीत रही। हेमू अब सिकन्दरको निकालनेके लिये आगरेसे जाने वाला था परन्तु बङ्गालमें मुहम्मदखांके बेटे खिजरखांके बादशाह बन बैठनेकी खबर सुनकर उधर अदलीके पास चला गया।

हुमायूँ बादशाह काबुलमें ये खबरें सुनकर सन ९६१ के जिलहज्ज यानी संवत १६११ के कातिक या मगसरमें हिन्दुस्तानको रवाने हुए और शाहजादे अकबरको भी कि जिसकी उमर १२ वर्ष ८ महीनेकी हो गयी थी साथ लेते आये। बैरामखां बाजे बादशाही कामों और अपनी जगीरो तैयारीके लिये छुट्टी लेकर काबुलमें रह गये।

बादशाह ३० मुहर्रम सन् ९६२ फागुन सुदी २ को बिक्राम (पेशावर) में पहुचे और ५ सफरको नीलाब (सिंध) नदी उतरकर ३ दिन तक ठहरे। यहां बैरामखां भी आ मिले। तातारखां जो बहुतसी फौजसे रुहतासके किलेमें था बादशाहका आना सुनकर भाग गया।

बादशाहने कमालूखां(१) व बैरामखांको तो नसीबखां पठानके ऊपर भेजा और आप लाहोरमें जा विराजे।

बैरामखां जब परगने हरहानेवे(२) पास पहुंचे तब नसीबखां थोडासा मुकाबिला करके भाग गया। मुगलोंको बहुत लूट मिली और पठानोंके जोरू बच्चे भी सब पकड़े गये।

बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगा तो किसी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नहीं बनावेंगे, इसलिये वे खुद सवार होकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको इकट्ठे करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशाहके पास भेजकर आगे उठे। जब जालन्धरके पास पहुंचे तब पठान वहांसे भी भाग निकले और बादशाही लशकरमें झगड़ा होता देखकर अपना सब माल असबाब भी ले गये।

यह झगडा यह था कि तरदीबेगखां तो भागे हुए पठानोंपर जाना चाहता था और बैरामखां इस बातको ठीक न समझकर इजाजत नहीं देता था। तरदीबेगखांने कालूखांको बैरामखांके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातको परवानगी ले आवे। जब कालू आया तब, ख्वाजा मुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें बिगाड हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी। बादशाहको जब यह खबर पहुंची तब उन्होंने अफजलखांको वहां भेजकर अमीरोंमें सुलह करा दी।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरोंको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा। सिकन्दरखां माछीवाडे(१) पर बिदा हुआ था, जब वह वहां पहुंचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर (पञ्जाब) के जिलेमें है।

(२) जिले हुशयारपुरमें है।

(३) गुलाम, कैदी।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदीके पास।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा सहरन्दको (२) अपने कब्जेमें ले आया, जहां बहुतसी लूट उसके हाथ आयी। जब तातारखां, हबीबखां, नसीबखां, मुबारकखां और बहुतसे पठान सरदार दिल्लीसे भटकर आये तब सिकन्दरखां सहरन्दमें रहना मुनासिब न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामखांने खफा होकर उससे कहा, कि तू सहरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामखां जालन्धरसे चलकर जब माछीवाड़ेमें आये तब तरदी बेगखां वगैर उनके साथके अमीर बरसातका ख्याल करके सतलजसे उतरनेकी सलाह नहीं देते थे, मगर बैरामखां ते समय हथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पड़ा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लड़नेको आये। लड़ाई शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामखांने इस फतहकी लूट भी हाथियों समेत बादशाहके पास लाहोरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामखांके मुकाबलेको आया। बैरामखांने दामाईसे सहरन्द जाकर किला सजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहकी खिदमतमें अर्जियां भेजीं। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जब (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२)की रातको सहरन्द आ पहुंचे और लश्करको चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अबूलमुआलीको और चौथेमें बैरामखांको रखा।

चालीस दिन तक लड़ाई होती रही। २ शाबान सन् ९६२ (अषाढ सुदी ३)की शाहजादेके लड़नेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लड़ाई होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पहाड़ोंमें चला गया।

(२) जलन्धरसे आगे अम्बाले और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालेकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

फतहके पीछे बड़ी आन्धी आई और मेंह भी बहुत बरसा जिससे भागनेवालोंको निहायत तकलीफ हुई और बहुत लोग उनमेंसे मर भी गये।

बादशाहने खुशीका दरबार करके मुसाहिबोंसे पूछा कि यह फतह किसके नाम लिखी जावे? अबुलमुआली अपने नाम और बैरामखां अपने नाम लिखाया चाहते थे, मगर बादशाहने शाहजादेके नाम लिखवायी।

फिर बादशाह सहरन्दका बन्दोबस्त करके समानेकी राहसे दिल्लीको रवाना हुए और १(१) रमजान सावन सुदी २ जुमेरातको सलीमगढ़में जो दिल्लीसे उत्तरको जमुना किनारे है, पहुंचे और ४ (सावन सुदी ५ संवत् १६१२)को दिल्लीमें दाखिल हुए।

बादशाहने दुबारा तख्त पर बैठकर नौकरोंको जागीरें बख्शीं। शाहजादे अकबरको हिसारकी सरकार दी। सहरन्द और दूसरे फुटकर परगने बैरामखांको दिये। तर्दीबेगको मेवातमें भेजा। सिकन्दरखांको आगरे, अलीकुलीखांको सम्भल और हैदर मुहम्मद खांको बयानेकी तरफ बिदा किया। इतनीही दूरमें सिकन्दरका अमल रह गया था, आगे अदलीका था।

बादशाह लाहौरमें शाह अबुलमुआलीको छोड़ आये थे। वह लोगों पर जुल्म करने लगा और सिकन्दर सूर पहाड़से बाहर निकल आया था। बादशाहने यह खबरें सुनकर शाहजादे अकबरको सन्

(१) १ रमजानको जुमेरात नहीं रविवार था। जुमेरात अकबरनामेमें भूलसे लिखी है क्योंकि आगे २५ रमजान बुधको शाहजादेके अमीरोंका उनकी जागीर "हिसार"में पहुंचना लिखा है। जो रमजानकी १ तारीख गुरुवार (जुमेरात)को हुई होती तो २५ कभी बुधको नहीं होती। बुधको २१वीं होती। बुधको २५वीं होनेसे साफ जाना जाता जाता है कि रमजानकी १ ता० जुमेरातको नहीं किन्तु रविवारकोही हुई थी। जैसा कि हमने ऊपर पञ्चाङ्गमें देखकर लिखा है।

९६३ के शुरूमे पञ्जाबको भेजा और बैरामखांको उनका अतालीक (उस्ताद) बनाया। सर्हन्दमे शाहजादेके नौकर चाकर भी हिसार फिरोजसे आकर लश्करमें शामिल हो गये और सिकन्दर पहाडोंमें चला गया।

बादशाह ११ (१) रबीउल अव्वल सन् ९६३ में जुमेके दिन (माह सुदी १२ संवत् १६१२) पिछले दिनसे शुक्रके तारेको (२) देखनेके लिये किताबखानेकी छत पर चढे जिसके उगनेका भरम शामको ही था। मगर बैठते वक्त पांव फिसल जानेसे नीचे गिर पडे और मर गये। वजीरोंने इस बातको १७ दिन तक छुपाकर आसपासके अमीरोंको बुलाया, जब वे सब दिल्लीमें आ गये तब, २८ रबीउल अव्वल (फाल्गुण वदी १४ चन्द्रवार) को शाहजादेके नामका खुतबा (३) पढवाया और तरदीबेगने बादशाहीका सब सामान शाहजादेके पास भेज दिया।

शाहजादे और बैरामखां सिकन्दर सूरका मानकोटमे होना सुनकर उसके ऊपर जा रहे थे। कम्बे हरयानेमें एक कासिद दौडा हुआ आया और उसने बैरामखांको बादशाहके मरनेकी खबर दी। बैरामखां आगे जाना मुनासिब न समझ कर शाहजादेको कला-

(१) कलकत्तेके छपे हुए अकबरनामेके पहले दफतरको पृष्ठ १६३में तारीख नहीं लिखी है परन्तु पञ्चाङ्गसे ११ होती है वही हमने ऊपर लिख दी है।

(२) हुमायूं बादशाह बडे ज्योतिषी थे वह सारे काम मूहूर्त्तसे करते थे। उन्होंने बहुतसी बातें ग्रहोंके अनुसार अपने राज्य और दरबारमें चलायी थीं। जिनका पूरा विवरण हुमायूंनामेमे लिखा है और कुछ अकबरनामेमे भी है। उन्होंने कई काम शुक्रके उदय होने पर रख छोडे थे। इसी लिये उसके देखनेको छतपर चढे थे।

(३) यह एक मुसलमानी मतकी बात है कि जुमेकी एक नमाज पढनेके पीछे बादशाहके वास्ते दुआ मांगी जाती है। इसको खुतबा कहते हैं। नये बादशाहके नामका खुतबा सब मुसल

नूरमें ले आये। और वहां उनको यह खबर सुनाई और रबीउल सानी सन् ८६३ (फालगुन सुदी ४) को दरबार करके उन्हें तखत पर बैठाया।

अकबर बादशाहका समय।

अकबर बादशाहकी अवस्था उस समय केवल १२ वर्षकी थी। और बैरामखां पहलेसे राजके कर्ता धरता थे। इसलिये वे ही सब काम बादशाहीका करने लगे और बादशाहको कलानूरसे फिर सवालक पहाड़ोंकी तरफ चढ़ा ले गये। मगर बरसात आजानेसे जालन्धरमें लौट आये।

इधर हैमू जो अबतक २२ लड़ाइयां जीत चुका था हुमायू बादशाहका मरना सुनकर चुनारगढ़से दिल्लीको रवाना हुआ और १ जिलहज्ज कातिक सुदी ३ संवत् १६१२ मङ्गलवारको वहां पहुंचा तरदीबेग वगैरह अमीर दूसरे दिन उससे लड़े और हारकर पंजाबको भागे। हैमूने दिल्लीमें अमल कर लिया।

८ जिलहज्ज कातिक सुदी १० को जालन्धरमें यह खबर बादशाहके पास पहुंची तो वे १८ शुक्रवार मगसर बदी ५ को सहरंदमें आये। वहां तरदीबेग भी आ गया था। बैरामखांने उसको डेरे पर बुलाकर दगासे मरवा डाला क्योंकि वह भी उसकी बराबरीका था आपसमें ईर्षा थी।

बादशाह उस वक्त सहरन्दके जङ्गलमें शिकार खेल रहे थे। वहीं यह बात उन्होंने सुनी। बुरी तो बहुत लगी मगर अखतियार (१) न होनेसे चुप हो रहे। शामको जब दौलतखानेमें आये तो बैरामखांने मौलाना पीर मुहम्मद (२) शिरवानीको भेजकर आरजू कराई कि तरदुर्दी बेग लड़ाईमें जान बूझकर कपटसे भाग

मानोंको हाजरीमें पढ़ा जाता है। मानो यह उमक राज्याभिषेकका पहला विधान है।

(१) कुल बातें बैरामखांके अखतियारमें थीं।

(२) यह खानखानाका मन्त्री था।

आया था और उसकी नटखटाईकी आदिसे अन्त तक सब लोग जानते हैं। अगर ऐसे कसूरोंमें आनाकानी की जाती तो बड़े बड़े काम जो हजरत किया चाहते हैं नहीं हो सकते थे, इसलिये मैंने बादशाहकी खैरख्वाहीसे यह काम बिना पूछे किया है। इससे बहुत शर्मिन्दा हूं और नहीं पूछनेका यह कारण था कि हजरत श्री मान्,दयासिन्धु और कृपानिधान हैं, उसके मारनेमें राजी नहीं होते, मना कर देने पर इस कामके करनेमें इससे जियादा बेगदरी होती और हुक्म माननेसे मुल्क और लशकरमें बहुत खलल और फसाद पड़ता। इसलिये माफी दी जावे और यह बात मंजूर कर ली जावे जिससे सब अस्लर कपटी लोगोंको डर हो जावे।

बादशाहने मौलानाके ऊपर मेहरबानी करके खानखानाका उज्र मान लिया और उसको तसल्ली देकर हेमूके फसाद मिटा-नेका विचार किया।

फिर बादशाहने सरायफरीदेमें(१) डेरा करके १०००० सवार अली कुली शैबानीको अफसरीमें आगे रवाने किये। बैरामखाने भी अपने नौकरोंमेंसे वली बेगके बेटे हुसेनकुलीबेग, शाह कुली महरम, मीर मुहम्मद कासिम नैशापुरी, सैयद महमूद बारहे और औजा-न बहादुर वगैरह काम किये हुए बहादुरोंको उनके साथ किया।

इन दिनों हिन्दुस्थानमें बड़ा भारी अकाल पड़ रहा था। दि ल्लीमें तो यह हाल था कि रुपया मिल जाता था, मगर अनाज नहीं मिलता था। आदमी आदमीको खाने लगा था। कई लोग मिलकर अकेले दुकेले आदमीको ले भागते और मार कर खा जाते थे, उसपर यह आफत लड़ाईकी थी।

हेमूने बादशाही लशकरका आना सुनकर अपना भारी तोप खाना मुबारकखां और बहादुरखांके(२)साथ पानीपतको भेज दिया

(१) यह स्थान सरहन्द और करनालके बीचमें है।

(२) ये दोनों पठान हेमूके बड़े अमीरोंमेंसे थे।

जो दिल्लीसे ३० कोस है, मगर अलीकुलीखां वगैरह बहादुरो अफसरोंने उमंगपनसे आगे बढ़कर वह तोपखाना उनसे छीन लिया।

हेमूइस खबरके सुनतेही दिल्लीसे चढ़ा। उसके साथ ५०० जंगी हाथी और ३०००० लड़ाके पठान और राजपूत सवार थे जो बहुतसी लड़ाइयोंमें जीत पा चुके थे। हाथी भी हथियारोंसे सजे हुए थे। इन सवारों और हाथियोंकी ३ फौजें थीं। बीचकी फौजमें तो हेमू आप था। दहिने हाथकी फौजमें शादीखां काकड़ और और बायें हाथकी फौजमें हेमूका भानजा रमिया(१) था जो बड़ा बहादुर और वीर था।

२ मुहर्रम सन् ९६४ मगसर सुदी ३को हेमू पानीपत पहुंचा। अली कुलीखां वगैरह बादशाहके पास खबर भेजकर उससे लड़नेको तैयार हुए। हेमू बादशाहकी दूर देखकर इन लोगों पर टूट पड़ा कि जल्दीसे हराकर आगे बढ़े।

बादशाही फौजकी दाहिनी और बायीं अनी तो हेमूसे शिकस्त खाकर भाग निकली जिसके अफसर सिकन्दरखां और अबुल्लाखां थे। मगर खानखानाके अमीर मुहम्मद कासिम नेशापुरी, हुसेन कुली, शाह कुली महरम और लालखां बदखशी जो बीचकी फौजमें अली कुलीखांके पास थे घोड़ोंसे उतरे और तलवारें निकालकर पैदलही दुश्मनोंपर दौड़ पड़े। हेमू हवाई नामक हाथी पर सवार था। कहींसे एक तीर आकर उसकी आंखमें लगा और सिरके पार निकल गया। यह देखकर उसकी फौज भागने लगी। उस वक्त शाह कुलीखां महरम कई बादमियोंके साथ हेमूके हाथीके पास आ निकला और हाथी लेनेके वास्ते महावतको मारने लगा। उसने जान बचानेको अपने मालिकका पता बता दिया। शाहकुली खुश होकर उसी दम उस हाथीको अलग ले गया।

यह फतह बादशाहके भाग्यबलसे सहजमें हो गयी। डेढ़ हजार

(१) किसी किसी प्रतिमें इसको रसिया भी लिखा है।

हाथी लूटमें आये। धन मालकी कुछ गिनती नहीं थी। ५००० आदमी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये।

बादशाह उसी दिन करनालसे चलकर पानीपतसे ५ कोस पर ठहरेही थे कि वहां हैमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानेकी खबर पहुंची। उसी वक्त 'लशकर' सजाकर वे चल दिये। बैराम खां आगे होकर फौजोंको देख भाल करते और बहादुरोंका दिल बढ़ाते जाते थे। जब पानीपतके पास पहुंचे तब फतहकी खबरें आने लगीं और शाह कुली महरम हैमूको पकड़ कर हुजूरमें लाया।

बादशाहने हैमूसे बहुतसा जवाब पूछा। मगर वह तो कुछ नही बोला। तब बैरामखाने अर्जकी कि हजरत इस फसादीको(१) अपने हाथसे मारकर गजाका(२) 'सवाब' (काफरोंके मारने-पुण्य(३) हासिल करें।"

बादशाह छोटी उमरमें थे, तोभी बड़ी गम्भीरतासे कहने लगे कि हमारी हिम्मत एक बन्धे हुए कैदीको मारनेकी इजाजत नही देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोंका कुछ सवाब नही मिलता होगा। मैं तो इसको उसी दिन टुकड़े टुकड़े कर चुका हूं कि जिस दिन बड़े हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आदमीकी सब अङ्ग अलग अलग करके तसवीर बनायी थी। बड़े

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोंने फसादीकी जगह काफिर लिखा है, मगर हिन्दूके वास्ते काफिर शब्द अकबरनामेमें कहीं नहीं आया है। यह मिहरबानी मुसलमान ग्रन्थकारोंके खिलाफ न जाने कैसे शेख अबुलफजलसे बन आयी है। बादशाहकी मरजीसे या अपनी भलमनसीसे।

(२) काफरोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं।

(३) मुसलमानी मतमें काफरोंके मारने या उनके हाथसे मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है। जो मुसलमान न हो उसको मुसलमान लोग काफर कहते हैं।

हजरतके पास रहने वालोंमेंसे एक शख्सके पूछने पर मेरी जबानसे यह भी निकल गया था कि यह तसवीर(१) हेमूकी है।

निदान बादशाहके राजी न होने पर बैरामखां खानखाना नेही वह फरजी सवाब कमानेके लिये हेमूको तलवारसे मार डाला। उसका सिर काबुलको और धड़ दिल्लीको भेजकर लोगोंको डरानेके लिये सूलीपर चढ़ाया गया।

अगर बादशाह खुलकर काम करते होते या कोई होसिले वाला अमीर उस दरगाहमें होता और हेमूको कैद रखकर बादशाहकी बंदगीमें लगाता तो बेशक वह बहुत अच्छा नौकर होता। हिम्मत वाला तो था ही और फिर जब ऐसे बादशाहकी तालीम पाता तो कौन बड़े काम होते जो उससे बन नहीं पड़ते।

हेमू बड़ा भाग्य शाली था। २२लड़ाइयां जीत चुका था। उसके इतने अधिक सिपाहीथे जितनेकि और किसीके नहीं थे,ऐसा बड़ा तोप खानाथा, कि जिसके बराबर इसके सिवाय और कहीं नहीं रहा होगा औरइतने अधिक हाथी थे जो उस वक्तके किसी बादशाहको भी मयस्सर नहीं थे। मौलाना शरफुद्दीन(२)यजदीने बड़ी शेखीसे जफरनामेमें लिखा है कि अमीर तैमूरको हिन्दुस्थानकी बड़ी लड़ाईमें १२० हाथी हाथ लगे थे। इससे होशयार तवारीख जानने वाले जान सकते है कि उस जमानेमें जो हिन्दुस्थानका बादशाह था उससे यह हेमू कितना बढ़ा हुआ था कि जिसके १५०० हाथी बादशाही नौकरोंके हाथ आये थे, दूसरे धन मालका तो क्या

(१) हुमायूं बादशाह जब सिकन्दरसूर पर फतह पाकर दिल्लीमें आये थे तब उनके हुक्मसे अकबर बादशाह तसवीर खानेमें जा कर उस्ताद मीर सय्यद अली और ख्वाजा अब्दुलसमदसे तसवीर बनाना सीखा करते थे। उन्हीं दिनोंमें उन्होंने वह तसवीर बनायी थी।

(२) यह ईरानके शहर यज्दका रहने वाला था। इसने अमीर तैमूरकी तवारीख लिखी है जिसका नाम जफरनामा है।

गुमार हो।

बादशाहने इस फतहके इनाममें अलीकुलीखांको खानजमांका सिकन्दरखांको खान आलमका, अबुलमुहम्मद उजबकको शुजाअत खांका और मौलाना पीर मुहम्मदको नासिरुलमुल्कका खिताब दिया।

उस वक्त शेरखांका गुलाम हाजीखां अलवरमें था और हेमूकी औरत(१) हेमूका बाप और उसका सब माल असबाब भी उसी सरकारमें (जिलेमें)था। बादशाह और खानखानाने नासिरुलमुल्कको हाजीखां पर भेजा। हाजीखां पहलेही डरकर भाग गया था। इसी बादशाही फौज अलवर और तमाम मेवातमें अमल करके देवती माचेडीको(२) गयी जहां हेमूका घर था।

यह मज़बूत जगह बहुत बड़ी लड़ाईके पीछे हाथ आयी। हेमूका बाप पकड़ा जाकर नासिरुलमुल्कके पास लाया गया। उससे मुसलमान होनेको कहा गया तो उस बुड्ढे ने जवाब दिया कि मैं ८० वर्षसे इस धर्ममें हूं और अपने खुदाकी पूजता हूं। अब क्योंसे अपना धर्म छोड़ दूं और सिर्फ जानके डरसे बिना समझे तुम्हारे मतमें आ जाऊं। मौलाना पीर मुहम्मदने उसको इस बातका जवाब तलवारकी जबानसे दिया अर्थात् उसको मार डाला। आगे बहुतसी लूट और ५० हाथी लेकर बादशाहके पास आया।

बादशाह अदेली वगैरा पठानोंके ऊपर पूर्वको जाना चाहते थे कि सिकन्दर सूरके लाहोर पर आनेकी खबर सुनकर ४ सफर सोमवार पौष सुदी ५को दिल्लीसे पञ्जाबकी तरफ रवाने हुए।

---

(१) यह रानी कहलाती थी। लड़ाईमें साथ थी। फिर अपने घर आ गयी। मुन्तखिबउलतवारीखमें लिखा है कि हेमूकी रानी खजानेके हाथी लेकर बीजवाडेके पहाड़में चली गयी। वहां वर्षों तक मुसाफिरोंको रास्तेमें मोहरें और सोनेकी ईटें मिला करती थीं। बीजवाडा अलवरके राज्यमें है।

(२) देवती माचेडी भी अलवरके राज्यमें दो गांव हैं।

रास्तेमें लाहौरसे खबर आयी कि दे महीनेकी छठी और सफरकी १४ वीं गुरुवार माघ बदी १ (१) संवत १६१३को खानखानाके घरमें जमालखां(२) मेवातीकी बेटीसे लडका हुआ है। बादशाहने उसका नाम अबदुर्रहीम रखा और इस खुशीकी खबरसे अपनी फतहका शकुन लिया। बैरामखाने बडी मजलिस की और ज्योतिषियोंने जन्मपत्रीका शुभ फल लिखकर भेजा।

हुमायूं बादशाह दिल्लीमें आनेके पीछे जमींदारोंकी तसल्लीके लिये उनकी लडकियोंकी शादी अपने अमीरोंसे करते(३) थे। इसन

(१) परन्तु अबदुल रहीमखां खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों दोनोंमें २० दिनका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी हैं और पचाङ्गसे दोनोंही सही है। पर जन्म तो दो बेर नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन सही नहीं है इसकी व्यवस्था हम आगे करेंगे।

(२) जमालखां, हसनखां मेवातीके भाई अलावलखांका बेटा था। हसनखांका राज्य कई पीढियोंसे अलवरमें था। वह १०००० सवारोंसे महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लडा था और उस लडाईमें काम आया था। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें है।

(३) मआसिरुलउमरामें लिखा है कि जब हुमायूं बादशाह ईरानमें गये थे, तब वहांके शाह तहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमींदारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे हैं जिसमें पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही तुम्हारे हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना, एक तो पठानोंको जहांतक बने हुकूमतसे अलग करके व्योपारमें लगाना और दूसरे वहांके राजाओं और जमींदारोंसे रिश्तेदारी करना कि जिससे तुम्हारा राज्य बना रहे।

था मेवातो हिन्दुस्थानके बड़े जागीरदारोंमेंसे था। उसके चचेरे भाई जमालखांकी २ लड़कियां थीं। बड़ीसे तो बादशाहने निकाह (विवाह) किया था और छोटीसे बैरामखांका करा दिया था। बैरामखां जब बादशाहके साथ हैमूसे लड़नेको आये थे तब बेगमको लाहोरमें छोड़ आये थे।

बादशाह जब जालन्धरमें पहुंचे तब सिकन्दर फिर सवालक पहाड़में चला गया। बादशाह भी उधर कूच करके कसबे धमरीमें(१) पहुंचे और वहांसे भी आगे बढ़कर सिकन्दरको मानकोट किलेमें(२) जा घेरा।

कन्धारमें खानखानांकी तरफसे शाह मुहम्मद कंधारी रहता था और जमीन दावर बहादुरखांको सौंपा हुआ था। उसने कंधारके लालचसे शाह मुहम्मद पर चढ़ाई की। शाह मुहम्मदने किला सजाया और हिन्दुस्थानको दूर देखकर शाह ईरानको अर्जी लिखी कि हुमायूं बादशाहने यह बात ठहरायी थी कि जब हिन्दुस्तान फतह हो जायगा तब कन्धार शाह ईरानके नौकरोंको सौंप दिया जायगा। अब आप कुछ फौज भेजें तो वह इस नमकहरामको भी सजा दे और कन्धार भी मुझसे ले ले। शाहने ५ हजार तुर्कमान सीस्तां, फराह, और गर्मसीरके जागीरदारोंमेंसे भेजे। उन्होंने अचानक बहादुरखां पर हमला किया। बड़ी लड़ाई हुई और बहादुरखां जमीन दावरको छोड़ भागा, मगर शाह मुहम्मदने तुर्कमानोंको कन्धार सौंपा और जियाफत दे दिलासा बातोंही बातोंमें सूखा टाला दिया।

बहादुरखां इस तरह जमीन दावर खोकर बादशाहके पास

(१) धमरीका नाम पीछेसे जहांगीर बादशाहने नूरपुर रख दिया था और यह जालन्धरके जिलेमें कांगड़ेके पास है। यहांका राजा अब गगन सिंह है।

(२) मानकोटका किला सवालक पहाड़में सलीम शाहने बनाया था जब कि गक्खड़ोंके ऊपर चढ़कर वह गया था।

आया और बादशाहने सुलतानको उसकी जागीरमें देकर मानकोटके ऐन मोरचे पर रख दिया।

इसी सन ९६४में बैरामखाने बादशाहकी शादी मिरजा अब्दुल्लाकी बेटीसे की। पहले तो वे इस काममें राजी नहीं थे, क्योंकि मिरजा अबदुल्लाकी बहन मिरजाकामराके घरमें थी और इसलिये उसको कामरांके तरफदारोंमेंसे समझते थे। मगर फिर नासिर-उलमुल्कके समझाने पर आगे होकर बड़ी धूमधामसे शादी करादी।

बङ्गालका हाकिम मुहम्मदखां पहले अदलीके हाथसे मारा गया था। अब उसके बेटे जलालउद्दीनने अदली पर चढ़ाई की। अदली ४ वर्षसे कुछ ऊपर हुकूमत करनेके पीछे उसके मुकाबिलेमें मारा गया। सिकन्दर सूरने जब यह बात सुनी तब उधर जानेके वास्ते बहुतसा रुपया और माल खानखानाके वकील नासिर उलमुल्कसे भेजा। खानखानाने बादशाहसे उसकी सिफारिश की। बादशाहने खानखानाकी खातिरसे उसके कसूर माफ करके बिहार जानेका रास्ता दे दिया। तब वह २७ रमजान शनिवार सन ९६४ सावन बदी १४ सम्वत१६१४को मानकोटकी कुंजिया और हाथियोंकी भेंट बादशाहके पास भेजकर बिहारको चला गया और बादशाह ६ महीने पीछे २ सव्वाल सावन सुदी ४को सवालक यहांसे लाहोर रवाने हुए।

खानखाना मानकोटके घेरेमें बीमार हो गये थे और कुछ फोड़े भी निकल आये थे जिससे घोड़े पर सवार नहीं हो सकते थे और बादशाह उन दिनोंमें हाथी ज्यादा लड़ाया करते थे। एक दिन दो बादशाही हाथी लड़ते लड़ते खानखानाके डेरे तक चले आये। उनके पीछे तमाशाई लोगोंकी भीड़ और चीख पुकार होती आती थी। उस पर खानखानाके दिलमें यह वहम खड़ा हो गया कि यह बादशाहके हुक्मसे हुआ है और कुछ बदमाशोंने इसमें हाथ मिला दी। तब खानखानाने अपने भेद जानने वाले एक आदमीको

बादशाहकी धाय, माहम अनगाके पास भेजकर कहलाया कि मैं अपना कुछ कसूर तो नहीं जानता हूं और खैरख्वाहीके खिलाफ कोई काम भी नहीं करता हूं। फिर कैसे चुगलखोरोंने मुझे गुनहगार करके बादशाहकी इतनी बड़ी नाखिशखानी करा दी है कि मस्त हाथी मेरी चादर (कनात) पर छोड़े जाते हैं। माहम अनगाने तसल्लीकी बातें कहलाकर खानखानाकी दिलजमई कर दी।

जब बादशाह ११ सव्वाल सावन सुदी १२को लाहोरमें पहुंचे तब खानखाना शमसुद्दीन मुहम्मदखां अतकासे(१) (जीजी(२) अनगाके खाविन्द) गिला करके कहने लगे कि मैं कभी कभी बादशाहको तुम्हारी चुगली और चाटीसे खिंचा हुआ पाता हूं। मैंने क्या किया है और तुम क्यों मेरे खूनके प्यासे होकर बादशाहका मिजाज मुझसे फिराते हो और मेरे प्राण लेना चाहते हो।

अतका इसबातसे डरकर कई आदमियों और अपने भाई बंदोंको खानखानाके पास लेगया और कौल कसम करके उनकी तसल्ली कर आया।

फिर बैरामखाने बादशाही हाथी अपने भरोसेके अमीरोंको बांट दिये और बादशाहके कुछ खासा हाथी भी इसी तरह आदमियोंको सौंपनेके बहानेसे अलग कर डाले। बादशाह चुपचाप देखते रहे।

मनकोट(३) जमींदार तखतमल हुमायूं बादशाहके मरने पर सिकन्दर सूरसे जा मिला था। और जब मानकोटमें सिकन्दरका काम बिगड़ता देखा तब जमींदारोंकेसे होले बहाने करके बादशाहके लशकरमें आ गया था। बैरामखाने उसको मारकर उसके भाई बखतमलको जो खैरख्वाहीमें हाजिर था उसकी जगह बैठा

(१) (धाऊ) धाय पति।

(२) इसने भी अकबर बादशाहको दूध पिलाया था।

(३) धमरीके पासका एक परगना कांगड़ेकी तलहटीमें।

दिया। यह बात भी बादशाहके दिलमें बुरी लगी, क्योंकि जब यह खुद आ गया था और चाहे जैसेही आया हो तब इस सजाके लायक नहीं था।

बादशाह ४ महीने १४ दिन लाहोरमें रहकर १५ सफर मंगल वार सन् ९६५पौष बदी २ को दिल्लीकी तरफ रवाने हुए, जब जालन्धरमें पहुंचे तब खानखानाकी शादी सलीमा(१) सुलतानासे हुई। हुमायूं बादशाहने यह अपनी भानजी बैरामखांको देनी करके हिन्दुस्तान फतह होनेके पीछे निकाह कर देनेका इकरार किया था। सो अब बैरामखांने बादशाहसे अर्ज करायी। बेगमोंने भी सिफारिश की। आखिर माहम अगाकी कोशिशसे विवाह और गौना एक सप्ताहमें हो गया।

सलीमा सुलताना बेगमके बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। उसका बाप अलाउद्दीन और दादा ख्वाजाहसन तूरान देशके पूज्य पुरुषोंमेंसे था। इसको तूरानके बादशाह सुलतान महमूद(२) मिरजाकी बेटी दी गयी थी जो बैरामखांके परदादा अली शकरबेगकी लड़की यशा बेगमसे हुई थी। और इसी सम्बन्धसे बाबर बादशाहने भी अपनी बेटी गुलबर्ग बेगमकी शादी ख्वाजा हसनके पोते नूरुद्दीनसे की थी। सलीमा सुलताना गुलबर्ग बेगमकी बेटी थी। वह पुरानी रिश्तेदारी जो यशा बेगमके व्याहे जानेसे बैरामखांके और बादशाहके बुजर्गोंमें हुई थी वह अब यहां सलीमा सुलतानके साथ विवाह होनेमें खानखानाके काम आयी।

बादशाह लुधियानेसे हिसारमें आये। खानखानाभी साथ थे। यहां नासिरउलमुल्क और शेखगदाइसे कुछ झगड़ा हो गया। बैराम

(१) सलीमा सुलताना बहुत सुन्दर सुघड़ और लिखी पढ़ी थी। काव्य रचना भी खूब करती थी। बैरामखांके पीछे बादशाहने उससे निकाह कर लिया।

(२) बाबर बादशाहका काका था।

खांने शेखकी तरफदारी की जिससे नासिरउलमुल्क बुरा मान कर कई दिनों तक दरबारमें नहीं आया। कुछ दिनों पीछे कई भले आदमियोंने बीचमें पडकर मेल करा दिया(१)।

५ उरदी बहिश्त २५ जमादिउस्सानी शुक्रवार सन ६६५ वैशाख वदी १२ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुए।

नासिरउलमुल्क कुल मुख्तार था। मुल्क और मालके सब काम उसके ऊपर छोड़े हुए थे। वह खैरख्वाहीसे काम करनेमें वैरामखांका भी मुलाहिजा नहीं रखता था। वैरामखां उससे दिलमें कुढते तो बहुत थे, लेकिन मौका देखते थे।

बुर्जअली(२) और मुसाहिबवेग(३) दो बडे बदमाश थे

(१) ये दोनों वैरामखांके मुसाहिब थे। नासिरउलमुल्कको नाराज करना मानो वैरामखांकी बुद्धि विपरीत होनेका एक चिन्ह था, क्योंकि उनकी तरफसे सारा काम बादशाहीका वही करता था और अब वह बादशाहके पक्षमें हो गया। (मुन्तखिबउत्तवारीख)।

(२) बुर्जअली अवधके हाकिम अलीकुलीखांका नोकर था। नासिरउल मुल्क अलीकुलीखां पर फौज भेजा चाहता था, क्योंकि उसका चाल चलन ठीक नहीं था, वैरामखां अलीकुलीखांकी रुआ-तिरसे टालते थे। इसीलिये अलीकुलीखांने बुर्जअलीको वैरामखांके पास भेजा था। वह एक दिन नासिरउलमुल्कको बुरा भला कहने लगा जिसपर दिल्लीके किलेपरसे गिराकर मार दिया गया।

(३) मुसाहिबवेग पहले तो हुमायूं बादशाहकी सेवामें रहता था। फिर अलीकुलीखांके पास रहने लगा। इस वक्त दिल्लीमें आ गया था। इसका भी चलन ठीक नहीं था, इसलिये वैरामखांने कैद करके मक्केको भेज दिया, मगर नासिरउलमुल्कने खानखानाके २ चिट्ठियां लिखाकर डलवायीं एकमें मारने और दूसरेमें छोडनेका हुक्म था। मारनेकी चिट्ठी निकली और नासिरउलमुल्कके आदमियोंने जाकर उसको दिल्लीसे कुछ दूर रास्तेमें मार डाला।

जिनको नासिरउलमुल्कने बैरामखाकी मरजीके खिलाफ मरवा डाला था।

इधर बैरामखा और मुनअम(१)खाने मिलकर बादशाहके अनचिन्तक जलालुद्दीन महमूदको(२)जो इन लोगोंकी खुशामद नहीं करता था कतल करा दिया। इससे भी बादशाहका दिल बहुत जला, मगर गुस्सेको पी गये।

१७ आबान सन ३ इलाही १७ मुहर्रम सन ९६६ इतवार मगसर बदी ४ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीसे आगरेमें आये। यहा शाह मुहम्मद जो बैरामखाकी तरफसे कन्धारमें हाकिम था कन्धारका किला शाह ईरानको सौंपकर बादशाहके पास हाजिर हुआ।

यह पहले लिखा जा चुका है कि शाह मुहम्मदने इकरार करके भी कन्धार शाह ईरानको नहीं सौंपा था। इसलिये शाहने अपने भतीजे सुलतान हुसैन मिरजाके(३) साथ कन्धार पर फौज भेजी। वह शाह मुहम्मदसे हारकर भाग गयी। तब दूसरी फौज आयी। शाह मुहम्मदने बादशाहको अर्जी भेजी। बादशाहने उसको हुक्म लिखा कि बड़े हजरत फरमाया करते थे कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाहको दे देंगे। यह अच्छी बात न हुई कि उसने उन लोगोंसे लड़कर यहांतक बात

(१) मुनअमखा काबुलका हाकिम था।

(२) जलालुद्दीन महमूद गजनीनका हाकिम था। उससे मुनअमखा और बैरामखा दोनों अदावत रखते थे। इस वास्ते वह अपने बचावके लिये हिन्दुस्थानको आता था। मगर मुनअमखाने पकड़वा मंगाया। इधरसे बैरामखाने भी उसके मारनेका फरमान भेज दिया। इस तरह वह अपने भाई मसऊद समेत काबुलमें मारा गया।

(३) सुलतान हुसैन मिरजा शाह तुहमास्पके भाई बहराम मिरजाका बेटा था।

बढ़ायी, अब मनासिब है कि वह किला उनके नौकरोंको सौंप कर और माफी माग कर दरगाहमें या जावे।

इस हुक्मके पहुचते ही शाह मुहम्मद सुलतान हुसैन मिरजाको किला सौंपकर चला आया।

कुछ दिनों पीछे नासिरलमुल्क बीमार हुआ और खान-खाना उसके देखनेको गये तो दरबानने बेसमझीसे कहा कि मैं खबर करता हूं। इसपर बैराम खा बहुत झलाये, नासिलमुल्क खबर पाकर दौड़ा आया और बहुत निहोरे करके खानखानाको अन्दर ले गया तो भी उसके साथ थोड़े से ही आदमी जाने पाये जिससे वे नाक भौं चढ़ाये हुए बाहर आये, फिर शेख गदाई (१) वगैरहने और उनको भड़काया तो उन्होंने दो तीन दिन पीछे ख्वाजा अमीनुद्दीन वगैरह अपने नौकरोंको नासिरमुल्कके पास भेजकर कहलाया कि तू जब कन्धारमें ह मारे पास आया था तो एक गरीब विद्यार्थी था, हमने तुझको बढ़ाकर बड़े दरजेपर पहु चाया। सुलासे अमीर बनाया, मगर तू ओछे पेटका आदमी था, जल्दीसे अफर गया और हमे तुझसे ऐसे ऐसे फसाद होनेका डर है कि जिनका इलाज हम मुशकिलसे कर सकेंगे। इसलिये यह बेहतर है कि तू कुछ दिनोंके लिये अपने कवलमें पाव समेटकर बैठ जा और नक्कारा निशान वगैर अपनी अमीरी और घमण्डके सामान सौंप दे तथा अपना मिजाज दुरुस्त कर ले जिसमें तेरा और दुनियाका फायदा है। फिर जैसा हम तेरे वास्ते अच्छा समझेंगे करेंगे।

१। शेख गदाई शेख जमालीका बेटा दिल्लीका रहनेवाला था। जब बैराम खा गुजरातमें गये थे तो यह वहा था और इसने बैराम खाके साथ अच्छा सलूक किया था जिसके पलटेमें बैराम खांने इसको सदर (दानाध्यक्ष) का ओहदा सन् ९६३ सवत १६१३ में दिया था।

नासिरुलमुल्क खुशीसे सरदारोंका सब सामान उनको सौंप कर घरमें बैठ रहा तो भी खानखानाने चगत्ताखोरोंके कहनेसे कुछ आदमियोंके साथ उसको बयानेके (१) किलेमें भेज दिया जहांसे वह मक्के जानेकी इजाजत लेकर गुजरातको गया। जब राधनपुरमें (२) पहुंचा तो फतह खां बलोचने उसको बड़े आदर सत्कारसे कुछ दिनोंके लिये अपने पास रख लिया।

इतनेमें मिरजा शर्फुद्दीन (३) हुसैन और अदहमखांकी चिट्ठियां नासिरुलमुल्कको पहुंचीं जिनमें लिखा था कि जहां पहुंचा हो वहीं ठहर जावे और देखता रहे कि क्या होता है।

नासिरुलमुल्क, राधनपुरसे लौटकर रणथम्भोरके (४) पास भायनके घाटेमें आ रहा।

१। बयाना अब भरतपुरके राज्यमें है।

२। राधनपुर गुजरातमें है। उस वक्त तो गुजरातके बादशाहका वहां अमल था फिर सवत १६२८में अकबर बादशाहका हुआ। सवत १७७३में नवाब मुहम्मद शेरको जागीरमें मिला जबसे उसकी औलादके कबजेमें है और पालनपुरमें एजण्टीके नीचे है।

३। सन् ९६३ में जब बादशाह जालन्धरमें थे तब यह मिरजा शर्फुद्दीनहुसैन काशगरके बादशाह अबदुर्रशीदखांका खत लेकर आया था। इसकी मा तूरानके बादशाह सुलतान अबूसईदकी नवासी थी जिससे बादशाहने उसको बहुत खातिर और इज्जतसे अपने पास रख लिया था।

४ रणथम्भोर वही किला है जहां हम्मीर चौहान हुआ है जिसका हम्मीरहठ मशहूर है। उससे सवत् १३५८ में अलाउद्दीन खिलजीने लिया। फिर सवत् १५७२ तक मालवेके बादशाहोंके पास रहा। सुलतान महमूद मालवीसे चित्तौड़के सांगाने सवत् १५७२में छीना। उनकी तरफसे बूंदीके र

बैरामखांने यह सुनकर शाहकुलोखां महरम, और खुर्रमखांको नासिरुलमुल्कके पकडनेके लिये भेजा। जब ये वहां पहुंचे तो वह दिन भर तो इनसे लडा और रातको थोडे आदमियों सहित निकल गया।

इस तरह बैरामखांने बेपरवाई और चुगल खोरोंके कहनेसे अपने ऐसे कामके आदमोंको दूर करके अपने पाव पर आप कुल्हाडा मारा।

बादशाह बैरामखांके इस कामका बदला भी खुदाके ऊपर छोडकर कुछ नहीं बोले क्योंकि वे सब कारखाना सलतनतका बैरामखांको सौंपकर तकदीरका तमाशा देखते थे।

बैरामखांने अब हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको अपना वकील बनाया, मगर असलमें वकील शेख गदाई था, क्योंकि बैरामखां कोई काम बगैर उसकी सलाहसे नहीं करते थे।

बादशाहके दिलमें खानखानाकी ये जबरदस्तियां खटकती तो बहुत थीं, लेकिन वे सुनाहिजेके मारे कुछ नहीं बोलते थे। क्योंकि हुमायूं बादशाह उनको अतालीक कहकर अकसर खान बाबाके नामसे पुकारते थे और वही लिहाज बादशाहको भी था। वे शेर शिकारमें लगे हुए चुपचाप सब बातोंको देखा करते थे। उधर बलोबेग, जुनकदर और शेखगदाई कमबो वगैरह बैरमखांको बहकाते थे और इधर माहम अङ्गा, अदहमखां (१) और मिरजा शर्फुद्दीन, बादशाहको बैरमखां और उनके खुशामदी मुसाहिबोंका सजा देनेकी सलाह देते थे।

सुरजन हाडाके पास था। सुरजनसे अकबर बादशाहने सवत् १६२६ में लिया। स० १८१५ में दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर किलेदारोंने जयपुरके महाराजा माधोसिंहको सौंप दिया जबसे अबतक जयपुरवालोंके कबजेमें है।

१। माहम अङ्गाका बेटा।

आखिर जब बादशाहने इतनी घमा करते करते और बाबा बाबा कहते कहते भी खानखानाको रस्ते पर आते न देखा तो शिकारके बहानेसे बयानेमें जाकर उनके दबावसे निकल जानेकी सलाह की माहमअङ्गाने यह भेद दिल्लीके हाकिम शहाबउद्दीन खांको लिख भेजा।

बादशाह ८ फरवरदीन सन ४ तारीख २० जमादिउल अव्वल सोमवार सन् ९६६ (चैत बदी ७ संवत् १६१६) को शिकारके वास्ते कोलको तरफ जानेका नाम लेकर यमुनासे उतरे और मिरजा कामरांके बेटे मिरजा अबुल कासिमको (१) भी इस शिकारमें शामिल रखनेके लिये बुलवा लिया जो बैरामखांके पास रहता था। यह सावधानी इस मतलबसे की गयी थी कि इस आंखके अन्धे और गांठके पूरेके हाथमें यह लकड़ी भी न रहे।

सिकन्दरेमें पहुंच कर माहम अङ्गाने यह भेद अपने बेटे अदहमखांके ससुर (२) मुहम्मद बाकीसे कहा। मगर वह बैरामखांके डरसे साथ भी न हुआ और बैरामखांको इस हालकी खबर भी कर दी। बैरामखां ऐसी बातें पहले भी सुन चुके थे। इस लिये उन्होंने कुछ परवा न की।

बादशाह शिकार खेलते हुए कोलमें (३) पहुंचे वहांसे अपनी मांकी कुशल पूछनेके लिये जो उन दिनों कुछ बीमार हो

१। इस शाहजादेको बैरामखां हमेशा अपने पास रखते थे और बहुत लिहाज करते थे।

२। यह मिरजा हिन्दालका परवानची [दूत] था और इसकी बेटीसे बादशाहने पिछले साल ही अदहमखांकी शादी करा दी थी।

३। कोलको अब अलीगढ कहते हैं।

थी ,दिल्लीको चल दिये। खुरजेमें (१) शहाबुद्दीन अहमदखां, अपने सब भाइ बन्दोंके साथ पेशवाइके लिये हाजिर था। बादशाह उस पर मेहरबान, होकर १७ फरवरदीन २८ जमादि उस्सानी मङ्गलवार (चैत बदो ३०) को दिल्लीमें दाखिल हुए और सब जगह फरमान लिख भेजे कि बैरामखां उलटा चलने लगा है जिससे हम उसको अपनी नजरोंसे गिराकर दिल्लीमें चले आते हैं। जो अपना भला चाहता हो वह यहां हाजिर हो जावे।

उस वक्त शमशुद्दीनखां "अतका" बहीरेमें (२) और मुनअम खां काबुलमें था। इन दोनोंके नाम भी हाजिर होनेके हुक्म पहुंचे।

जब शमशुद्दीनखां आया तो बैरामखांका नक्कारा निशान और तुमन तौग उसको इनायत हुआ और पंजाबकी सूबेदारी भी दी गयी।

शाहबुद्दीनखांने दिल्लोका किला सजाया और बादशाहको सला-हमें शामिल हुआ।

बैरामखांसे बादशाहका मिजाज बदल जानेकी खबर थोडे दिनोंमें सब जगह फैल गयी और लोग बैरमखांको छोड छोड कर बादशाहके पास आने लगे। सबसे पहले कयाखां गंग आया था जो बैरामखांके बडे अमीरोंमेंसे था।

जो आता था उसको माहम अनगा और शहाबुद्दीन अहमद खांकी सफारिश और मनसब और खिताब दिया जाता था।

बैरामखां पहले तो अपने जोर और दबावके घमण्डमें भूल कर इस बातको खेल ही समझते रहे। पर जब बादशाहके फरमानोंके पहुंचने पर अपने निज आदमियोंको भी पाससे खिसकते

१। दिल्ली और अलीगढके बीचका एक शहर।

२। पंजाबका एक शहर जो लाहौरके परे है।

हुए देखा तो आखें खुलीं और मिरजा अबुलकासिमको ढूंढ़ा तो नहीं पाया। तब तो बहुत घबराये और तरसून मुहम्मदखां हाजी मुहम्मद खां और ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद [ख्वाजाजहां] को बादशाहको खिदमतमें माफी मांगनेके लिये भेजा, मगर बादशाहने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नहीं जाने दिया।

बैरामखांने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड़ नहीं हुई है, जल्दीसे पहुंच कर बन्दोबस्त कर लूं और कभी इसको बेअदबी समझकर माफी मांगनेके वास्ते जाना मुनासिब समझा और आखिर इसी मनशासे जानेकी तय्यारी की, मगर बादशाहके सलाहकारों (मन्त्रियों) को उनका आना भी मंजूर नहीं था। कुछ लोगोंने कहा कि अब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरको चले जावें और जब लाहोरमें आवे तो काबुलको सिधारें। उससे न मिलें।

बहुतोंने कहा कि कहीं नहीं जाना चाहिये। अगर वह लड़ना चाहे तो यहीं रह कर उससे लड़ें। बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके लड़नेके लिये वहीं पांव जमाये और तरसून मुहम्मद खां और हबीबुल्लहको यह कह कर भेजा कि बैरामखांको किसी तरह न आने देना। हम अभी उसे नहीं देखेंगे।

बैरामखांने जब इस तरह दिल्ली जानेका रास्ता बन्द पाया और लड़ाईके विचारसे जाना उचित न देखा तो उनको बड़ी चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। वलीबेग और शेख गदाई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नहीं है, जल्दीसे चल कर अपना काम कर लें परन्तु खानखाना इस कुकर्मको अपना धर्म नहीं समझकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बादशाहोंका काम नहीं चलेगा, इसलिये नम्रतापूर्वक बादशाहको मना लेनेका उपाय करना चाहिये। कभी यह विचार करते थे कि अभी तो बहादुर खां और उसके लश्करसे जा मिलूं जो मालवे जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊं। फिर

जैसा अवसर देखूं वैसा करूं । कभी यह सोचते थे कि आगरा छोड़ कर सम्भलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास होकर पठानोंके देशमें चला जाऊं और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करूं । कभी यह सूझती थी कि विरक्त होकर मक्के जानेका तो विचार किया करता था सो अब उसका समय आ गया है क्योंके बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं। इसलिये बादशाहसे हज करनेकी आज्ञा मांगू ।इसमें यह भी आशा थी कि कदाचित् वे दयालुतासे अपने पास बुला लेंगे।

निदान यही विचार स्थिर करके बहादुरखांको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहकी खिदमतमें रवाना कर दिया, इस तरहसे अपने आदमियोंके वहांसे भेजनेमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हितू हों तो ऐसे लोगोंका बादशाही लशकरमें रहना अच्छा है और जो वे भी जाना चाहते हों तो इनको साथ रखनेमें फायदा नहीं, विदा कर देनेमें नेकनामी भी है।

फिर मक्के जानेका विचार प्रकट करके सिकन्दर पठानके बेटे और गाजीखां तवरको बादशाही मुल्कोंमें फसाद करनेके लिये भेजा और इसी मतलबको पोशीदा लिखावटें भी इधर उधर रवाना करके अलवरको कूच किया कि जिससे वहांसे बालबच्चोंको लेकर पंजाबमें चले जावें ।

बादशाहको जब यह हाल मालूम हुआ तो खानखानाको लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे कि जो इस बातके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको विध्वंस करनेके वास्ते

१। रुहेलखण्डका एक पुराना शहर जो मुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें शम्भलग्राम लिखा है। कहते हैं कि कल्कीअवतार इसी जगहमें होगा।

२। सीपरी गवालियरके पास मालवेके रास्तेमें है।

बाहर निकाले हो और तुमने सिकन्दरके बेटे और गाजीखांको आज्ञा दी है कि जाकर राज्यमें उपद्रव करें। महदीकासिम खांको खत लिख कर उसके दीवान मुबारकके हाथमें भेजा है कि मैं लाहोरको आता हूं, किला किसी दूसरेको न देना। तातार खां पचभइयेको भी ऐसा ही स देशा भेजा है और आप अलवरको चले हो कि वहांसे लाहोरको कूच कर जाओ। हमको यह भरोसा है कि तुमने अपनी समझसे तो इनमेंसे कोई भी काम नहीं किया है। लोगोंने बहकाकर यहांतक बात बढ़ा दी है परन्तु तुम ही कहो कि क्या ४०(१) वर्षतक स्वामिभक्तिसे सेवा करने, प्रतिष्ठासे परमपदको पहुंचने, और जगतमें कीर्त्ति पानेके पीछे भी इस शेषावस्थामें स्वामिद्रोही बनोगे और अपने मिलनेवालोंसे भी लज्जा नहीं करते। तुमने हमको इतने कष्ट दिये हैं तो भी हम तुम्हारा भला चाहते हैं और अभी तुम्हारा मिलना बन्द है। इस लिये जो तुमको कोई प्रदेश भी दें जहां कि तुम चले जाओ तो फिर स्वार्थी लोग बातें बना कर हमको तुमसे अप्रसन्न करेंगे। इससे तो यही ठीक है कि जैसा तुमने अर्जीमें लिखा है हज (२) करनेको चले जाओ और जो सामग्री भेंटको तुमने सहरन्द और लाहोरमें प्रस्तुत रखी है उसे लदवाकर वहांसे मगवा लो।

१। इससे जाना जाता है कि खानखाना संवत १५४३ बादशाही नौकर थे और यही एक आधार उनकी अवस्था जानने का संरे अकबरनामेमें है। और इसपरसे कह सकते हैं कि उस समय वे ५६ बरसके होंगे, क्योंकि मुआसिरउलउमराके कर्त्ताने उनका हुमायूं बादशाहके पास आना १६ वरसकी उमरमें लिखा है यदि यह कल्पना सही है तो उनका जन्म भी संवत १५६० के लगभग होना संभव है। हुमायूं बादशाह संवत १५६५ में जन्मे थे।

२। मक्केकी यात्राको मुसलमान हज कहते हैं।

फिर जब हजरी सतार्थ होकर आवोगे तो हम भलीभांति तुमसे मिलकर जो तुम काहोगे उसके करनेमें इनकार नहीं करेंगे और पिछली सेवाए ध्यानमें रखेंगे। इन लोगोंके कसमसे तुम्हारी प्रतिष्ठा संसारमें भंग हो गयी है, परन्तु हम नहीं चाहते कि तुम बदनाम होओ और स्वार्थी लोगोंकी बातोंमें आकर सीधे रस्तेसे बहको। जैसे तुम हमारे प्रतापसे इस लोककी परम कामनाओंको पहुंचे हो वैसेही हमारे उपदेशसे उस लोकके पुण्यको भी प्राप्त करो।

बैरामखांने इस पिचापत्र पर कुछ ध्यान नहीं दिया। माहमअनगाने बादशाहसे कहकर खानखानाका काम बहादुर खांको दे दिया। कयाखां गगको बहरायचमें (१) जागीर देकर उधर भेजा। सुलतान हुसैन जलायर और कुछ और लोग कैद किये गये। मुहम्मद अमीन दीवान भाग गया। बहादुरखांको भी इटावेमें जागीर देकर भेज दिया। इस तरह माहम अनगाकी सलाहसे खानखानाके आदमी जो दरगाहमें थे तितर बितर कर दिये गये।

१२ रजब मंगलवार (चैत सुदी १२ संवत् १६१७) को बैरामखां आगरेसे अलवरकी तरफ रवाना हुए। बादशाहको खबर दी गयी कि वे नागोरके रास्तेसे पंजाब जानेके इरादेमें हैं। इस पर बादशाहने भी उनका रास्ता रोकनेके लिये २२ रजब शुक्रवार (वैशाख बदी ८) को नागोरको और कूच किया और मीर अबदुल लतीफको बैरामखांके पास भेजकर फिर ये बातें कहलायीं कि तेरी बन्दगी और खिदमतके हक जो इस बड़े घरानेमें हैं सब लोगोंको मालूम हैं। हम जो कम उमर होनेसे सैर और शिकारमें मशगूल रहकर मुल्क और मालका काम नहीं करते थे तो सब बातें तेरे ऊपर छोड़ी गयी थीं। अब हम अपनी बादशाहीका काम करने लगे हैं तो तू इसको खुदाकी

१। अवधका एक शहर।

बड़ी बख्शिशोंमेंसे समझकर शुक्र गुजार हो और कुछ समयके वास्ते हज करनेको चला जा कि जिसकी बाबत, हमेशा कहा करता था हिन्दुस्थानमेंसे जो जागीर और जो कुछ तू चाहे वही हम तेरे वास्ते मुकर्रर कर देंगे जिसका हासिल तेरे आदमी फसलको फसल बराबर तेरी सरकारमें पहुंचाया करेंगे।

२६ रजब मङ्गलवार (चैत्र बदी १३) को बादशाहके डेरे झज्झरमें (१) हुए। वहां नासिरुलमुल्क (मुल्ला पीर मुहम्मद) भी गुजरातसे आकर हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खासा खिताब खिलअत, झण्डा और डङ्का देकर अहमदबेग और मिरजा शर्फुद्दीन वगैरहके साथ नागोरको भेजा कि जो खानखाना मक्केको जाता हो तो उसको बादशाही सीमासे निकाल बाहर करे और जो पञ्जाब जाना चाहे तो सजा दे।

नागोर (२) मिरजा शर्फुद्दीनको जागीरमें दिया गया।

फिर बादशाह झज्झरसे लौटकर ११ शाबान बुधवार (बैशाख बदी १२।१३) को दिल्लीमें आ गये और अपना काम करने लगे।

बैरामखां अभी मेवातमें ही थे कि बादशाही फौजके आनेकी खबर उनके लशकरमें फैली, जिसके सुनते ही सब लोग उनको छोड़कर बादशाहकी सेवामें चले गये। उनके पास सिवाय वलीबेग या उसके दो बेटे (हुसैन कुली और शाह कुलीके जो उनके सम्बन्धी थे या शाहकुली महरम तथा हुसैनखां वगैरह कई आदमियोंके और कोई न रहा।

१। झज्झर एक कसबा दिल्लीसे आगे जिले रोहतकमें है।

२। नागोर अब जोधपुरके राज्यमें जोधपुरसे ४० कोस उत्तरमें है। उस समय भी जोधपुरके नीचे था, शर्फुद्दीनको जागीरमें देनेका यह मतलब था कि वह फतह करके अपने कब्जेमें कर ले।

जब बादशाहकी फौज कूच करती हुई पास आ पहुंची और बैरामखांको निश्चय हो गया कि अब बचावकी जगह नहीं रही तो उन्होंने रियासतकी आस छोडकर बादशाहको कसूरोंकी माफी और मक्के जानेकी छुट्टी मिलनेकी अरजी लिखी और कई हाथी, तुमन, तोग, झण्डा, नकारा और सब सामान सरदारीके हुसैन कुलीके साथ दरगाहमें भेज दिये और उन अमीरोंको जो उनके पीछेमें लगाये गये थे लिख भेजा कि आप लोग किस वास्ते तकलीफ उठाते हैं? मैं आप ही दुनियासे उदास हो गया हूं। वे लोग इस बातको सच समझकर लौट गये। फिर शेख गदाई भी डरता डरता दरगाहमें आ गया। बादशाहने उस पर भी बहुत मेहरबानी फरमायी।

खानखाना बादशाही सीमा छोडकर बीकानेर गये। (१) वहांके राव कल्याणमल और कुवर रायसिंह सत्कारपूर्वक सामने आकर मिले। बैरामखां कुछ दिनों तक उनके पाहुने रहे। वहां यह खबर उडी कि मुल्ला पीर मुहम्मद गुजरातकी ओरसे चढा चला आ रहा है। इस पर कुटिल बुद्धि वाले साथियोंने फिर उनको भडकाया तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला बागी होकर बीकानेरसे पंजाबको कूच किया और कुछ सेना एकत्र करके उत्तर सीमाके अमीरोंको लिखा "मैंतो हज्जको जाता था परन्तु माहमअङ्गा आदि मेरे शत्रुओंने बादशाहका मन मुझसे फेर कर यह प्रसिद्ध कर रखा है कि हमने बैरामखांको निकलवा दिया है। इसलिये मेरे जीमें यह आया पहले इन दुर्जनोंको दण्ड दू

१। बीकानेर जानेका यह कारण हुआ था कि जब खानखाना बादशाही अमलदारीसे मारवाड होकर गुजरातको जाने लगे तो जोधपुरके राय मालदेवने फौज भेजकर रस्ता रोक दिया जिससे वे उधर न जा सके और नागोरसे बीकानेरको चले गये थे।

फिर इसको जान और मुल्ला पीर मुहम्मदसे भी समझूं जिसने इन दिनोंमें नौबत और निशानका मान प्राप्त करके मेरे निरुद्ध सेनाका बीडा उठाया है।"

बादशाहने समाचार सुनकर फिर बैरामखांको एक फरमान लिखा जिसका यह आशय था—

"खानखाना जाने कि वह इस बड़े घरानेका पाला हुआ है। हमारे पिताने उसकी सेवा और भक्ति देखकर पूरी पालना की और हमारे शिक्षाका बड़ा काम उसको सौंपा। उनके पीछे हमने उसकी पिछली बन्दगीका विचार करके सारे राजकाज उसीके भरोसे पर छोड़ दिये। उसने जो अच्छा बुरा करना चाहा वही किया यहां तक कि इन ५ वर्षोंमें कई कुकर्म्म ऐसे भी किये कि जिनसे सब लोगोंको घृणा हो गयी जैसे शेख गदाईको सारे मौलवियों और सैयदोंके ऊपर करके इतना बढ़ाया कि उसको भी (१) तसलीम करनेकी माफी दे दी और वह बड़े घमण्डसे घोड़े पर सवार होकर हमसे हाथ मिलाता था।

जो अधम सेवक अपने थे उनको तो खान और सुलतानके खिताब देकर झण्डे डङ्के और बड़ी उपजके देश दिये और मेरे बापके अमीरों, खानों और सुलतानोंको जिनका बड़ा हक था रोटीका भी मुहताज कर दिया और जो हमारे दादाके सेवक बरसोंसे उमेदवारी करते थे उन्हें खानेको भी न दिया और जो लोग हमारी सवारियों और शिकारोंमें दौड़ते थे उनके प्राणों तकका लागू था। अपने नौकरोंको तो जो भांति भांतिके अन्यान्य और अपराध करते थे कुछ नहीं कहता था और हमारे नौकरोंसे जो जरा सी भी चूक हो जाती या कोई झूठ भी उनका नाम ले लेता तो उनके मारने और घर लूटनेमें देर नहीं करता था।

१। बादशाहको झुककर सलाम करना।

शाहकुली नाज़ी मुहम्मद ताहिर और लङ्गरखान जैसे धूर्तों और खुशामदियोंको सत्यवादी समझ कर पालता था और उनका पक्ष करता था। शाहकुलीने आज्ञा भङ्ग की और अश्लील उत्तर दिया जिससे वह जीभ काट लेने और वध करनेके योग्य था पर उसे कुछ न कहा और सुनकर चुप हो रहा।

ऐसे ही लङ्गरखान, भी उसके और दूसरे लोगोंके समक्ष ऐसा कटु वाक्य बोला था कि उसे प्राण दण्ड दिया जाता और बकी बेगको वह आप जानता है कि कजलबाशोंमें (१) उसकी क्या दर थी और क्या उसने सेवा की थी परन्तु अपना जमाई जाकर बड़े बड़े अमीरोंसे भी उसका दरजा बढ़ा दिया। हुसेन कुलीको जिसने अब तक एक मुर्गेसे भी पंजा नहीं लड़ाया था सिकन्दरखां, अबदुल खां और बहादुरखांके बराबर ऊपजाऊ जागीरें दी और हमारे बड़े बड़े सरदारोंको ऊजड़ गांवोंपर टाला।

फिर इन दिनोंमें तो उससे ऐसे ऐसे अनाचार होने लगे थे कि जिनसे हमको क्षोभ ही क्षोभ होता जाता था और तो क्या जो थोड़ेसे लोग हमारे पास रह गये थे उनसे भी वह अलग करके हमको अकेला ही रखा चाहता था। इसलिये हम आगरेसे दिल्ली चले आये और उसको लिखा कि कुछ पेंच ऐसे पड़ गये हैं कि वह हमसे मिल नहीं सकता है और हम उससे इतना बहुत दुख पाकर भी उसको वैसा ही खानखाना जानते हैं और उसके चित्तकी शान्तिके लिये शपथ करते हैं कि उसके धन और प्राण हरनेका हमारा विचार कदापि नहीं है, परन्तु हम राजके काम आप ही किया चाहते हैं। इसके सिवा और जो इनी रय ही अरजीमें लिख भेजें सो जिस रीतिसे हम योग्य समझेंगे हुक्म देंगे।"

१। इरानियोंमें।

यह बहुधा हमसे कहा भी करता था कि अब समय आ गया है कि आप अपनी बादशाहीका काम किया करें । इसलिये हमने जाना था कि वह हमारा काम करना सुन कर प्रसन्न होगा, परन्तु सुना गया कि उसने राज्यव्यवस्थासे ४० वर्षतक हमारे घरसे अपने लालन पालन और पोषण होनेका उपकार भूल कर दुर्नीता वहना माना जो उसको स्वामिद्रोह और क्रतघ्नताके पापोंका भागी बनाया चाहते हैं। इसका न समझ कर उसने सिकन्दरके बेटे और तातारखांको उपद्रव करने पर उठाया है और राज्यमें विघ्न डालनेके लिये पञ्जाब जानेका विचार किया है।

हमको इन बातोंपर विश्वास तो नहीं होता क्योंकि वह हमारे घरमें पला है और हमारा हुक्म मानना उसका धर्म है।

"अब हमारा यही कहना है कि जो लोग उसको बहकाते हैं उन्हें पकड़ कर हमारे पास भेज दे। हमने इन ५ वर्षोंमें सदा उसका उचित और अनुचित कहना किया है सो अब वह भी हमारा यह बातभी हुक्म न टाले। हम उसके अपराध क्षमा कर देंगे और जो वह सेवामें आना चाहेगा तो उचित समय देख कर बुला भी लेंगे, क्योंकि अभी तक उसको पिछली सेवा और भक्ति हमारे हृदयमें है। हम चाहते हैं कि उसका नाम जो देश देशान्तरमें सुविख्यात हो रहा है स्वामिद्रोहमें निन्दित न हो जावे।

यह हमने उसको चेता दिया है सो वह कभी कुछ और विचार न करे। परन्तु जो अब भी घमण्डसे नहीं मानेगा तो हम सेना सज कर आते हैं। उसको नष्ट कर देंगे। हमारे उदयका समय है और उसके अस्तका। हम जीतेंगे और वह हारेगा। पछतावेगा और पकड़ा जावेगा। क्या वह अपने विनाश कालका अनुभव इस प्रत्यक्ष प्रमाणसे नहीं करता है कि इन ५ वर्षोंमें उसने अपने मनुष्योंको कैसी कुछ पालना इस आशासे की थी कि कि बुरे दिनोंमें काम आवेंगे और जिनको भाई और बेटा कहता

था अभी जिनके अनग होनेका लेशमात्र गुमान भी नहीं करता था वे हो सब अभीसे उसको छोड गये हैं और जो थोडे रह गये हैं वेभी एक एक करके हमारे पास चले आवेंगे और उसको अकेला छोड देंगे। इति।

इस पत्रको पढ कर खानखाना फिर भडके और बीकानेरसे पजाबको रवाना हुए। जब पतरह टेके (भिट डेके) किलेके पास पहुंचे जो उनके निज सेवक शेर मुहम्मद दीवानकी जागीरमें था तो मिरजा अब्दुर्रहीमको स्त्रियों और धन सम्पत्ति सहित उसके पास (जिसे बेटेके बराबर पाला था) छोडकर आगे बढे। पीछेसे शेर मुहम्मद उनको सब सम्पत्तिको दबा बैठा और उनके पुत्र कलत्रादिको बादशाहके पास ले गया। इस दुस्सह दुःखकी चोट बैरामखांके कलेजे पर और भी बेढब लगी और वे जब धारे- गामके पास पहुंचे तो मिरजा अब्दुल्लाह मुगल वहां उनसे लडनेको तैयार हुआ। वलीबेग धारे पर गया और हार कर आया। बादशाहने जब खानखानाका बीकानेरसे पजाबको जाना सुना तो यह इरादा किया कि एक अच्छा लशकर भेज कर उनका रास्ता रोक दे जिससे लाहोरमें जाकर कुछ बखेडा न करे। तब माहम अगाने अपने बेटे अदहमखांको तो रख लिया और शम- सुद्दीन खां अत्तगाको बहुतसे अमीरोंके साथ खानखानाके ऊपर भेजा। और पीछेसे बादशाह भी २० जीकाद मगलवार (भादों बदी ७ सवत १६१७) को दिल्लीसे रवाना हुए और हुसैन कुली खांको अदहमखां कोकाके हवाले कर गये।

बैरामखां जालधरको जाते थे कि शमसुद्दीन खाने गांव गुना- चूरमें पहुंच कर उनका रास्ता रोक लिया। बैरामखाने अपनी सेनाके दो विभाग करके वलीबेग, शाह कुलीखां मरहम, वली बेगके भाई इसमाइल कुलीखां, हुसैन खां और याकूब सुलता- नको आगे भेजा और दूसरे विभागको ५० हाथियों सहित अपने पास रखा।

जिलहजिके (१) लगते ही लडाइ हुई। पहले ही हल्लेमें बादशाही लशकर खानखानाकी अगली फौजसे हार कर भाग निकला। शमशुद्दीन खाके पास थोड़ेसे आदमी रह गये थे कि इतनेमें खानखाना पीछेसे आये। आगे एक दलदल पडती थी जिसमें उनके हाथी फस गये और रास्ता रुक गया। इसलिये खानखानाने बाये हाथको मुड कर आगे बढना चाहा। इससे इधर तो इनके आदमो इनका भागना समझकर बिखरने लगे और उधरसे शमशुद्दीनखांने धावा किया और भागा हुआ बादशाही लशकर भी सम्हलकर आ गया। बैराम खा लौट गये।

दो कोस तक उनका पीछा हुआ। इसमाइल कुली खा, अली बेग, हुसेनखा, याकूब हमदानी, अहमद बेग और दूसरे सरदार उनके पकड़े गये। धन सब लुट गया। उसमें एक जडाऊ कडा भी था जो खानखानाने मशहदमें (२) भेजनेके लिये १ करोड रुपये लगाकर बनवाया था।

बादशाहने सरहदमें पहुच कर इस फतहकी खबर सुनी। यहा मुनअमखा भी बहुतसे अमीरों और लशकरके साथ आकर १८ जिलहिज सोमवार आसोज बदी ५ को बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खानखानाका खिताब और वकालतका [महामन्त्रीका] काम दिया। फिर शमशुद्दीन खा अत्तगा (३) भी आ गया तो उसको खानआजमकी

१। जिलहिज सन् ९६७ भादो सुदी २ सवत १६१७को लगा था।

२। मशहद खुरासानमें एक नगर है जहा शीआ जातिके मुसलमानोंका बडा धाम है और आजकल शाह ईरानके अमलमें है।

३। यह जीजी अनगाका (बादशाहकी धायका) पति और खान आजम मिरजा अजीज कोकाका पिता था। तुर्कीमें धायको अंगा धाऊको अत्तगा और धा भाईको कोका कहते हैं।

पदवी प्रदान की। वलीबेग जखमोंसे कैदमें मर गया। उसका सिर पूर्वके देशोंमें लोगोंको डरानेके लिये भेजा गया। इसका भी एक गहरा घाव बेरामखाके हृदयमें लगा क्योंकि यह उनका बहनोई था।

फिर बादशाह तो २६ जिलहिज आसोज वदी १२।१३ को लाहोर पहुंचे और खानखाना सवालक पहाडमें राजा गणेशके (१) पास चले गये। राजाने उनको तलवाडेके (२) किलेमें रख दिया (जो व्यासा नदीके ऊपर था।)

बादशाह १० मुहर्रम सन ९६८ मङ्गलवार आसोज सुदी ११ को लाहोरसे कूच करके माछीवाडेमें ठहरे और फौज पहाडमें गयी तो वहांके हिन्दुओं और राजाओंने उसको रोका। इसपर लडाई हुई और सुलतान हुसैनखां जलायर बादशाही फौजमेंसे मारा गया। लोग उसका सिर काटकर खानखानाके पास वधाइमें ले गये। वे उसको देखकर बहुत रोये और बोले कि धिक्कार है मेरे जीनेको कि जिसके वास्ते ऐसे दीदार जवान मुफ्तमें मारे जाते हैं। पहाडके हिन्दू जो शरणागतकी रक्षा करना परम धर्म्म समझते थे उनको बहुत सी हिम्मत व धाते थे तोभी उन्होंने मुसलमानोंके हितसे उसी समय अपने गुलाम जमालखांको बादशाहके पास क्षमा मांगनेके लिये भेजा। बादशाहने मेहरबानीसे मौलाना अबदुल्लाह उलमानपुरी वगैरह

१। ये नादोनके राजा थे। नादौन जालन्धरके जिलेमें कांगडेके पास है। और अब भी एक छोटासा राज्य है जहांके राजा नरेन्द्रचन्द्र हैं।

२। कई इतिहासोंमें नन्नवाडा भी लिखा है यह कांगडेके राजाओंका था। नादौन और कांगडेके राजा दोनों कटोच जातिके राजपूत हैं। कांगडेके राजा जयचन्द्र अबहला ग्राममें रहते हैं।

कइ पासके रहनेवालोंको उनके साथ भेजकर हुक्म दिया कि जाकर खानखानाको ले आवे।

खानखानाने फिर अर्ज करायी कि हजरतकी तरफसे तो मुझे विश्वास है परन्तु (१) चगताई अमीरों और सब कर्म-चारियोंका भय लगता है। इसलिये मुनअमखां आकर मुझे ले जावे तो मैं हजरतको सलाम करके मक्के चला जाऊं और जबतक जीऊं तबतक वहीं रहूं।

बादशाहने हाजीपुरमें जो पहाड़के नीचे सतलज और व्यासा नदियोंके बीचमें था डेरा करके मुनअमखां, ख्वाजाजहां अशरफखां, और हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको उनके लानेके लिये भेजा। जब ये उन घाटियोंमें पहुंचे तो जमींदारोंकी बड़ी भीड़ देखी जो अपनी मर्य्यादाके अनुसार मरने मारनेको तुले खड़े थे।

बैरामखां किलेमें थे। मुनअमखां उनके पास गये। बैरामखां मुनअमखांको देखकर रोये। मुनअमखां तसल्ली देकर उनको बाहर लाये। तब बाबा जम्बूर और शाहकुलीखां महरम उनका पल्ला पकड़ कर रोने लगे कि दगा है मत जाओ। मुनअमखांने कहा कि तुम आज रात यहीं रहो, कल कुशल सुन कर आ जाना। यह सुनकर वे भी खानखानाको छोड़कर वहीं रह गये।

बादशाही लशकर पहाड़के नीचे जमा खड़ा था। ज्यों ही

१। चङ्गेजखांका एक बेटा जगताईखां था। उसकी औलाद चगत्ता और जगताईखां कहलायी और चङ्गेजखाने तैमूरके पर दादाके बाप "काराचार नोयां" को चगताईखांका अता लीक बनाया था जिससे उसकी औलादका नाम भी चगताई हो गया और यही कारण तैमूरिया बादशाहोंके भी चग ताई कहलानेका है।

बैरामखां आते हुए दिखे तो बडा कोलाहल मचा। बैरामखां गलेमें रूमाल बांधे हुए बादशाहके पैरोंमें आ पड़े (१) और फूट फूटकर रोने लगे (२)।

बादशाहने बैरामखांका सिर उठाकर छातीसे लगा लिया रूमाल गलेसे खोला आसू पोछे और दाहने हाथकी मामूली जगह पर बिठाया मुनअमखांको उनके पास बैठनेका हुक्म

१। अकबर नामेमें खानखानाके उपस्थित होनेकी तारीख नहीं लिखी। केवल आबान और मुहर्रमका महीना लिखा है और आबान मास २३ मोहर्रमको लगा था। इस लेखसे खान खानाका आना २३ से २८ मोहर्रमके बीचमे किसी दिन हुआ होगा जो कातिक बदी १० और सुदी १ से आगे नही सरक सकता क्योंकि सुदी २ से तो सफरका महीना लग गया था। जोधपुर राज्यके पुस्तकालयमें एक पुरानी ख्यात है जिसमें लिखा है कि बैरामखां मगसर बदी ७ को अकबर बादशाहके कदमोंसे लगा। उन्होंने कहा कि मक्के जाओ। वह रवाने हुआ। पाटनमें एक पठानने उनको मार डाला। मगसर बदी७ को आबानकी २८ तारीख थी और सफरकी २१। न मालूम यह इतने दिनोंका अन्तर क्यों है।

२। जिन दिनों यह मसविदा डुमरावमें पण्डित नकछेदी तिवारीजीके पास था उनदिनों भूतपूर्व भारतमित्र सम्पादक स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्दजी गुप्तजी कलकत्ते जाते हुए तिवारीजी मिले। उस समय तिवारीजी ऊपर लिखा हुआ वृत्तांत पढ रहे थे जब खान खानाके रोनेका हाल पढा तो तिवारीजीको भी रोना आ गया था और यह बात गुप्तजीने कलकत्ते में पहुंचकर मुझे लिखी थी। तभीसे उन्हें इस ग्रन्थको भारतमित्रके उपहारमें देनेका ध्यान हो गया था। अफसोस है कि न अब तिवारीजी हैं और न गुप्तजी।

दिया और ऐसी दया मयाकी बातें की जिनसे वैरामखांके मुखकी मलिनता जो लज्जा और अनुतापसे थो जाती रही। फिर निज वस्त्र जो पहरे हुए थे उनको बख्शे और प्रसन्नता पूर्व्वक मक्के जानेकी आज्ञा दी। तरसून मुहम्मदखाको राज्य सीमा तक पहुंचा देनेके लिये साथ किया। (१)

फिर बादशाहने (२) भी प्रस्थान करके सैन्यको तो दिल्ली भेजा और आप छडी सवारीसे शिकार खेलनेके लिये हिसार पधारे। यह प्राय वही मार्ग था जिधरसे होकर खानखाना निकले थे। मानो यह उनका अन्तिम अनुसरण था।

खानखाना नागोर होकर गुजरातको गये। तरसून मुहम्मद खा और हाजी मुहम्मदखा जिनको बादशाहने देखभालके लिये साथ भेजा था नागोरकी (३) सीमा तक उनको पहुंचा कर लौट आये।

वैरामखाने एक तिरस्कार करके हाजी मुहम्मदसे कहा

१। मुन्तखिबुत तवारीखमें लिखा है कि मुनअमखाने खानखानाको अपने डेरे पर ले जाकर डेरे तम्बू और दूसरे सब सामान सफरके तय्यार कर दिये। बादशाहसे भी खर्च मिला और सब छोटे बडे अमीरोंने भी अपनी श्रद्धाके अनुसार रोकड धन और माल जिसको तुर्क लोग चन्दूग (चन्दा) कहते हैं खानखानाको दिया। खानखाना दो दिन पीछे वहांसे कूच कर गये।

२। अकबरनामेमें बादशाहके कूच करनेकी भी तारीख नहीं लिखी है।

३। बादशाहका राज्य इधर उस समय नागोर तक था। नागोरकी सीमा हिसारकी तरफ पञ्जाबसे मिली हुई थी और नागोरका प्रदेश मारवाडके राव मालदेवके अधिकारमें था जो एक स्वतन्त्र राठोड राजाधिराज थे।

कि मुझे जितना कष्ट तेरी छतघ्नतामे हुआ है उतना और किसीकी शत्रुतामे नहीं हुआ क्योंकि तूने सब कुछ भुला दिया था।

हाजी मुहम्मदखाने उत्तरमें कहा कि जब तुमने उतनी स्वामिभक्ति जतलाने पर भी बादशाहकी और उनके पिताकी पालनाको भूलकर उनके सामने तलवार खेंची तो मैंने जो तुम्हारा सङ्ग छोड दिया, तो इसमें क्या बुरा किया?

यह सुनकर बैरामखां लज्जित हो गये और फिर कुछ न बोले।

इतना लिखकर अबुलफजलने अकबरनामेमें लिखा है कि मैंने विश्वास योग्य पुरुषोंसे सुना है कि इस विषयमें बैरामखां सदा यथार्थ बातसे खिसियाना हो जाता था।

बादशाहने हिसारसे तारीख ४ (१) रविउलअव्वल शनिवारको दिल्लीमें और १२ (२) रविउस्सानी सोमवारको आगरेमें प्रवेश किया। और वहां जो भवन बैरामखांके थे वे मुनअमखां खानखानाको दे दिये।

खानखाना नागोरसे गुजरातको जा रहे थे कि जङ्गलमें उनकी पगडी बबूलके झाडमें उलझ कर धरती पर गिर पडी। वे इसको अपशकुन समझ कर बहुत घबराये तब उनके एक सखाने हाफिजका (३) शेर पढ़कर उनके चित्तको शान्त

१। मगसर सुदी ६ सं० १६१७ इस दिन शनिवार हो था और आजर महीनेकी ११ तारीख थी।

२। पौष सुदी १३ सवत् १६१७ सोमवार तारीख ८ मास दे सन ५ इलाही।

३। हाफिज फारसी भाषाका एक सुकवि ईरान देशके प्रसिद्ध नगर शीराजमें हुआ है उसकी मृत्यु सवत् १४३८के लगभग हुई थी।

कर दिया। उस शेरका भावार्थ यह था कि जब तू मक्केको चाहसे जङ्गलमें पांव धरे (तब जो) ववूलके काटे तेरी अवज्ञा करें तो तू कुछ सोच मत कर।

इस तरह चलते चलते जब बैरामखां पाटनमें पहुंचे जो पहिला नगर गुजरातका है और जिसको पहिले नहरवाला (१) कहते थे तो विश्राम करनेके लिये कुछ दिन ठहरे उनका कुटुम्ब भी सब साथ था।

उन दिनों मूसाखा (२) फोलादी वहांका हाकिम था। उसके पास पठानोंकी बहुत सी भीड हो रही थी उनमें मुवारक खां लोहानी भी था जिसका बाप माछीवाडेकी लडाईमें मारा गया था जो बैरामखांकी अफसरीमें हुई थी। उस हेपसे उस बादने पठानको इस समय बैरामखांसे बैर लेनेकी सूझी और एक बात यह भी थी कि शेरशाहके, बेटे सलीमशाहकी कश्मीरी औरत उस काफले अर्थात् पथिकोंके समूहमें थी, जो बैरामखांके साथ मक्केको जाता था और उस कश्मीरनके साथ उसकी एक लडकी भी थी जो सलीमशाहसे हुई थी और यह बात ठहरायी गयी थी कि बैरामखां उस लडकीको अपने बेटेके वास्ते लेले यह सुनकर भी पठान बिगडे हुए थे।

बैरामखां नित्य प्रति पट्टनके बागों और मकानोंको देखने जाया करते थे। एक दिन नावमें बैठकर सहस्रलिङ्ग (३) तालाबका जलमहल देखनेको गये। वहांसे आते समय जब नावसे

१। पाटनका असली नाम अनहलपुर पट्टन था। मगर मुसलमान लोग नहरवाला कहते थे।

२। यह गुजरातके बादशाह मुजफ्फर दूसरेका नौकर था।

३। यह तालाब गुजरातके राजाधिराज सिद्धराज जयसिंह सोलङ्कीका बनाया हुआ है जो संवत् ८८८ से १०५३ तक राज सिंहासन पर विराजमान रहे थे।

उतरकर सवार होने लगे तब मुबारकखा ३०।४० पठानों सहित तालाबके तट पर आया और ऐसा जाहिर किया कि मिलनेको आया है। खानखानाने इन सबको बुला लिया मुबारकखाने जाते ही छुरा निकाल कर बैरामखाकी पीठमें ऐसा मारा कि छातीसे पार हो गया। फिर और एक पठानने मस्तक पर तलवार मारकर उनका काम पूरा कर दिया। उनके साथी इस हल्लासे घबराकर भाग गये और उनकी लोथ वैसी ही धूल और लोहमें लिपटी पडी रही। निदान कई फकीरोंने उठाकर शेख हिसामकी कबरके पास गाड दी जहांसे सन ८८५ में (१) मशहदको भेजी गयी।

खानखानाका बध १४ जमादिउलअव्वल शुक्रवार सन ८६८ माघ सुदी १५ सवत् १६१७ को हुआ और जब यह खबर बादशाहको पहुंची तो उन्होंने भी बहुत शोक और सन्ताप किया।

इस स्थान पर अबुलफजलने लिखा है— "मैं नहीं जानता हूं कि यह मारा जाना उसके पिछले कर्मों का दण्ड था या अभी उसका चित्त कुविचारोंसे शुद्ध नहीं हुआ था या उसकी मनोकामना सिद्ध हुई [जो शहीद होने अर्थात् तलवारसे मारे जानेकी थी] था ईश्वर कृपाने उस सज्जन पुरुषको पश्चात्तापके बोझसे हलका कर दिया।

"सच तो यह है कि बैरामखा वास्तवमें साधु और सुशील था। परन्तु कुसगसे जो मनुष्यके वास्ते बडा पाप है वह पहिले तो अपनेको अच्छा समझने लगा फिर खुशामदोंसे उसका उन्माद बढता गया क्योंकि जो कोई अपनेको अच्छा समझता है उसके पास खुशामदियोंका जमघटा हो जाता है और जो अपनी झूठी भी प्रशसा खुशामदमें सुनता है तो उसे सच मानकर

१। सन ८८५ हिजरी चैत सुदी २ सम्वत् १६३८ को लगा था

आत्मश्लाघी हो जाता है। इसीसे बैरामखांको यह बुरा दिन आगे आया। बादशाहका यथार्थ रूप जो बचपन और राजकाजमें प्रवृत्त न होनेकी ओटमें छिपा हुआ था उसको दृष्टिमें नहीं आया। वह दूसरोंके दोष ढूंढनेमें अपने अवगुण न देख सका। उसका घर खुशामदियोंसे उतना नहीं बिगडा कि जितना उसके बुद्धि हीन मित्रों और मन्त्रियोंसे बिगडा, पर यह भी उसका सौभाग्य था कि उसका प्राणघात कृतघ्नतासे न हुआ। जीते जी ही उसके कर्मो का प्रायश्चित्त हो गया था। जब कि उसने दयालु बादशा हकी सेवामें उपस्थित होकर उनको राजी कर लिया था।"

अन्य इतिहास वेत्ताओंने बैरामखांकी बहुत महिमा लिखी है मुल्ला अब्दुल कादिरके मतमें वे "बडे बुद्धिमान सत्यवादी सुशील और नम्र और सत्पुरुषोंके भक्त थे। दूसरी बार हिन्दुस्थान उन्हींके पराक्रमसे फतह हुआ था।

वे मिरजा जहांशाहके वंशज थे। पहिले बाबर बादशाहके पास रहे। फिर हुमायूं बादशाहसे खानखानाका पद पाया। अकबर बादशाहने उनको पदवीमें खानबाबा और बढा दिया था, परन्तु दुश्मनोंने बादशाहका मन उनसे बिगाड दिया जिससे वह सब बखेडा हुआ।

वे आप भी विद्वान थे और विद्वानोंका आदर भी पूरा करते थे। उनकी कीर्त्ति सुन कर दूर दूरके विद्वान उनके दरबारमें आते थे और उनकी उदारतासे निहाल होकर जाते थे।"

"खानखाना काव्यके रहस्यको भी अच्छा समझते थे। उन्होंने उस्तादोंकी कवितामें गहरे दोष निकाले हैं और "दखलिया" नाम एक ग्रन्थमें संग्रह किये हैं। बात बनानेमें भी वे बहुत कुशल थे। एक रात हुमायूं बादशाह उनसे कुछ सम्भाषण कर रहे थे कि उनको ऊंघ आ गयी। बादशाहने भल्लाकर कहा कि "हा बैरम मैं तुझसे कह रहा हूं" इन्होंने झट सम्हलकर कहा मेरे बाद शाह। मैं हाजिर हूं, परन्तु मैंने सुना है कि बादशाहोंके समुख

भाइयोंको, सत्पुरुषोंके समक्ष मनको और पंडितोंके सामने जिह्वाको वशमें रखना चाहिये। सो हजरत तो बादशाह भी हैं, सत्पुरुष भी हैं और पण्डित भी हैं। इसलिये मैं इस दुविधामें पड गया था कि अब मैं किस किसको वशमें रक्खूं, बादशाह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।

कंधारमें एक रात शाह "अबुल अली" ने जो हुमायूं बादशाहके कृपापात्रोंमेंसे था शराब पीकर 'शीयामत" के (१) एक मुसलमानको(२) मतद्वेषसे मार डाला। उसके घरवालोंने बादशाहसे पुकार की। बादशाहने शाहको बुलाया तो वह उसी मुसलमानका काला मखमलका जामा पहिन कर और जिस छुरीसे मारा था उसको उस जामेमें छिपाकर नशेमें झूमता हुआ बडी ठसकसे आया और मारनेसे मुकर गया। तब बैरमखांने एक शेर पढा जिसका भावार्थ यह है,—

उसकी (नायकाकी) बिखरी हुई अलकावली निशाचरोंका (चोरोंका) पता देती है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि उसने अपने पक्षके नीचे दीपक छिपा रखा है।

बादशाहने इस शेरको बहुत सराहा परन्तु उसके भावार्थके अनुसार कुछ निर्णय उस निरपराधके मारे जानेका न किया।

खानखानाकी फारसी और तुरकी कविताका दीवान (संग्रह) प्रस्तुत है और ये हुमायूं बादशाहको संगतसे जो बडे ज्योतिषी थे ज्योतिष विद्याको भी जान गये थे।

१। मुसलमानोंमें दो बडे पन्थ शीया और सुन्नी हैं जिनमें बडा मतभेद है शीया ईरानमें अधिक हैं और सुन्नी सब मुल्कोंमें शीयाओंसे अधिक हैं वे शीयाको राफजी कहते हैं जिसके माने पतितके हैं।

२। अकबरनामेमें इसका नाम मीरअली लिखा है। यह ईरानके शाह तुहमास्पका नौकर था। जब हुमायूं बादशाह कंधारमें

तवारीख "तबकात अकबरी" में (१) लिखा है कि बैरामखा खानखानाकी नौकरीमेंसे २५ आदमी पांच हजारीके मनसबको पहुंचकर नौबत और निशानके धनी हो गये थे।

मुआसिरुलउमरामें लिखा है कि बैरमखां विद्या भलाई, दान धर्म और कर्मसे युक्त, नीतिमें निपुण, शूरवीर, कार्यकुशल और दृढ हृदय थे। उन्होंने तमूरके घरानेके बडे बडे उपकार किये थे। ऐसी हलचलके समयमें जब कि राज्य कुछ स्थिर न हुआ था बाद शाह स्वर्गवासी हुए और शाहजादा अभी छोटे और नादान थे, पंजाबके सिवा सब देश हाथसे जाते रहे थे, पठान बडे जोरशोरसे बादशाहीका दावा करते थे। चगताई अमीर जो हिन्दु स्थानमें रहना पसन्द नही करते थे काबुलको लौट जानेकी सलाह देते थे और बादखशांके अधिपति मिरजा सुलेमानने अवसर पाकर काबुलमें अमल कर लिया था। परन्तु बैरामखांकी दृढता और उद्योगसे बिगडी हुई बात फिर बनी और राज्य भी स्थिर हुआ। इधर अकबर बादशाहने भी बडे मान सम्मानके साथ पूरा अधि कार राजके कामोंका उनको दिया था और उनसे शपथ ले ली थी कि जो उचित और योग्य हो वही करें, न किसीका

जाकर खानखानाके मेहमान हुए थे तो शेरअली शाहसे छुट्टी लिये बिना ही उनके पास चला आया था। अबुलमआली जिसका मिजाज बादशाहके बहुत पास रहनेसे चल गया था। दरबारमें कहा करता था कि मैं इस राफजीको मार डालूंगा। बादशाह तो इस बातको दिल्लगी ही समझते रहे और उसने एक रातको बेगुनाहका खून ही कर डाला। बादशाहको यह बात दिलमें तो बहुत बुरी लगी मगर मोहब्बतसे कुछ न कह सके।

१। यह ग्रन्थ बख्शी निजामुद्दीनने अकबरशाहके समयमें बनाया है। इसको तवारीख निजामी भी कहते हैं। मुन्तखि बुल तवारीख इसीका साराम्श है।

पक्ष करें और न किसीसे डरें परन्तु ज्यों ज्यों खानखानाका ऐश्वर्य्य बढ़ा और वे अपने अतिरिक्त किसीको कुछ नहीं समझने लगे त्यों त्यों शत्रु भी बढ़ते गये जिन्होंने बहुत कुछ झूठ सच लगा बुझाकर बादशाहका मिजाज बिगाड़ दिया। तो भी बादशाह जो अवश्य खानखानासे बिगाड़नेकी नहीं थी और न खानखाना प्रतिकूल होना चाहते थे परन्तु दोनों ओरके चुगलखोरोंने दोनों ओर आग लगाकर इधर बादशाहको भड़काया उधर खानखानाको इस बात पर जमाया कि प्रतिष्ठ पूर्वक मर जाना अप्रतिष्ठित होकर जीनेसे उत्तम है और यही कारण उनके नष्ट हो जानेका हुआ क्योंकि अहंकार और राजतृष्णा मनुष्यका नाश करदेती है।

इस प्रकार थोड़ा बहुत वृत्तान्त बैरामखांके जीवनका जो इतिहासकी पुस्तकोंमें मिला यहां लिखा गया अब केवल उनकी उदारताका वर्णनरह गया है सो भी हम यहां किये देते हैं और आगे चलते हैं।

मुन्तखिबुल तवारीखके कर्त्ता मुल्ला अब्दुल कादिरने जो उनका समकालीन था उनकी और शमसुद्दीनखांकी लड़ाईका वृत्तान्त लिख कर कहा है "अजब यह है कि इस वर्ष (९६७ संवत १६१६में) खानखानाने हाशमी शाइरकी एक गजल पसन्द करके अपने नाममें प्रसिद्ध की और उसके पुरस्कारमें उसको ६०००० टके (१) देनेका हुक्म देकर उससे पूछा कि क्यों इतने दाम

१। पहिले चलनी सिक्कोंको टक कहते थे चाहे चांदीके हों चाहे तांबेके उस समयकी कहावतके अनुसार अब भी धनवान पुरुषको मारवाड़में टकोंवाला कहते हैं जैसा कि हिन्दुस्थानमें पैसावाला और रुपया वाला बोलते हैं। अकबरके समयमें दामका चलन हुआ ४० दामका १) होता था राजपूतानेके लुटेरे आपसकी समझौतोमें मालदारोंको दामोदर कहकर लूटनेको

ठीक है? उसने कहा कि ६० कम (१) है खानखानाने ४० हजार और दिनाकार पूरे १ लाख कर दिये।

इसी तरह १ लाख टके खजाना खाली होनेपर भी एकही सभामें रामदास लखनवीको (२) दिये जो सलीम शाह बादशाहके कलावतोंमेंसे था और जिसको गानविद्याके विषयमें दूसरा तानसेन कह सकते है। क्या सभामें क्या एकान्तमें वह निरन्तर खानखानाके पास रहा करता था और उसके गानेके प्रभावसे सदा खानकी आंखोंमें आंसू आ जाया करते थे।

ऐसे ही १ लाख टके जुझारखां बदाऊनीको एक फारसी कविताकी रीझमें दिये थे जो उसने उनके नाम पर बनायी थी। यह भी पहले तो सलीमशाहके अमीरोंमें नौकर था और इसको उससे झगड़ा हुआ और तोग (३) भी मिला था मगर फिर सिपाहगरी छोड़कर थोड़ी सी जीविका पर सन्तोष कर बैठा था खानखानाने जुझारखांको यह इनाम नहीं दिया था किन्तु सरहिन्द हीके (पंजाबके) सारे जिलेका कलक्टर भी बना दिया था।

चेष्टा करते थे, और लोग तो यह जानते थे कि ये भगवतका भजन कर रहे हैं और वे टकोंका भजन करते थे।

१। कम शब्द यहां श्लेष है क्योंकि उसका अर्थ न्यून भी है और अङ्कोंके हिसाबसे ६० भी है। फारसीमें अङ्कोंकी गिनती भी अक्षरोंसे होती है। १०के वास्ते काफ (क) और ४० के लिये मीम (म) लिखते हैं। इस युक्तिसे शायरोंने दोनो बातें ही जता दी थी अर्थात् ६० भी और कम भी।

२। ये सूरदासजीके पिता थे। इस विषयमें हम विस्तार पूर्वक सूरदासजीकी जीवनीमें लिख चुके हैं।

३। यह एक सरदारी सूचक चिन्ह माही मरातबके समान [illegible]का दिया होता था और झण्डेके ऊपर बांधा जाता था।

लाग टके खानकी नजरमें तिनकेसे भी तुच्छ थे बर खिलाफ इन तिनकोंके जो अब पानी पर उभर आये हैं। (१)

खानखानाके स्वामिद्रोही सेवकोंका परिणाम।

हातमी मुल्ला पीर मुहम्मदको बादशाहने सेना देकर मालवे पर भेजा था। उसने वह देश विजय करके बड़ा घोर कुकर्म किये। और तो क्या केवल यह देखनेके लिये कि किसमें कितना रक्त निकलता है और किसके प्राण शीघ्रतासे और किसके कठिनतासे छूटते हैं सैकड़ों मनुष्योंके मस्तक छेदन कराये और बड़ी निर्दयतासे उनके मरनेका तमाशा देख देखकर अपने कठोर चित्तको प्रसन्न किया। फिर मालवेसे खानदेश जीतनेको गया। वहांसे लड़ाई हारकर भागा और नर्मदामें डूबकर (२)मर गया। खानखानाके १ वर्ष पीछे ही अपने पापोंके फलको प्राप्त हुआ।

विश्वासघाती शेर मुहम्मदको बादशाहने मुह नहीं लगाया जिससे वह समानेमें [पंजाबमें] जा रहा। जब बङ्गाल और बिहारके अमीर बादशाहसे बदले तो उसने समानेके नायब फौजदारको न्यौता देकर भोजन करानेके मिससे बुलाया। जब वह आया तो तोरको भाल घिसने लगा और फिर वही तौर

१। इस अन्तिम लेखसे यह ग्रन्थकर्ता खानखानाके पीछेके अमीरों पर कटाक्ष करता है और उन्हें दातव्यतामें उनका अपेक्षा बहुत क्षुद्र बतलाता है। अर्थात् अबके अमीर तिनकेके समान हलके हैं और जैसे तिनका थोड़ेसे पानीमें भी ऊपर रहता है वैसे ही ये भी थोड़ी सी सम्पत्ति पाकर भी अपना हलकापन प्रकट करते हैं।

२। यह घटना सन् ९६८में (संवत् १६१८में) हुई उसके साथ बहुतसे आदमी थे परन्तु किसीने उसके निकालनेकी का शिश नहीं की। अकबरनामा दफतर २ पृ० १६८।

खानखानानामा।

दूसरा भाग।

पहला खण्ड।

नवाब अबदुर्रहीम खां खानखानाकी माता।

खानखानाकी मा (१) जमाल खां मेवातीकी बेटी थी। जब हुमायूं बादशाह शेरशाह पठानसे लडाईमें हारकर ईरानको गये थे तो वहांके शाह तुहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमीन्दारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे, इसीसे आपके पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही आपके हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना। एक तो पठानोंको जहां तक बने हुकूमतसे अलग करके व्यापारमें लगाना, दूसरे वहांके राजाओं और जमीन्दारोंसे रिश्तेदारी करना, इससे आपका राज्य बना रहेगा।

हुमायूं बादशाहने जब दूसरी बार दिल्ली फतह की तो हुसेन खां मेवातीको दिल्ली मण्डलमें हिन्दुस्थानके सब जमीन्दारोंसे विशेष धनवान बलवान और ऐश्वर्य्यवान देखकर उसके चचा जमाल खांकी बडी बेटीसे तो अपना विवाह किया और छोटीसे बैराम

---

(१) जमाल खां अलावल खांका बेटा और हसन खां मेवातीका भतीजा था। हसनखांका कई पीढीसे अलवरमें राज्य था। वह १०००० सवारों सहित महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लडा था और काम आया। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग उस घरानेके अलवर राज्यमें हैं।

खाका कारा दिया। फिर तुरत ही उनको शाहजादे अकबरके साथ पंजाबमें सूर पठान सिकन्दर शाहका उपद्रव मिटानेके लिये भेजा। वे बेगमको भी साथ ले गये थे। परन्तु जब हुमायू बादशाहके मरे पीछे अकबर बादशाहको लेकर हेमू ढूसरसे लड़नेको दिल्लीकी ओर गये तो बेगमको लाहोरमें भेज दिया था।

खानखानाका जन्म।

वहां १४ सफर ९६४ (१) गुरुवार "दै" महीनेकी छठी तारीखको इनका जन्म हुआ। उस समय बादशाह दिल्लीसे पंजाबको आ रहे थे। रास्तेमें यह बधाई पहुंची जिसपर उन्होंने प्रसन्न होकर बालकका अबदुर्रहीम नाम रखा और अपनी दिग्विजयकी सिद्धिके लिये, जिसके वास्ते पंजाबको आते थे, इस सुखद समाचारको एक शुभ शकुन समझा।

बैरामखाने बड़ा उत्सव किया और ज्योतिषियोंने जन्मपत्री देखकर कहा कि यह बालक बादशाहसे शिक्षा पाकर उच्च पदको पहुंचेगा और स्वामिभक्त होकर बड़े बड़े कार्य्य करेगा। ऐसे ही सुसवाद शकुनियोंने भी कहे जिनका पहिला परिणाम यह निकला कि बादशाहके जालन्धरमें पहुंचते ही शिकन्दर शाह सूर जो पंजाबमें अड़ा हुआ था, हिमालय पहाड़में भाग गया।

बाल्यावस्थामें विपत्ति और बादशाहका प्रतिपाल।

जब बैराम खां बादशाहसे बिगड़कर बीकानेर गये और वहांसे पंजाब आये तो मिरजा अबदुर्रहीमको अपने अन्तःपुर और

---

(१) माह वदी १ संवत् १६१३, परन्तु खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत् १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों, दोनोंमें इतने दिनोंका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी है और पक्ष इसे दोनों ही सही हैं। पर जन्म तो २ बार नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन नहीं इसका निरूपण हम आगे करेंगे, जहां इनकी जन्मपत्रिया लिखेंगे।

धनमाल सहित पतरहदेके किलेमें शेर मुहम्मदके पास छोड गये थे। उसने उन सबको पकडकर बादशाहके पास भेज दिया। पर जब बैराम खा बादशाहके पास आकर मक्केको विदा हुए तो इनको भी सकुटम्ब साथ ले गये थे। गुजरात पहुंचकर जब बैराम खां मारे गये, तब ये केवल ४ वर्षके थे। मुहम्मद अमीन दीवाना, जो नामका तो दीवाना था और काम स्यानोंकेसे करता था, बाबा जम्बूर और ख्वाजा मलिक (१) इनको पाटणसे ले निकले और सारे रास्ते पठानोंसे लडते भिडते अहमदाबादमें पहुंचे। वहा ४ महीने रहे। फिर दरगाहको (२) रवाने हुए। जालोरमें (३) बादशाहका फरमान मिला जो इनके नाम था और जिसमें लिखा था कि यहा आजाओ हम पालन करेंगे। इससे ये लोग प्रसन्न होकर सन् ९६९के (४) लगते ही इनको बाद शाहकी शरणमें आगरे ले आये। बादशाहने इन्हें होनहार और चेष्टावान् देखकर अपने पास रख लिया। उस समय दर बारमें इनके बहुतसे शत्रु भरे हुए थे। तौ भी इनको पालने पोसने खिलाने पढाने और सभ्यता सिखानेमें कमी नहीं हुई।

मिरजा खांकी पदवी और विवाह।

बडे होनेपर बादशाहने इन्हें मिरजा खांकी पदवी प्रदानकी और अपनी धाय जीजी (५) अगाकी बेटी माहबानूसे इनका

---

(१) ये तीनों खानखानाके नौकर थे।

(२) राजद्वार (३)जालोर अहमदाबाद गुजरातसे उत्तर दिशामें दिल्ली और आगरेके रास्तेपर एक पुराना शहर है जो अब तो जोध पुर दरबारके अधिकारमें है और उस समय एक नवाबके पास था जिससे फिर जोधपुर वालोंने ले लिया।

(४) सन ९६९ आश्विन सुदी२ सं० १६१८ को यानी ११अगस्त १५६१ इस्वीको लगा था।

(५)जीजी अ गाने बादशाहको दूध पिलाया था।

विवाह कर दिया। इस सम्बन्धसे इनका भी बादशाहके घरानेसे वही मेल जोल हो गया जो इनके पिताका था और एक बलवान् थोक था भाइयोंका इनका पक्षपाती बन गया।

गुजरात जाना और पाटनकी जागीरमें पाना।

जब इनकी अवस्था १६ वर्षकी हुई और भाग्योदयका समय आया तो बादशाह गुजरात (१) फतह करनेको चढ़े और ये भी इनके साथ गये २६ आबान (२) सन् १७ ता०, १२ रजब सन् ९८०को, बादशाहके डेरे पाटन जिले गुजरातमें हुए तो उनको बैराम खांकी याद आयी ये सेवामें उपस्थित ही थे। इनसे वह सब वृत्तान्त बैरामखांके मारे जानेका पूछा और कृपा करके कहा कि इसने पट्टन मिरजाखांको दी। परन्तु अभी इसके पास उसके संरक्षणका साधन नहीं है। इसलिये सय्यद अहमद खां (३) यहांका रक्षक रहे। पाटन गुजरातका पहिला परगना था जो बादशाहके कब्जेमें आया और यही इनकी पहिली जागीर भी थी जो बापके पीछे मिली। क्या ईश्वरकी माया है, कि जिस धरती पर इनके बापका लहू गिरा था और जहां इनकी जानपर आ बनी थी, अब वहींसे इनके भाग्योदयका प्रारम्भ हुआ।

वहां जो शोक इनके मनमें बापकी याद आने या उनकी कब्रको देखनेसे उत्पन्न हुआ होगा उसका अधिकांश इस सौभाग्यसे शान्त हो गया होगा।

फिर गुजरात जाना।

बादशाहने पट्टनसे जाकर गुजरातकी राजधानी अहमदाबादको फतह किया और खान आजम मिरजा अजीजको जो इनका साला

(१) गुजरातमें न्यारी बादशाहत टाक जातिके मुसलमान राजपूतोंकी थी। उस समय वहांका बादशाह मुजफ्फर सुलतान था।

(२) अगहन सुदी ३ सं० १६२९ शनिवार।

(३) यह भी एक बादशाही अमीर था और उस ... दलमें ... था।

था, २३ खरदाद (१) सन् १८ ता० २ सफर बुधवार सन् ८८१ को (२) राजधानीमें [फतहपुर (३) सीकरीमें] प्रवेश किया। ये भी साथ थे। फिर गुजरातियोंने अवसर पाकर अहमदाबादको आ घेरा। बादशाह अपने धाभाई खान आजमको वचानेके लिये १० शहरेवर (४) सन् २४ रबी उल आखर सन् ८८१ रविवारको साडनियोंपर सवार होकर फिर गुजरातको गये और मारामार ८ दिनमें वहा पहुचे। ये भी उस टौडमें साथ थे। बादशाहने जब लडनेके वास्ते सेनाके व्यूह रचे तो इनको बीचके व्यूहमें नियत किया।

इस लडाईमें भी बादशाहको जीत हुई। इनका भी अभ्यास सग्राम सम्बन्धी कामोंमें बढा, क्योंकि एक वर्षमें दो बार ऐसी बडी लडाईमें सम्मिलित रहनेका अवसर मिल गया था।

गुजरातकी सूबेदारी।

पाटनकी जागीर ऐसी शुभ घडी और शुभ मुहूर्तमें इनको मिली थी कि उसके प्रतापसे दो वर्ष पीछे ही समग्र गुजरातमें इनका अधिकार हो गया। कारण उसका यह हुआ कि खान आजम बादशाहका हुक्म कम मानता था। इसलिये बादशाहने उसको गुजरातकी सूबेदारीसे दूर करके इनको सन् २१के (५) आरम्भमें अजमेरसे

१। प्रथम आषाढ सुदी सवत् १६३० बुधवार २३ खरदाद सन् १८ जून ३ सन् १५६३ ई०।

२। मशहूर राजधानी तो हिन्दुस्थानकी दिल्ली है पर अकबरने फतहपुरको जो सीकरीके पास है उन दिनोंमें राजधानी बना रखा था।

३। अहमदाबादसे ५०० मील पूर्व और उत्तरके कोनमें।

४। भादों बदी ११, सवत् १६३० रविवार १० शहरेवर सन् १८।

५। सन् २१ इलाही चैत सुदी ११ सवत् १६३३को लगा था।

उनीरखां और अलाउद्दौला, सैयद मुजफ्फर और प्यागदास सहित गुजरातमें भेजा। सबेटाको तो इनके नाम थे, परन्तु अभी तक ६ नका राजकाज करनेका काम नहीं पड़ा था, इसलिये काम बड़ों के हाथों सौंपा गया। अलाउद्दौला अमीन, प्यागदास दीवान और सैयद मुजफ्फर बख्शी हुआ।

मेवाड़में २ वर्ष रहना।

कुछ महीने पीछे बादशाहने अजमेर आनेका विचार करके इनको भी बुलाया। एतमादुद्दौला यह वहीं से वजीरखांको चार्ज देकर गुजरातसे चल दिये और पहिले ही पड़ाव पर बादशाहके चरण कमलोंमें उपस्थित होकर साथ साथ अजमेर (१) आये और फिर साथ ही मेवाड़के (२) दौरेमें भी गये। उस समय महाराणा प्रतापसिंहसे लड़ाई हो रही थी। बांसवाड़े (३) पहुंच कर "दे" महीनेकी १५ तारीखको (४) बादशाहने इन्हें भी उस लड़ाई पर भेज दिया। ये दो वर्ष तक मेवाड़के पहाड़ोंमें दौड़ धूप करते रहे। परन्तु पूरी विजय न होनेसे बादशाहने शहबाजखांको (५) फौजका अफसर करके भेजा। ये उसके साथ कुम्भलमेर पर गये। २४ फरवरदीन (६) सन् २३ को वह दुर्गम दुर्ग फतह होगया। वहांसे धावा करके इन लोगोंने गोगूंदा और उदयपुरको भी ले लिया।

---

(१) बादशाह ५ महर सन् २१ को कूच करके १६ को अजमेर पहुंचे थे। ५ महर आसोज बदी ८।१० संवत् १६३२को थी और १६ महर आसोज सुदी ६ शुक्रको।

(२) बादशाह ३१ महरको मेवाड़ रवाने हुए थे। उस दिन कातिक बदी ६ थी और वार शनि था। (३) बांसवाड़ा एक छोटा राज्य गहलोतोंका मेवाड़की पूर्व और दक्षिण सीमा पर है।

(४) पोष सुदी ६ बुधवार (५) शहबाजखां कम्बोह जातिका मुसलमान और मीर बख्शी था।

(६) वैसाख बदी १२ वृहस्पतिवार संवत् १६३५।

जब इस तरह मेवाड़में बादशाही अधिकार जम गया तो फौज लौट आयी और उसके साथ ये भी बादशाहकी सेवामें आ गये (१)।

मीर अर्ज होना।

सन् २५ के प्रारम्भमें [२] बादशाहने इन्हें मीर अर्जके महत् पद पर नियत किया। मीर अर्जका यह काम था कि जो लोग बादशाहसे अपनी दीन दशा कहने आवें उनका वृत्तान्त बादशाहकी सेवामें अर्ज किया करे और जो उसका उत्तर मिले वह जाकर उनको कह दे। अब तक यह काम किसी एक मनुष्यके अधीन न था। प्रति दिन एक सच्चा और सुजान व्यक्ति नियत हो जाया करता था। परन्तु अब बादशाहने अधिक भीड़, काम बहुत लोभका, अति प्रचारका और दरबारमें पहुंचना कठिन देख कर यह विचार किया कि किसी कुलीन और सच्चे सेवकको, जो स्वार्थी न हो, यह बड़ा काम देवे जो अपने और परायेको समदृष्टिसे देख कर उनके मनोरथ निवेदन किया करे और अवसर पाकर उत्तर ले लिया करे। यदि ठीक उत्तर न मिले तो खिन्न न होकर फिर प्रार्थना करनेका साहस करे। ये सारे गुण इनकी चेष्टासे प्रकट थे, इसलिये बादशाहने इन्हींको

(१) शहबाजखां ५ तीर सन् २३ को मेवाड़से गाव धारा इलाके पञ्जाबमें बादशाहके पास पहुंचा था उस दिन आषाढ सुदी १२ संवत १६३५ मङ्गलवार था।

(२) सन् २५ इलाही २४ मुहर्रम सन् ९८८ शुक्रवारको आरम्भ हुआ था, उस दिन चैत बदी ११ संवत १६३६ थी। अकबरनामेमें यह नहीं लिखा है कि किस दिन इनको वह काम मिला था, परन्तु पूर्वापर मिलानेसे ऐसा जाना पड़ता है कि चैत बदी ११ के पीछे वैशाख सुदी ११ तक किसी तिथिको मिला होगा।

यह काम दिया जिससे इनके ऐश्वर्यमें और वृद्धि हुई और राजलक्ष्मीका प्रकाश बढ़ा।

अजमेरकी सूबेदारी।

८ महीने पीछे फिर इनके और बढ़तीके दिन आये तो अजमेरकी सूबेदारी इनको मिली जो दस्तमखांके मारे जानेसे खाली हुई थी। बादशाहने नीति शिक्षाकी बहुतसी बातें कह कर इनको अजमेर भेजा और रणथम्भोरका प्रसिद्ध किला जागीरमें दिया जिससे अब ये देशपति और गढ़पति हो गये (१)।

दरबारमें उच्च पद।

सन् २६ में (२) ये अजमेरसे दरबारमें आये हुए थे कि २४ दे को (३) बादशाह शिकारके लिये नगर चैनको (४) गये। २ बहमनको (५) तसलीमके (६) समय बखशियोंने इनको शहबाज खांके ऊपर खड़ा किया। इस पर शहबाजखां बुरा मान कर जाने लगा तो बादशाहने शिक्षा देनेके लिये उसको राय सान, दरबा

---

(१) अजमेरमें नियत होनेकी मिती भी अकबरनामेमें नहीं लिखी है, परन्तु, दस्तमखां १० आबान सन २५ को कछवाहे राजपूतोंकी लड़ाईमें जखमी हो कर दूसरे दिन मरा था। इस लिये कह सकते हैं कि अजमेरकी सूबेदारी इनको आबान या आजरके महीनेमें मिली होगी और १० आबान सन् २५ अगहन बदी ११ संवत् १६३७ को थी।

(२) सन् २६ इलाही चैत सुदी ७ संवत् १६३८ को लगा था।

(३) पौष सुदी ११ हृ० संवत् १६३८।

(४) नगर चैन फतहपुर सिकरीके पास एक शहर अकबर बादशाहने बसाया था जो उनके जीते ही समय उजड़ गया।

(५) माघ बदी ३ हृ० संवत् १६३८।

(६) दरबारमें सलाम करना।

रोके (१) पहरेमें रख दिया। इस बातसे इनका अधिक प्रताप बड़े बड़े अमीरोंके मनमें खटक गया और उन्होंने जान लिया कि बादशाह इनको और भी बढ़ाना चाहते हैं।

राज सभामें छोटे छोटे जीवोंके न पकड़े जानेका प्रस्ताव।

१ फरवरदीन (२) सन् २७ इलाहीको बादशाहने नये दिनके उत्सव किये। महाराजसभामें विराजमान हो कर यह भाषण किया कि प्रभुता वास्तवमें ईश्वरको ही फबती है, दीन मनुष्यको क्या सामर्थ्य है कि जो प्रभु बननेकी चेष्टा करे और अपने जातियोंको दास बनावे। यह कह कर गुलामोंको जो कई हजार थे, दासत्वसे मुक्त कर दिया और कहा कि जबरदस्ती पकड़े हुओंको गुलाम कहना और उनसे गुलामी कराना महाकी सभ्यता है। फिर सब सभासदोंकी भी अपनी अपनी इच्छा निवेदन करनेकी आज्ञा दी। जब इनकी बारी आयी तो इन्होंने कहा कि छोटे छोटे जीव जन्तु (चिड़िया मछलियां आदि) न पकड़े जावें तो अच्छा हो; क्योंकि थोड़ेसे लाभकी सम्भावनामें बहुतसे जीव नष्ट होते हैं।

बादशाहने दूसरे सभासदोंकी प्रार्थनाके साथ इनकी आकांक्षा भी स्वीकार की। इनसे इनकी प्रकृतिका पता लगता है कि ये कैसे दयालु और पुण्यात्मा थे।

बड़े शाहजादेका रक्षक होना।

ऐसी ऐसी बुद्धिमानी और योग्यताकी बातोंसे इनकी जगह बादशाहके दिलमें बढ़ती जाती थी और वे इनकी कार्य कुशलतासे सन्तुष्ट होकर जब कोई काम इनके योग्य देखते थे तो प्रसन्नता पूर्वक इनको उस पर नियुक्त कर देते थे और इनके ऊपर

१। यह शेखावत कछवाहोंमें एक बड़ा सरदार और बादशाही दरबारका सभासद था।

२। चैत बदी २ रविवार संवत् १६३८ को तारीख १ फरवरदीन सन् २७ थी।

उनको भरोसा भी पूरा था। इसीलिये जब जो बड़े शाहजादे सुल तान सलीमको अतालीकोकी जगह खाली हुई तो उसके वास्ते भी बादशाहने इन्हींको उत्तम समझ कर शाहजादेका अता लीक (१) बनाया अर्थात् शाहजादेको इनकी रक्षामें रखा। इन्होंने इस महत्सौभाग्यका बड़ा उत्सव किया और बादशाहसे उसमें पधारनेकी प्रार्थना की। दयालु बादशाह २० शहरेवर (२) सन् २७ को इनके घर पधारे जिससे सब लोगोंको आनन्द हुआ।

घोड़ोंके प्रबन्धमें नियुक्ति।

इसी साल बादशाहने व्यापारियोंके सुखके लिये क्रय विक्रयका कर नियत करके एक एक अमीरको एक एक वस्तु का अधिकार दिया। उसमें घोड़ोंको देख भाल इनको मिली।

ये दोनों काम भी इनकी विद्या और बुद्धिके योग्य थे।

सामाजिक कार्यमें शाहजादेका सहायक होना।

(३) सन् २८ में बादशाहने राज्य और राजकाजके बहुत बढ़ जानेसे सुबीते और प्रबन्धके लिये शाहजादोंको पृथक पृथक काम बांटे और कोष, छापा, विवाह और जन्म सम्बन्धी कार्य्योंका प्रबन्ध बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके अधीन किया। ये उसके भी सहायकोंमें रखे गये।

गुजरातमें लड़ने जाना।

इसी साल जो इनका राज योग और प्रबल हुआ और एक बड़ी लड़ाईमें विजय प्राप्त करके पृथिवीमें प्रतिष्ठित होनेका समय आया तो बादशाहने इनको फिर गुजरात भेजा। परन्तु अब गुजरातमें पहिलेकीसी शान्ति नहीं थी। वहांके अगले सुलतान मुजफ्फरने जिसे बादशाह पकड़ लाये थे कैदसे भाग

१। पहले कुतुबुद्दीनखां अतालीक था, पर वह इस समय किसी काम पर बाहर भेजा गया था।

२। आसोज बदी ८ रविवार संवत १६३९।

३। सन् २८ चैत बदी १३ संवत १६३९ को लगा था।

कर उस देशका अधिकांश फिर जीत लिया था और अहमदा वादमें बैठ कर फिर अपनी आन दुहाई फेरी थी। जो बादशाही अमीर गुजरातमें थे वे लड़ाईमें हार कर पटनेमें चले आये और बादशाहको अर्जी पर अर्जी भेजते थे। बादशाहने ८ मह्हर (१) सन् २८ को एक बड़ा लश्कर इनके साथ विदा किया जिसमें इतने अमीरोंकी नौकरी बोली गयी थी,—

१ सैयद कासम।
२ सैयद हाशम।
३ शेरेबिया खां।
४ राव दुर्गा।
५ राय लवण करण।
६ मेदिनी राय।
७ मिया बहादुर।
८ दरवेश खां।
९ रफीय सरमदी।
१० शेख कबीर।
११ नसीब तुर्कमान।

हुक्म दिया गया कि सब सीधे रास्तेसे गुजरातको जावें। कुली अखा और नवरङ्ग खां इस आज्ञाके साथ मालवे भेजे गये कि वहांके लश्करको लेकर इनसे जा मिलें।

ये बादशाहसे विदा हुए। कुछ लोग तो सेनाके एकत्र होनेके लिये रास्तेमें ठहरे और कुछ बेसमझ लोगोंके झूठी खबरें उड़ानेसे धीरे धीरे चले। जब ये मेड़तेके पास पहुचे तो पट्टनसे ख्वाजा ताहिरने आकर कुतुबुद्दीन खांके मारे जाने और किले भड़ूचमें भी मुजफ्फरके अमल हो जानेका वृत्तान्त कहा। ये बुद्धिमा नीसे इन अशुभ समाचारोंको गुप्त रख कर आगे बढ़े और शीघ्रतासे २० दे को (२) पाटन पहुंचे। वहां जो सेना थी वह सहर्ष अगवानीको आयी और यहां जो सब सरदारोंने मिलकर स लाह की तो किसी किसीने कहा कि जब तमाम मालवेका लश्कर नहीं आवे तब तक यहीं ठहरें और किसी किसीने कहा कि बाद-

१। कातिक वदी १ संवत १६४०।

२। माघ वदी १४ बुधवार संवत १६४०—१ जनवरी सन् १५८४ ई०।

शाहको आने दें, अभी आगे बढना उचित नहीं है।" इस प्रकार बहुत कम लोगोंने लडनेकी सलाह दी। कारण इसका यह था कि मुजफ्फरके पास ४० हजार सवार और १ लाख पैदल सेना थी। इधर सेना सिर्फ दस हजार ही थी। निदान दौलतखां लोदीने जो इनका मन्त्री और सेनापति था, कहा कि मालवेके अमीरोंके आने पर तो जीतमें उनका साझा पड जावेगा। जो तुम खानखाना बनना चाहते हो तो अकेले फतह करो, नहीं तो अनात अवस्थामें जीनेसे मर जाना अच्छा है।

मुजफ्फर पर चढाई।

खानखानाने यह सुन कर अहमदाबादके अगले सूबेदार एतमादखांको जो भाग कर आया था पट्टन ही में छोडा और बाकी लश्करके साथ लडाईकी इच्छासे कूच किया। युद्धके वास्ते जो व्यूह रचा था उसके ७ अङ्ग थे। उनके एक एक अङ्गमें कई अमीर राजा, राव तथा ठाकुर नियुक्त किये गये थे जिनका ब्यौरा नीचे लिखा जाता है।

१। गर्भमें, स्वयं थे, शहाबुद्दीन अहमदखां, जान दरवेशखां, सुरतान राठोड (१) मीर मुजफ्फर, अबुलफतह, मिरजा कुली खां, मुगल और शेख मुहम्मद मुगल।

२। दाहिनी भुजामें शेरबियाखां, मुहम्मद हसन, शेख अबुल कासिम, बुनियाद बेग फीरोजा, मीर हाशम और मीर सालह।

बाई भुजामें मोटा राजा (२) राय दुर्गा, तुलसीदास जादों (३) बीजा देवडा और रायनारायण दास जमींदार ईडर।

१। सुरतान राठोड प्रसिद्ध राव जयमल राठोडके बेटे थे जो चित्तौडगढमें अकबर बादशाहसे लडे थे।

२। मोटा राजा जोधपुरके महाराज थे इनका नाम उदयसिंह था। यह मोटे बहुत थे इससे अकबर बादशाह इनको मोटा राजा कहते थे।

३। ये करौलीके थे।

४। हिरावल अर्थात् आगेकी अनीमें—पायदा खां मुगल, सैयद कासिम, सैयद हाशम, राय लवण करन, रामचन्द्र, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली सैयद नसरतुल्लाह और सैयद करमुल्लाह।

५। एलतमश अर्थात् गर्भ और हिरावलके बीचकी अनीमें मेदिनीराय, रामसाह, राजा मुकुट मणि, ख्वाजा रफीअ, मुकम्मल बेग सरमदी, नसीब तुर्कमान, दौलतखां लोदी, सैयदखां काशी, शेखवली, शेखजैन और खिजर आका।

६। तरह सहायक सेनामें ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बख्शी, मीर अबुल मुजफ्फर, मीरमासूम भक्करी, बेग मुहम्मद तोकबाइ, मीर हबीबुल्लाह, मीर शरफुद्दीन, और हाथी बलोच।

७। किरावल अर्थात् आगे चलने वालोंमें मियां बहादुर उजबक। जङ्गी हाथी हरेक अनीमें थे।

मुजफ्फर यह सुनकर बहुतसे लशकर सहित अहमदाबादमें आया। व्यूहमें वह तो गर्भस्थ था, शेरखां फौलादी, और लूना काठी, दाहिनी तथा बायीं अनीमें थे और सालह बदख्शी अगली अनीमें था। उसने मानपुरमें लड़नेकी सलाह की और वहीं तोपखाना भी चुना था।

इन्होंने ८ मोहर्रम (१) सन् ९९२ को सेनाकी उत्तेजनाके वास्ते यह युक्ति की कि बादशाहकी ओरसे एक फरमान [आज्ञापत्र] बनाया और बड़ी धूमसे अगवानी जाकर उसको लाये और सब फौजको सुनाया। जिसका यह आशय था कि हम आते हैं हमारे पहुंचने तक लड़ाई मत करना।

मुजफ्फरसे लड़ाई।

यह फरमान सुनकर सारी सेना आह्लादके मारे चिल्ला उठी और मुजफरकी जगह छुडानेके लिये गांव सरखेजकी ओर चली।

१। माघ सुदी ११ च० संवत १६४०।

६ बहमनको (१) वहां पहुंचकर अहमदाबाद और नदीके बीच डेरे किये। यह समाचार सुनकर मुजफ्फर भी उधरसे चला और यह खबर उडी कि वह पीछेसे आवेगा, इसलिये इन्होंने राय दुर्गाको तरहमेंसे [सहायक अनीमेंसे] कुछ फौज देकर पीछे भेजा, बाकी फौजें आगे बढी और दुश्मनसे भिडीं। लडाई छिडी। दोनों ओरके वीर लडे, कटे और मरे। हिरावल और एलतमशके पैर टूट गये, तो भी ये खानखाना छोनहार वीर ३०० योधाओं और १०० हाथियों सहित जहां खडे थे वहीं जमे रहे। मुजफ्फर इनके सामने ही ६।७ हजार सवारों सहित खडा था। इनके पास थोडीसी सेना देखकर लडनेको आया। उस समय इनके कुछ शुभचिन्तकोंने इनके घोडेकी लगाम पर हाथ डाला कि रणांगनसे निकाल ले जावे, परन्तु इन्होंने लगाम छुडाकर हाथियोंको आगे बढाया और दुश्मनोंको सामनेसे हटाकर मैदान जीत लिया।

जीत और उसका उछाह।

यह फतह ७ बहमन (२) सन् २८ तथा १२ मुहर्रम ९९२को हुई, जिसके उछाहमें इन्होंने अपना सब धन माल साथियोंको दे डाला। अन्तमें एक मनुष्यने आकर कहा कि मुझे कुछ भी नहीं मिला। तब एक कलमदान जो बाकी रह गया था उसको देकर प्रसन्न किया।

मुजफ्फर पर और फतह।

मुजफ्फर राजमहेन्द्रीकी ओर भागा था, इन्होंने भागे हुओंका पीछा नहीं किया; उस दिन तो वहीं रहे। दूसरे दिन तडके ही अहमदाबादमें जाकर सुशोभित हुए। यहां मालवेके अमीर भी आ मिले।

१। माघ सुदी १४ बु० संवत १६४०

२। माघ सुदी १५ भृगुवार संवत १६४०।

बादशाहने गुजरात आनेके विचारसे १० बहमनको (१) इलाहाबादसे कूच किया था कि २५ बहमनको (२) कोडा घाटमपुरमें इस फतहकी बधाई पहुंची और वे खुश होकर राजधानीको लौट गये।

मुज़फ़्फ़रने खंभातके सेठोंसे रुपये लेकर फिर १०।१२ हजार सवार इकट्ठे कर लिये। यह खबर सुनकर इन्होंने सैयद कासिम वगैरह कई अमीरोंको तो अहमदाबादमें छोडा और बाकीको मालवेके लशकर सहित साथ लेकर खंभातके ऊपर धावा किया। मुजफ्फर सैयद दौलतको कुछ फौज सहित धोलकेमें भेजकर अचला परमारके गाव "सबद" में चला गया।

इन्होंने बड़ोदेमें पहुंचकर तोलकखांको तो सैयद दौलतपर भेजा और आप मुजफ्फरके पीछे गये। १८ असफन्दारको (३) मुजफ्फरसे लडाई हुई। वह फिर भागकर नर्वदा पार आपा पहाडमें चला गया जिसके दक्षिणमें तापती नदी बहती है और तीन ओर पहाड ही पहाड हैं।

जब यह नादोदमें पहुंचे तो सैयद दौलतपर तोलकखांके फतह पानेकी बधाई आयी जिससे लशकरवालोंका दिल और बढा और व्यूह रचकर उस पहाडपर धावा किया गया। मुजफ्फर फिर लडाई हार कर भागा। बादशाही फौजने पीछा करके उसकी २ हजार सेनाको मारा और ५०० को पकडा।

खानखानाका खिताब और ५ हजारी मनसब।

जब बादशाहको इस दूसरी फतहकी खबर पहुंची तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इनको खानखानाका खिताब, एक भारी खिल्अत और पांच हजारी मनसब बख्शा और दूसरे अमीरोंको भी मनसब बढाये।

१। फागुन बदी ३।

२। फागुन सुदी ३ ता० १ सफर सन् ९९२।

३। चैत बदी १२ संवत १६४०।

गुजरातियोंका भागना।

सैयद दौलत खम्भातमें चला गया था। इसलिये इन्होंने मोटा राजा, मेदनीराय, राजा मुकटमणि, रामसाह उदयसिंह, रामचन्द्र, बाघ राठोड़, तुलसीदास जादौं बहादुर, भायलगकड़, अबुल फतह मगल, करावहरी, और दौलतखांको उसपर भेजा। इन सरदारोंने वहां जाकर उसको भगा दिया।

फिर खानखानाने महेन्द्रीसे ख्वाजा, निजामुद्दीन अहमद मीर मासूम, और सुरतान राठोडको आबिद और मीरक युसुफ वगैरह पर भेजा जो राजपीपलेके पहाड़से निकलकर लूट मार करते थे। ये जब धोलकेमें पहुंचे तो वे लोग भाग गये।

देशका प्रबन्ध और फतहबाग।

खानखाना १५ उर्दी (१) बिहिश्त सन् २८ को अहमदाबाद पहुंचकर देशके प्रबन्धमें प्रवृत्त हुए और जहां मुजफ्फरके ऊपर फतह पायी थी वहां एक बाग लगाया। उसका नाम फतह बाग (२) रखा।

मडूचकी फतह।

मुजफ्फर राजपीपलेसे पट्टनको आया। इन्होंने यादमाबेगको उधर भेजा तो वह ईडर होकर काठियावाडमें चला गया। वहांसे बन्दर घोघेमें जाकर छिप रहा। खानखानाने भडूचके ऊपर फौज भेजकर वह किला भी १० मिहरको (३) मुजफ्फरके किलेदारसे खाली करा लिया।

मुजफ्फरका पीछा करना।

इस वर्ष लडाई दङ्गा रहनेसे खेतीकी उपज कम हुई जिससे सरदारों और सिपाहियोंका बल घट गया। गुजराती यह

१। जेठ वदी १० संवत १६४१ ता० २२ रबीउस्सानी सन् ९९२।

२। अब इसेफतहबाड़ी कहते हैं।

३। आसोज वदी में सं० १६४१।

भेद पाकर उपद्रव करने लगे। मुजफ्फर गोंडलमें आया जो जूना-गढसे १५ कोस है। अमीनखा गोरी और जाम (१) भी उससे मिल गये। खानखानाने कुलीचखाको अहमदाबादमें छोडा और फौजके २ विभाग करके मेदिनीराय, बेगमुहम्मद, कामरावेग, रामचन्द्र, उदैचन्द आदिको धधूका से ७ कोसपर गांव छुड्डालेमें भेजा। और अहमदाबादसे ७ कोस गाव बेरादेमें बयान बहादुर तथा भूपतराय प्रभृतिको नियत किया। सैयद कासमको पट्टनमें छोड़ा और आप (२) आजर १२ सन् २९ को मुजफ्फरसे लडनेको गये। उस समय वह मोरवीमें था जहांसे इनका आना सुनकर खरडी और राजकोटको चल दिया जो काठियावाडमें है। बीरम गांवसे खरडी तक ६० कोसमें बस्ती न थी। तौ भी ये भोजनकी सामग्री लेकर छडी सवारीसे वहां पहुंचे तो वह पहाडमें जो द्वारकासे २० कोस समुद्र तट पर है चला गया। इन्होंने भी वहां जाकर छावनी डाल दी। अमीनखांने अपने बेटेको भेज दिया। जामके वकीलोंने आकर कहा कि मुजफ्फर यहांसे ४० कोस पर है। ये उधर गये, परन्तु वह नहीं मिला। तब इन्होंने अपनी सेनाके ४ खण्ड करके उस प्रदेशमें भेजे। वहांके राजपूत वीरतासे लडकर काम आये और वह सुन्दर देश लुट गया।

जामका अधीन होना।

इस अवसरमें मुजफ्फर अपने बेटोंको जामके पास छोड कर अहमदाबाद गया। इन्होंने उसकी कुछ परवाह न करके जामको दण्ड देना चाहा। वह भी पहले तो सेना सजकर लडनेको आया और फिर ४ कोस दूर रहकर अधीनता स्वीकार करने लगा। राय दुर्गा और कल्याण रायके बीचमें पडनेसे उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई। तब उसने अपने बेटे जस्साको लाल रङ्गके हाथी और भेटकी दूसरी वस्तुओं सहित भेजा।

१। जाम नगरका राजा।

२। मगसर सुदी २ सं० १६४१।

मुजफ्फरको फिर हराना।

नया नगर इससे १० कोस रह गया था कि ये जामके अधीन हो जानेसे अहमदाबादको लौटे। मोरवीके पास पहुंच कर सुना कि मुजफ्फर अहमदाबादको आता है। इन्होंने और परांतोंकी सेना मिलकर लडनेको गये। वह परांतोमें आकर लडा। मदन चौहान, रामचन्द, उदैसिंह, सैयद लाद, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली, मीपत दखनी, केशवदास, बाघ राठौड आदि जो पहिली सेनामें थे खूब लडे। ख्वाजम बरदी लड़ता हुआ मुजफ्फरके पास तक जा पहुंचा। वह फिर भाग गया और उसके कई सरदार मारे गये।

खानखाना दरबारमें।

ये इस बधाईसे प्रसन्न होकर अहमदाबादमें आये। बादशाहका हुक्म पहुंचा था कि जब गुजरातके प्रबन्धसे निश्चिन्त हो जाओ तो दरगाहमें आओ। इसलिये ६ अमरदाद (१) सन् ३० को अहमदाबादसे चलकर २४ को (२) बादशाहकी सेवामें पहुंचे। बादशाहने बहुत कृपा की और जब लाहौरको जाने लगे तो २२ शहरेवर (३) सन ३० को राजा टोडरमलके तालावसे जो फतहपुर सिकरीके पास था इनको गुजरात जानेकी आज्ञा दी। इनकी अनुपस्थितिमें अवसर पाकर मुजफ्फर फिर अहमदाबाद पर आया था, परन्तु कुतबुद्दीनखां आदि अमीरोंने ३० कोस तक सामने जाकर उसको रणको (४) तरफ भगा दिया।

१। सावन सुदी ३ संवत १६४२।

२। भादों बदी ६ सं० १६४२।

३। आसोज बदी ५ संवत १६४२।

४। एक बडी झील खारे पानीकी जो कच्छ देशमें है।

सिरोही और जालोरके अधिपतियोंको अधीन करना।

इन्होंने गुजरातको आते हुए सिरोही और जालोरके जमींदारोंको जो उस समय गुजरातके आधीन थे रास्तेमें अपने पास बुलाया। सिरोहीका राव तो कुछ दिनोंमें आकर मिल गया। और जालोरपति गजनीखाने पहिले तो हुक्म नहीं माना और जब फिर इनको दृढ़प्रतिज्ञ देख कर आया तो उसको अपने साथ ले गये और जालोर उससे छीन कर दूसरेको दे दी।

शिकारमें बेतरह फंस जाना।

इस यात्रामें ईश्वरने एक बड़ी जान जोखिमसे इनकी रक्षा की थी। सिरोहीके पास पहुंच कर इनके मनमें यह वासना उपजी कि थोड़ेसे सहित जाकर शिकारका आनन्द लें और यौवन मदसे इस धुनमें सेनासे दूर निकल गये। फिर थकावट और धूपसे व्याकुल होकर एक वृक्षकी छायामें जा बैठे। इतनेमें एक अहेरीने अनीतिसे एक गाय पकड़ ली। इस पर उस प्रान्तके राजपूत लड़नेको आये। यह उठ कर उनपर गये। कुछ इनके साथी भी पहुंचे। बड़ी लड़ाई हुई। इनकी जान पर आ बनी। बचनेकी आशा न थी कि जीत हो गयी और उन लोगोंको पूरा दण्ड दिया गया।

सन् ३१ में (१) बादशाहने इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाको बराड़ फतह करनेका हुक्म दिया था। वह मालवेसे गया, परन्तु जो अमीर उनके साथ थे उनसे नहीं बना इसलिये उस काममें सफलता न पाकर सहायता प्राप्त करनेके लिये वह इनके पास आया। ये बड़ी धूमधामसे अगवानी। जाकर उसको लाये और सहायताके वास्ते सेना भी सजायी, परन्तु उसके शत्रुओंने इनको भी बहका दिया।

१। सन् ३१ इलाही चैत सुदी १ संवत १६४३ को लगा था अर्थात ये दोनों वर्ष एकही दिन आरम्भ हुए थे।

ये चुप हो रहे और खान आजम जैसा आया था वैसा ही चला गया।

गुजरातमें नये कर्मचारी।

इसी साल बादशाहने एक एक सूबेमें [मण्डलमें] दो दो कार्य्य कुशल माण्डलीक [सूबेदार] नियत किये कि जो एक दरबारमें आवे या एक बीमार हो जावे तो दूसरा उसका काम करे। ऐसे ही दीवान बख्शी भी पृथक पृथक स्थापित कर दिये। गुजरातके सूबेमें ये तो थे ही, दूसरा नाम कुतुबुद्दीनखांका लिखा जो इनकी अनुपस्थितिमें काम किया करता था। अबुल कासिमको दीवान और निजामुद्दीन अहमदको बख्शी बनाया।

सुलतान मुरादके विवाहमें जाना।

सन् ३२ में (१) शाहजादे मुरादका विवाह इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाकी बेटीसे ठहरा था। इसलिये बादशाहने इनको लिखा कि अगर उस देशमें शान्ति हो गयी हो तो दरबारमें उपस्थित हो जाओ। वहां उन दिनों कोई अशान्ति भी न थी। इस वास्ते ये साड़नी पर सवार होकर १५ दिनमें १६ उर्दी (२) बहिश्तको बादशाहके पास पहुंचे जो उस समय पंजाबमें थे और २५ को (३) शाहजादेका विवाह हो गया।

दरबारमें पञ्चायत।

खान खाना बहुत दिनों तक दरबारमें रहे। बादशाह बड़े बड़े कामोंमें उनको भी पञ्च और मध्यस्थ बनाते थे जिसका एक दृष्टान्त यह है कि शहबाज खां और राजा टोडरमल वजीरका आपसमें हिसाबका झगड़ा था। उसकी सफाईके लिये बाद-

१। सन ३२ चैत सुदी ३ संवत १६४४ को लगा था।

२। द्वितीय वैसाख बदी १४ संवत १६४४।

३। द्वितीय वैसाख सुदी ८ संवत १६४४।

शाहने इनको अजमुद्दौला, हकीम अबुलफतह, और शेख अबुल फजल को पञ्च बनाया था जिन्होंने दोनोंके स्वार्थको अलग करके न्यायसे चुका दिया।

खानखाना काश्मीर और काबुलमें।

सन् ३४ में (१) बादशाह काश्मीरको गये। ये भी साथ थे। बादशाहने उस भूमिकी शोभा देख कर हीरापुरसे इनको बड़े शाहजादे और बेगमोंके लानेके लिये भेजा। शाह जादा तो चला आया और बेगमोंको मार्गकी सङ्कीर्णतासे नौ शहरेमें छोड़ आया। बादशाह जो बेगमोंकी प्रतीक्षामें थे शाह जादे पर बहुत क्रुद्ध हुए और खानखानाको भी लिखा कि जो शाहजादेकी मत मारी गयी थी तो तुमने क्यों ऐसा किया।

यह कार्रवाई करके आप अगवानी हो कर बेगमोंको लानेके लिये अकेले हीरापुर तक पीछे चले गये, फिर मन्त्रियोंकी विनय पत्रिकाओंके पहुंचनेसे लौट आये और इन्होंको लिख भेजा कि बेगमोंको अच्छी तरह ले आना।

ये बड़े परिश्रमसे मार्ग साफ करके कहारोंकी सहायता देते हुए बेगमोंको ले आये जिससे बादशाह बहुत प्रसन्न हुए। (२)।

तुज़क बाबरीका अनुवाद।

१ अमरदादको (३) बादशाह काश्मीरसे चलकर काबुलको गये और ८ आजरको (४) काबुलसे हिन्दुस्तानको लौटे। रास्ते में १३ आजरको (५) योरत बादशाह नामक पड़ावमें डेरे हुए। वहां इन्होंने बाबर बादशाहके इतिहासका फारसी

१। सन् ३४ चैत सुदी ५ स १६४६ को लगा था और बादशाह १६ उर्दी बहिश्त जेठ बदी ७ को रातको काश्मीर गये थे।

२। ८ तीर सावन बदी ४ को यह काम हुआ था।

३। सावन सुदी १२स १६४६। ४। मगसर बदी ४प्र १६४६

५। मगसर बदी १३।

अनुवाद जो इस अवकाशमें किया था बादशाहकी दृष्टिमें लाकर रक्खा तो बादशाहने बहुत धन्यवाद दिया। यह इतिहास स्वय बाबर बादशाहका लिखा हुआ तुर्की भाषामें था जिसको हिन्दुस्थानी लोग नहीं समझ सकते थे। इन्होंने उसको फारसीमें (१) करके इन लोगोंका बड़ा उपकार किया।

महा मन्त्री होना।

जब इस तरह इनकी कार्यदक्षता और निःस्वार्थता बादशाहको निश्चय हो गयी तो उन्होंने १२ दे (२) सन् ३४ को बारी कमाव (३) नामक पड़ाव पर इनको वकालतका महत् अधिकार दिया जो राजा टोडरमलके मरजानेसे खाली हुआ था।

वकालतका ओहदा मुगलोंके राज्यमें सर्वोपरि था। वकील बादशाहका प्रतिनिधि समझा जाता था। इनके बाप भी इसी पद पर थे।

जौनपुर जागीरमें।

गुजरात इनसे उतरकर मिरजा अजीज कोकाको मिली तो जौनपुर इनको जागीरमें मिला और गजनी खांको जिसे उन्होंने पकड़ा था और जो अब दरबारमें आकर निरन्तर सेवा किया करता था बादशाहने ८ उर्दी बहिश्त (४) सन ३५ को जालोर प्रदान किया जो इन्होंने उससे छीनकर दूसरेको दे दिया था।

कारनका जन्म।

१२ आजर (५) सन ३५ को इनका तीसरा बेटा कारन जन्मा। इनको सदा सन्तानकी वाञ्छा रहा करती थी। जब गुजरातमें थे तो

१। फारसी तुजक बाबरी छप गयी है उसमें तो इनका नाम नहीं है पर छापेवालेने ऊपर छापा है।

२। पौस वदी १२ संवत १६४६। ३। यह स्थान काबुल और सिन्धु नदीके बीचमें है। ४। वैसाख वदी १० सं० १६४७। ५। मगसर सुदी ८ सं० १६४७।

एक रात बादशाहने शेख अबुलफजलसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर शीघ्रही तीन पुत्र देगा। उनके ऐरच, दाराब, और कारा नाम रखना। सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बड़ा उत्सव किया। उसमें बादशाहको भी बुलाया। बादशाह गये और इनका मान बढ़ाया।

कंधार जाना।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया। शाहबेग खां, रायस भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठोड, शेरखा आदि ४५अमीरोंकी नौकरी इनके साथ बोली गयी।

कंधार पहिले तो इनके बापकी जागीरमें था, फिर बादशाहने ईरानके बादशाहको दे दिया था और उसकी तरफसे मुजफ्फर हुसेन मिरजा और रुस्तम मिरजा कन्धारमें थे। अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बदले हुए थे। उधर तूरानका बादशाह कन्धारकी ताकमें था, इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचस्थानके रास्तेसे जाओ। जो वे लोग हुक्म मानें तो वह सरस देश उन्हीके पास छोड़ देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठट्टेका जमींदार अबतक सेवामें नहीं आया है, इस वास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसके पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटते वक्तसमझ लेना।

इन्होंने कूच करके लाहोरसे एक कोसपर डेरा किया। पहिली बहमनको (२) बादशाह वहां पधारे। बडी सभा जुडी। खूब नजर निछावर हुई।

मुलतानमें पहुंचना।

मुलतान और भक्कर इनकी जागीरमें थे; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और बनाम होकर था, छोडकर दूरका

१। माघ बदी ५। २। माघ बदी १०संवत् १६४७।

वास्ता लिया और लोभी लोगोंने कहा कि कन्धार तो निर्धन देश है और ठट्ठा मालदार है जिसपर इन्होंने बादशाहसे सिन्ध लेनेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने इनको आज्ञा देकर शाहजादे दानियालको कधार पर भेज दिया।

मुलतानके पास बिलोची सरदार आकर मिले। भक्करके समीप व्यूह रचा गया।

मिरजा जनीने दूत भेजकर कहलाया कि जो मेरे देशमें उपद्रव न होता तो मैं खुद कन्धारको चलता। अब अपनी सेना आपके साथ कर दूंगा।

सिंधपर चढ़ाई।

इन्होंने दूतोंको कैद करके लम्बे लम्बे कूच किये। इतनेमें यह खबर आयी कि सहवानके किलेमें आग लगी और धान चारा जल गया।

अब इन्होंने एक सेना जलमार्गसे और दूसरी स्थल मार्गसे भेजी। पहले जल सेनाने सहवानके नीचेसे जाकर लक्खीको ले लिया और किलेवालोंकी तोप और बन्दूकसे कुछ हानि न हुई। यह नगर भी उसी भांति सिन्ध देशका द्वार है जैसा कि गढ़ी बंगालेका और बारहमूला काश्मीरका है।

ये किलेके पास जाकर ठहरे। किला सिन्ध नदीके एक ऊंचे तटपर था। नदीकी तीन धाराएं उसके पास आकर मिली थीं। किरावेग नावोंमें बैठकर गया और बहुतसा माल लूट लाया। मिरजा जानी यह बात सुनकर लड़नेको आया। नसीरपुरके पासकी जगहको जिसके एक ओर नदी और दूसरी ओर नाले थे उसने किला बनाकर तोपों और जङ्गी नावोंसे सुदृढ़ किया।

इतनेमें रावल भीम और दलपत राठौर जैसलमेर और बीकानेरसे ऊमरकोट होकर आये और नसीरपुरपर जल और स्थलके मार्गसे फौज भेजी गयी कुछ लोग घाटोंपर भी छोड़े गये।

सिन्धियोंपर फतह।

१८ आबान (१) सन् ३६ को मंचुओंसे ६ कोस पर जा पहुचे। २१को(२) कुछ फौज सिन्धियोंकी नावोंमें बैठकर लडनेको आयी। परन्तु रात हो जानेसे लड़ाई न हुई। बादशाही सेना रातके अंधेरेमें नदीसे उतर गयी। तड़के ही तोपें बहुत तेजीसे चलने लगीं। जो लोग पानीसे उतर गये थे, उन्होंने तीरोंकी वर्षा की, फिर बरछे और जमधरको मार दी। निदान सिन्धी भाग गये। बड़ी फतह हुई। ४ नावें माल और मनुष्यसे भरी पकडी गयी। एकमें हुरमुज बन्दरका एलची भी था जो व्यापारियोंके प्रबन्धके लिये ठट्ठेमें रहता था और जानो बेग जो यह जतलानेके लिये कि दक्ष देशान्तरके लोग सहायक बनकर आये है अपने कुछ आदमियोंको कई देशोंके लोगोंकी वरदी पहिना कर लाया था।

मिरज़ा जानीके ऊपर दोनों तरफसे जानेका विचार होकर रह गया। नही तो पूरी फतह हो जाती। इस फतहकी वधाईमें जो साडनी सवार दौड़ाया गया था, वह १२ आज़रको(३) लाहोरमें बादशाहके पास पहुचा।

ठट्ठे पर फौज।

फिर सिधियोंने रास्ता रोक कर रसद बन्द कर दी जिससे इन्होंने २७ देको (४) किलेका घेरा छोड दिया और जूनमें (५) जाकर छावनी डाली,-बाकी फौज ठट्ठे पर गयी।

१। मगसर बदी १० स० १६४८।

२। मगसर बदी १२ स० १६४८।

३। पोष बदी ५ सवत, १६४८।

४। माघ सुदी ३ सवत १६४८।

५। यह वही जगह थी जहा हुमायूं बादशाह भी रहे थे और इनके बाप गुजरात होकर पहुचे थे।

मिरजा जानीकी हार और सन्धि।

मिरजा जानी किलेसे निकलकर सहवांको गया। इन्होंने ख़ाजा मुकीम और राजा टोडरमलके बेटे धारू वगैरहको उसपर भेजा, इनसे और उससे बड़ी लड़ाई हुई। पहले तो सिन्धी जीते और धारू वीरतापूर्वक मारा गया, परन्तु पीछे बादशाही फ़ौज जीती और मिरजा जानी हार कर अपने किलेको भागा जिसको इन्होंने धावा मार कर उसके पहुंचनेसे पहले ही विध्वंस कर दिया। तब यह सेहवानसे ४० कोस सिन्धु नदीके निकट एक और किला बनाकर रहा। इन्होंने २६ फरवर दीन (१) सन् ३७ को जाकर उसे भी घेरा। दोनों तरफसे तीर और बन्दूककी लड़ाई होने लगी। नैनकोटके किलेमें जो थे, वे अपने किलेदारका सिर काट लाये और इस भांति वह किला अनायास ही हाथ आ गया जिसके हर्षमें मोरचे आगे बढ़ाये गये। सिन्धियोंमें बीमारी फैली बादशाही लशकरमें रसद बन्द हुई तो बादशाहने बहुतसा नाज और रुपये भेज दिये। उससे पहुंचनेसे सेनाका साहस बढ़ गया और वह यहांतक बढ़ती हुई चली गयी कि बाहरवाले अन्दरवालोंके हाथसे बरछे छीन लेते थे। निदान मिरजा जानीने सेविस्तानका जिला, सेहवानका किला, २० जङ्गी नाव और अपनी बेटी मिरजा एरचको देना स्वीकार करके सन्धि कर ली और बरसातके पीछे बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेका भी वचन दे दिया। तब इन्होंने १६ खुरदादको (२) मोरचे उठा लिये। मिरजाने बेटी व्याह दी और सहवान सौंप देनेको आदमी भेज दिये।

मिरजा जानीका मिलाप और मुल्ला शकेबीको २००० मोहरोंका इनाम।

फिर मिरजा जानी मिलनेको आया। उस दिन इन्होंने एक

१। बैसाख सुदी ३ संवत १६४८।

२। प्रथम आषाढ़ बदी १० संवत १६४८।

बड़ी सभा सजायी थी। इनके नौकर मुल्ला शकेबीने इस फतहके विषयकी एक कविता बनायी थी, यह उसने इस सभामें पढ़ी जिसकी रीझमें इन्होंने १००० अशरफिया उसको दी और इतनी ही मिरजा जानीने भी सिर्फ एक पदके पारितोषिकमें प्रदान कीं जिसका यह आशय था,—

"जो हुमा (पक्षी) आकाशमें उड़ा करता था, उसको तूने पकड़ा और जालसे छोड़ दिया।"

मिरजाने मुल्लासे कहा,—"रहमत खुदा"की तुझपर कि तूने मुझको हुमा कहा। जो गीदड़ कहता तो तेरी जीभ कौन पकड़ता ?

फिर मिरजा जानीपर चढ़ाई।

फिर इन्होंने सेहवानसे २० कोस सन नामा ग्राममें छावनी डालकर बरसात व्यतीत की। मिरजाने कहलाया कि सावनू (१) साख लेकर दरगाहको चलूंगा और उसने सेहवानका पूरा मान्त भी नहीं सौंपा था। वरन गाव और इलाकाड़ीको भी नहीं छोड़ा था। इसलिये इन्होंने उसके दूतको ठहराके कुछ फौज सिन्धु नदीसे उतार कर ठट्ठे को भेजी। कुछ जङ्गी नावों में बिठायी और कुछ नदीके निकटसे चलायी। विचार यह था कि तीनो फौजें गोप्यतासे पहुंच कर नसीरपुर ले ले जिससे मिरजा जानी दरगाह, आनेमें विलम्ब न करे।

नसीरपुरकी फतह।

फिर ये दूतको विदा करके पीछेसे आप भी आ गये और नसीरपुर ले कर उन तीनो फौजोंको उसी भांति आगे बढ़ाया। मिरजा ठट्ठे से तीन कोस चलकर नदीके तटको दृढ करनेके लिये वहां ठहरा था कि लोगोंने जाकर उसका बाजार लूट लिया। मिरजाने वकील भेजकर कहलाया कि प्रतिज्ञा भंग क्यों की ? इन्होंने जवाब दिया कि प्रतिज्ञा तो हमारी टूटनेवाली नहीं है

१। फसल खरीफ।

परन्तु सुना था कि सुरमुज बन्दरके फरङ्गी इस देशपर धावा करना चाहते हैं, इसलिये बन्दर लाहरीको जाता हैं। यह कहकर लूट लौटा दी।

मिरजा जानीका सब देश छोड़ देना।

१० आजार (१) सन् ३५ को ये और मिरजा मिले और इन्होंने ठट्ठेको कूच किया। जब रास्ते में मिरजाकी तरफसे कुछ विरोध न देखा तो कहा कि निवाड़ा यहीं नहीं है रहो तो जिससे कि फिर कोई कुछ कह हो न सके? मिरजाने लाहोरीसे सब देश छोड़ दिया और दरगाहमें जानेकी तय्यारी की।

ठट्ठे और लाहरी बन्दरमें जाना।

ये ठट्ठेको देखकर बन्दर लाहरीमें गये और आप वेग आदि कई पुरुषोंसे कहा कि तुम मिरजाको लेकर आगे चलो। तब कुछ लोगोंको ठट्ठेमें छोड़कर स्थलके मार्गसे लौटे और फतह बागके पास मिरजासे आ मिले।

मिरजा जानीको दरबारमें लाना।

ये २८ बहमन (२) सन् ३७ को सैयद बहाउद्दीन आदि कई अमीरोंको सिन्धमें छोड़कर मिरजा जानीके साथ दरगाहमें पहुंचे। ८ फरवरदीन (३) सन् ३८ को लाहोरके दौलतखानेमें दोनोंका मुजरा हुआ।

दक्षिण जीतनेको जाना।

२५ महर (४) सन् ३८ को बादशाहने सुलतान दानियालको दक्खिन फतह करनेको भेजा। इनको भी साथ किया, परन्तु

१। कार्तिक बदी १२ संवत १६४८।
२। फागुन बदी २ संवत १६४८।
३। चैत बदी ११ संवत १६४८।
४। कार्तिक बदी ८ संवत १६५०।

इसी कामपर सुलतान मुराद पहले जा चुका था। वह अब दनियालके जानेसे अप्रसन्न होगा, यह सोचकर बादशाहने दनियालको बुला लिया और सुलतानपुरसे आकर १५ दे (१) सन् ३८ को इन्हें हुक्म दिया कि आगरेमें जाकर सेना एकत्र करें और सुलतान मुरादको लिखा कि खानखाना सिपहसालारके आते तक गुजरातमें ठहरा रहे। इसपर वह भडोचमें ठहर गया।

शाहजादे मुरादकी नाराजी।

ये आगरे आये और जब सेना इकट्ठी हो गयी तो भेलसेमें जाकर कुछ दिनोंतक रहे जो इनकी जागीरमें था। ८ अमरदाद (२) सन् ४० को उज्जैनमें पहुंचे। सुलतान मुराद गुजरातमें इनका रास्ता देख रहा था। अब जो इनका मालवे होकर जाना सुना तो कुपित होकर इनसे जबाब पूछा। इन्होंने अरजी भेजी कि खानदेशका जमींदार राजा अलीखा भी बादशाही फौजके साथ हो जावेगा। उसको लेकर आता हूं। तब तक आप गुजरातमें शिकार खेलें।

शाहजादा इस जवाबको सुनकर फिर भड़का और गुजरातसे दक्षिणको चल दिया। तब तो ये लाव लशकर तोपखाना और फीलखाना मिरजा शाहरुखको सौंपकर दौडे और १८ आजर (३) सन् ४० को चांदोरके पास जो अहमदनगरसे ३० कोस इधर है शाहजादेकी सेवामें पहुंचे, परन्तु शाहजादेने अपने अतालीक सादिकखांके बहकानेसे इनको दरबारमें नहीं बुलाया और जो दूसरे दिन बहुतसी कहा सुनीसे बुलाया भी तो बहुत रुखाईसे सलाम लिया। इससे ये और दूसरे अमीर जो इनके साथ थे दिलमें नाराज हुए और कामसे हाथ खेंच बैठे। शाहबाज खां भी इनके साथ गया था। सादिक,खांकी उससे भी शत्रुता थी। इसलिये वह भी मारे डरके दरबारमें कम जाता था।

१। पोस बदी १३।१४ संवत १६५०।
२। सावन बदी ११ संवत १६५२।
३। मगसर सुदी ८ संवत १६५२।

अहमदनगर पहुंचना।

७३ (१) सन् ४०को शाहजादा अहमदनगरसे आधकोस पहुंचकर ठहरा। वहां बहुत लोगोंने आकर रक्षापत्र लिये फिर ये और शहबाज खां शहरमें गये। परन्तु इनकी बेपरवाईसे सिपाही प्रजाको लूटने लगे उनको बहुत परिश्रमसे रोका तो सही, परन्तु शहरवालोंका दिल फिर गया। चांदबीबीने जो अहमदनगरके बादशाह बुरहान निजामुल्मुल्कको बहन थी दरवाजे बन्द करके लड़ाईकी ठानी।

दूसरे दिन शाहजादेने अहमदनगरको घेरा। तीसरे दिन शाहअली और अभगर खां उधरसे इनके मोरचेपर आये और लड़ाईमें हार खाकर गये, परन्तु आपसकी फूटसे उनका पीछा नहीं किया गया।

आपसकी फूट और अहमद नगरवालोंसे सन्धि।

सेनामें जो खानें आदमी थे उन्होंने कहा कि यहां ३ बड़ी फौजें है। तीनों तीन काम करें अर्थात् किलेकी तरफ देशका दबाना और रास्तोंकी रक्षामेंसे एक एक काम लेलें परन्तु कुछ स्थिर न हुआ,

११ असफन्दारमजको (२) किलेको कुछ दीवार बारूदसे उडायी गयी, मगर अन्दर जानेमें इतनी ढील हुई कि किलेवालोंने उसकी मरम्मत कर ली और बराड देना करके सन्धिको बात चलायी शाहजादेने स्वीकार करके १० फरवरदीन (३) सन् ४१ को अहमदनगरसे कूच किया और १४ उर्दी बहिश्तको (४) महकरमें (५) पहुंचकर जगह जगह थाने बिठा दिये। एक थानेपर खानखानाको

१। पौष बदी १३ संवत १६५२।

२। फागुन सुदी २ संवत १६५२।

३। चैत सुदी १ संवत १६५३।

४। बैसाख सुदी ६ संवत १६५३।

५। बराड़ देशका एक स्थान।

भी रख दिया, क्योंकि सादिकखांने उससे यह जड दी थी कि मैं तो आपका गुलाम हूं और चाहता हूं कि यह फतह आपके नामसे हो और खानखाना चाहता है कि अपना नाम करे और सेनापति भी आपही अकेला बना रहे।

दक्षिण दलका उमड़ना।

शाहजादेके आनेसे दक्षिणमें बड़ी खलबली पड़ी। अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डाके बादशाहोंने मिलकर लड़ने पर कमर बांधी। ६०००० सवारोंकी एक सजी हुई सेना मय तोपखाने सहित प्रस्तुत की। बीजापुरका (१) नाजिर सुहेलखा हबशी सेनापति बना और लड़नेको आया।

दक्षिणियोंसे लड़ने जाना।

शाहजादेने अपने बहनोई मिरजा शाहरुखको उसपर जानेके लिये उद्यत किया और इनको सेना सज्जित करनेका हुक्म दिया। तब ये १५००० सवारोंका एक सुदृढ़ व्यूह रचकर कि जिसके १० अंग प्रत्यंग थे शाहपुरकी छावनीसे आगे बढ़े और पाथड़ीसे १२ कोस असनी गांवके पास लड़ाईकी जगह देखकर ठहर गये। व्यूहके अङ्ग प्रत्यङ्ग निम्न लिखित रूपके थे,—

१। कलब अर्थात् बीचके अङ्गमें थे आप और मिरजा शाहरुख आदि २४ अमीर थे।

२। दाहने अङ्गमें सैयद कासम और केशोदास आदि १७ बीर थे।

३। बांये अङ्गमें खान देशका स्वामी राजा अली खां था।

४। हिरावल अर्थात् सबसे आगेके अंगमें जगन्नाथ और दुर्गादि २० राजपूत सरदार थे।

५। अलतमश अर्थात् हिरावल और कलबके बीचमें अली मरदान बहादुर आदि १० अमीर थे।

६। दाहने हाथकी सहायक सेनामें गजनोखानादि ८ सरदार थे

(१) क्लीव।

७। बायें हाथकी सहायक सेनामें हसनशाह नजरबेग और बहुतसे तुरकमान थे।

८। दहिने हाथके प्रत्य गमें शेर ख्वाजा आदि १४ अमीर और अहदी थे।

९। बायें हाथके प्रत्य गमें मीर अबुलमुजफ्फर आदि १८अमीर थे।

१०। चन्दावल अर्थात् पिछले अङ्गमें मलिक रुस्तम आदि ६ सरदार थे।

उधरसे सुहेली भी अपनी सेनाको सजाकर आया। अहमद नगरवालों अर्थात् निजामुल्मुल्कको सेना तो बीचमें थी। बीजापुरके आदिलखाकी दहने और गोलकुण्डेके कुतुबशाहकी बायें हाथ पर थी।

एक विशाल विजय।

वे २८ बहमन (१) ४१ को पहर दिन चढे गोदावरीसे उतर कर युद्धमें प्रवृत्त हुए जिसका प्रारम्भ दाहिने प्रत्य गसे हुआ। शेर ख्वाजा खूब लडा। पिछले दिनको घोर स ग्राम मचा। दखनी बहुत थे और उनके पास तोपें भी बहुत थीं। इससे बादशाही फौज चल विचल हो गयी, परन्तु जगनाथ राय दुर्गा राजसिंह और दूसरे राज पूत सरदार जो अलग अलग घोडे थामे खडे थे, बीजापुरवाले राजा अलीखाके ऊपर जा पडे। वह वीरतासे लड़कर वहीं मर गया। उसके अमीर और ५०० नौकर भी काम आये। दखनी राजा अली खाको मिरजा शाहरुख और खानखाना जानकर अपनी जीत होनेके भरोसेसे उस अन्धेरी रातमें कमर बांधे खडे रहे। इधर बादशाही फौजको अपनी विजयका निश्चय था और राजा अली खांके वास्ते यह कल्पना की जाती थी कि वह दुशमनोंसे मिल गया या निकल भागा भी तो उसका डेरा लुट गया है।

१। फागुन वदी ३० संवत १६५३। तवारीख फरिश्तामें १८ जमादिउस्सानी है [फागुन वदी ४] इस विषयकी आलोचना आगे की जावेगी।

हारकादास हिरावलमें और सैयद जलाल गज़नी अनीमें काम आये। रामचन्द जो बडे बडे धावे करता था राजा अली-खांकी फौजमें २० घाव खाकर गिरा और रात भर मुर्दोंमें पडा रहा। तडके उसको उठाकर डेरे पर लाये और कई दिनोंमें वह मर गया।

मीर कासिल बादशाही सेना जो रात भरकी प्यासी थी पानी पीनेको नदीकी ओर चली। यह अब ७००० थी। दखनी जो २५००० थे लडनेको आये और थोडीसी लडाई लडकर भाग गये। तीनों बादशाहोंके कई अमीर और बहुतसे सिपाही खेत रहे।

इस बडी फतहसे सबको अचम्भा हुआ। ४० हाथी और बहुत सी तोपें हाथ आयीं।

दूसरे दिन राजा अलीखांकी लोथ मिली। शंका करने वाले लज्जित हुए।

कुछ विशेष वृत्तांत मुआसिर उल उमरासे।

मुआसिर उल उमरामें कुछ विशेष वृत्तान्त इस युद्धका लिखा है। वह भी हम यहां लिखे देते हैं,—

पहर भर दिन चढा था कि लडाई शुरू हुई। दुश्मनकी तोपोंके दनादन चलनेसे सेनाओंके दिल दहलने लगे। उस समय अलीबेग रूमी जो इस तोपखानेका अफसर था, खानखानाकी प्रारब्धके प्रभाव तथा ईश्वरकी प्रेरणासे दौडता हुआ उनके पास आया और यह कहा कि सारी आतशबाजी तुम्हारे बराबर चुनी हुई है और अभी इसमें आग दी जाती है। इस वास्ते जो आप दाहिनी तरफको मुड जावें, तो ठीक होगा।

खानखानाने ऐसा ही किया और राजा अलीखांसे भी इधर आनेको कहलाया। वह खानखानाकी तरह तक पहुंचा था कि गनीमका तोपखाना एकदमसे चला। सूरज धुएंसे छिप गया। शत्रुकी फौज राजा अलीखांको खानखाना समझ कर बढी। उधरसे राजपूत जो हरोलमें थे दौडे और राजा अलीखांका

काम तमाम हो गया और उसके अमीर सब उसके पास पास कट मरे।

इधरसे खानखानाने धावा किया और दुशमनोंकी फौजको वहांसे भगाया। परन्तु उसी अवसरमें रात हो गयी और दोनों फौजें अपनी अपनी जीत समझ कर सारी रात रणमें जमी खड़ी रही। कोई भी घोड़ेकी पीठसे नहीं उतरा। दखनी तो यह समझते थे कि हमने खानखानाको मार डाला और उसकी विचली सेनाका नाश कर दिया है। खानखाना यह जानते थे कि बादशाही लशकरकी फतह हुई है।

दूसरे दिन ज्योंही प्रातःकालका उजाला हुआ, बादशाही लशकर जो रात भरका प्यासा था और जिसमें ७००से ज्यादा आदमी न थे पानी पीनेके वास्ते नदीको जाने लगे। सुहैल यह देखकर २५००० हजार सवारों सहित चढ आया। बड़ी लड़ाई हुई। दक्खनकी तीनों फौजोंमें बहुतसे आदमी मारे गये।

उस समय दौलतखां लोदीने जो हिरावलमें था इनसे कहा कि हम कुल ६०० सवार हैं। यदि सुहैलखांके या उसके तोपखाने और हाथियोंके सामने जाकर लडें तो आधे रास्ते में हो खेत रहें। इसलिये उसकी पीठ पर जाकर धावा करते हैं।

खानखानाने कहा अरे! यह क्या करता है! दिल्लीका नाम डुबोता है। दौलतखांने कहा जो जीते रहेंगे तो १०० नयी दिल्ली बसा लेंगे और जो मारे गये तो खुदासे काम है।

निदान जब दौलतखांने चाहा कि घोड़ा बढावे तो सैयद कासमने जो बारहके (१) सैयदोंके साथ उसकी अरदलीमें था कहा कि हम तुम हिन्दुस्थानी हैं, मरनेके सिवाय और उपाय नहीं है, परन्तु खानखानाका इरादा तो जानना चाहिये कि क्या है।

---

(१) बारह एक बस्तीका नाम है। वहांके सैयद वीरतामें प्रसिद्ध थे।

तब दौलतखा लौटा और खानखानासे बोला कि इतनी बडी दलबादल जैसी सेनासे सामना है और जीत दुविधेमें है। यदि हार हो जावे तो आप वह जगह बता दीजिये कि जहां आकर आपको ढूंढ लेवें। खानखानाने कहा कि "लोथोंके नीचे।"

यह सुनते ही दौलतखा (१) सैयदोंको साथ लेकर गया। उसने पीछेकी ओरसे धावा करके यवनोंको ऐसा गडबडाया कि सुहेलखां उतने बडे लाव लशकरका धनी होकर भी भाग निकला।

कहते हैं कि उसी दिन ७५ लाख रुपये रोकड और माल खानखानाके पास था। वह सब उन्होंने लुटा दिया और सिवाय कटोंके बोझके और कुछ अपने पास नहीं रखा।

दखनियोंके ४० हाथी तोपखाने समेत लूटमें आये, परन्तु जब राजा अलीखांके मारे जानेका हाल खानखानाको मालूम हुआ तो उतनी बडी फतहका आनन्द शोक और सन्तापसे बदल गया।

यह फतह सन् १००५के जमादिउस्सानी महीनेके (२) अन्तमें हुई और यह ऐसी बडी फतह थी कि जिससे सारा दक्षिण देश कांप उठा था। परन्तु यहां शाहजादेके अति मद्यप होने और सेनापतियोंमें फूट पड जानेसे इतना भी न

१। दौलतखा लोदीका बाप सलीम शाह सूरके अमीरोंमेंसे था जब बाबर बादशाहने लोदियोंका राज्य ले लिया तो उमरखा गुजरात चला गया था। वह तो वहीं मरा और दौलतखा खानखानाका नौकर हुआ, परन्तु खानखाना उसको भाईके बराबर रखते थे। बहुतसी लडाइयां उन्होंने दौलतखाकी वीरतासे ही जीती थीं। फिर शाह दानियालने उसको खानखानासे मांग लिया और वह उसीकी नौकरीमें मर गया।

२। फागुन बदी ३० स० १६५३।

हो सका कि १०।५ कोस तो गनु को भागी, हुई सेनाका, पीछा करते जिसमें बादशाही लशकरको धाक, और भी, दक्खिनियोंके दिलोंमें, बैठ जाती।

खानखानाका शाहजादेसे रूठ जाना।

फिर ये शाहजादेका साथ छोड़कर, अपनी जागीरमें (१) जा बैठे और यहांसे बादशाहके पास गये।

हम इस हालको तो यहीं छोडते हैं और, तवारीख-फरिश्ता परीचासे कुछ विशेष वृत्तान्त इस विषयका उद्धृत करते हैं। इस इतिहासका कर्ता मुहम्मद कासम फरिश्ता बीजापुरका रहने वाला था। इस प्रसङ्गमें उसने दक्षिणकी बादशाहतोंका वर्णन विस्तार पूर्वक किया है।

अहमद नगरका हाल तवारीख फरिश्तासे।

फरिश्तासे जाना जाता है कि अहमदनगरका राज्य उस समय सरदारोंकी आपा धापीमें पतला पडा हुआ था। बुरहान निजामशाहका बेटा इबराहीम जिसको तख्त पर बैठे हुए ४ महीने ही हुए थे, बीजापुरके बादशाह आदिलखांके मुकाबलेमें मारा गया था। अहमदनगरमें दो बड़े थोक, दखनियों और हबशियोंके थे। दखनियोंका सरदार मियां मझू था। उसने रणांगनसे अहमदनगरमें आकर इबराहीम निजामशाहके बेटे बहादुरशाहको तो जो ११ वर्षका था उसको फूफी चांदबीबीसे छीनकर जुनेरके किलेमें भेज दिया और अहमद शाहको जो दौलताबादमें कैद था, बुलाकर तख्त पर बिठाया। उस समय तो हबशी भी सहमत थे, परन्तु पीछेसे उनके सरदार इख़लास खांने यह जानकर कि अहमद शाह राजवंशमेंसे नहीं है, मियां मझूसे झगड़ा किया। इस पर हबशियोंने अहमदनगर

१। जागीरका नाम नहीं लिखा है शायद मेलसेमें चले गये हों।

'नगरको' घेर कर 'जुनेरके किलेदारसे 'बहादुर'शाहको मांगा। 'परन्तु' उसने बिना हुक्म मियां मंझूके नही दिया। हबशि योंने, अहमदनगरके बाजारमेंसे एक लडकेको पकडकर कहा कि यह निजामके घरानेसे है और उसको बादशाह बनाकर दस 'बारह हजार सवार इकट्ठे कर लिये। तब मियां मझूने अर्जी भेजकर शाहजादे'सुरादको गुजरातसे बुलाया। यह अर्जी अभी रास्तेमें हो थी कि हबशियोंमें जागीरों और कामोंके बाटनेपर झगडा होकर तलवार चली। दखनी सरदार जो उनसे शामिल थे उनका साथ छोडकर मिया मझूसे मिल गये। तब तो मियां बाहर निकलकर २४मुहर्रम(१) शनिवार सन् १००४को हबशियोंसे लडा और उनका 'जीतकर शाहजादे मुरादके बुलानेसे पछताया। इतने होमें सुना कि खानखाना और राजा अलीखां शाहजादेसे आमिले हैं और शाहजादा ३०००० हजार सवार मुगल पठान और राजपूतों सहित कूचकरके अहमद नगरकी सीमामें आपहुंचा। तब तो ;मिया मझूको बडी चिन्ता हुई और यह आप तो सेना एकत्र करने और आदिलखा तथा कुतुबशाहको सहायता देनेको अडसेकी तरफ चला गया और 'अनसार खांको चांदबीबीको और खजानोंकी चौकसीपर किलेमें छोड गया। चांदबीबी मिया मझूसे नाराज थी और उसको अनसारखाका भी भरोसा न था इसलिये उसने मुरतिजा निजामशाहके धा भाई मुहम्मदखासे उसके मारनेको कहा जिसने बडी बीरतासे अनसारखाको मार डाला और किलेमें बहादुर निजाम शाहकी आन दुहाई फेर दी।

२३ रबीउस्सानी (२) १००४ को शाहजादा मुराद बडे बडे अमीरों सहित उत्तर दिशासे आकर अहमद नगरके बाहर ईदगाहके पास खडा रहा और उसके कुछ दिन चले सिपाही काने

१। आसोज बदी ११ संवत १६५२
२। पौष बदी ८ संवत १६५२

अबुतरेके मैदान तक आगे बढते हुए चले गये परन्तु चांदबीबीने तोपोंके कई फैर उनपर किये जिनसे वे हट गये और शाहजादा हश्तबहिश्त नामक बागमें जाकर रात भर जागता रहा।

शाहजादेने अहमद नगर और बुरहानाबादकी रक्षाके लिये कुछ आदमी भेज दिये थे और प्रजा तथा व्यापारियोंको अभय दान दे दिया था, इससे लोग मुगलोंका विश्वास करके अपनी अपनी जगह बैठ रहे थे।

दूसरे दिन शाहजादा, मिरजा शाहरुख, नव्वाब खानखाना, शहबाजखां कम्बो, सादिक मुहम्मद खां, मुरतिजा खां, राजा अलीखां और राजा जगन्नाथने किलेके नीचे आकर मोरचे लगाये।

२७ को (१) शहबाजखां कंबो जो दुष्टतामें प्रसिद्ध था, शाहजादेकी आज्ञाके बिना ही शहर देखनेका मिस करके सेना सहित आया और प्रजाको लूटने लगा। शाहजादे और खान खानाने जब यह सुना तो उसको बहुत झिडका और बहुतसे लुटेरोंको भांति भांतिका दण्ड दिया। तो भी अहमदनगरके लोग तो रातको ही बाहर निकल गये।

उस समय निजामशाही अमीरोंके तीन स्वतन्त्र थोक थे। एक मियां मंझूका जो अहमदशाहको बादशाह जानकर आदिल खांकी सीमापर जा बैठा था, दूसरा इखलास खांका जो मोतीशाह नामक एक लडकेको बादशाह बनाये हुए दौलताबादके प्रान्तमें सडता रहा था, तीसरा अभग खांका यह भी आदिल खांके राज्यमें पडा था और बडे बुरहान निजामशाहके बेटे शाह अलीको जो ७० वर्षका बूढा था, बीजापुरसे बुलाकर बादशाह बना चुका था। इनको चांदबीबीने अहमदनगरकी रक्षाके लिये शीघ्रतासे आनेका परवाना भेजा था, परन्तु इनके आनेसे पहले इखलास खां अहमदनगरके घेरेकी खबर सुनकर दौलताबादकी तरफसे आया। उसके साथ

१। पौष बदी १३ सं० १६५२।

१०००० सवार थे। खानखानाने अपनी सेनामेंसे ६००० सवार छांट कर दौलत खां लोदीके साथ उसके रोकनेको भेजे। गङ्गाके तटपर दोनोंकी मुठभेड हुई। इखलास खां हारा, दौलतखाने पीछा किया और पट्टनको जा लूटा।

फिर अभग खां शाहअलीको लेकर बीजापुरकी तरफसे आया। उसके दूत पहलेसे आकर किलेमें जानेका मार्ग जान गये थे सो वह उसकी सीधमें चला आ रहा था। परन्तु तडके ही उसके पहुचनेसे पहले सुलतान मुरादने, जो मोरचोंको देखने चढा था, वहा खाली जगह देखकर खानखानाको भेज दिया।

अभग खा २००० हजार चुने हुए सवार और १००० बन्दूकची लेकर रातके अधेरेमें यहा पहुचा और इन लोगोंको सोया हुआ देखकर लडनेको चढ आया।

खानखाना २५०सवारोंसहित जो पहरे पर थे छतके ऊपर जाकर तीर मारने लगे और उनका नौकर दौलत खा भी ४०० पठान सहित आ गया और दौलत खांका बेटा ६००सवारों सहित चढा। तब अभग खा तो शाह अलीके बेटे और ४०० वीरों सहित खानखानाके डेरेमें होकर किलेमें घुस गया और शाहअली बाकी लशकरको लेकर जिधर आया था उधर हीको भागा। दौलतखाने पीछा करके ८०० दखिनियोंको तलवारके घाट उतार दिया।

चादबीबीने बीजापुरके बादशाहसे मदद मागी। आदिल खाने सुहेलखाको २५००० सवारों सहित भेजा। मिया मझू और अहमद निजामशाह वगैर भी उसमें जा मिले। ५।६ हजार सवार और बहुतसे पैदल गोलकुण्डेके बादशाह मुहम्मदअली कुतुबशाहके भेजे हुए महदी कुलीको अफसरीमें आये।

सुलतान मुरादने ये खबरें सुनकर इन फोजोंके आनेसे पहिले ही अहमदनगर फतहकर लेनेका विचार करके ५ सुरगे अपने डेरेसे किलेमें लगायी और रज्जबकी चांद (१) रातको उनमें बारूद

(१) चैत सुदी २ स० १६५३।

भरकर दबादी। दूसरे दिन जुमेको नमाज पढनेके पीछे आग लगा नेका इरादा था कि रात होजो मुहम्मदखा मीराजीने किलेमें जाकर उन सुरंगोंका पता बता दिया। चाद सुलतानाने २सुरंगकी बारूद तो शुक्रवारके दो पहरतक निकलवा ली। बाकी सुरंगकी खोज हो रही थी कि शाहजादे और सादिक मुहम्मदखांने जो नहीं चाहते थे कि अहमद नगरकी फतह खानखानाके नामसे हो, उनको सूचित किये बिना ही सुरंगोंमें आग देदी जिससे किलेकी ५० गज दीवार उड गयी, किलेवाले जो तीसरी सुरंगको खोद रहे थे कुछ तो वहीं मर गये और बाकी भाग निकले। चादसुलताना फौरन महलसे निकली और तलवार लेकर वहां आ खडी हुई। उसे देखकर और लोग भी आगये। शाहजादे और उसके अमीर तो बाकी सुरंगोंके उड़नेकी बाट देखते रहे और। इन्होंने तोपें बान और बन्दूकें चुनकर रास्ता बन्दकर दिया और जब शाहजादेकी फौज धावा करके आयी तो उसपर ऐसे बान और गोले मारे कि घबराकर लौट गयी। किला फतह न हुआ। सबने चादबीबीकी तारीफकी और उसने भी वहीं खडी रहकर रातोंरात वह गिरी हुई दीवार फिर उठवाली।

शाहजादेने किला फतह न होने, नाज चारेके कम हो जाने और दक्षिणके बादशाहोंका कटक निकट पहुंचनेसे खानखानाको सलाह पूछी कि अब क्या करना चाहिये। ये सादिकखासे नाराज थे, इसलिये, पहिले तो इन्होंने यही कहा, कि जो सब-सरदारोंकी सलाह हो वही ठीक है। परन्तु जब बहुत कहा गया और सबने अपने विश्वासघातपर पछतावा किया तो इन्होंने कहा कि उधरसे तो दक्षिणके बादशाहोंका कटक चला आरहा है और इधर अनाज घी घास और दूसरी आवश्यक वस्तुओंके न होनेसे घोडों और आदमियोंका बल घट गया है इसलिये यह समय लड़नेका नहीं है। अभी तो यही उत्तम बात है कि यहासे कूच करके बराडमें चलें और उस देशको फतह करें। जब अपना राज्य जम जावे और

यहाके आदमी अपनेसे हिलमिल जावें तो फिर इधर आकर अहमद नगरको फतह करलें। शाहजादेने और सब लोगोंने जो खुराक न मिलनेसे घबरा गये थे इनका कहना स्वीकार करके इन्हीको पूर्ण अधिकार इस कामका दे दिया। तब इन्होंने मुरतिजा खाको अहमद नगरमें भेजकर ऐसा उपाय किया कि चांदबीबीने दक्षिणके बादशाहों और अपने अमीरोंसे गुप्त सन्धि करली जिसमें यह ठहरा कि बराडका उतना प्रदेश जो तफावल खाके (१) पास था शाहजादा लेले और बाकी राज्य माहोरके किलेसे चोल बन्दरतक और परेंडेसे दौलताबादके किले और गुजरातकी सीमातक अहमद नगरके अधिकारमें रहे। जब इस सन्धि पत्रपर दोनों तरफके बडे बडे अमीरोंकी मोहरें हो गयीं तो खानखाना शाहजादेको लेकर चित्तौरके घाटसे दौलताबादकी तरफ चले गये। उस समय सुहेलखा अहमद नगरसे ६ कोस पर था। इस सन्धिकी खबर सुनकर दखनी और हबशी अमीर उसको, मियां मझूको और अहमद शाहको छोडकर अहमदनगरमें चले आये और चांदबीबीके हुक्मसे बालक बहादुर शाहको जुनेरसे लाकर बादशाह बना सुहेलखा, मियां मझू और अहमदशाह बीजापुरको चले गये।

बहादुर निजाम शाहने अपने धा भाई मुहम्मदखाको पेशवा (२) किया उसने अभगखांको कैदकर दिया जिससे फिर अहमद नगरके राज्यमें उपद्रव होनेकी चेष्टा हुई। चांदबीबीने फिर बीजा

१। तफावल खा बराडका अन्तिम बादशाह था जिससे मुरतिजा निजामशाहने यह मुल्क सन् ९८२ संवत १६३१ में छीन लिया था।

२। दक्षिणी बादशाहोंमें पेशवाका खिताब मुख्य मन्त्रीको दिया जाता था। यही खिताब पूनाके पेशवाओंने भी सितारेके राजाओंसे लेकर ग्रहण किया था।

पुरके बादशाहको लिखा। उसने फिर सुहैनको सन् १००५में (१) भेजा। मुहम्मदखांने कहना नहीं माना तो सुहैलखांने चांदबीबीकी सलाहसे अहमद नगरको घेरा। मुहम्मदखांने खानखानाको पत्र लिखकर बुलाया। इसपर दक्षनी सरदारोंने उसको पकडा और अभङ्गखांको छोडा। अभङ्गखां पर चांदसुलतानाको भरोसा था इस लिये इसीको पेशवा बनाया और सुहैलखांको मान सम्मान देकर बिदा किया। उसने जाते हुए राजापुरमें सुना कि दिल्लीके अमीरोंने सन्धिके विरुद्ध बराडसे आगे बढकर पाटडीमें अमलकर लिया है इसलिये वहीं ठहरकर आदलखांको अर्जी लिखी।

इधरसे चांदसुलतानाका भी पत्र पहुंचा कि मुगलोंने सन्धि तोड दी है। आदिलखांने सुहैलखांको लडनेका हुक्म लिखा और कुतुबशाहने भी अपनी सेना भेजी। अहमद नगरसे भी ६0000 सवार बराडको बिदा हुए।

खानखाना जालनेमें थे। उन्होंने दखनियोंकी यह हलचल सुनकर सेना एकत्रकी और शाहपुरमें शाहजादेके पास जाकर सब हाल कहा। फिर उसको वहीं छोडकर २०००० सवारों सहित सुहैलखांके ऊपर गये। क्योंकि वे यह चाहते थे कि यह फतह मेरे नामसे हो।

१८ जमादिउस्सानीको (२) तीसरे पहरसे लडाई शुरू हुई। सुहैलखांने मारे तोपोंके राजा अलीखां और राजा जगन्नाथको, जो

१। स० १६५२,५४।

२। फागुन बदी ४ संवत १६५३। अकबर नामेमें इस लड़ाईकी ता० २८ बहमन लिखी है जो पहिले लिख आये हैं। उस दिन फागुन बदी ३० थी और जमादि उस्सानीकी २८ थी न मालूम यह १० दिनका अन्तर कैसे है और किसकी भूल है। हमारी समझमें यह लेखकका दोष है क्योंकि १८ जमादिउस्सानीको १८ बहमन थी जिसको २८ नकल करनेमें हो गयी होगी।

सामने आये थे ४०००सिपाहियों सहित मार डाला और शाम होते होते धावा करके मुगलोंकी फौजको ऐसा दबाया कि वह भागकर शाहजादेके पास आकर ही ठहरी। सादिकखाने भी शाहजादेको लेकर दक्खिनसे निकल जानेकी तय्यारी की। परन्तु खानखाना इतनी भागड़ पड़ जानेपर भी थोड़े से आदमियोंसहित अपनी जगह पर जमे खड़े रहे बल्कि दखनियोंको सामनेसे हटाकर वहां आ खड़े हुए जहां सुहेलखाका तोपखाना पना था। सुहेल भी सामने ही था। परन्तु पहर रात गये तक दोनों एक दूसरेके हालसे अज्ञात रहे। फिर कुछ मशालें सुहेलखाके आगे जलायी गयीं, खानखानाने आदमी भेजा तो मालूम हुआ कि सुहेलखां है, तब उसीके तोपखानेमेंसे कई तोपें उसकी तरफ छोड़ीं, सुहेलखां मशालें बुझाकर वहांसे हट गया।

खानखानाने अपना नक्कारा बजाया और नरसिंगा फूंका जिसको सुनकर कुछ बादशाही लोग जो अन्धेरेमें छिपे थे उनके पास आ गये। सुहेलने भी जहां तक होसका १०।१२ हजार दखनियोंको इकट्ठा कर लिया। दिन निकलते ही खानखानासे लड़नेको आया। खानखानाके पास ३।४ हजारसे जियादा सवार न थे। तो भी उन्होंने उसको हराकर नलदुर्गकी तरफ भगा दिया। अहमदनगर और गोलकुण्डेवाले पहिले ही भाग गये थे।

फिर खानखाना परनाला, और गावीलके किलों पर फौज भेजकर जालनाको लौट गये।

शाहजादेने सादिकखांके कहनेसे खानखानाको कहलाया कि अब अवसर है, चलकर अहमदनगरको ले लें। खानखानाने जवाब दिया कि अभी तो यही उचित है कि इस वर्ष बराडमें रह कर यहांके किलोंको फतह करें और जब यह देश पूर्णरूपसे दब जावे तो दूसरे देशों पर जावें। इस जवाबसे शाहजादेने बुरा माना और बादशाहको शिकायतकी अर्जियां भेजी। जिस पर बादशाहने खानखानाको बुलाकर शेख अबुलफजलको दक्खिनका सेनापति करके भेजा।

खानखाना दरबारमें।

जब बादशाहको खानखानाके चले आनेका समाचार लगा तो २५ फरवरदीन (१) सन् ४३ को अपने निज सेवक शाक्रिबाइनको दक्षिणमें भेजा कि जाकर शाहजादे मुरादको ले आवे, उसको सुश्चिता देकर फिर वहां भेजेंगे और रूप खवासको हुक्म दिया कि खानखानाको झिड़क कर दक्षिणमें लौटा देवे। सो शाहजादेके पाछे पहुंचने तक वहांको सेनाओंका और देशोंका प्रबन्ध रखे।

शाहजादा तो आता था, परन्तु उसके साथके स्वार्थी अमीरोंने अपने स्वार्थसे उसको नहीं आने दिया और इन्होंने अर्ज करायी कि जब शाहजादे आ जावेंगे तो मैं चला जाऊंगा। बादशाहको यह बात नहीं भायी। तब ये अपनी जागीरसे चलकर १२ आबानको (२) लाहोरमें बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने इनके अपराध क्षमा करके दरबारमें बुलाया।

बादशाहकी खफगी।

मआसिर उल उमरामें लिखा है कि बादशाहने कई दिनों तक इनकी ड्योढी बन्द रखी। ये निरन्तर शाहजादेकी अप्रसन्नता सादिक खांकी शत्रुता और और अपनी बेगुनाही तरह तरहसे अर्ज कराते रहे। निदान बादशाहने क्षमा करके इनको दरबारमें बुलाया और दक्षिण फतह करनेकी सलाह पूछी तो इन्होंने शाहजादेको बुला लेने और उस लड़ाईका पूर्ण अधिकार अपनेको मिलनेकी प्रार्थना की। यह बात बादशाहको बुरी लगी और फिर इनको मनसे उतार दिया।

माहबानू बेगमका देहान्त।

२६ आबान (३) सन् १००७को बादशाह लाहोरसे आगरे

१। चैत सुदी ८ संवत १६५५।
२। कातिक सुदी ६ संवत् १६५५।
३। मगसर सुदी ५ संवत १६५५।

चले। अम्बालेमें पहुंचनेपर इनकी बेगम माहबानूं जो खान आजमकी बहन थी, बीमार हो गयी। बादशाहने उसको वहीं छोड़ा और इन दोनों अमीरोंको भी कुछ दिन उसके पास रह-नेकी आज्ञा दी। वह ७ दे (१) सन् १००७को मर गयी जिससे इनको तो जो दुःख हुआ सो हुआ पर बादशाहने भी बहुत शोक किया, क्योंकि दूध शरीक बहन थी।

फिर दक्षिणमें जाना।

बादशाह १६ बहमन (२) सन् १००७ को आगरे पहुंचे और शेख अबुलफजलको शाहजादे मुरादके पास भेजा। वह २५ बह-मनको (३) चलकर १८ उर्दीबहिश्त (४) सन् ४४ को वहां पहुंचा। २२ को (५) शाहजादा मुराद मिरगीसे मर गया। बादशाहने यह अशुभ समाचार सुनकर शाहजादे दानयालको मुरादकी जगह नियत किया। वह २ तीर (६) सनको विदा हुआ, पीछेसे ६ मिहर (७) सन् ४४ को बादशाहने भी कूच किया। १८ मिहरको (८) इन्हें भी शाहजादे दानियालके पास जानेका हुक्म दिया। विदा करते समय डेरे पर पधार कर मान बढ़ाया और यह भी फरमाया कि जब यह वहां पहुंचें तो शेख अबुलफजल दरबारमें आ जावे।

अहमदनगरके शाहको पकड़ कर बुरहानपुरमें ले जाना।

जब ये शाहजादेके पास पहुंचे तो शाहजादेने २ उर्दीबहिश्त (९) सन् ४५ को अहमदनगर पहुंच कर मोरचे लगाये और चार महीने पीछे ६ शहरेवरको (१०) वह किला फतह कर लिया।

१। पौष बदी ३० संवत १६५५। २। माघ सुदी १० संवत १६५५। ३। फागुन बदी ३ संवत १६५५। ४। वैसाख सुदी १४ संवत १६५६। ५। जेठ बदी २ संवत १६५६। ६। आसाढ़ सुदी २ संवत १६५६। ७। आसोज सुदी १० संवत १६५६। ८। कातिक बदी ९ संवत १६५६। ९। वैसाख सुदी ८ संवत १६५७। १०। भादों बदी ४।५ संवत १६५७।

खानखाना बहादुर निजामको पकड कर बादशाहके पास जो उस समय बुरहानपुरमें आये थे ले गये, तो ८ आजरको (१) उनका मुजरा हुआ।

फिरिश्ताका लेख।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अकबर बादशाहने आसेरको घेरकर दानियाल सुलतान और खानखानाको अहमदनगरपर भेजा अभग खा हबशी जो १५००० सवारोंसे उन्हें रोकनेको गया था, चित्तारके घाटेस हो बिना लड़े डेरे जलाकर जुनेरको भाग गया। शाहजादेने जाकर अहमद नगरको घेरा, जब किला टूटनेपर आया तो चादसुलतानाने चीतेखा हबशोसे जो किलेमें था कहा कि अब किला शाहजादेको सौंप दें और बहादुरशाहको धन और राज्य सामग्री सहित जुनेरमें ले चले। उसने यह सुनते ही सब लोगोंसे कह दिया कि चादबीबी ता मुगलोंसे मिलगयी है और किला सौंपती है। इसपर दखिनियोंने अन्दर जाकर,उस मरदानी बेगमको मारडाला। इधर शाहजादेने सुरगसे दीवार उडाकर किला ले लिया और बहादुरशाहके सिवाय सब लोगोंको मारडाला।

राजू और अम्बरसे लडाइया।

खानखानाके बुरहानपुर जानेके पीछे राजू दखनी और अम्बर चम्पू हबशीने शाहअलीके बेटे मुतजा निजामशाहको अपना स्वामी स्थापित करके बादशाही थानोंपर आक्रमण किया। बादशाहने आसेरमें यह समाचार सुनकर २३ बहमनको (२) इन्हें अहमदनगर और शेख अबुलफजलको नासिक भेजा। इनके पहुचते पहुचते मुर्तिजाके पास बहुत सेना एकत्र हो गयी थी जिससे बादशाहने शेखको भी पास जानेका हुक्म लिखा, वह नासिकके रास्तेसे लोटकर वरण गावमें इनसे आ मिला।

१। मगसर वदी १० सवत १६५७।

२। म ह सुदी ८ सवत १६५३

१० असफन्दारको (१) शाहजादा दानियाल भी बादशाहके पास गया। बादशाहने उसकी सेवासे प्रसन्न होकर खानदेश उसको दिया और खानदेशका नाम भी दानदेश रख दिया और उसका विवाह खानखानाकी बेटी जानाबेगमसे किया।

बादशाहका कूच आसेरसे।

११ उदी बहिश्त (२) सन् ४६ को बादशाह आसेरसे आगरेको कूचकर गये। २८ को (३) शाहजादे दानियालको नर्मदासे बुरहानपुर आनेकी आज्ञा हुई।

अम्बरसे सन्धि।

खानखानाके और शेखके पहु चते पहु चते राजू और अम्बर चम्पू बहुत बल पागये थे। शेखने राजूको कई बार हराया तौभी उसने नासिक और जालनाके किले लेलिये और अम्बरने तिलङ्गाने पर चढाई करके कई बादशाही अमीरोंको पकड लिया। तब ये अहमद नगरसे उस पर गये, शेखको भी बुलाया और लडकर उसे भगा दिया तो भी देशकाल देखकर सन्धि करली और अली मरदान वगैर को छुडाकर कुछ प्रदेश भी छोड दिया और अम्बरसे यह स्वीकार करा लिया कि वह आज्ञामें रहेगा और अपनी सीमासे आगे न बढेगा।

शेखकी सम्मति इस सन्धिमें नहीं थी इसलिये वह नाराज हो कर बुरहानपुरमें शाहजादेके पास चला गया और ये माजरा नदीसे सेनाको लौटा लाये।

बादशाहने अम्बरका तिलङ्गाना लेना सुनकर मीर मुर्तिजाको तिलगानेपर भेजा और लिखा कि खानखाना तो पाठडी और तिलङ्गानेके बीचमें रहे और शेख अबुलफज्ल राजूके ऊपर जावे।

१। फागुन बदी १० संवत १६५७।
२। बैसाख बदी १३ संवत १६५८।
३। बैसाख सुदी १५ संवत १६५८।

मिरजा रुस्तम, राजा सूरजसिंह, और राजा विक्रमादित्य शे खकी सहायता.पर नियत हुए।

अम्बरका सन्धिसे फिरना।

अम्बरचम्पू इधरसे सन्धि करके बराडके अधिपति मलिक बुरो दके ऊपर गया और उसको जीतकर गोलकुण्डेके कुतुबुलमुल्कसे लडा। दोनोंसे ४३ हाथी और बहुतसा धन माल लेकर तिलंगानेपर गया। मीर मुर्तिजा तो किलेमें ही बैठा और अम्बरने वह देश दबाकर और भी आगेको पाव फैलाया।

बादशाहने शाहजादेकी अर्जीसे यह सब समाचार जानकर हुक्म लिखा कि शेख तो जालनापुरको जावें। अहमद नगरका सर क्षण और राजूका निकन्दन उसके आधीन रहे। बराड पाठडी तिलङ्गानेका प्रबन्ध और अम्बरपर आक्रमण खानखाना करे।

ऐरच अम्बरको हराना।

अब एक हबशी और उठा। उसने पाठडी और पाटममें आकर द्वन्द्व मचाया। तब इन्होंने राजा सूरज सिंह और गजनी खां जालोरीको भेज कर उसे भगा दिया। फिर अपने बेटे ऐरचको एक भारी फौज देकर अम्बर चपूके ऊपर भेजा। लडाइमें राजा सूरजसिंह आदि राजपूत सरदार अग्रगामी थे। बीचमें इतनी सेना ऐरचके साथ थी। इन्ही दोनों फौजोंने अम्बरको भगा कर खेत जीता, २० हाथी छीने और बहुतसा द्रव्य लूटा।

अबुल फजलका मारा जाना।

शेख अबुलफजलको बादशाहने अपने पास बुलाया। वह आगरेको जाता था कि बडे शाहजादे सुलतान सलीमके हुक्म देने पर बुन्देला राजा बरसिंह देवके हाथसे वह ता० १ (१) रबीउल अव्वल सन् १०११को मारा गया और दक्षिणकी लडाइयोंका सारा भार इनपर आ पडा।

१। भादों सुदी २ सवत १६५९ व २८ अमरदाद सन् ४७।

एरचका फिर अम्बरको हराना।

इन्होंने फिर मिरजा एरचको अम्बर पर भेजा। इस बार एरचने फिर बड़े धड़क्के से अम्बरको हराया। उसके सारे हाथियों और लड़ाईके सामानको छीन लिया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको बहादुरका खिताब दिया और राय बिहारीचन्दके भतीजे जादो दासके हाथ इनको, शाहजादेको और एरच बहादुरको प्रशंसा पत्र भेजे।

बादशाहका दानियालको बुलाना और उसका खानखानाके पास जाना।

शाहजादा दानियाल भी दारू बहुत पीने लगा था। पहिले पहिल तो बादशाह उसको छोड़ देनेको शिक्षा लिखते रहे और अब अपने कई पास रहनेवालोंको शाहजादेको लेनेके लिये भेजा। परन्तु शाहजादा बुरहानपुरसे खानखानाके पास चला गया और बादशाहको लिख भेजा कि खानखानाको अपने पास बुलाना उचित न समझकर मैं आप उसके पास इसलिये जाता हूं कि समझाकर अपनी जगह छोड़ आऊ।

बादशाहने इसका यह जवाब लिखा कि ये सब तुम्हारे बहाने हैं. खानखाना ऐसा चाकर नहीं है कि तुम्हारे बिना उस सूबेमें नहीं रह सके या उसको तुमसे कुछ समझने और उपदेश लेनेकी

अबुल फजलने अकबर नामा सन् ४६ के अखीर तक लिखा है, फिर बाकी इतिहास अकबर बादशाहका सन् ४७ से सन्५० के आबान महीने तक सुहिब अली खाने सचित्त रीतिसे लिखकर उसमें लगाया है। परन्तु यह पिछला लिखा हुआ हाल किसी प्रतिमें है और किसीमें नहीं। लखनऊमें जो अकबर नामा छपा है। उसमें नहीं है, कलकत्तेमें जो छपा है, उसमें है।

आवश्यकता हो या यह बात हो कि वह भी तुम्हारी भांति मद्यप हो गया हो। अब जो तुम शराब नहीं छोडोगे और हमारा हुक्म नहीं मानोगे तो हम भी तुमको कुछ नहीं लिखेंगे।

खानखाना और दानियालका मिलाप।

खानखानाने गाव होनयखेमें अगवानी जाकर शाहजादेको बीजापुरके बादशाह आदिल खांके अमीरोंको चिट्ठियां दिखलाईं जो उसके वास्ते आदिल खांकी बेटीका डोला लेकर आते थे।

दानियालका व्याह आदिलखांकी बेटीसे।

शाहजादेने मिरजा एरच बहादुरको ५००० सवारोंसहित डोला लानेके लिये भेजा। वह "भीमड़ा" नदीके तटपर आदिल खांके सरदारोंसे मिला। फिर शाहजादा भी आदिल खांका मान बढानेके लिये खानखाना समेत अहमदनगर तक गया और वहां आदिल खांकी बेटीसे व्याह करके बुरहानपुरमें लौट आया।

तूरान जीतनेकी सम्मति।

बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके और बादशाहके बीचमें कई वर्षों से बिगाड़ चला आता था। वह सन् १०१२में (संवत् १६६१में) शाहजादे सलीमके इलाहाबादसे आगरेमें बादशाहके पास हाजिर हो जानेपर दूर हो गया और बादशाहने अपने बापदादोंके मुल्क बलख, बुखारा और समरकन्द उजबकों जानेके अमीरोंसे पीछे लेने और अमीर तैमूरकी समाधिके दर्शन करनेका इरादा करके राजा मानसिंहको बङ्गालसे और खानखानाको दक्षिणसे इस बड़े दिग्विजयकी सलाह करनेके वास्ते बुलाया। राजा बादशाहके पास आगये और खानखानाने बुरहानपुरसे अरजी लिखी कि खुदाके फजलसे कोई रोकनेवाला नहीं है। जिधर कूच होगा, विजय लक्ष्मी हाथ बांधकर उपस्थित हो जावेगी। (१)

१। यह तो इकबाल नामे जहांगीरीमें लिखा है और अकबर नामेके शेषांशमें जो मुहिब अलीखांका लिखा हुआ है, यह बात

दानियालकी दारूसे दुर्गति।

इस बीचमें बादशाहने फिर कई मनुष्य शाहजादे दानियालको लाने और शराब छुड़ानेके वास्ते भेजे तो उसने अब यह बहाना निकाला कि "जब तक बड़े शाहजादे हजरतकी सेवामें हैं, मैं हाजिर नहीं हो सकता"। और शराब छोड़ना तो क्या दिन दिन उसकी मात्रा बढ़ती जाती थी, जिससे शाहजादेकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गयी थी और मरनेकी नौबत आपहुंची थी।

बादशाहकी ताकीदसे दारूकी रोक और दानियालकी मृत्यु।

बादशाहने यह समाचार पाकर खानखानाके ऊपर बहुत कोप किया और पूरे पूरे बन्दोबस्त करनेकी ताकीद लिखी। तब तो खानखानाने शाहजादेकी शराब बन्द करनेको पहरे बिठा दिये और लोगोंका आना जाना बन्दकर दिया। तोभी बाजे खिदमतगार बन्दूकोंकी नालियोंमें तेज शराबें ला लाकर पिलाते थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि १८ शव्वाल (१) सन् १०१३ को शाहजादेका प्राणान्त हो गया। परन्तु खानखानाके उपस्थित होनेसे सेनाके प्रबन्धमें किसी प्रकारकी गड़बड़ सड़बड़ नहीं होने पायी। उन्होंने कई आदमियोंको जो निषेध करनेपर भी छिपे छिपे

यों लिखी है कि बादशाहने यह सुनकर कि तूरानका बादशाह बाकी मुहम्मद खां प्रजाको पीड़ा देता है, उस विलायतके फतह करनेका इरादा किया, जो उनकी बापौती थी। खानखानाको दक्षिणसे, कुलीच खांको लाहोरसे और राजा मानसिंहको बङ्गालसे बुलाया। खानखानाने तो जो लाख छल और कपटका घड़ा हुआ था, दक्षिणकी मुहिमको बहुत भारी बताकर अपना रहना वहीं आवश्यक समझा। राजा मान सिंह और कुलीच खां हाजिर हो गये। परन्तु यह विचार पूरा न हुआ।

१। चैत बदी ३० संवत १६६१

दारू लाकर पिलाते थे जानसे मरवा डाला। उसकी पुत्री जाना बेगमने शाहजादेके साथ प्राण देनेका बहुत आग्रह किया परन्तु बड़ी मुशकिलोंसे खानखानाने उसको रोका, तो भी शेष उमर अपनी अवस्था बड़े शोक और सन्तापसे मैले कुचैले कपड़ोंमें काटी।

दक्षिणमें पूर्ण अधिकार।

शाहजादे के पीछे दक्षिणका पूर्ण अधिकार खानखानाको मिल गया और ये बहुत बरसोंतक उस बड़े सूबेमें सन्धि विग्रह करनेको समर्थ रहे।

तवारीख फरिश्तासे अहमदनगर और खानखानाका कुछ हाल।

तवारीख फरिश्तामें जो वृत्तान्त अहमद नगरके टूटनेसे अकबर बादशाहके देहान्त तकका लिखा है वह यहां उद्धृत किया जाता है। इसके दो अभिप्राय हैं, पहला तो यह कि वह खानखानाकी जीवनीसे सम्बन्ध रखता है, दूसरा यह कि जो फेरफार और अन्तर इतिहासोंमें रहता है वह भी इस ग्रन्थके पाठकोंको विदित हो जावे और वे समझ लें कि जब एक ही मनुष्यके थोड़ेसे वर्षोंके वृत्तान्तमें इतिहास वेत्ताओंका लेख परस्पर मेल नहीं खाता है तो सैकड़ो हजारो वर्षोंके बने हुए पुराणों की कथाओं में भेद पाया जाना कुछ विचित्र नहीं है।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अहमद नगर छूट जानेके पीछे निजामशाही अमीरों ने शाह अलीके बेटे मुरतिजाको अपना बादशाह बनाकर परेंडेके किलेमें राजधानी की। उनमें अम्बर हबशी और राजू दखनी जो कुछ बड़े सरदार नहीं थे अपने पराक्रमसे थोड़ेही दिनो में इतने बढ़ गये कि अम्बर अहमद नगरके दक्षिणमें तिलङ्गानेकी सीमातक और राजू उत्तरमें गुजरातके सिवाने तक धरती दबा बैठा। पर दोनो में एका न था, एक दूसरेको निकाला चाहता था। खानखानाने यह बात समझकर अपनी कुछ सेना भेजी जिसने अम्बरकी भूमिका थोड़ासा भाग जो [illegible] तरफ था जीत लिया। यह सुनकर अम्बर ७८ हजार

सवारो सहित सन् १०१० में (१) वहा गया और खानखानाके थाने उठा दिये। तब खानखानाने मिरजा एरचको ५००० सवारो सहित भेजा। नादेरके पास अम्बरसे मुकाबिला हुआ। एरचको अपना नाम करनेकी धुन थी और अम्बरको अपनी जमीन बचाने की। इसलिये दोनो बडी शूरतासे लडे। अम्बर घायल होकर रणागनमें गिरा। उसके अनुचर उसी चण उसको उठाकर ले गये और मिरजा एरचकी जीत हुई।

अम्बर उद्योगी था और जानता था कि साहस दिखाये विना देशकी रचा न होगी। इसलिये फिर लड़नेका उद्यम करने लगा। खानखानाने उसको वीर पुरुष देखकर सन्धि कर लेनेका विचार प्रकट किया। वह भी इसमें अपना लाभ समझकर राजी हो गया। क्योंकि राजूका उसको खटका लगा हुआ था बल्कि खानखानाको इटाइको वह उसीकी साजिश समझता था।

जब सन्धि ठहर गयी तो अम्बर खानखानासे आ कर मिला और अपनी सीमा स्थिर कर गया।

खानखानाने अवरसे सन्धि करके बीजापुरके बादशाह आदिल खा पर जोर डाला। उसने बहुतसा नजराना देना करके अपनी बेटीका डोला सुलतान दानियालके वास्ते भेजा। खानखानाने बुरहानपुर जाकर यह बधाइ शाहजादेको दो तो वह मुहर्रम सन् १०१३ में,(२) नासिक और दौलताबादके रास्तेसे अहमद नगरको गया। यह प्रदेश राजूके अधिकारमें था इसलिये उससे कहलाया कि वह भी अम्बरको तरह अधीन होकर सेवामें आवे और अपनी भूमिका पट्टा करावे। परन्तु राजूने इस बातपर विश्वास न किया तब शाहजादेने क्रुद्ध होकर उसको दण्ड देना चाहा। राजू भी

१। सवत् १६५८-५९

२। जेठ सुदी ३ सवत् १६६१ से असाढ सुदी २ सवत् १६६१ तक

८००० सवारों सहित लड़नेको आया। परन्तु सम्मुख नहीं होता था और इधर उधर रहकर लूट मार करता था। शाहजादेने जालनापुरमें आदमी भेजकर खानखानाको बुलाया। ये शीघ्र ही ५।६ हजार सवार लेकर गये। राजू इनके पहुंचते ही शाहजादेका पीछा छोड़कर दूर चला गया। तब शाहजादा और खानखाना अहमद नगर जाकर डौलेको पट्टनमें लाये। वहांसे शाहजादा तो विवाह करके बुरहानपुरको लौट गया और ये जालनापुरमें चले आये।

फिर मुरतिजा निजामशाहने इम्बरकी कठोरतासे व्याकुल होकर राजूको बुलाया। यह परेंडेमें जाकर उससे मिला और अम्बरने उससे कई लड़ाइयोंमें पराजित होकर खानखानासे सहायता मांगी। इन्होंने बीदरके हाकिम मिरजा हुसेन बेगको २।३ हजार सवारों सहित भेजा। अम्बरने इस सेनाकी बलसे राजूको हराकर दौलताबादकी तरफ भगा दिया।

फिर खानखाना तो जालनापुरसे बुरहानपुरमें चले गये जहां शाहजादे दानियालके मरजानेसे उनको रहना पड़ा और अम्बरने दौलताबादपर चढ़ाई की। राजूने कायरतासे खानखानाकी शरण ली। ये बुरहानपुरसे दौलताबादको आये और ६ महीनेतक दोनोंके बीचमें पड़े रहे जिससे दोनोंमेंसे किसीको भी अपने विपक्षीसे लड़नेका साहस न हुआ। निदान अम्बर खानखानाको राजूके पक्षमें देखकर उनके कहनेसे राजूके साथ सन्धि करके परेंडेको चला गया, तब यह भी जालनापुरमें आगये।

जहांगीर बादशाहका समय।

सन् १०१४ में (१) अकबर बादशाहका देहान्त होनेपर शाह

१। अकबर बादशाहका देहान्त संवत् १६६२ में कातिक सुदी १४ की रातको हुआ था। उस दिन ४ आबान सन ५० और १२ जमादिउस्सानी १०१४ थी। दूसरे दिन दफन किये गये।

आदे सलीम आगरेमें तख्तपर बैठकर जहांगीर बादशाहके नामसे राज्य करने लगे। उन्होंने भी खानखानाको उसी अधिकार पर रहने दिया। परन्तु मुकर्रवखांको भेजकर शाहजादे दानियलके बेटोंको उनके पाससे मंगवा लिया।-

खानखाना दरबारमें।

अकबर बादशाहके मरनेसे दक्षिणमें शत्रुओंका जोर बढ़ गया था जिससे खानखाना २।३ वर्षतक जहांगीर बादशाहके पास न आसके। सन १०१७में (संवत १६६५में) कुछ अवकाश मिला तो आगरे पहुंचकर रबीउस्सानी महीनेकी २४ तारीखको (१)बादशाहके चरणोंमें उपस्थित हुए। बादशाहने जैसा कुछ उनका आदर सत्कार किया वह बादशाहने ही अपने हाथसे तुजुक जहांगीरमें इस भांति लिखा है —

एक पहर दिन चढ़ा था कि खानखाना जो मेरी अतालकीके महत् अधिकारसे सन्मानित है, बुरहानपुरसे आकर सेवामें उपस्थित हुआ। उसको इतने आनन्द और उत्कंठाका आवेश हो रहा था कि वह नहीं जानता था कि पांवसे आया है या सिरसे। उसने बड़ी व्याकुलतासे अपनेको मेरे पांवोंमें डाल दिया और मैंने भी कृपालुता और दयालुतासे उसको उठाकर छातीसे लगाया और उसका मुंह चूमा। उसने दो हार मोतियोंके कई हीरे और कई माणिक भेंट किये जिनका मोल ३ लाख रुपये हुआ। उनके सिवाय बहुतसी चीजें और सौगातें भेंट कीं।

जहांगीर बादशाह ८ जमादिउस्सानी गुरुवारको अपना राज सिंहासनपर बैठना लिखते हैं। सो मालूम नहीं यह क्या बात है। तारीखके साथ दिन भी लिखा है जिससे भूल हो जानेका भ्रम नहीं हो सकता। उस तारीखको गुरुवार ही था बापके मरनेके पीछे बेटा तख्तपर बैठता है, ये ६ दिन पहिले ही कैसे बैठ गये होंगे यह विचारनेकी बात है।

१। भादों बदी १२ संवत १६६५।

जमादि उस्सानी महीनेकी २१ तारीखको (१) खानखानाने निज मुल्मुल्कको बादशाहीका शेष भाग विजय करदेनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिख दी कि जो दो वर्षमें यह कार्य्य न कर दूं तो अपराधी होऊ। परन्तु जो सेना उस प्रान्तमें नियत है उससे अधिक १२००० सवार और १० लाख रुपये और मुझको मिल जावें।

बादशाहने मन्त्रियोंको आज्ञा की कि शीघ्र ही सब सामग्री संग्रह करके खानखानाको दे दो।

रज्जबके (२) महीनेमें बादशाहने समन्द घोडा जो ईरानके शाहका भेजा हुआ था और तवेले भरमें श्रेष्ठ था, खानखानाको दिया। बादशाह लिखते हैं कि खानखाना इतना प्रसन्न हुआ कि जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। सच तो यह है कि ऐसा बड़ा और अच्छा घोड़ा अभीतक हिन्दुस्थानमें नहीं आया था और फतूह नाम एक हाथी भी जो लडनेमें अद्वितीय था बीस और हाथियों सहित दिया।

खानखानाकी विदा दक्षिणको।

खानखाना तारीख १४ शाबान (३) रविवारको बादशाहसे विदा हुए। बादशाहने जडाऊ तलवार, पेटी और शिरोपाव खासा हाथी समेत प्रदान किया।

शाहजादे परवेजकी चढाई।

दक्षिणमें जब ये समाचार पहुंचे कि खानखानाने अहमदनगरके शेष भागको जीत देनेकी प्रतिज्ञा बादशाहसे की है तो अम्बर और राजू भी सन्धि तोड बैठे और उन्होंने बीजापुर और गोलकुंडेके, बादशाहोंको भी अपनी सहायता पर सज्जित कर लिया। इतनेमें

१। आसोज वदी ८ संवत १६६५।

२। यह रज्जबका महीना आसोज सुदी २ को लगा था।

३। मगसर वदी २ संवत १६६५।

खानखाना बुरहानपुरमें पहुंचे और उन्होंने दचिणका यह रंग देखा तो नीति निपुणतासे बात ठ डी डाल दी और उन लोगोंको अपनी ओरसे अशान्त न किया। इधर बादशाहसे झूठें न पडनेको धनियोंमें ऐसी बातें जमायी कि बादशाहने किसी एक शाहजादेके भेजनेको आवश्यकता देख कर सुलतान परवेजको तैयार किया। ५ लाख रुपये उसको और बीस लाख उसके साथके लशकरको सजानेके लिये दिये। १ जमादिउस्सानी (१) सन् १०१८ को अमीरुलउमरा और जगन्नाथके बेटे करमचन्दको, और ८ रज्जबको(२) राय जयसिंहको नौकरी शाहजादेके साथ बोली गयी १४ रज्जबको (३) मङ्गलके दिन शाहजादा बिदा हुआ। उसको और उसके साथी अमीरोंको भारी भारी खिरोपाव हाथी घोडे और जड़ाऊ हथियार दिये गये- और १००० अहदी भी साथ गये परन्तु इन बातोंके रहनेसे पहले बादशाहने मुल्ला हयातीको खानखानाके पास भेज कर बहुत सी बातें कृपा अनुग्रहको कहलायीं। २ रमजानको (४) बादशाहने फिर बडा एक कटक जिसमें १८२ मनसबदार और १४६ अहदी थे शाहजादेके पास भेजा।

मुल्ला हयाती खानखानासे मिल कर १ जीकादको (५) अजमेरमें बादशाहके पास आया। १ लाख और २ मोती खानखानाको भेट लाया जो २०००० रुपयोंके आंके गये।

खानजहा लोदी दक्खनकी मुहिम पर।

शाहजादेका और इन फौजोंका आना सुनकर दक्खनी लडनेका उद्योग करने लगे। अभी शाहजादा पहुंचा भी नहीं था कि

१। भादों सुदी २ स० १६६६।
२। आसोजसुदी ६।
३। आसोज सुदी १५ मंगलवार।
४। मगसर सुदी ४ सवत १६६।
५। माघ सुदी ३ सवत १६६६।

और दूसरे उपयोगी पशु मर गये। निदान दीनता दिखाकर शत्रुओंसे मिलाप करना पड़ा तब कहीं पीछे आनेको रास्ता मिला और उधर अहमदनगरका किला कब्जेसे निकल गया।

खानखाना पर दोष लगाना।

अब सब सरदारोंने मिलकर बादशाहको अर्जी लिखी कि ये सारे काम खानखानाकी ईर्षा और बेवन्दोबस्तीसे बिगड़े हैं। परन्तु बादशाहको विश्वास न आया। तब खानजहां लोदीने (१) जिसका बादशाहको बड़ा भरोसा था, लिखा कि वास्तवमें यह सारी बुराई और बदनामी खानखानाकी कुटिलता से हुई है। अब यातो इस सूबेमें उसीको स्थिर रहने देना चाहिये या उसे दरबारमें बुलाकर यह कार्य्य मुझे मिल जाना चाहिये और ३०००० सवारोंकी सहायता भी मिलनी चाहिये। मैं २ वर्षमें बीजापुर तक सारे दक्षिण देश पर बादशाही राज्यकी जड़ जमा दूंगा और जो इस अवधिमें यह काम मुझसे पूरा न हो सका तो मैं मुंह नहीं दिखाऊंगा।

खानखानाका दरबारमें आना और खानजहांका स्थानापन्न होना।

इस पर बादशाहने महाबतखांको वहांके सच्चे समाचार मंगवाने और खानखानाको दरबारमें लानेके लिये भेजा। परन्तु जब

१। खानजहां लोदी दौलतखांका बेटा था, बापके मरे पीछे जहांगीर बादशाहका नौकर हो गया था, उसका नाम पीरखां था। बादशाहने सलावतखां रखा और खानजहांकी पदवी दी। वह बादशाहके बहुत मुंह लग गया था। बादशाह उसको बेटोंके बराबर समझते थे। उसने बादशाहके पीछे बालाघाटका मुल्क अहमदनगर वालोंको दे दिया जहांका वह उस समय सूबेदार था। फिर शाहजहांसे बागी हो कर दक्षिणको भागा और

खानखानाने दकनियोंकी यह दशा देख कर बादशाहको विनयपत्र लिखा कि सब दक्षिणी एकत्र होकर उपद्रव किया चाहते हैं। बादशाहने परवेज और उसके साथकी सेनाके भेजने पर भी यह जान कर कि वहां अभी और सहायताकी आवश्यकता है स्वय जानेका विचार किया। अमीरुलउमरा आसिफखाने भी लिखा कि श्रीमानोंका पधारना उचित है और बीजापुरसे अर्जी पहुंची कि कोई सभासद यहां आ जाये तो मैं अपने अभिप्रायको उसके द्वारा अर्ज कराऊं। इस पर बादशाहने सभासदोंसे कहा कि इस विषयमें जो जिसके जो जीमें आवे सो कहे। खानजहां लोदीने प्रार्थना की कि जब इतने बड़े बड़े अमीर जा चुके हैं तो फिर हजरतके पधारनेकी जरूरत नहीं, यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और लड़ाईको समाप्त करूं। इस बातकी सराहना और लोगोंने भी की। तब बादशाहने १७ जीकाद को (१) उसे भी बहुमूल्य वस्त्र जड़ाऊ हथियार हाथी और घोड़ा देकर दक्षिणको विदा किया और फिदाईखांको आदिलखांके पास भेजनेके लिये साथ दिया।

राजा बरसिंहदेव, विक्रमाजीत, और शुजाअतखां वगैरह भी ४।५ हजार सवारों सहित खानजहांकी सहायतामें नियुक्त हुए पर वेजके वास्ते खासा घोड़ा और खानखानाके लिये सिरो पाव भेजा गया।

बादशाही लशकरकी फूट और हार।

जब सब लशकर, सरदार और शाहजादे दक्षिणमें एकत्र हुए तो फिर वही ईर्षा और खेंचा तान होने लगी, जो शाहजादे मुरादके समयमें थी और जब शाहजादे परवेजने बालाघाट पर चढ़ाई की तो सरदारोंकी फूटसे यहां तक काम बिगड़ा कि शत्रुओंने बल पाकर रसद रोक दी। हाथी बहुतसे घोड़े ऊंट

(१) फागुन बदी ५ शुक्र स० १६६६।

और दूसरे उपयोगी पशु मर गये। निदान दीनता दिखाकर शत्रुओंसे मिलाप करना पड़ा तब कहीं पीछे आनेको रास्ता मिला और उधर अहमदनगरका किला कब्जेसे निकल गया।

खानखाना पर दोष लगाना।

अब सब सरदारोंने मिलकर बादशाहको अर्जी लिखी कि ये सारे काम खानखानाकी ईर्षा और बेबन्दोबस्तीसे बिगड़े हैं। परन्तु बादशाहको विश्वास न आया। तब खानजहां लोदीने (१) जिसका बादशाहको बड़ा भरोसा था, लिखा कि वास्तवमें यह सारी बुराई और बदनामी खानखानाकी कुटिलता से हुई है। अब याती इस सूबेमें उसीको स्थिर रहने देना चाहिये या उसे दरबारमें बुलाकर यह कार्य्य मुझे मिल जाना चाहिये और १०००० सवारोंकी सहायता भी मिलनी चाहिये। मैं २ वर्षमें बीजापुर तक सारे दक्षिण देश पर बादशाही राज्यकी जड़ जमा दूंगा और जो इस अवधिमें यह काम मुझसे पूरा न हो सका तो मैं मुंह नहीं दिखाऊंगा।

खानखानाका दरबारमें आना और खानजहांका स्थानापन्न होना।

इस पर बादशाहने महाबतखांको वहांके सच्चे समाचार भुगताने और खानखानाको दरबारमें लानेके लिये भेजा। यह सब

१। खानजहां लोदी दौलतखांका बेटा था, बापके मरे पीछे जहांगीर बादशाहका नौकर हो गया था, उसका नाम पीरखां था। बादशाहने सलाबतखां रखा और खानजहांकी पदवी दी। वह बादशाहके बहुत मुंह लग गया था। बादशाह उसको बेटोंके बराबर समझते थे। उसने बादशाहके पीछे बालाघाटका मुल्क अहमदनगर वालोंको दे दिया जहांका वह उस समय सूबेदार था। फिर शाहजहांसे बागी हो कर दक्षिणको भागा और लड़ाईमें मारा गया।

बुरहान पुरमें पहुंचा तो ये उसके साथ हो लिये। जब पारा कुछ दूर रह गया तो यह इनको छोड़कर बादशाहके पास पहले गया। पीछेसे ये भी १२ आबान (१) सन ५ को पहुंचे। बादशाहका मन इससे खिंच गया था। इसलिये उन्होंने वैसी कृपा और अनुग्रह नहीं दिखाया जैसी पहले दिखाते थे या अपने पिताको करते देखते थे। बल्कि यह कहा कि तुमतो सब बातोंका जिम्मा लेकर गये थे। फिर यहांके ऊपर दाने चारे नाज और दूसरी जरूरी चीजोंका बन्दोबस्त न हुआ।

खानजहाने खानाधय होकर मिरजा एरचको शाहजादेसे कहकर दरबारमें भेज दिया। दाराबखां पहिले ही बापके साथ चला आया था।

लोगोंने बादशाहको खानखानाकी ओरसे बहकाया तो बहुत था परन्तु बादशाह उससे इतने नहीं बिगड़े थे जितनी कि इन महापुरुषोंको आशा थी। और बादशाहने भी यही लिखा है कि "जब सरदारोंसे और खानखानासे नहीं बनी तो मैंने उसका वहां रहना उचित न समझ कर खानजहांको तो सेनापति कर दिया और उसको दरबारमें बुला लिया। अभी तो यही कारण अकृपाका है, आगे जैसा प्रकट होगा उसके अनुसार कृपा अकृपा होगी।

बादशाहकी कृपा खानखानाके बेटों पर।

अब जो इसके आगे तुजुक जहांगीरीमें देखते हैं तो बादशाहका अनुग्रह ही इनके और इनके बेटोंके विषयमें पाया जाता है, जैसे दाराबखांको अबतक मनसब नहीं मिला था और इस लिये न उसको तनखाह थी और न जागीर। बादशाहने खानखानाके आनेसे २१३ दिन पीछे ही उसको हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित करके गाजीपुरका जिला उसको

(१) मगसर बदी ३ संवत् १६६७

जगीरमें दिया। और जब एरच आया तो पहिले ८ फरवरदीन (१) सन् ६ को जड़ाऊ कमरपेटी दी और कई दिन पीछे शाहनवाजखांको पदवी प्रदान की।

खानखानाकी जागीर कन्नौज और कालपीमें।

उन्हीं दिनोंमें काबुलसे अहदाद पठानके उपद्रव करने और वहांके सूबेदार खानदौरासे प्रबन्ध न हो सकनेके समाचार आये तो बादशाहने खानखानाको जो बिना काम बैठे थे वहां भेजनेका विचार किया। इतनेमें पञ्जाबका सूबेदार कुलीचखां आ गया जो पहिले बुलाया गया था। उसने खानखानाको भेजे जानेसे अप्रसन्न होकर बादशाहसे उस कामके कर देनेकी प्रतिज्ञा की। इसलिये बादशाहने उसे ६ हजारी मनसब देकर काबुलमें भेजा और पञ्जाबकी सूबेदारी पर मुर्तिज खांको नियत किया और इनकी जागीरकी तनखाह आगरेके सूबेमें सरकार कन्नौज और कालपी पर इस अभिप्रायसे लगा दी कि उन प्रान्तोंके दुष्टोंको दण्ड देकर नष्ट करें।

चलते समय तीनों बेटे खासे खिलअत और हाथी घोड़े पाकर विदा हुए। ४ बहमन (२) सन ६ को बादशाहने अपने बाबरेकी तलवार जिसका नाम शाह बचा था, शाहनवाजको दी।

दक्षिणमें फिर एक और हार।

खानखानाको बुलानेके पीछे बादशाहने इनके साले खान आजमको बहुत सा कटक देकर भेजा था और सैयद अबदुल्लाह खांको भी जिसे फीरोज जङ्गकी (रणजीत की) पदवी मिली थी गुजरातकी तरफसे नासिक होकर जानेका हुक्म लिखा था परन्तु न कुछ खानजहांसे बना न खान आजमसे और फीरोज जङ्ग तो लड़ाई हार कर ही गुजरातमें भाग आया।

१। बैसाख बदी १ स॰ १६६८।

२। माघ बदी ६ सवत् १६६८।

बात यह ठहरी थी कि इधरसे यह जावे और उधर बराडसे राजा मानसिंह, खानजहा, और अमीरुल उमरा, आदि खान हों और दोनों कटक एक दूसरेके कूच मुकामकी खबर रखकर एक ही दिन शत्रुके ऊपर पहुंचे और उसको एक साथ दोनों ओरसे घेरकर जेर करें, परन्तु अबदुल्लहखाने जिसके साथ १०००० सजे हुए सवार थे घमण्ड और अकेले फतह करनेकी धुनसे जल्दी करके धावा कर दिया। राजा रामदास कछवाहेने बहुत कहा कि धीरजसे कूच करना चाहिये, पर उसने नहीं माना।

अम्बरने जब यह सुना तो बहुतसे सरदार और बरगी भेज दिये जिन्होंने रात दिन लडकर अबदुल्लाहखांको भगा दिया। अली मरदानखां बहादुरको पकड लिया। बगलानेतक पीछा किया। यह सुनकर बराडका लश्कर भी रास्तेसे ही बुरहानपुरमें परवेजके पास लौट आया।

खानखाना फिर दक्षिणमें।

बादशाह अपनी तुजुकमें (प्रबन्धको पुस्तकमें) लिखते हैं कि जब ये समाचार आगरेमें मुझको पहुंचे तो मैंने अपने मनमें बहुत क्रोध किया और चाहा कि आप जाकर इन साहिबोंके मारे हुए नोकरोंकी जड उखाड़ डालूं। परन्तु अमीर और शुभचिन्तक लोग इस बातपर बिलकुल राजी न हुए और ख्वाजा अबुल हसनने अर्ज की कि उधरके कामोंको जैसा कि खानखानाने समझा है दूसरे किसीने नहीं समझा। उसीको भेजना चाहिये जो इस बिगडी हुई बातोंको सुधारे और समय देखकर (अभी तो) कोई सन्धि करले। फिर ठीक उपाय कर लिया जावे। दूसरे हितैषी भी इस बातमें सहमत हुए। सबकी सलाह यही ठहरी कि खानखानाको भेजना चाहिये और ख्वाजा अबुल हसन भी साथ जावे। इस ठहराव पर दीवानोंने (१) खानखाना और उसके साथियोंकी तय्यारी

१। कामधारियोंने।

करदी और वे मन ७ के उर्दी बहिश्त महीनेकी १७ वी तारी खको (१) इतवारके दिन विदा हुऐ।

इस अवसरपर बादशाहने खानखानाका मनसब ६ हजारी शाहनवाज खांका ३ हजारी दाराबखांका ३ हजारी कुछ और बढाकर कर दिया और उनके छोटे बेटे रहमान दादको भी मन सबसे विमुख नहीं रखा। इसके सिवाय खानखानाको भारी सिर पाव, जडाऊ तलवार, खासा हाथी और इराकी घोडा दिया। उनके बेटों और साथियोंको भी खिलअत और घोडे बखशे।

खानखानाने बुरहानपुर पहुंचकर फरेन्दूखां बरलास, राय मनो हर और राजा बरसिंहदेव, बुन्देलेकी पदवृद्धिकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके तीनोंके मनसब बढ़ाकर इस भांति कर दिये।

१। फरेन्दूखां बरलास—ढाई हजारी जात—१५०० सवार।

२। रायमनोहर—एक हजारी जात—८०० सवार।

३। राजा बरसिंहदेव—चार हजारी जात—२२०० सवार।

दखनियोंसे सन्धि।

खानखानाने दखनियोंसे फिर वही युक्ति सन्धिकी बरती और बीजापुरके बादशाह आदिलखांको भी इस बातपर राजी किया कि जो दक्षिणकी लडाईमें उसको शामिल किया जावे तो ऐसा प्रबन्ध करे कि जो परगने बादशाही अधिकारसे निकल गये हैं वे फिर कब्जेमें आजावें।

इन बातोंको बादशाहसे अर्ज करनेके लिये खानखानाने शाह नवाजखांको भेजा। उसने ६ बहमन (२) सन् ७को दरबारमें आकर १०० मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। बादशाहने सन्धि स्वीकार करके खान आजमको मालवेमें आने और वहांसे

१। बैसाख सुदी ६ संवत १६६४।

२। माह सुदी ४ संवत १६६८

मेवाड़पर जानेका हुक्म लिखा और शाहनवाज खांको अपने पास रख लिया। ८ महीने पीछे खानखानाके बुलानेसे ४ अमरदाद (१) सन् ८ को घोड़ा और सिरोपाव देकर विदा किया। खानखानाने अम्बरसे सन्धि करके बराड और खानदेशका प्रबन्ध बहुत कुछ सुधार लिया और बादशाहका अजमेरमें आना सुनकर बहुत सी भेंट भेजी जो १८ तीर (२) सन् १० को बादशाहकी सेवामें पहुंची। बादशाहने उसका यों वर्णन लिखा है।

१ माणिक—३
२ मोती—१०३
३ याकूत—१००
४ जड़ाऊ फरसे २
५ मोतियों और याकूतोंको जड़ी हुई किलङ्गी १
६ भरभरी जड़ाऊ १
७ तलवार जड़ाऊ २
८ तरकश मखमलकी १
९ भुजबन्ध जड़ाऊ १
१० हीरेकी अंगूठी १

इन सबका मोल १ लाख रुपये हुआ।

११ दक्षिण और कर्णाटकके कपड़े सादे और सुनहरी तारोंके
१२ हाथी १५
१३ घोड़ा जिसकी गुद्दीके बाल धरती तक लटकते थे १

इसके साथ शाह नवाजखांकी भी भेट थी जिसमें ५ हाथी और ३०० कपड़े नाना प्रकारके थे।

खानजहां लोदी फिर दक्षिणमें।

खानजहां लोदीने जो प्रतिज्ञा की थी वह पार न पड़ी थी

१। सावन सुदी १० संवत १६७०
२। असाढ़ सुदी १५ संवत् १६७२

और उलटो हानि ही हानि हुई थी जिससे वह बादशाहको मुंह नहीं दिखा सकता था। परन्तु बादशाहको उससे बहुत प्रेम था। इसलिये बडे मुंहसे उसको बुलाया। वह बुरहानपुरसे चलकर ८ अमरदाद (१) आसवार सन १० को अजमेर पहुंचकर सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाहने अच्छा मुहूर्त्त निकलवाकर फिर उसे ८ महर (२) सन् १० को दक्षिण भेजा और एक बडीभोर चञ्चल चतुरङ्गिणी सेना जिसमें ३३० मनसबदार २००० अहदी ७०० तुर्क सवार और ३०० पठान दिलोजाक (३) थे उसके साथ दी। ३० लाख रुपये खर्चके वास्ते दिये और कई अमीरोंके मनसब भी उसके कहनेसे ज्यादा किये। जोधपुरके राजा सूरजसिंहको भी ३00 सवार मनसबपर बढाकर दक्षिणको विदा किया और जो अमीर दक्षिणमें थे उनके वास्ते भी सिरोपाव राजा सारङ्गदेवके हाथ भेजे और दाराबखांके वास्ते १ जडाऊ तलवार भेजी।

दक्षिणमे फिर अशान्ति और युद्ध।

खानजहांके जानेसे फिर दखनियोंमें कोलाहल मचा। अब खानखाना बुरहानपुरमें रहते थे और शाहनवाजखांको बालापुरकी छावनीमें रखा था। अहमदनगरके सरदार आदमखां, याकूतखां, जादूराय और बापू काटिया वगैरह शाहनवाजखांके पास आये, उसने सबको हाथी, घोड़े, खिलअत और रुपये देकर बादशाही चाकरीमें रख लिया.और उनको साथ लेकर, बालापुरसे अम्बरके ऊपर उधरसे दखनियोंकी फौज आयी, तो उससे लड़ाई की। वह भागकर अम्बरके पास गयो। अम्बर अपनो, आदिलखांको और कुतबशाहकी बहुतसी सेना एकत्र करके लड

१। सावन सुदी ६ संवत १६७२

२। आसोज सुदी १० स० १६७२।

३। पठानोंकी एक जाति।

नेको आया। २५ बहमन (१) रविवारको तीसरे पहरके समय दोनों सेनाकी मुठभेड़ हुई। दाराबखां जो अगली फौजमें था, राजा बरसिंह देव, रामचन्द्र और अलीखां आदि सरदारों सहित तलवार खेंचकर दखनियोंकी हिरावल फौज पर दौड़ा और उसको तितर बितर करके सीधा बीचकी सेना पर गया। वहां ऐसी लड़ाई हुई कि देखने वालोंकी आंखें पथरा गयीं। २ घड़ी तलवार चली। लोथोंसे खेत पट गया। अम्बर भागा। दो तीन कोस तक उसका पीछा हुआ। परन्तु रात हो जानेसे वह बचकर निकल गया। उसका तमाम तोपखाना, ३०० ऊंट, खानोंसे भरे हुए जङ्गी हाथी, अरबी घोड़े और बहुतसे हथियार लूटमें आये और कुछ सरदार भी पकड़े गये। फिर शाहनवाजखां आगे बढ़कर "करकी"में गया जहां अम्बरकी छावनी थी मगर वहां किसीको नहीं पाया। क्योंकि वहां वाले पहिले ही निकल गये थे। इसलिये उनके मकानोंको गिराकर रोहनखड़ेके घाटेसे उतर आया।

बादशाहको जब इस फतहकी बधाई पहुंची तो उन्होंने प्रसन्न होकर सब सरदारोंके मनसब बढ़ाये—

परवेजकी बदली और खुर्रम दक्षिणमें।

दक्षिणकी फौजोंका प्रबन्ध जैसा कि बादशाह चाहते थे सुलतान परवेजसे नहीं हुआ था। इसलिये बादशाहने उसको दरबारमें आनेका हुक्म लिखा।

वह २० तीर (२) सन् ११ को बुरहानसे रवाने हुआ। २८ को (३) यह खबर बादशाहको विहारीदास वाकिआनवीसकी अर्जीसे मालूम हुई।

१। फागुन बदी १२ रविवार संवत् १६७२।

२। सावन बदी १३ संवत् १६७३

३। यह मामूली चाल डाककी थी कि ८ दिनमें बुरहानपुरसे अजमेरको कागज पहुंचते थे। बुरहानपुर अजमेरसे २५० कोस है।

मेवाड फतह होजानेसे बादशाहको अजमेरमें कोई काम नहीं रहा था और दक्षिण फतह करनेकी उनको बहुत आकांक्षा थी। इसलिये १८ शव्वाल (१) सन् १०२को (रविवार ८ आबानको) उन्होंने सुलतान खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिणको चलाया और २० आबान (२) शुक्रवारको सुलतान खुर्रमको शाहकी पदवी देकर बड़े ठाठसे बिदा किया। और दूसरे दिन २१ आबान (३) १ जीकाद शनिवारको आप भी ४ घोड़ेके फरङ्गी रथ अर्थात् बग्गीमें बैठकर मालवेको गये। २३ असफन्दारको (४) सोमवारके दिन माडूके (५) किलेमें पहुंचे। इसी दिन सुलतान शाह खुर्रमने भी बुरहानपुरमें प्रवेश किया। अफजलखां और रायराया तो बीजापुरमें गये थे। आदिलखां ७ कोस अगवानी आकर इनके पाससे बादशाहके फरमानको ले गया और इन लोगोंका सत्कार करके कहा कि अम्बरने जो बादशाही इलाके लिये हैं वे उनसे छुडा दूंगा और उसी दिन अम्बरके पास अपने दूत भेजकर यही सन्देसा उसका भी कहलाया।

अम्बरने इधर तो शाह खुर्रमके पहुंचनेसे और उधर आदिलखांको कहलानेसे डरकर अहमद नगर और दूसरे किलोंकी कुंजिया जो उसने ले ली थी शाहजादेके पास नजराने समेत भेज दी। आदिलखां और कुतुबुलमुल्कने भी अधीनता अङ्गीकार करके विनय पत्र भेजे। शाहजादेने बादशाहको लिखकर आदिलखांको फरजन्द (बेटे)का खिताब दिलाया। खानखानाको खानदेश और बुरहानपुरकी सूबेदारीपर स्थिर रखा। जो नये इलाके

१। कातिक बदी ६ रवि स० १६७२।

२। कातिक सुदी २ स० १६७३।

३। कातिक सुदी ३ स० १६७३।

४। फागुन सुदी ७ स० १६७३।

५। अजमेरसे माडू १५८ कोस है।

फतह हुए थे उनके शासनपर शाह नवाजखांको १२०० सवारोंसे भेजा। जगह जगह अपने योग्य पुरुषोंको नियत करके सारा प्रबन्ध ठीक कर दिया। साथमें जो लशकर था उसमेंसे ३०००० सवार और ७०००प्यादे बरकन्दाज तो वहां छोडे और बाकी जो २५००० सवार और २०० तोपची थे, उनको साथ लेकर बुरहानपुरसे कूच किया। सो २० महर(१) सन्१२ गुरुवारको माडूमें बादशाहके पास पहुंचा। अहमद नगरके अमीरों, बीजापुरके वकीलों, बगलानेके राजा और दाराबखांको भी साथ लाया।

खुर्रम दरबारमें।

बादशाहने खुश होकर मोती जवाहर खुर्रमपर निछावर किये और शाहजहांका खिताब ३० हजारी मनसब और दरबारमें कुरसीपर बैठनेका मान दिया और जो सरदार उनके साथ गये थे और दक्षिणसे आये थे उन सबका सत्कार भी हाथों घोडे गहने और सिरोपाव देकर किया।

ऊदाराम दखनी।

दक्षिणी सरदारोंमें ऊदाराम ब्राह्मण भी था जो पहिले अंबरका साथ छोडकर शाह नवाजखांके पास चला आया था और फिर अंबरके धोखेमें पड़कर उसके पास लौट गया था। परन्तु अंबरने फौज भेजकर उनको नष्ट करना चाहा जिससे वह लड़कर बादशाही सीमामें आगया और शाहजहांसे मिलकर उनके साथ बादशाहकी सेवामें आया। बादशाहने उनको तीन हजारी जात और १५०० सवारका मनसब देकर नौकार रख लिया।

बादशाह गुजरातमें।

फिर बादशाह मालवेसे गुजरातको गये और वहांसे मालवे होकर आगरेको लौटे।

१। आसोज सुदी १२ संवत १६७४

हीरेकी खान।

खानदेशमें पाजू नामक एक जमींदार था, उसके पास गोंड वानेमें एक हीरेकी खान थी। खानखानाने उसका हाल सुनकर अपने बेटे अमरुल्ला को कुछ फौजके साथ भेजा। पनजूने अपनेमें लड़नेकी सामर्थ्य न देखकर वह खान सौंप दी और उसपर बादशाही दारोगा बैठ गया। यह खबर १० अमरदाद (१) सन् १२ को गुजरातमें बादशाहके पास पहुंची।

आदिलखांका महत्व।

५ महर गुरुवार (२) सन् १३ को बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थना पर मुहम्मदाबादसे (गुजरात) अपना चित्र १ लाल और एक खासा हाथी इब्राहीम आदिल खांको भेजकर लिखा कि निजामुलमुल्क और कुतुबुलमुल्कके राज्यका जितना भीत लेगा वह उसके इनाममें गिना जावेगा और शाहनवाज खांको हुक्म भेजा कि अब आदिलखां चाहे एक सजी हुई सेना उसकी सहायताको भेज दो।

पहिले निजामुलमुल्क दक्षिणके अधिराजोंमें बड़ा गिना जाता था। अब बादशाहने आदिलखांको तमाम दक्षिणका अग्रगण्य बना दिया।

दाराबखां दरबारमें।

दाराबखां गुजरातमें बादशाहके साथ था। इब्राहीमखांको बादशाहने दक्षिणके सूबेका बखशी नियत करके भेजा था। खानखानाने उसके कामोंसे प्रसन्न होकर उसकी सिफारिश लिखी तो बादशाहने २१ महर (३) रविवारको उसे हजारीजात और २०० सवारोंका मनसब प्रदान किया।

१। सावन सुदी ११ संवत् १६७५।
२। असोज सुदी ८ संवत् १६७५।
३। कातिक बदी ११ सं० १६७५।

२३ आबान (१) गुरुवारको बादशाहने गांव मदनपुरके डेरोंमें दाराबखाको नादरीका खिलअत दिया। नादरी बिना बाहोंकी कमरी होती थी जो जामेके ऊपर पहनी जाती थी, परन्तु हर कोई बिना दिये बादशाहकी नहीं पहन सकता था।

खानखाना दरबारमें।

(२) २१ शहरेवर सन १३ गुरुवार २२ रमजान सन् १०२७ को बादशाह गुजरातसे (जहां मालवे होते हुए गये थे) आगरेको मालवेके रास्तेसे ही लौटे। राजपन्थ खानदेश और बुरहानपुरकी सीम में होकर निकलता था। इसलिये खानखानाने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेकी आज्ञा मांगी बादशाहने हुक्म भेजा कि जो सब प्रकारसे सुबीता हो तो अकेला आकर जल्दीसे लौट जाना।

ये इस आज्ञाके पाते ही (३) १८ आजर सोमवारको छडी सवारीसे घाटोचांदामें बादशाहके पास पहुंचे। १००० मोहरें और १००० रुपये नजर किये। बादशाहने भी वैसी ही मेहरबानी की जैसी कि किया करते थे। २१ आजरको (४) खासा घोडा जिसका नाम सुमेरु था दिया और २७ को (६) खासा पोस्तीन (५) जो पहने हुए थे और सात घोडे अपनी सवारीके प्रदान किये।

२ दे (७) रविवारको बादशाह रणथंभोर पहुंच कर तीन दिन वहां रहे, परन्तु खानखानाको भेट करनेका अवसर नहीं मिला

१। अगहन बदी १३।
२। आसोज बदी १३ संवत १६७५।
३। पौष बदी ८।
४। पौष बदी १२।
५। पौष सुदी ३।
६। चमडेका कोट रूएंदार।
७। पौष सुदी ६।

जिससे उन्होंने ६ देको (१) रणथंभोरसे आगे पडाव पर अपनी बहुमूल्य भेट बादशाहकी सेवामें उपस्थित की जिसमेंसे बादशाहने डेढ लाख रुपयेके रत्न, जडाऊ गहने, कपडे और हाथी पसन्द करके रख लिये। शेष पदार्थ फेर दिये।

७ हजारी मनसब और दरबारसे विदा।

८ दे रविवारको (२) बादशाहने खानखानाको ७ हजारी जात ७000 सवारका मनसब और खासा खिलअत खासा हाथी, जडाऊ तलवार और कमर पट्टा देके और दोनों सूबों अर्थात् खानदेश तथा दक्षिणकी सूबेदारोपर स्थिर रखकर विदा किया और फरमाया कि हमने सुना है कि शाहनवाज खा शराब बहुत ज्यादा पीने लगा है। यदि यह बात सही हो तो उसको हर तरहसे रोको, जो न माने तो हमको स्पष्ट लिखो, हम अपने पास बुला कर उसका इलाज करेंगे। ऐसा न हो कि वह इस युवावस्थामें अपनेको नष्ट कर देवे।

शाहनवाज खाकी मृत्यु।

खानखाना जब बुरहानपुरमें पहुंचे तो उन्होंने शाहनवाज खाको अति रुग्न (३) और निर्बल पाया। उसकी दवा दारू भी बहुत की। परन्तु रोगकी शान्ति न हुई और वह ३३ वर्षकी अल्पायुमें अपने बूढे बापका बिलखता छोडकर इस असार संसारसे चल धरा।

उसके मरनेसे खानखानाको तो जो दुख हुआ सो हुआ, परन्तु बादशाहको भी बहुत उदासी हुई। वे खुद ५ (४) उर्दी बहिश्त गुरुवार सन् १४के वृत्तान्तमें लिखते हैं "इस अशुभ

१। पौष सुदि १० बु०।
२। पोष सुदी १४ स० १६७५।
३। बीमार।
४। वैसाख सुदी १२ संवत् १६७६।

समाचारके सुननेसे मैने बहुत अफसोस किया। सच यह है कि खूब खानाजाद था। (१) चाहिये तो था कि इस राज्यमें अच्छी अच्छी चाकरिया देता और बडी बडी कीर्त्तिया छोडकर मरता। यद्यपि सबको इसो रास्तेपर चलना है और मोतसे कोई नहीं बच सकता है मगर इस तरहसे उठ जाना बुरा लगता है। उमेद है कि उसके गुनाह बखशे जावे। राजा सारंगदेवको जो पास रहनेवाले सेवको और मिजाज जानने वाले चाकरोंमेंसे है मैने अपने उस ग्तालीकके पास भेजकर बहुत सी मेहरबानियों और बखशिशोंसे उसको सहानुभूति की और शाहनवाजखाका जो ५ हजारी मनसब था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसबों पर बढा दिया। उसके छोटे भाई दाराबखाका मनसब असल और इजाफेसे पाच हजारी जात और ५००० सवारका करके खिलअतको घोडा और जडाऊ तलवार बखशी और उसको बापके पास भेज दिया" सो वह शाह नवाजखांकी जगह सूबे बराड और अहमद नगरका सरदार बना। उसका भाई रहमान दाद २ हजारी जात और ७०० सवारके मनसबसे सम्मानित हुआ। शाहनवाजखाके बेटे मनुचहरको २ हजारी जात, हजार सवारका और दुसरे बेटे तुगरलको हजारो जात और ५०० सवारका मनसब मिला।

बादशाह काश्मीरमें।

बादशाहने मालवेसे आगरे पहुचकर १ शहरेवर सन १४ को (२) दाराको अर्थात् बरमातो खिलअत खानखाना और दूसरे अमीरोंके वास्ते जा दक्षिणमें नियत थे भेजे।

१। बरजाम गुल म बादशाह अपने नौकरोंको खानाजाद कहते थे। उसी पयासे दरबार जोधपुरके सरदार और मुतसद्दी अबतक भी अर्जीमें अपनेको खानजाद लिखतेहैं।

२। द्वितीय सावन सुदी १४ स० १६७६।

२४ महर गुरुवार सन् १४को(१) व दशाहने दशहरेका उत्सव करके मांझ समय काश्मीरको कूच किया।

८ भावान (२) शुक्रवारको मथुरासे ६ लाख रुपये आसेरगढ़की सामग्रीके लिये खानखानाके पास भेजे।

दक्षिणमें उपद्रव।

अंबरने बादशाहका काश्मीर जाना सुन कर अहमदनगर पर चढ़ाई की। खानखानाने बादशाहको जो अरजी लिखी वह २५ फरवरदीन (३) सन् १५ के लगभग पहुंची जिसकी बाबतमें वे इस भांति तुजुक जहांगीरीमें लिखते हैं,—

"इन दिनोंमें सिपहसालार खानखाना और दूसरे शुभचिन्त कोंके प्रार्थनापत्रोंसे प्रकट हुआ कि अंबरने अपने स्वभावकी दुष्टतासे फिर उपद्रव करनेकी पांव बढ़ाया है। उसने बादशाही सवारोंके अति दूर होनेसे अवसर पाकर वे सब वचन तोड़ दिये जो अमीरोंसे किये थे और बादशाही राज्यमें हस्तक्षेप किया है सो जल्दी अपने कियेका दण्ड पावेगा। सिपहसालारने खजाना मांगा था। सो हुक्म दिया गया कि राजधानी आगरेके कार्याचारी २० लाख रुपये सिपहसालारके पास भेज देवे।"

"फिर खबर पहुंची कि अमीर अपने अपने स्थानों को छोड़ कर दाराबखांके पास चले आये हैं और बरगी लोग (४) लश्करकी

१। आसोज सुदी ८ स० १६७६। बादशाही पञ्चाङ्गमें दसहरा इसी दिन था। ।चण्ड पञ्चाङ्गमें दूसरे दिन लिखा है। यदि इस पञ्चाङ्गमें आसोज सुदी ७ दो न होती तो १० गुरुवारको ही होती। बादशाही पञ्चाङ्गमें ७ एक ही है।

२। कातिक बदी १० सवत१६७६।

३। चैत सुदी ११ स० १६७७।

४। पिंडारे लुटेरे।

आसपास सजे हुए फिरते हैं। खञरखां अहमदनगरमें घिर गया है। दो तीन बार बादशाही बन्दो ने शत्रुओंसे युद्ध किया। हर बार वे हार कर भागे, आखिरको दाराबखां अच्छे सवारोंको लेकर उनको छावनी पर गया। बडी लडाई हुई। शत्रु हार कर जङ्गलमें भाग गये। उनको छावनी लुट गयी। बादशाही सेना कुशलपूर्वक अपने डेरोंमें आयी, परन्तु नाज चारा बहुत महंगा हो गया था, इस लिये सरदार सलाह करके रहनगढके घाटेसे उतर आये। शत्रु ढिठाई करके वहां भी दिखाई दिये। राजा बरसिंहदेवने आगे बढ कर बहुतोंको मारा और मनसूर हबशीको जीता पकडा। उसको हाथीके पावोंमें डालना चाहा, परन्तु वह उस पर राजी न हुआ तो राजाने उसका मस्तक छेदन करा दिया।"

यह लडाई कई महीनों तक होती रही। एक लडाईमें खानखानाके छोटे बेटे रहमानदादको जान गयी जो अपने भाई दाराबखांके पास बालापुरमें था।

रहमानदादकी मृत्यु।

बादशाह लिखते हैं कि इन दिनोंमें शुक्रवारको (१) खानखानाके बेटे रहमानदादके विषयमें यह खबर पहुंची कि वह बालापुरमें मोतसे मर गया। कुछ दिनोंसे तप हो गयी थी जिसकी निर्बलताके दिनोंमें एक दिन दखनो व्यूह रचकर आते हैं। उसका बडा भाई दाराबखां लडनेको सवार होता है। जब यह खबर रहमानददाको लगती है तो वह अति पौरुष और पराक्रमसे उसी

१। महर महीनेकी १३वीं चन्द्रवार और १६वीं गुरुवारके बीचमें शुक्रवारको रहमानदादको खबर आना तुजुक जहांगीरीमें लिखा है, परन्तु शुक्रवार १३ पहले १० को था या १६ के पीछे १७ के बीचमें तो नहीं था।

कमजोरी और थकावटमें सवार होकर भाईके पास पहुंचता है और जब कि शत्रुको हराकर लौटता है तो शरीरको कुछ रक्षा नहीं करता। इसी क्षण वायुका कोप हो जाता है नसें खिचने लग जाती हैं। जीभबन्द हो जाती है। दो तीन दिन इसी दशामें रह कर प्राण छोड देना पडता है। जवान खूब लायक था। तलवार मारने और काम करनेमें बहुत साहसी था। तमाम जगह उसका यही मनोरथ रहता था कि अपनी तलवारका चमत्कार दिखावे, आग सूखे और गीलेको बराबर जलाती है। जब कि मुझे ही बहुत कष्ट हुआ है तो उसके बूढे बापके दिल पर तो क्या गुजरा होगा। अभी शाह नवाजखांका जखम ही नहीं भरा था, कि यह दूसरा घाव लगा। आशा॰ है कि परमेश्वर उसको शांति और सन्तोष देवे।" (१)

दखनियोंकी चढाई।

खानखाना इन दुखोंके मारे गनीमका पूरा पूरा बन्दोबस्त न कर सके जो अब हर तरफसे गावोंको लूटता, खेतोंको जलाता चला आता था। शाहजहासे जो इकरार हुए थे वे सब तोड डाले गये थे, बादशाहने काश्मीरमें यह समाचार सुनकर फिर शाहजहाके भेजनेका विचार किया था। परन्तु वह उस समय कोट कांगडेकी फतहके उद्यममें लगा हुआ था। उसके बडे बडे सरदार वहां गये हुए थे जिससे उसके दक्षिण जानेमें विलम्ब हुआ। दखनियोंने शिथिलतासे और भी बल पाकर ६०००० सवार भेजे, बहुत सा विभाग बादशाही राज्यका दबा लिया, हरेक स्थानसे थाने उठा दिये और महकारमें बादशाही लश्करको आ घेरा। वहां तीन महीने तक लडाई होती रही। २ युद्ध बडे

(१) भूतकालको वर्तमान काल करके लिखनेकी प्रथा अकबर नामे और तुजुक जहांगीरीमें बहुधा देखी जाती है। यह उसीका यथावत उल्था है।

हुए जिनमें बादशाही बन्दे जीते तो सही परन्तु रसदके रास्ते न खोल सके जो बर्गियों अर्थात् दक्षिणके लुटेरोंने बन्द कर रखे थे। जब नाज नहीं मिलने लगा तो बालाघाटसे उतर कर बालापुरमें आ गये जैसा कि पहले लिखा गया है। दुश्मन भी साथ साथ ही पीछा करते आये और बालापुरके आस पास भी लूट मार करने लगे। बादशाही बन्दोंमेंसे ६।७ हजार चुने सवार उनकी छावनीपर गये। वे ६०००० थे तो भी एक बड़ी लड़ाई लड़कर और उनके डेरे लूट कर लौटे। परन्तु वे फिर इकट्ठे होकर लड़ते हुए लश्कर तक आये। दोनों तरफसे १००० मनुष्य खेत रहे।

इस तरह ४ महीने तक बालापुरमें रहे। जब नाज और चारेकी तंगी बहुत ही हुई और लोग भाग भागकर शत्रुओंके पास जाने लगे तो वहां ठहरना भला न देखकर बुरहानपुरमें आ गये। वे भी पीछे लगे चले आये। ६ महीने तक बुरहानपुरका घेरे रहे। बराड़ और खानदेशकी अनेक बस्तियोंको दबा बैठे। खानखाना उनके हटानेका बहुत उद्यम करते थे। परन्तु सिपाही भूखोंके मारे अधमरे हो रहे थे, घोड़े थक रहे थे, बादशाहका औरसे मदद नहीं पहुंचती थी, इस कारणसे लाचार थे। कुछ बन नहीं पड़ता था। बादशाहको लगातार अर्जियां भेजते थे। अन्तमें यहांतक लिख चुके थे कि मेरे ऊपर घोर कष्ट आ पड़ा है और मैंने जौहर करके मर जानेको ठान ली है।

शाहजहां फिर दक्षिणमें।

२७ महर सोमवार (१) सन् १५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। सोमवार ८ आजर (२) ५ मुहरम सन् १०३० को लाहौर पहुंचे।

१। कातिक सुदी ८ स० १६७७।

२। मगसर सुदी ६ स० १६७७।

इसी दिन कागडेके फतह होनेकी खबर आयी जो १ मोहर्रमको शाहजहांके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणके (१) परिश्रमसे २ वर्षमें हाथ आया था। बादशाहने इस बधाईसे प्रसन्न होकर ४ दे भगुवार को (२) शाहजहांको एक भारी खिरोपा और हाथी घोडे देकर दक्षिणकी ओर विदा किया और चलते समय फरमाया कि बाबा जैसे तुम्हारे दादाने धावा करके खान आजमको गुजरातियोंके घेरेसे छुडाया था, वैसे ही तुम भी जाकर खान खानाको दखनियोंसे बचाओ और दक्षिण जीतनेके पीछे ? करोड दामका मुल्क अपनी जागीरमें ले लेना। ६५० मनसब दर १000 अहदी १000 बर्कन्दाज रूमी १००० पैदल तोपची १ बड़ा तोपखाना १ करोड रुपयेका खजाना और बहुतसे हाथी साथ किये। यह लशकर उन ३०००० सवारोंके सिवाय था जो पहिलेसे खानखानाको दिये हुए थे। परन्तु इससे पहिले कोकाखा को खानखानाके पास भेजकर बहुतसे सन्देशे और कृपायुक्त बचन कहला दिये थे।

फिर बादशाह भी पंजाबसे पयान करके १४ असफन्दार (३) सन १५ को आगरेमें आगये।

१। सुन्दर शाहजहांका प्रतिष्ठित पंडित था। बादशाहने उसकी कार्य्यकुशलतासे प्रसन्न होकर पहिले तो रायरायांकी पदवी प्रदान की थी और अब कांगडा विजय करनेसे विक्रमजीतकी उपाधि दी। अजीब बात है कि कागडाको अकबरके समयमें तो राजा बीरबलसे बडा धक्का लगा था जिसका वर्णन हम उसके चरित्रमें छाप चुके हैं और अब इन दूसरे ब्राह्मण देवतासे उसका सर्वथा नाश हुआ।

२। पौष सुदी २ स० १६७७।

३। फागण सुदी १३।

दखनियोंकी पराजय।

जब यह हजरत उज्जैनमें पहुंचा तो माण्डूके किलेसे कर्मचारियोंकी अर्जी आयी कि दखनी नर्मदासे उतर आये हैं और उन्होंने कई गांव यहांके लूट लिये हैं। शाहजादेने ख्वाजा अबुल सनको ५००० सवारोंसे सहित भेजा। उसने उन लोगोंको नर्मदासे उतरते हुए जा दबाया और लड़कर बुरहानपुरकी तरफ भगा दिया। फिर शाहजहां भी बुरहानपुर पहुंचा। दखनी अभी तक शहरको घेरे हुए थे और बादशाही बन्दे जो २ वर्षसे उनके साथ लड़ते लड़ते थक गये थे शहरके अन्दर बड़े सङ्कटमें थे। शाहजादेने ८ दिनमें उनको ३० लाख रुपये और बहुतसे जिरह बखतर देकर शहरसे बाहर निकाला और लड़कर दखनियोंको भगा दिया। खिड़की तक फौज उनके पीछे गयी जहांसे अम्बर और निजामुलमुल्क एक दिन पहिले निकलकर दौलताबादको चले गये थे।

अम्बरका फिर सन्धि करना।

बादशाही बन्दोंने खिड़की शहरको जो २० वर्षमें बसा था ऐसा उजाड़ा कि फिर २० वर्षमें भी न बसे। वहांसे फौजका कूच अहमदनगरको दखिनियोंका घेरा उठानेके वास्ते हुआ। पहनतक पहुंचे थे कि अम्बरने दूत भेजकर फिर दीनता दिखायी और कहलाया कि जितना हुक्म होगा उतना ही नजराना और जुर्माना भेज दूंगा। इसके साथ ही यह भी खबर पहुंची कि दखनी अहमदनगरसे भी उठ गये हैं। तब कुछ फौज खजरखांको सहायताके लिये खर्च सहित भेजकर अमीर लोग बुरहानपुरमें चले आये और अम्बरसे यह बात ठहरी कि जो मुल्क बादशाही अधिकारमें पहिलेसे था उसके सिवाय १४ कोसतक और धरती उन परगनों को छोड़दे जो बादशाही राज्यसे मिले हुए हैं और ५० लाख रुपये नजराने और जुरमानेके दे।

शाहजादने यह सब हाल बादशाहसे अर्ज करनेके लिये अफ

जनखाको भेजा। वह ४ खुरदाद (१) सन् १६ को बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने खुश होकर उसके हाथ लालकी जड़ी हुई कलङ्गी जो शाह, ईरानने भेजी थी, शाहजहांके वास्ते भेजी और, अहमदनगरके हाकिम खजरखाका मनसब ४ हजारी कर दिया।

बादशाह काश्मीरमें।

१२ आवान (२) सोमवार सन् १६ को बादशाहने आगरेसे काश्मीरकी हवा खानेको पयान किया। क्योंकि कई वर्षों से आगरेकी गरमी उनसे सही नहीं जाती थी।

खानखानाको मारक दशा।

खानखानाको सुख सम्पत्ति भोगते हुए बहुत वर्ष हो गये थे अब दुःखकी भी बारी आयी। पहिले तो उनके जवान बेटे मरे फिर दखनियोंने आकर बुरहानपुर घेरा जिसके मारे उन्होंने जो हर करके मरनेकी ठानी और निसन्देह उस वीर पुरुषके लिये कि जिसने मैदानकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी दल बादल सेनाओंको विजय किया हो, इस तरह बेबस होकर शत्रुओंसे घिर जाना मरनेसे क्या कम था? निदान शाहजहांके पहुंचनेपर उस सङ्कटसे तो छुटकारा मिला परन्तु दुःखने पीछा न छोड़ा वल्कि वह अब शाहजहांके दुर्भाग्यसे मिलकर और भी भयङ्कर हो गया।

बाप बेटों अर्थात् बादशाह और शाहजहांका बिगाड़।

शाहजहां दखनियोंके दारुण घेरेको बुरहानपुरसे उठाकर अपने पौरुषपर फूला न समाता था कि देखने उसको व शाओंके विरुद्ध दरबारमें और ही अद्भुत गुल खिलाया जिससे उसको

१। जेठ सुदी ५-६ संवत् १६७८

२। मगसर बदी ७ संवत् १६७८ परन्तु इसदिन सोमवार नहीं था शनिवार था।

सौतेली मा नूरजहां बेगम जो अबतक उसके काम सुधारती रही थी उसका पक्ष छोडकर प्रतिकूल हो गयी।

नूरजहां बेगमका कुछ हाल।

जहांगीर बादशाहको नूरजहांसे बहुत प्रेम था। यह मिरजा गयास ईरानीकी बेटी थी और शेर अफगनखां ईरानीको ब्याही थी। मिरजा गयास अकबर बादशाहके समयमें कारखानोंका दीवान था और शेर अफगनखां कई वर्ष तो खानखानाकी सेवामें रहा था फिर जहांगीर बादशाहका नौकर हुआ। बादशाहने उसको बर्दवानमें जागीर दी थी। फिर उसके अनाचारके समाचार सुनकर अपने कोका (धा भाई) कुतुबुद्दीनखांको जो बङ्गाल और उडीसेका सूबेदार था लिखा कि शेर अफगनको दरगाहमें भेज दो और जो न आवे तो सजा दो। कोकाने बर्दवान जाकर शेरअफगनको पकडना चाहा तो उसने कोकाको मारडाला और आप भी मारा गया। नूरजहां बेगम पकडी आयी तो बादशाहने अपनी सौतेली मा रुकैया सुलतान बेगमको बख्श दी। वह बहुत दिनोंतक उनके पास रही। फिर बादशाहके चित्त चढी तो थोडे दिनोंमें सब बेगमोंसे बढ गयी। अपने बापको मुख्य मन्त्री बनाया, भाईको आसिफखांकी पदवी दिलाकर सब अमीरोंसे बढाया। बादशाही सारा काम आप करने लगी। बादशाहका नाम मात्र रह गया। वे कहा भी करते थे कि मैंने तो राज्य नूरजहांको दे डाला है। अब मुझे १ सेर शराब और आधासेर कबाबके सिवाय और कुछ नहीं चाहिये।

बादशाहके ५ बेटे खुसरो, परवेज खुर्रम, जहांदार, और शहरयार थे। खुसरो राजा मानसिंहका भानजा और खान आजम मिरजा कोकाका जमाई था। इस प्रसंगमें ये दोनों सरदार अकबर बादशाहके पीछे उसीको तख्तपर बठानेके विचारमें थे परन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई और जहांगीर ही पिताकी जगह बैठे तो भी खुसरो अपनेको बादशाहीके योग्य समझकर

पज बको भागा था और पकड़ा जाकर अन्तमें खुर्रमको सौंपा गया था सो उसीकी कैदमें मर गया।

परवेज बादशाहका प्यारा बेटा था। परन्तु नूरजहांने उसको नहीं बढ़ने दिया और खुरमको बढाया क्योंकि उसके भाई आसिफखांकी बेटी ताजबीबी खुरमको ब्याही थी और इस सम्बन्धसे नूरजहां खुर्रमके पक्षमें हो गयी थी। परन्तु अब जो अपने पेटकी (१) बेटीका विवाह शहरयारसे करना चाहा तो शाहजहांका बल घटाने लगी कि जिसमें शहरयारको बापके पीछे बादशाह बननेका अवसर मिले। बादशाह उसके कहनेमें थे जो वह कहती वही करते थे।

शहरयार सब भाइयोंमें छोटा था तोभी बादशाहने नूरजहांके कहनेसे २७ रबीउल आखिर (२) सोमवार सन् १०३० को ८ हजारी जात और ४ हजारका मनसब देकर फौजी अफसर बनाया और ४ उर्दी बहिश्त (३) सन् १६ को नूरजहांकी बेटीसे उसका विवाह कर दिया।

इतने होमें ईरानके शाह अब्बास सफवीके कन्धारपर आनेके समाचार लगे। बादशाह उस समय कांगड़े होकर काश्मीरकी हवा खानेको जा रहे थे और कुछ स्वास्थ्य भी उनका बिगड़ा हुआ था इसलिये जैनुल आबदीन बख्शीको शाहजहांके लानेके लिये भेजकर काश्मीरको चल दिये।

जैनुल आबदीन जब शाहजहांके पास पहुंचा तो वह खानखानाको साथ लेकर रवाना हो गया। जब मांडोमें आया तो सुना कि उसकी जो अच्छी अच्छी जागीरें हिसार आगरे और पंजाबके सूबोंमें थी। वे सब शहरयारको दे दी गयी हैं। तब

१। यह लड़की नूरजहांके भूतपूर्व पति शेर अफगनसे थी।

२। चैत बदी १४ संवत् १६७७

३। बैसाख सुदी ४ संवत् १६७८।

तो वह वहीं ठहर गया और बरसातके पीछे हाजिर होनेकी अर्जी लिखकर वखशीको बिदा किया। जो (१) २ तीर सन् १७ का काश्मीरमें बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने शाहजहांसे बुरा मनकर उसके साथके राजाओं और अमीरोंको तो दरबारमें चले आनेका हुक्म भेजा और शाहजहांको लिखा कि अब यहां न आवे। उधर ही गुजरात मालवे दक्खन और खानदेशके सूबोंमें जो उसको इनायत किये जाते हैं। जहां चाहे वहां रहे और इधरकी जागीरोंके बदले जागीरें भी अपनी उधर हीके किसी सूबेमें ले ले।

इस झमेलेमें कन्धारको फौज न जा सकी और शाह अब्बासने आकर उसको घेर लिया। बादशाहने यह खबर सुनकर २१ अमरदाद सन् १७ को काश्मीरसे लाहोरकी तरफ कूच किया। रास्तेमें १ शहरेवरको (२) शहरयारने कन्धार जानेकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके १२ हजारीजात और ८००० सवारका मनसब उसको दिया और कन्धारके वास्ते जो लशकर तय्यार हो रहा था उसका अफसर भी उसीको नियत किया। परन्तु यह अभी कन्धारको बिदा भी न होने पाया था कि शाह ईरानने कन्धार ले लिया और क्षमा मांगनेके लिये दूत और पत्र भेजा। बादशाह भी उत्तरमें उलहनेका पत्र भेजकर लाहोरमें आ गये और आसिफखांको आगरेमें भेजा कि वहां जितना कुछ खजाना मोहरों और रुपयोंका अकबर बादशाहके राज्यशासनसे अबतक संग्रह हुआ है उस सबको लाहोरमें ले आवे और परवेजके वकीलको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर परवेजको बिहारकी सेना सहित यहां लावे।

१। द्वितीय असाढ़ बदी २ संवत् १६७८।
२। सावन सुदी १० सं० १६७८।
२। भादों बदी ४ सं० १६७९।

शाहजहांका बापके मुकाबले पर जाना और खानखानाका शाह
जहांके साथ रहना।

शाहजहां जिसे बेदौलतकी पदवी मिली थी, ये बातें सुनकर माडूसे फतहपुरमें आया और उसके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणने जिसको विक्रमाजीतको उपाधि उपलब्ध हुई थी, आगरेमें जाकर कई अमीरों के घर लूटे। बादशाहने यह समाचार सुनते ही १७ बहमनको (१) लाहोरसे आगरेकी ओर प्रस्थान किया और यमुनाके किनारेका रास्ता लिया, शाहजहां मथुरामें आगया था। यहां से वह भी यमुनाके किनारे किनारे चला। खानखाना दाराबखा और कई अमीर जो गुजरात और दक्षिणके सूबेमें नियत थे उसके साथ थे, परन्तु खानखानाका सम्बन्ध शाहजहांसे सबके अपेक्षा अधिक था। प्रथम तो दक्षिण और बराडके सूबे जिनके वे शासक थे शाहजहांका मिल चुके थे, दूसरे शाहजहांसे उनको आति भी फसी हुई थी क्योंकि उनको पोती जो शाहनवाजखांकी बेटी थी उसको व्याही हुई थी।

बादशाहका खानखानाको नमकहराम लिखना।

बादशाहने इस समय खानखानाको नमकहराम लिखा है और उसका वर्णन इन अक्षरोंमें किया है।

"जब कि खानखाना जैसा अमीर जो अतालीकीके ऊंचे पदको पहुंचा हुआ था, ७० वर्षकी अवस्थामें अपना मुंह नमकहरामीसे काला कर ले तो दूसरोंसे क्या गिला है। मानो शरीर ही नमक हरामीसे बना था। उसके बापने भी अन्तिम अवस्थामें मेरे बापसे ऐसा ही बरताव किया था। सो यह भी उस उमरमें बापका अनुगामी होकर हमेशाके लिये कलङ्की हुआ। भेडियेका बच्चा आदमियोंमें बड़ा होकर भी अस्लको भेडिया ही होता है।"

१। माह सुदी ७ स॰ १६७८।

नूरजहांका बाप बेटोंमें सन्धि न होने देना और सुन्दर ब्राह्मणका लडाईमें काम आना।

शाहजहाने कई बार विनय पत्र और दूत पिताके पास भेजे और चमा मांगी परन्तु नूरजहांने बादशाहको उसकी ओरसे ऐसा कठोर कर दिया था कि वे किसी तौर पर भी उसकी अर्जियों पर गौर नहीं करते थे। बल्कि उसके वकीलोंको कैद कर देते थे शाहजहांको दण्ड देनेका पक्का विचार कर लिया था परन्तु शाह जहां और खानखाना बादशाहके सामने होनेका साहस न करके दिल्लीके पाससे बायें हाथको मुड। गये सुन्दर ब्राह्मण, दाराबखां और राजा भीमको लडनेके लिये छोड गये। ८ फरवरदीन (१) बुधवार सन् १८ को बादशाहने २५००० हजार सवार आसिफ खांकी अफसरीमें भेजे। बलोचपुरमें लडाई हुई, सुन्दर गोलीसे मारा गया, बाकी लोग भागकर शाहजहांके पास गये और वह मांडूको लौटा।

बादशाह भी उसके पीछे चले। १ उर्दी बहिश्त (२) सन १८ को फतहपुर पहुंचे। १० को (३) परवेज भी हिण्डोनमें उनसे आ मिला। २५ को (४) बादशाहने उसे ४००•० सवारों सहित महाबतखांकी अतालीकीमें शाहजहांके ऊपर भेजा।

बादशाह अजमेरमें, परवेज मालवेमें और शाहजहां दक्षिणमें।

खुरदाद (५) शनिवार सन १८ ता० १८ रज्जब सन १०३२ को बादशाह अजमेरमें पहुंचे। मनूचकर जो शाहनवाजखांका बेटा और खानखानाका पोता था शाहजहांका साथ छोडकर परवेजसे

१। चैत बदी १४ स० १६७८।

२। बैसाख बदी ७ स० १६८०।

३। बैसाख सुदी १ स० १६६०।

४। जेठ बदी १ स० १६८०।

५। जेठ सुदी १ स० १६८० को शनि नहीं मङ्गल था और रज्जबकी १८ नहीं ३० थी।

पास आ गया। खानखाना भी इसी जोड़ तोड़में थे कि परवेज घाटके घाटेसे उतर कर मालवेमें पहुंचा। शाहजहां २०००० सवारों और ३०० जङ्गी हाथियों सहित लड़नेको आया। खानखानाको भी साथ आना पड़ा, परन्तु ये और शाहजहां रणांगनसे एक कोस पीछे रहे। दाराबख्श और राजा भीमको आगे भेजा। महाबतखांने इधरके बहुतसे अफसरों और अमीरोंको मिला लिया था। इसलिये सामना होते ही वे लोग बादशाही लश्करमें जा मिले। शाहजहांने यह खबर पाकर बाकी आदमियोंको बुला लिया और रातों रात खानाखाना सहित नर्मदाके पार उतर गया।

खानाखानाकी महाबतखांसे सटपट।

नर्मदा पार खानखानाका एक कासिद जो महाबतखांके नामका पत्र लिये जाता था शाहजहांकी पकड़में आगया। उस पत्रके सिरे पर यह लिखा था कि जो १०० आदमी नजरोंमें मेरी देख भाल नहीं रखते होते तो बेचैनीसे कभीको उड़कर वहां पहुंच जाता।"

खानखाना शाहजहांको कैदमें।

शाहजहांने खानखानाको बेटों समेत बुलाकर वह पत्र दिखाया। इन्होंने बहाने तो बहुत किये, परन्तु कोई ठीक न था। इसलिये शाहजहांने उनको दाराबख्श आदिके सहित अपने डेरेके पास कैद कर दिया। बादशाह इस विषयमें यह कहता हुआ "तुजक" लिखते हैं कि "उसने जो १०० आदमियोंकी नजरोंमें रहनेका पहलेसे अपशकुन लिखा था वह उसके आगे आया।"

सन्धिका सन्देसा और खानखानाका कैदसे छुटकारा।

शाहजहांकी मनशा पहिले तो खानखाना और उनके बेटोंको आसेरके किलेमें कैद रखनेकी थी, परन्तु फिर अपने साथ बुरहानपुरको ले गया। अब नर्मदा नदी बीचमें थी और उसके दोनों किनारों पर दोनों ओरके लश्कर जमे हुए थे। अबदुल्लाखां फीरोज जङ्गने जिसे अब "खानजुल"की उपाधि मिली थी और

जो शाहजहांसे जा मिला था राय रतन हाडाके द्वारा सुलह करना चाहा, परन्तु महाबत खांने कहा कि जब तक खानखाना न आवे सन्धि स्वीकार नहीं है। इसपर शाहजहांने खानखानाको कैदसे छोड़कर उनसे बहुत शिष्टाचार किया और कुरानकी कसम लेकर वचन पक्का करनेके लिये उनको अन्तःपुरमें ले गया तथा अपनी बेगमों और बेटियोंके सामने कहा कि अब वक्त बहुत नाजुक आगया है। मैं अपनेको तुम्हारे हवाले करता हूं। मेरी इज्जत और आबरू तुम्हारे हाथमें है। ऐसा करो कि जिससे बात अधिक न बिगडे और फिर भटकना न पडे।

खानखाना सन्धि कराने जाते हैं और परवेजसे मिल जाते हैं।

खानखाना शाहजहांको धीरज देकर सन्धि करनेके वास्ते चले बात यह ठहरी थी कि इधरसे खानखाना और उधरसे महाबतखां नदीके दोनों कराड़ोंपर बैठकर सुलहकी तजवीज ठहरावें। अभी यह कार्य्य आरम्भ भी न हुआ था कि बादशाही लशकर शाहजहांकी फौजको गाफिल देखकर नदीसे उतरने लगा जिससे शाहजहांकी फौज गड बडाकर भाग निकली और खानखाना समयके पलट जानेसे अजीब झञ्झटमें पड गये कि न तो ठहरनेकी जगह थी और न जानेको रास्ता। निदान सब वचन बाचा तोडकर महाबतखांकी मारफत शाहजादे परवेजसे जा मिले। उस समय उनके गुलाम फहीमने उनसे बहुत कहा कि मुझे महाबतखांकी तरह देखते हुए यहां दगा मालूम होता है। कहीं कुछ अपमान न हो जावे। इससे तो उत्तम यह है कि हथियार पकड़कर बादशाहके हजूरमें चले चलें। परन्तु खानखानाने नहीं माना।

शाहजहां बापका राज्य छोड जाता है।

खानखानाके दगा देनेसे शाहजहाके दिलको बडा धक्का लगा और वह बादशाही राज्य छोडकर कुतुबुल्मुल्कको सीमामें चला गया जो गोलकुण्डेका स्वतन्त्र बादशाह था।

खानखानाको राजा भीमका धिक्कार।

खानखानाने राजा भीम सीसोदियाको (१) जो शाहजहांका निज मन्त्री और हितैषी था लिखा कि जो शाहजादे मेरे लड़कोंको छोड़ देवे तो मैं बादशाही नमकको किसी न किसी बहानेसे लौटा दूं। नहीं तो बहुत मुशकिल पड़ेगी। राजाने जवाब दिया कि अभी तो ५।६ हजार जान झोकनेवाले और सिर देने हारे शाहजादेको चरणोंमें हाजिर हैं। जब तू पास पहुंचेगा तो मैं तेरे बेटेको मारकर खबर लूंगा।

बादशाह काशमीरमें।

सुलतान परवेज ४० कोसतक शाहजहांके पीछे जाकर १ आवानको (२) बुरहानपुरमें लौट आया और बादशाह भी निश्चिन्त होकर आजर १ सफर (३) सन १०३३ को अजमेरसे काशमीरको चल दिये।

शाहजहांका बङ्गालपर चढ़ाई।

आदिलखाने तो शाहजहांको कुछ सहानुभूति नहीं की। परन्तु कुतुबुलमुल्कने अपनी अमलदारीमेंसे उड़ीसेकी तरफ उसको मार्ग दे दिया जिधरसे वह बङ्गालमें जा पहुंचा। बादशाहने सुलतान परवेज और महाबतखांको लौट आनेका हुक्म लिखा और पासमेंसे उड़ीसेतक अपने भरोसेके सरदारोंको जाबतेके लिये भेज दिया।

परवेजका बुरहानपुरसे कूच।

परवेजने ६ असफन्दारमीज (४) सन १८ को बुरहानपुरसे कूच

१। भीम सीसोदिया राना अमरसिंहका बेटा और करनसिंहका भाई। था शाहजहांने उसको महाराजकी पदवी दी थी।

२। कार्तिक सुदी १ सं० १६८०

३। मगसर सुदी २।३ सं० १६८०

४। चैत सुदी ६ सं० १६८१

लिया और दक्षिणकी रक्षाके लिये जो थाने बैठाये उनमेंसे खान पुरके थानेपर मनूचहरको रखा।

शाहजहांका बङ्गाल जीतकर दाराबखांको देना।

शाहजहांने बङ्गालके सूबेदार इब्राहीमको मारकर बङ्गाल जीत लिया। ४० लाख रुपये इब्राहीमके खजानेके लूटमें आये थे। वे अपने साथियोंको बांट दिये। उनमेंसे १ लाख रुपया दाराब खांको दिया और उसको कारागारसे निकालकर क़ुरानकी शपथ ली और बङ्गालकी हुकूमत देकर उसकी बीबी १ लडकी और शाहनवाजखांके एक लडकेके सहित अपने पास रख लिया।

शाहजहांका बिहार जीतकर इलाहाबादपर चढना।

फिर शाहजहांने बिहार जीतनेको प्रयाण किया और राजा भीमको पहिलेसे भेज दिया—बिहार परवेजकी जागीरमें था। उसके कर्म्मचारियोंसे कुछ प्रबन्ध न होसका। भीमने जाते ही पटनेमें प्रवेश किया। पीछेसे शाहजहां भी पहुंचा। वहां उसके पास बहुतसा कटक जुड गया। राजा भीम और अबदुल्लाहखां इलाहाबादपर आये।

परवेजका खानखानाको कैद करना और फहीमका स्वामि प्रेमधर्म्म साधनमें माराजाना।

परवेज, रावरतन हाडाको बुरहानपुर सौंपकर बिहारको गया। उस समय उसने खानखानाको इस हेतुसे कि उनका बेटा दाराब खां शाहजहांके पास था नजर बंद कर लिया। उनका डेरा शाहजादेके डेरेके पास लगाया जाता था और बडे बडे आदमी उनकी चौकीका पहरा देते थे। जाना बेगमके सिवाय जो उनकी विधवा बेटी थी किसीको उनके पास नहीं छोड़ा था। फिर उनका धन माल भी क़ुरक करना और उनके गुलाम फहीमको पकडना चाहा। वह बड़ा बीर और स्वामि प्रेमधर्मी था। अपने स्वामीके हितार्थ शाहजादेके और महाबतखांके मनुष्योंसे लडा और जब वह मारा गया तो शत्रुओंका हाथ खानखानाके डेरेपर पडा।

यह फहीम एक राजपूतका लड़का था। इसीके बाबत अब तक यह कहावत चली आती है कि "कमावे खानखाना उड़ावे मियां फहीम।"

परवेज और शाहजहांका युद्ध, भीमका माराजाना और शाहजहांका भागना।

अबदुल्लाहखां अभी इलाहाबादको घेरे हुए था कि परवेज और महावतखां आ पहुंचे। तब वह वहांसे उठकर जौनपुरमें शाहजहांके पास चला गया। शाहजहां बेगमों और बच्चोंको रोहतास गढ़में छोड़कर बनारस पर आया जहां परवेज भी पहुंच गया था। उसके साथ ४०००० सवार थे और शाहजहांके पास ७००० थे, तो भी राजा भीम सीसोदियाने मैदानकी लड़ाई लड़नेकी उत्तेजना दी। अबदुल्लाहखां इसमें सहमत नहीं था। परन्तु शाह जहांने राजाकी राय मानी और कुछ पीछे हटके मैदानमें ही व्यूह रचकर लड़नेकी ठानी। उधरसे परवेज आया। भाई भाई तोनस नदी पर लड़े। राठौड सीसोदियोंसे भिड़े। खूब तलवार चली। लहूकी नदी बही। भीम एक भीषण युद्ध करके वीर शय्यापर पौढ़ा (१) शाहजहांकी हार हुई। वह चार कूचमें रोह तास आया और वहांसे पटनेको चला गया।

महावतखांका खानखाना होना।

बादशाहने इस विजयसे सन्तुष्ट होकर ७ हजारी ७००० सवा रका मनसब तुमन तोग और खानखानाका खिताब महावतखांके वास्ते भेजा और उसका पद खानखानाके बराबर कर दिया।

दक्षिणमें अम्बरका फिर जोर पकड़ना।

उधर दक्षिणमें अम्बरने बीजापुरके बादशाहपर चढ़ाई करके उसका मुल्क लूटा और बादशाही फौज जो उसकी सहायताको

१। जोधपुरके इतिहासमें लिखा है कि भीम सीसोदिया महा राज गजसिंहके हाथसे मारा गया था।

बुरहानपुरसे गयो थी उसको भी घेराकर मनूचहर, नमकरवां और अकोदतखांको पकड़ लिया। फिर अहमद नगरको भी घेरा और याकूत हवशीको बुरहानपुरपर भेजा।

दाराबखांका शाहजहांके पास न जाना और शाहजहांका उसके बेटेको मरवा डालना।

शाहजहांने रोहतासमे दक्षिण जाते हुए दाराबखांको बङ्गालकी गढ़ीमें बुलाया। परन्तु वह जमीन्दारोंके बलवेका बहाना करके नहीं गया। तब शाहजहां उनके जवान बेटेको जो ओलमें था अबदुलाह खांके हवाले करके जिस मार्गसे आया था, उसी मार्गसे दक्षिणको चला गया। अबदुलाह खांने दाराब खांके बेटेको मार डाला। परवेजने बङ्गाल महाबत खांको जागीरमें देकर पीछेको कूच किया और बङ्गालके जमीन्दारोंने दाराब खांको परवेजके पास भेजा। वह आकर महाबत खांसे मिला।

बादशाह लाहोरमें और दाराब खांका बध।

बादशाह १५ शहरेवारीको (१) काश्मीरसे कूच करके लाहोरमें आये और दाराब खांके समाचार सुनकर महाबत खांको लिखा कि इस कुपात्रके जीते रखनेमें क्या लाभ है, शीघ्र इसका सिर हमारे पास भेज दो। महाबत खांने ऐसा ही किया।

कहते हैं कि बादशाहके पास भेजनेसे पहिले महाबत खांने दाराब खांका मस्तक एक थालमें ढकाकर तरबूजके नामसे खानखानाके पास भेजा। खानखानाने देखकर कहा, हां तरबूज शहीदी (२) है।

खानखानाका दरबारमें बुलाया जाना।

फिर बादशाहसे "अरबदस्तगीब"को शाहजादे परवेजके पास

(१) आसोज सुदी ४ सं० १६८१।

(२) शहीदीका अर्थ मारा हुआ—और शहीदी एक प्रकारका तरबूज भी होता है। यहां शहीदीके दो अर्थ हैं।

भेजकर खानखानाको भी बुलाया। इनसे खानखानाकी पदवी छिन गयी थी। तो भी महावत खांने इनको बडी इज्जतसे भेजा और विदा होते समय शिष्टाचार करके अपनी समझमें सफाई कर ली।

शाहजहांका अम्बरसे मिलकर बुरहानपुरपर आना।

शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचनेपर अम्बरचपू भी उससे मिल गया और उसने याकूत खां हबशीके १००० फौजसे उसकी सहायतामें बुरहानपुरके ऊपर भेजा। जब वह मलकापुरमें पहुंचा और राव रतन हाडाने बुरहानपुरसे निकलकर उसपर जाना चाहा तो बादशाहने यह खबर सुन उसको लिखा कि जबतक दूसरी फौज न पहुंचे, ऐसा साहस न करे और मुखलिस खांको परवेज़के पास भेजकर दक्षिण जानेकी ताकीद की।

बादशाहका काश्मीर जाना और शाहजहांका अहमदनगरको छोडना।

बादशाह असफन्दार (१) सन १८ में लाहौरसे फिर काश्मीर चले गये। शाहजहाने याकूत हबशीसे मिलकर बुरहानपुरको घेरा और ३ बार धावा करके बहुत जोर दिया। परन्तु राव रतन हाडाने हर बार उसको और दखनियोंको हरा हराकर किलेके पाससे हटा दिया। इतनेमें परवेज और महावत खांके नर्मदा तक आ पहुंचनेकी खबर उडी तो शाहजहां और दक्षिणी बुरहानपुरका घेरा छोडकर बालाघाटको चले गये।

बुरहानपुरमें रावरतन हाडाका जमा रहना और दुश्मनोंको भगाकर ५ हजारी होना।

बादशाह १८ उर्दी बहिश्त (२) सन् २०को काश्मीर पहुंचे।

१। यह असफन्दारका महीना फागुन सुदी ११ संवत् १६८१ को लगा था।

२। वैसाख सुदी १ संवत् १६८१।

दक्षिणके बख्शी असद खाने रपोट भेजी कि शाहजहां देवल गावमें है और याकूत हवशी अम्बरकी फौजसे बुरहानपुरको घेरे हुए है। राव रतन हाडा किलेमें जमा हुआ है। बाहर जाकर भी लडता है। फिर खबर आयी कि अम्बरकी फौज उठ गयी है। बादशाहने प्रसन्न होकर ५ हजारी ५००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब (१) जो दक्षिणमें बहुत बडा समझा जाता है राव रतनको दिया। इससे पहिले सर बुलन्द रायका खिताब भी उसे मिल चुका था।

शाहजहांका बापसे अपराध क्षमा करा लेना।

शाहजहां जब बुरहानपुरका घेरा छोडकर दक्षिणको जाता था तो मार्गमें बहुत बीमार हो गया जिससे उसने पछताकर बादशाहको अरजी अपराध क्षमा करनेकी भेजी। बादशाहने अपने हाथसे उत्तर लिखा कि जो अपने बेटे दाराशिकोह और औरङ्गजेबको सेवामें भेजे तथा रोहतास और आसेरके किले छोड दे तो उसके अपराध क्षमा किये जावेंगे और बालघाटका देश भी दिया जावेगा।

शाहजहांने इस हुक्मको सिरपर चढाकर दोनों बेटोंको भी १० लाख रुपयेके नजराने सहित भेजा और रोहतास तथा आसेरके किलेदारोंको भी दोनों किले बादशाही आदमियोंको सौंप देनेका हुक्म लिख दिया।

खानखाना दरबारमें और उनके अपराधोंकी माफी।

खानखाना बादशाहकी हजूरमें पहुंचे तो मारे लज्जाके बहुत देरतक उन्होंने अपना माथा धरती परसे नहीं उठाया। बादशाहने उनका दिल ठिकाने लानेके लिये कहा कि अबतक जो कुछ हुआ देव संयोगसे हुआ; न कुछ हमारे अख्तियारकी बात थी न तुम्हारे

१। पाठान्तर राव राजा। बूंदीके रईस उस दिनसे राव राजा कहलाते हैं।

अखतियारकी। तुम इसका जियादा सोच सन्ताप न करो और दरबारियोंको हुक्म दिया कि इनको उचित जगहपर लेजाकर खड़ा करो।

महाबतखांको दरबारमें बुलाना और उसका परभार बङ्गाल जाना।

अब शहजहांकी ओरसे शान्ति हुई तो नूरजहांने शहजादे परवेजको निर्बल करनेके लिये महाबतखांको उसके पाससे अलग करना आवश्यक समझकर बादशाहसे यह हुक्म लिखाया कि महाबतखां तो बङ्गालको चला जावे और खानजहां लोदी गुजरातसे दक्षिण जाकर शाहजादेकी अतालीकी करे। परन्तु जब परवेज और महाबतखांने अङ्गीकार नहीं किया तो बेगमने महाबतखांको अकेला दरबारमें बुलाया। तब महाबतखां यहां तो नहीं आया पर बगालको चला गया।

खानखानाका फिर खानखाना होना।

१८ मोहर्रम (१) सन् १०३५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। २० को लाहोर पहुंचे। खानखानाको १ लाख रुपये इनायत करके २३ असफन्दार (२) सन २० को काबुलकी ओर रवाने हुए। उस समय उन्होंने खानखानाको न पसिरे खानखानाकी पदवी और खिलअत देकर कन्नौजकी हुकूमतपर भेजा। इस जगहपर "मआसिरुल उमरा"के कर्त्ताने लिखा है कि अब उस दुनियादार बूढे वैरमने अपनी अंगूठीमें इस भावका यह शेर (दोहा) खुदाया था,

"जहांगीरकी महरबानीने खुदाकी मददसे
मुझको जिन्दगी और खानखानी दुबारे दी है।"

महाबतखां पर कोप।

महाबतखाने अपनी बेटीका व्याह एक आदमीसे किया था। बादशाहने उसको बुलाया और यह कहकर कि क्यों तूने ऐसे बड़े

१। कातिक बदी ७ संवत् १८८२
२। फागुन सुदी १५ द्वितीय संवत् १६८२

सरदारकी बेटी बिना हुक्मके लेली अपने हुजूर पिटवाया और कैदकर दिया।

महाबतखांका दरबारमें आना और बादशाहको अपने काबूमेंकर लेना।

महाबतखां इन बातोंसे नूरजहां बेगम और उसके भाई आसिफखांको जो तमाम काम बादशाहीका करता था अपने बिगाडनेके विचारमें देखकर ४।५ हजार लड़ी राजपूतोंके साथ पजाबमें बादशाहके पास आया तो उससे हिसाब समझने वगैरहमें और मुश्ताकी गयी। तब तो उसने एक दिन आसिफखांकी गफलतसे बादशाहको थोडे से आदमियोंके साथ भटनदीके उस तरफ देखकर जा घेरा और हाथीपर सवार कराकर अपने डेरेपर ले गया। परन्तु इतनी भूल रह गयी कि नूरजहां बेगमको साथ न लेता गया जिससे उसको यह औसान मिल गया कि नदीसे उतरकर लशकरमें चली गयी और दूसरे दिन ८ फरवरदीन शनिवार (१) सन् २१ ता० २८ जमादिउलसानी स० १०३५ को अपने भाई आसिफखां वगैरह अमीरोंके साथ लड़नेके वास्ते आयी। परन्तु महाबतखांके राजपूतोंसे हारकर बडी मुशकिलसे नदीमें गोते खाती हुई पीछे गई और आसिफखां अटकके किलेमें जाकर पकड़ा गया।

महाबतखांका खानखानाको कन्नौजके रास्ते से लौटाकर लाहोरमें बुलाना।

महाबतखां बादशाहको इसी हालतमें काबुल ले गया और दिल्लीके हाकिमको लिखकर खानखानाको कन्नौजके रास्तेसे लौटाया और लाहोरमें बुलाया। इसी तरह आगरेके हाकिमको लिखा कि दाराशिकोह और औरंगजेबको नजर बन्द करके रखे।

शाहजहांका अजमेरमें आकर सिंधको जाना।

शाहजहां यह खबर सुनकर (२) २१ रमजानको नासिकसे

१। चैत सुदी १ संवत् १६८२

२। आषाढ़ वदी ८संवत् १६८३

चलकर अजमेर पहुंचा। १००० सवार साथ थे। परन्तु महाराज भी मके बेटे किशन सिंहके अकस्मात् मर जानेसे ५०० सवार जो उसके पास थे बिखर गये। इस विघ्नसे वह महावतखांके ऊपर जानेमें कुछ लाभ न देखकर जोधपुर और जैसलमेरके रास्तेसे ठट्टेको चल गया।

महावतखांकी स्थिति और उसका चला जाना।

काबुलमें महावतखांके हजार डेढ हजार राजपूत बादशाही अहदियोंसे लडकर मारे गये और बादशाही आदमी दिन दिन बढने लगे। बादशाहने (१) १ अक्टूबर सन् २१ को काबुलसे कूच किया। रास्तेमें एक दिन महावतखांसे कहलाया कि कल नूरजहां बेगमके सिपाहियोंकी हाजरी होगी। तुम तडके सलाम करनेको मत आना, कहीं कुछ बोलचाल होकर झगडा न हो जावे। महावतखां उस दिन दरबारमें नहीं आया। बस इस एक दिनकी गैरहाजिरीमें बादशाह उसके काबूसे निकल गये और उससे कहला दिया कि अब आगे आगे चला करो। उसका आगे चलना था कि बादशाह उसके पीछे ऐसे वेगसे चलने लगे कि सम-झनेका अवकाश नहीं मिला। हतोत्साह होकर वह घबरा गया। अब बादशाहने हुक्म भेजा कि आसफखांको कैदसे छोडकर शाह जहांके पीछे जावे जो ठट्टेको गया है। महावतखां हुक्म न माननेमें अपना बिगाड देखकर भटनदीके तटमें जहां उसने पिछले साल बादशाहको घेरा था ठट्टेको चल दिया।

बादशाहका लाहोर पहुंचकर खानखानाको महावतखां पर भेजना।

बादशाहने (२) ७ आबान्को लाहोरमें पहुंचकर आसि-फखांको मुख्य मन्त्री बनाया और यह सुनकर कि महावतखां ठट्टेका रस्ता छोडकर हिन्दुस्तानको गया है कुछ फौज उसकी

१। भादों सुदी ३ सम्वत १६८३

२। कातिक सुदी १० सम्वत् १६८३

पीछे भेजी और और, खानखानाको, जो पहिलेसे लाहोरमें पहुंच गये थे ७ हजारीजात ७००० सवार दो अस्पेसह अस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, घोड़ा जड़ाऊ जीनका और खासा हाथी देकर महावतखांके पीछे भेजा और अजमेरका सूबा उनकी जागीरमें लिख दिया। इसी तरह नूरजहांने भी हाथी घोड़े ऊंट और १२ लाख रुपये उनको अपनी सरकारसे दिये। खानखाना आप महावतखांसे जले भुने थे। उनकी पोती दाराबकी बेटी जो "आसिफखांके बेटे अबूतालिबको व्याही थी कहा करती थी कि मैं जब महावतखांको देखूंगी बन्दूकसे मार दूंगी" क्योंकि उसके बाप और भाईको महावतखांने मारा था। इन्हीं कारणोंसे खानखाना बड़े क्रोधसे महावतखांसे वैर लेनेको बादशाहसे विदा हुए।

खानखानाकी मृत्यु।

अब इस तरह खानखानाके दिन फिरे तो और भी कई घटनाएं ऐसी हुई कि जिनसे उनको लाभ पहुंचे। अम्बर दक्षिणमें मर गया था और दखनियोंने लड़ना छोड़ दिया था। (१) ७ सफर सन् १०३६को परवेजकी भी मृत्यु हो गयी थी। शाहजहां जो ईरान जानेके विचारसे सिन्धको गया था परवेजका मरना सुनकर काठियावाड़ और और गुजरातके रास्ते से दक्षिणको लौट आया था। यह तो सब कुछ हुआ, परन्तु इनकी आयुने साथ नहीं दिया। बीमार तो लाहोर होमें हो गये थे। दिल्ली पहुंचे तो इतने अशक्त हो गये कि लाचार वहीं ठहरना पड़ा और यह ठहरना मौतका बहाना था। कई दिन पीछे सन् १०३६के बिचले महीनोंमें शान्त हो गये और अपनी बीबीके मकबरेमें जो उन्हींका बनाया हुआ था दफन हुए। उस समय उनकी आयु ७२ वर्षकी थी।

१। कातिक सुदी ८ संवत् १६८३ शुक्र

हरेक सन् हिजरीके बिचले महीने जमादि उलसानी या रजब माने जा सकते हैं। इस लेखसे खानखानाका देहान्त फागुन सवत् १६८३ या चैत सवत् १६८४में हुआ होग.। अफसोस है कि तुजुक जहांगीरीमें खान खानाके मरनेकी मिती नहीं लिखी है। पिछले वर्षों में जहांगीर बादशाहने रोग ग्रस्त और दुखी हो जानेसे स्वय लिखना छोड़ दिया था। कुछ वर्षो तक तो मोतमिदखा लिखा करता था। उसका लेख ठीक है, परन्तु मोहम्मद हादीने जो ३ वर्षका हाल लिखा है वह बहुत ही थोड़ा है। और दिन मिती भी विशेष करके नहीं हैं। इस कोता कलमीसे खानखाना जैसे नामी अमीरकी मृत्यु तिथि अन्धेर खातेमें मारी गयी, मोतमिदखाने भी अपने ग्रन्थ इकबाल नामे जहांगीरीमें नहीं लिखी है।

खानखानाके ६।७ महीने पीछे ही बादशाह भी मर गये और राज्यकी रचना कुछ और की और हो गयी। इस वास्ते थोड़ासा वर्णन उसका भी किये देते हैं।

खानखानाके पीछेका कुछ हाल।

महाबतखा बादशाही फौजसे पीछा छूटता न देखकर राज पीपले और बगमानेके रास्तेसे जुनेरमें शाहजहाके पास चला गया। बादशाह (१) २१बहमन सन २१को काश्मीर गये, क्योंकि गरमियोंमें उनको हिन्दुस्थानकी हवा हानि करती थी। परन्तु इस बेर वहा भी चैन नहीं मिला, बीमारी बढ गयी, भूख जाती रही, पीछे राजौरमें (२) २८ सफर सन १०३७ रविवार १५ आवान सन् २२ को शान्त हो गये। शहरयार तो पहिले ही अपनी बीमारीका इलाज करानेको लाहोर चला गया था और खुसरोके बेटे दावरबखशको जो उसके पास कैद था इरादतखाके पास रखा गया था। आसिफखाने उसीको बादशाह

१। फागण बदी ८ स० १६८३

२। कातिक बदी ३० स० १६८४

बनाकर कूच किया। नूरजहांने उसको बहुत बुलाया, पर बहुनके पास जाकर फटका भी नहीं, दुःख पूछना तो दूर रहा। तब वह भी बादशाहकी लोथको लेकर उसके पीछे हो ली। दूसरे दिन बम्भरमें पहुंच कर बादशाहको कफन पहिनाया और लाहोरको भेजकर बागमें (१) दफन कराया।

आसिफखाने बनारसी नामक एक हिन्दूको डाक चौकीमें शाह जहांके पास भेजा और उसके बेटोंको भी नूरजहांके पाससे ले लिया तथा नजरबन्द करके उसके पास लोगोंका आना जाना बन्द कर दिया, क्योंकि वह अपने जमाई शहरयारको बादशाह बनानेके उपायमें थी और आसिफखां अपने जमाई शाह जहांको बादशाह बनाया चाहता था। उधर शाहरियार लाहोरमें बादशाह बन हो बैठा था। जब आसिफखां दावरबख़्शको लेकर लाहोर आया तो शहरयार लड़नेको निकला, परन्तु हारा, पकड़ा गया और कैद हुआ।

उधर शाहजहां बनारसीके पहुंचते ही (२) २३ रबीउलअव्वल, गुरुवार सन् १०३७को जुनेरसे रवाने हुआ और इधर आसफखाने, (३) २२ जमादिउल् अव्वल रविवार, सन् १०३७को लाहोरमें उसके नामकी आन दुहाई फेर कर दावरबख़्शको उसके भाई गरशास्प, और दानियालके बेटों बायसनकर, तहमुर्स और होशङ्ग सहित मार डाला। शाहजहां आगरे पहुंच कर (४) ८ जमादिउस्सानी सोमवारको तख़्त पर बैठा। महावतखां खानखाना हुआ और, आसिफखां वकील—उलसलतनत

१। यह स्थान अब शाहदरेके नामसे प्रसिद्ध है लाहोरसे ५ मील है।

२। मगसर वदी १० सं० १६८४

३। माह वदी १० सं० १६८४

४। माह सुदी १० सं० १६८४

गया। नूरजहां १ कोनेमें बैठा दी गयी। सब उपद्रव शान्त हो गया। भाई भतीजोंमेंसे दावेदार कोई नहीं (१) रहा।

खानखानाकी सन्तानें विशेष तो शाहजहांके झगड़ोंमें खप गयी और जो रही थी वह ऐसी नहीं थी कि जिससे शाहजहां और उसके अमीरोंके चित्तमें कुछ शङ्का या चिन्ता उत्पन्न हो।

दूसरा खण्ड।

समालोचना और ग्रन्थकारोंके मत।

यह अच्छा बुरा जीवन चरित्र खानखानाका हमने उस समयकी तवारीखोंसे लिखा है। इससे ज्ञात होगा कि आदमीको अपनी जिन्दगीमें जो क्षण भङ्गुर कहलाती है क्या क्या ऊंच नीच बर्ताव इस असार संसारके बरतने पड़ते हैं और कालकी विचित्र गति उसके चित्तको कैसा कैसा चल विचल कर देती है। देखो एक समय तो खानखानाकी कैसी हवा बंध गयी थी कि हर तरफसे भलाई ही भलाई उनके पल्ले पड़ती थी और एक समय ऐसा आया कि उनकी बनी बनायी बात भी बिगड़ गयी। राज दरबारके उलट फेर भी बड़े ही बेढब होते हैं जो बड़े बड़े धीर धुरन्धर पुरुषोंको भी डिगमगाकर कभी कुछ और कभी कुछ कर देते हैं और उनके प्रपंचोंमें पड़कर मनुष्योंको

१। इस विषयमें एक मारवाड़ी कविने कहा है,—

दोहा।

सम्रब सगाई नां गिने, नां सबलां में सीर।
खुरम पठारे मारियां, कैका काकै बीर ॥१

समझना बहुत कठिन हो जाता है। खानखानाकी जहां गीर और शाहजहांके आपसके बिगाड़में फंस जानेसे जान मालकी हानि, लौकिकमें अपकीर्ति और दोनों ओरकी बेईतबारीके सिवाय और कुछ प्राप्ति न हुई, पत भी खोई और पतवारा भी गया जिससे उनकी अन्तिम अवस्था बहुत बुरी तरहसे बीती। एक फारसी कविने कहा है कि "जगतरूपी बागके रङ्ग और रूपकी स्थिरता नहीं है, क्योंकि दाखोंके हरे भरे होनेका परिणाम काला मुंह हो जाना है।"

अब हम कुछ इतिहास वेत्ताओंके मत और लेख जो खान खानाके विषयमें हैं लिखते हैं—

तुजक जहांगीरीमें (१) लिखा है कि खानखाना दरबारके बड़े अमीरोंमेंसे था अकबर बादशाहके राज्यमें बड़े बड़े काम किये जिनमें ये तीन तो बहुत ही बड़े थे।

१। गुजरातकी फतह और मुजफ्फरका भगाना जिससे गया हुआ देश गुजरातका फिर हाथ आया।

२। सुहेलकी लड़ाई जिसमें ७०००० जङ्गी सवारों और मद मत्त हाथियोंको २०००० सवारोंसे मारा।

३। सिन्ध और ठट्ठेकी फतह।

ऐसी ही एक फतह उसके बेटे शाहनवाजखाने भी जहांगीर बादशाहके समयमें, अम्बर अम्पूके ऊपर पायी थी।

खानखाना विद्या और योग्यतामें अपने समयका एक्का था।

---

(१) यह जहांगीर बादशाहकी दिनचर्याका ग्रन्थ है। १६॥ वर्ष तक तो बादशाहने इसे लिखा है फिर १८ वें वर्षके प्रारम्भ तक मौतमदखाने मसौदे बनाकर बादशाहसे सही कराये हैं, शेष ३ वर्षोंका वृत्तान्त मिरजा मोहम्मद हादीने पूरा किया है और भूमिका भी लिखकर लगायी है जिसमें जहांगीरके युवराज रहने समयका वृत्तान्त है।

अरबी तुरकी फारसी और हिन्दी भाषाओंको खूब जानता था। अरबी और अकेली इल्म (आगम, निगम और षट् दर्शनमें) उसकी पूरी गति थी। यहां तक कि हिन्दी शास्त्रोंमें भी पूरा अभ्यास था। बहादुरी और सरदारीमें तो अद्वितीय ही था। हिन्दी और फारसीमें कविता अच्छी बनाता था। उसने "वाकेआ-त बाबरी"का उलथा अकबर बादशाहके हुक्मसे फारसीमें बनाया गया।

मआसिरुल्‌उमरामें (१) लिखा है कि "खानखाना विद्याकी निपुणतामें एक ही था। अरबी, फारसी, तुरकी और हिन्दीमें धारा प्रवाह जैसा था, कविता खूब समझता था और आप भी कविता करता था। उसमें रहीमकी छाप धरता था। कहते हैं कि जो भाषाएं पृथ्वी प्रचलित हैं उनमेंसे बहुतेरी भाषाओंमें बात चीत कर लेता था। हिम्मत और सखावत (उदारता) तो उसकी हिन्दुस्थानमें प्रसिद्ध है ही, बल्कि बाजी बातोंको लोग मुश्किलसे मानते हैं; कहते हैं कि एक दिन बरातों (चिठ्ठी) पर दस्तखत करता था, एक प्यादेकी बरात पर १००) टकेकी जगह १०००) रुपये लिख दिये और वही रहने दिये। कवियोंको उसने बहुधा अशर्फियां उनके बराबर तोल दी हैं। एक दिन मुल्ला नजीरीने कहा कि १ लाख रुपयेका कितना ढेर होता हैं, मैंने नहीं देखा है। खानखानाने हुक्म दिया कि खजानेसे लावे। जब लाये तो मुल्लाने कहा "खुदाका शुक्र है कि मैंने नवाबकी बदौलत इतना रुपया देखा।" खानखानाने फरमाया "सब मुल्लाको देदो कि फिर खुदाका शुक्र करे।"

---

(१) यह अति ही उत्तम ग्रन्थ फारसी भाषाका ३ बड़े बड़े खण्डोंमें है। इसमें उन बडे बड़े राजाओं और मुसलमान अमीरोंके जीवन चरित्र लिखे हैं जो बाबर बादशाहके समयसे लेकर मोहम्मद शाहके राज्य तक हिन्दुस्थानमें हुए हैं।

खानखाना हमेशा बहुतसे रुपये फकीरोंको और मोल विर्योंको चौडे और छुपे देता था और दूर रहने वालोंको (१) बरसौदे भेजा करता था। हरेक विद्याके विद्वानोंका समूह उसके समयमें सुलतान हुसैन (२) मिरजा और अमीर (३) अलीशेरके समयके समान था।

बुद्धि, बहादुरी और राज क्रियामें भी खानखाना बहुत बढा चढा था परन्तु बैर भाव तथा कपट देख कर और समय समझ कर अपनेको वैसा ही बना लेता था। यह उसमें जियादा था वह कहा करता था कि शत्रुसे मित्रताकी लपेटमें शत्रुता करनी चाहिये। यह शेर उसके वास्ते कहा गया है।

बेंतभर शरीर और १०० गांठे घटमें।
मुट्ठीभर हड्डिया और १०० बल।"

३० वर्षके लगभग कई कई बेर वह दक्षिणमें रहा। उस समय शाहजादों और अमीरोंमेंसे जो कोई उसको मददको गया उसीने उसको मिलावट और लाग लपेट वहांके बादशाहोंसे देख कर उसको कपटी और अन्तर द्रोही बताया और शेख अबुल फजल तो उसे बागी ही कह चुका था। जहांगीरके राज्यमें अम्बर चम्पूकी मित्रतासे कलङ्कित हुआ। उसके विश्वासी मन्त्री मह म्मद मासूमने नमकहरामी करके बादशाहसे अरज करायी थी

१। वर्ष भरका नियत किया हुआ रुपया।

२। यह हिरातका बादशाह अकबरसे कुछ पहिले था और बड़ा गुणग्य था। इसके दरबारमें जितने विद्वान एकत्र थे तवारीख वाले उतनेका किसी बादशाहके दरबारमें रहना नहीं बताते है। तवारीख रोज तुलसफामें उसकी सभाके सब विद्वानोंके वृत्तान्त लिखे है।

३। अमीर अली शेर उस बादशाहका वजीर था और वह भी वैसाही विद्वान और पालक था।

कि अम्बरकी चिट्ठिया खानखानाके नौकर शेख "अबदुल सलाम बखनवीके पास हैं।" बादशाहने महावत खांको उसकी तलाश लेने और कष्ट देनेका हुक्म दिया। उस बिचारेने जान खो दी, परन्तु भेद न खोला।

खानखानाका नाम जगतमें चिरायु हो गया है। अकबरके राज्यमें तो उससे बडे बडे काम हुए, पर जहांगीरके राज्यमें कुछ न हुआ। बल्कि पूरी बुद्धि और अच्छी समझ होनेपर भी बहुतसे अपमान सहे। परन्तु राजतृष्णा नहीं छोडी।

"कहते है कि दरबारकी खबरोंका उसको बडा चसका पडा हुआ था। दो तीन आदमी नित्यप्रति डाक चौकीमें रोजनामचा भेजा करते थे। तो भी उसके दूत अदालतों, कचहरियों, चबूतरों, गली कूचों और बाजारोंमें लगे रहते थे और जो कुछ झूठे सच्चे समाचार सुनते थे, लिख देते थे। खानखाना सन्ध्या होते ही उन सबको पढ़कर आगमें जला देता था।"

"कहते हैं, कि बहुधा चीजे उस समय उसके घरानेमें ही थी, जैसा हुमा पक्षीका पर जिसको शाहजादोंके सिवाय औरकोई मस्तक पर नहीं लगा सकता था।"

१ तजकरेहुसेनीमें (१) लिखा है कि किसी मनुष्यने एक पुरुषको व्याकुल सा फिरता देखकर कारण पूछा तो उसने कहा, कि मैं एक स्त्री पर मोहित हूं, परन्तु वह तो १ लाख रुपये लिये बिना बात ही नहीं करती इसका कोई उपाय जानते हो तो बताओ। उसने कहा कि इसका उपाय तो बहुत सुगम है, जो तू काव्य रचना जानता हो तो अपना वृत्तान्त कहकर खानखानाके पास ले जा। वह तुरन्त एक छन्द बनाकर ले गया जिसका यह आशय था,

(१) यह ग्रन्थ फारसी कवियोंके जीवन चरित्रका है जिसको मीरहुसैन दोस्त सम्भलीने सन् ११६३ हिजरी संवत् १८०७ में बनाया था।

हे उदार खानखाना !
एक चन्द्रमुखी मेरी प्यारी है।
यह जान मांगे तो कुछ सोच नहीं है
रुपया मांगती है यही मुश्किल है।

"खानखानाने मुसकुरा कर पूछा कि कितना रुपया मांगती है उसने अरज की कि १ लाख। खानखानाने १०६०००) रुपये उसको दिलाकर फरमाया कि १ लाख रुपये तो उसको मांगनेके हैं और ६०००) रुपये तेरे भोग विलासके वास्ते हैं।"

कहते हैं कि खानखाना वर्षा काल लगते ही अपने सिपाहियोंको ४ महीनेका वेतन देकर घर जानेकी आज्ञा दे दिया करते थे कि बरसात भर आरामसे अपने जोरू बच्चोंमें रहें और जाडेके लगते ही नौकरी पर आ जावे। एक साल कोई लड़ाई होने वाली थी। इस कारण घर जानेकी आज्ञा तो न दे सके, पर प्रति मनुष्य एक एक मोहर देकर कहा कि लौंडिया मोल लेकर यहीं उनके साथ मौज उडावे। उस समय एक सिपाहीने कहा कि मैं दो मोहरें लूंगा आपने उसको बुलाकर पूछा कि सबको एक एक मोहर मिली है, तू २ क्यों मांगता है? उसने कहा कि १ से तो यहां मैं लौंडी खरीद कर मौज करूं गा और दूसरी घर भेज दूं गा जिससे एक गुलाम मोल लेकर वहां भी गुल छर्रे उडावे। इस पर आप बहुत हसे और सब सिपाहियोंको घर जानेकी छुट्टी दे दी।

४। तारीख अगस्तामें (१) लिखा है कि एक दिन एक कङ्गाल ब्राह्मणने खानखानाकी ड्योढी पर जाकर कहा कि नवाबसे कहो तुम्हारा साढू आया है। नवाबने उसको बुलाकर बडे मान

(१) यह ग्रन्थ खडी भाषामें जयपुरके महाराजा सवाई माधो सिंहजीकी आज्ञासे बनाया गया है। इसमें कई प्रकारके विषय हैं। कुछ अंश इतिहासका भी है।

ख्वाबसे पास बैठाया। किसीने पूछा कि यह मंगता कहासे आपका साढू हो गया? नवाबने कहा कि सम्पत्ति और विपत्ति दो बहने है। एक हमारे घरमें है और दूसरी इसके घरमें। इस सम्बन्धसे यह हमारा साढू है।

किसीने खानखानाकी पालकीमें लोहेकी पनसेरी फेंकी। खान खानाने उसे ५ सेर सोना दिला दिया। किसीने कहा कि इसने तो मर्दन मारनेका काम किया था और आपने ५ सेर सोना दिया यह भी खूब हुआ। खानखानाने कहा कि इसने हमको पारस समझ कर ऐसा किया था।

५। बूंदी राज्यके इतिहास वंश भास्करमें (१) लिखा है कि जब बूंदीके महाराव राजा भोज अकबर बादशाहके दरबारमें रहतेथे, तब बादशाहका वजीर नवाब खानखाना था। वह बडा गुणवान था। संस्कृत आदि भाषाओंको जानता था। बडा पण्डित और पण्डितोंका कदरदान था। अवगुण किसीके नहीं देखता था, सबके दु:खोंमें पड जाता था। एक दिन एक दुर्बल ब्राह्मण भूखा प्यासा पडा हुआ मुसलमानोंको कोस रहा था। खानखानाने उसकी दीन दशा पर तरस खाकर कहा कि तुमको खाना पीना बहुत मिल जावेगा तुम हम लोगोंपर दया रखो। ब्राह्मणने प्रसन्न होकर अपनी पागडी नवाबके पास फेंक दी और कहा कि मैं तुम्हारी बातोंसे सन्तुष्ट हुआ हूं; परन्तु इस पागडीसे अधिक देनेको मेरे पास कुछ नहीं है, क्योंकि हमारे शास्त्रका हुक्म है कि आदमी जिसकी बातोंसे प्रसन्न होवे उसको कुछ देवे।

---

(१) यह पट भाषाका महत् काव्य बूंदीके महाराव राजा श्रीरामसिंहजीकी आज्ञासे, उनके आश्रित मिश्रण गोतके चारण: कवि सूर्य्यमल्लका बनाया हुआ है जो बारहट किशनसिंहजीकी टीका सहित छप चुका है।

यह पगड़ी सारी छेद छेद हो रही थी और रंगके बदले उसके ऊपर मैल हो मैल चढ़ा हुआ था। तो भी नवाबने अपने सिरसे बांध ली और उसको बहुतसा रुपया आपने भी दिया और अपने अमीरोंसे भी दिलाया।

जैसा अच्छा बादशाह अकबर था वैसा ही अच्छा उसका यह वजीर भी था। इसके बराबर धर्मात्मा हिन्दू मुसलमानोंमें कोई न था। बहुत ही सुशील और लज्जावान था। एक साहूकारकी स्त्री इसको देखकर मोहित हो गयी थी। एक दिन उसने बुलाया तो यह गया और पूछा कि क्यों नेकबख्त। मुझे क्यों याद किया। स्त्रीने शरमाकर कहा कि मैं तुमसे तुम्हारे जैसा बेटा मांगती हूं। नवाबने कहा कि नेकबख्त सुन। बेटा देना मेरे अख्तियारमें नहीं है और जो ऐसा हो भी तो क्या मालूम कि वह मुझसा हो या न हो और तेरी टहल करे या न करे और तुझको मुझ जैसा बेटा चाहिये सो मैंही तेरा बेटा होता हूं। आजसे तू मेरी मा और मैं तेरा बेटा हूं। जो तू कहेगी सो ही करूंगा। यह कहकर उसकी गोदमें सिर रख दिया जिससे उसको भी लज्जा आगयी और वह अपने खोटे मन्तव्यसे बहुत पछतायी।

एसी बात न किसी योगीसे हो सकती है न यतिसे जो नवाब खानखानाने उस स्त्रीसे की थी,—

इस नवाबने कवि गंगके कवित्तोंसे प्रसन्न होकर ३०००००) तीस लाख रुपये (१) उसको दिये थे।

६। मआसिर उलउमरामें जो यह बात लिखी है कि खानखाना हरेक भाषामें भाषण कर सकते थे इसका कुछ पता मेवाड़ और मारवाड़में भी मिलता है। वहां महडू शाखाका

---

(१) खूब चन्द कविने खानखानाका गंगको एक छप्पयके ऊपर ३६ लाख देना इस कवित्तमें कहा है।

मान दसनाख दये दोय। हरनाथके पै।
लाख हरनाथ दे करड़ कवि पेई को॥

दारख जादा नमक हुआ। उसने एक बेर ये ४ चार दोहे खानखानाकी प्रशंसाके बनाकर सुनाये थे,—

१। खानखाना नवाब रो। मोहि अचम्भो एह॥
मायो किम गिरि मेरु मन। साढ तिहत्थी देह॥१॥

२। खानखाना नवाब रे। खाडे आग खिवन्त॥
जल वाला नर प्रालने। तृण वाला जीवन्त॥२॥

३। खानखाना नवाब री। अदमगीरी धन्न॥
मह ठकुराई मेर गिर। मनी न राई मन्न॥३॥

४। खानखाना नवाबरा। अड़िया भुज ब्रह्माण्ड॥
पूठे तो है चण्डिपुर। धार तले नव खण्ड॥४॥ †

वीरबल दे छ क्रोर केशवके कावित पर।
सिवा हाथी बावन दे भूषन बिन लेहँ को॥
छप्पे पै सताई लाख गंग खानखानो दिये।
यातें धन दाम दूनुई डरमें चैहै को॥
श्री गम्भीर सिंह छन्द खूब चन्दके यें रीझि।
बदामें दगा दई दई न फेर देहै को॥१॥

† इन चार दोहोंका अर्थ यह है।

१। मुझे यही अचम्भा है कि खानखानाका मेरु पर्वत जैसे मन ३॥ हाथकी देहमें कैसे समा गया है॥१॥

२। खानखाना नवाबकी तलवारसे आग झडती है। परन्तु उसमें जलवाले नर अर्थात् पराक्रमवाले तो जल मरते हैं और जो तिनके मुहमें ले लेते हैं वे जी जाते हैं॥२॥

३। खानखाना नवाबकी भलमनसी धन्य है कि मेरु गिरि जैसी बडी ठकुराईके बराबर भी उन्होंने अपने मनमें नही मानी॥३॥

४। खानखाना नवाबके भुज ब्रह्माण्डमें अडे हुए है। चण्डीपुर अर्थात् दिल्ली तो उसकी पीठपर है और ९ खण्ड तलवारकी धारके नीचे हैं॥४॥

इस कविका नाम तो भासकरन था, परन्तु मोटा बहुत था। इस लिये लोग जाडा जाडा कहते थे। सो खानखानाने भी उसको देखकर यह दोहा कहा :—

घर जड्डो अम्बर जडा। जड्डा महड़ू जोय॥
जड्डा नाम भलाइदा। और न जड्डा कोय॥ १॥

और प्रति दोहा १ लाख रुपया देना चाहा। परन्तु जाड़ा महड़ूने रुपये तो नहीं लिये। महाराणा उदयसिंह जीके कुवर और महाराणा प्रताप सिंहके भाई सीसोदिया जगमालजीको बादशाहसे जागीर दिलानेके लिये कहा जो अपने भाईसे रूठकर चले आये थे और जाडा जिनका वकील बनकर खानखानासे मिला था।

खानखानाने बादशाहसे अर्ज करके जगमालजीको जहाजपुरका परगना दिला दिया जो मेवाडका ही था, परन्तु बादशाहने ले लिया था।

"मुआसिर रहीमी।"

सुना है कि खानखानाके चरित्रोंका एक ग्रन्थ फारसीमें बना हुआ है जिसका नाम मआसिर रहीमी है। परन्तु वह अबतक हमारे देखनेमें नहीं आया है। यह जो जीवनचरित्र उनका हमने लिखा है वह उन पुस्तकोंसे लिखा है जो हमारे पुस्तकालयमें हैं।

खानखानाको संस्कृत कविता

हम ऊपर यह लिख आये हैं कि खानखाना हिन्दी और संस्कृत भाषामें भी काव्य रचना करते थे सो इस बातको दोनों भाषाओंके पण्डित लोग भी स्वीकार करते हैं और उनके बनाये हुए बहुतसे श्लोक और कवित्त हिन्दुओंमें प्रसिद्ध हैं मुसलमानोंसे ज्यादा हिन्दुओंको सुसभ्य सभाओंमें उनका नाम लिया जाता है। रहीम काव्य नामक एक संस्कृत ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ सुना गया है।

इम यहां पहिले उनकी कुछ संस्कृत कविता लिखते हैं फिर भाषाको लिखेंगे।

श्लोक।

आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्णाया भूमिका।
व्योमाकाश खखांबराब्धि वसुवस्त्वत्प्रीतये द्यावधि॥
प्रीतस्त्वं यदिचेत्विरीच भगवन् स्व प्रार्थित देहिमे।
नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनस्त्वेता हशी भूमिका॥

॥ अर्थ—कवित छप्पय॥

रिझवन हित श्रीकृष्ण, स्वांग मैं वहुविधि लायो॥
पुर तुम्हारे हैं अवन भवनि, अष्टवष्ट रूप कहायो॥
गगन बेत खख व्योम, वेद वसु स्वांग दिखाये।
अन्त रूप यह मनुष, रीझके हेत बनाये॥
जो रीझे तो दीजिये, ललित रीझ जो चाय।
नाराज भये तो हुकम करु, ये स्वांग फेर मति लाय॥१॥

श्लोक।

रत्नाकरोस्ति सदनं गृहिणीच पद्मा।
किं देय मस्ति भवते जगदीश्वराय॥
राधा गृहीत मनसे ऽमनसे चतुभ्यं।
दत्तं मया निज मनस्तदिदं गृहाण॥२॥

अर्थ।

रत्नाकर समुद्र तो आपका घर ही है और जो लक्ष्मी है वह आपकी पत्नी है। फिर हे जगदीश्वर! मैं क्या आपको दूँ। हां आप अमन हैं आपका मन राधाने ले लिया है। इसलिये मैं अपना मन आपको देता हूं उसे ग्रहण कीजिये—

श्लोक।

अहल्या पाषाणः प्रकृति पशुरासीत्कपि चमू।
गुहो भूच्चांडाल स्त्रितय मपि नीतं निज पदम्॥

यह चित्तेनाम्म पग्रपि तथार्चादि करणे।
क्रिया भियाण्डालो रघुवर! नमा सुद्धरसिकि ॥३॥

इसका अर्थ यथा सवैया।

गौतमनारि पाषाण रही, पशु जाति रह्यो कपि पुंज विचारो॥
पापी बडोहि निषाद हुतो, परताप प्रभो तिन इनको तारो॥
मैं हु सबै विधि चित्तमें पत्थर, पूजनमें पशु कर्म्म हत्यारो॥
होय निकामनके सुख धाम हे, रामजी! काहेन मोहि उद्धारो॥१

श्लोक।

यथा त्वया व्यापकता हृताते।
भिदैकता वाक्परता भस्तुत्या॥
ध्यानेन बुद्धे परता परेश।
जात्या जताचन्तु मिहार्हसित्व॥४॥

अर्थ।

मैंने जात्रासे तेरी व्यापकता मिटायी है। भेद करनेसे तेरी ऐकता और अस्तुति करनेसे तेरी वाक्परता हरी है ध्यान करनेसे तेरो बुद्धिके परे होना मिटाया है। तो भी मैंने तेरी जाति ठहराकर अजाति पना दूर किया है सो तू मेरे इन अपराधोंको क्षमा कर॥ ४॥ पण्डित जगन्नाथ त्रिशूलीने एक दिन यह श्लोक खानखानाको सुनाया।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान् शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु।
नापकृत नोपकृत न सत्कृत किं कृत तेन॥५॥

जिसने राजाका अधिकार पाकर शत्रुओंका अपकार मित्रों और बन्धुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया।

खानखानाने इसकर इसके उत्तरमें यह श्लोक कहा।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान्।
शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु॥

नोपकृत नोपकृत ।
नोपकृत कि छात तेन ॥

जिसने राज्यका अधिकार पाकर शत्रुओं मित्रों और बधुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया ।

श्लोक ।

दृष्टात्र विचित्रता तरुलता, मैं था गया बागमें ।
काचित्तत्र कुरङ्ग शाय नयना, गुल् तोड़ती थी खड़ी ॥
उन्मद् धनुषा कटाक्ष विशिखै, घायल किया था मुझे ।
तत्सोदामि सदैवमोह जलधौ, हेदिल गुजारो शुकर ॥६॥

अर्थ।

विचित्र तरु लता देखनेको बागमें मैं गया। कोई वहा बाल कैसी आखोवाली खडी गुल तोडती थी—
उसने भवोंकी कमान उठाकर कटाक्षके बाणोंसे मुझे घायल किया—
तबसे मैं मोहके समुद्रमें सदाके लिये डूब गया। हे दिल। गारो शुकर ॥७॥

पुन श्लोक।

एक स्मिन्दिवसे वसान समये, मैं था गया बागमें।
काचित्तत्र कुरङ्गवाल नयना, गुल् तोड़ती थी खडी॥
तांदृष्ट्वा नवयौवना शशि मुखो, मैं मोहमें जा पडा।
नो जीवामि त्वया बिना शृणुसखे, तू यार कैसे मिले ॥८॥

अर्थ।

एक दिन सन्ध्या कालमें, मैं बागमें गया था वहा कोई हरनके कैसी नेत्रोंवाली खडी गुल तोडती थी—
उस नवयौवनवती चन्द्रमुखीको देखकर मैं मोहमें जापडा तेरे बिना नहीं जियूगा हे ? सखी तू यार कैसे मिले ॥८॥

श्लोक गङ्गाजीसे प्रार्थना।

अच्युत चरण तरङ्गिणी। शशिशेखर मौलिमालती माले ?
ममतनु वितरण समये हरता देय न मेहरिता ॥८॥

भावार्थ।

विष्णु बनाओगी तो मुझे कृतघ्नताका दोष होगा। क्योंकि तुम उनके चरणसे निकली हो अतएव शिव बनाओ जिसमें तुम्हें सिरपर धारण करू ॥८॥

खानखानाकी भाषा कविता।

खानखानाकी भाषा कविता कि जिसमें भी रहीमकी छाप है बहुत रसीली और चटकीली है। हमको अपने पुस्तकालयमें इनके २७ दोहे नाना साहिब हकीम शङ्करलालजीके लिखे मिले सो यहां लिखे जाते हैं।

दोहा।

तैं रहीम मन आपनों कीनों चन्द चकोर।
निसवासुर लागो रहै क्षण चन्द्रकी ओर ॥१॥
मुकता करत कपूर कर चातकजीवन हर होय।
ये तो बडो रहीम जल (१) कुयल परे विष होय ॥२॥
सर सूखे पक्षी उडे जिन सर जल अधिकाय।
मीन दीन बिन पङ्कके कहु रहीम कित जाय ॥३॥
बडे पेटके भरन कू कह रहीम दुख बाढ।
ताते हाथी हहरके दयो दांत दोय काढ ॥४॥
थोरे करे बडेनकू बडे बड़ाई होय।
त्यो रहीम हनमन्त सों गिरधर कहै न कोय ॥५॥
ससिके सुख दुख चांदनी सुन्दर सभी सुहात।
लगे चौर चित चौगुनी कसत रहीमन धात ॥६॥

(१) पाठान्तर ब्याल बदन विष होय।

ज्यों रहीम सुख होत-है बढे आपने गोत।
त्यों बिडरी अंखिया लखैं आखनही सुख होत ॥७॥
बडन जो कोऊ घट करै तिन रहीम घट जान।
गिरधर मुरलीधर कहत मन दुख कछू न मान ॥८॥
इसी भावका यह दोहा सूरदासजीका भी है।
सपि गयो मुकता भयो कदली भयो कपूर।
अहि फण गयो तो विष भयो सङ्गतको फल सूर ॥१॥
ससि सुकेस साहस सलिल साज सनेह रहीम।
बढे बढै बढ जात है घटे घटे तिहसीम ॥९॥
यह रहीम सत सङ्गतें जनमत नाहीं कोय।
बैर प्रीत अभ्यास जस होत होत ही होय। १०॥
भज कर क्रिया रहीम सुख सिद्धि भावके हाथ।
पासे अपने हाथ है दाव न अपने हाथ ॥११॥
जे रहीम बढ बढ, गये घटको डारत काढ।
चन्द दूबरो कूबरो तऊ नखत तें बाढ ॥१२॥
दीनन पै जे हित-करैं धन रहीम ते लोग।
कहा सुदामा बापरो कृष्ण मित्रता जोग ॥१३॥
प्रीतम छबि नैनन बसी पर छबि दृग न समाय।
भरी सराय रहीम लखि ज्यों पथी फिर जाय ॥१४॥
नेह लगाय रहीम प्रभु कर देखो जो कोय।
नरको बस करबो कहा नारायन बस होय ॥१५॥
दुर दिन परे रहीम प्रभु सभी लिये पहचान।
सोच नही धन हान को होत बडन हित हान ॥१६॥
यह न रहीम सराहिये देन लेनकी प्रीत।
प्रानन पाछे राखिये हार होयके जीत ॥१७॥
रहमन कहत जो पेट सों क्यों न भयो तू पीठ।
भूखे मान घटाय दे भरे दिखावे दीठ ॥१८॥
मनसे नही रहीम प्रभु दिलसे नाहि दिवान।

देख द्रगन जो आदरै मन तिह हाथ बिकान ॥१८॥
जिन रहीम तन मन लियो कियो हिये बिच भौन।
ताकों दुख सुखको कथा रही कहनको कौन ॥२०॥
धूरजु डारत सीस पर कह रहीम किहि काज।
जिन रज रिष पतनी तरी सो ढूढत गजराज ॥२१॥
जो रहीम भावी कहूं होती अपने हाथ।
राम न जाते हिरन सग सीता रावण साथ ॥२२॥
सम्पत सम्पतवान कूं सब कोई सब देय।
दीनबन्धु बिन दीनकी को रहीम सुध लेय ॥२३॥
हित अनहित सब कोउ लहै कै सलाम कै राम।
हित रहीम तब जानिये जादिन आवै काम ॥२४॥
कह रहीम या जगत तें प्रीत गयी दै टेर।
कह्र रहीम नर नीचमें स्वारथ स्वारथ हेर ॥२५॥
ज्यों रहीम लघु दीप तै प्रकट सबै निध होय।
मज सनेह कैसे दुरै द्रग दीपक जहा दोय ॥२६॥
रहमन अ सुवा वाहुरे पिया जनावत येह।
जाको घरते काढिये क्यों न भेद कह देह ।२७॥

कवित्त।

सुनिये विटप प्रभु दुमप हैं तिहारे हम। राखिहो हमैंतो सोभा रावरी वडाये है, त्याग हो हमैं तो यामें हरखना विषाद कछु। जहा जहा जायें तहा दूनो छवि छाय है, सुरन चढेंगे नरनाथ न चढेंगे सीस। सुकवि रहीम हाथ हाथ न विकाय है देशमें रहेंगे परदेशमें रहेंगे काहु भेसमें रहेंगे तऊ रावरे कहाय है ।१।

रहीम सतक।

खानखानाके भाषा ग्रन्थोंमेंसे अभीतक यही, रहीमशतक प्रसिद्ध हुआ है। इसकी २ प्रतियां हमारे देखनेमे आई हैं।पहला एक तो हमारे मित्र पण्डित सूर्यनारायण शर्माने ,जो नागरी साहित्य

प्रचारणी सभा (सदरबाजार) जबलपुरकी मन्त्री हैं। बम्बईके सुवि ख्यात प्रेस श्रीवेङ्कटेश्वरमें छपाई है इसमें १२५ दोहे हैं।

दूसरी प्रति जोधपुरमें रामस्नेही साधु भारत रामजीके पास है इसमें १०५ ही दोहे हैं।

खानखानाका उत्तर राना अमरसिंहको।

खानखाना जैसे पण्डितोंके श्लोकोंका उत्तर श्लोकोंमें देते थे वैसाही नियम उनका भाषा कवितामें भी था। उदयपुरके महा राणा अमरसिंहजी जब जहांगीर बादशाहकी फौजके दबावसे जङ्गलोंमें फिरते फिरते थक गये थे। तब उन्होंने यह दो दोहे कहकर खानाखानाको भेजे थे —

हाडा कूरम राव बड़ गोखा जोख करन्त।
कहियो खानाखानने बनचर हुआ फिरन्त ॥१॥

तुवरासू दिल्ली गई राठौडा कनवज्ज।
राण (१) पयपै खानने वह दिन दीसे अज्ज ॥२॥

खानखानाने इसके उत्तरमें यह सन्तोषदायक दोहा रानाजीको लिखा था।

(२) धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरसाण।
अमर विश्वम्भर ऊपरें राखो नहचो राण ॥१॥

१। पयपै—कहे—

२। इस दोहेकी भविष्यवाणी पर उस दिन तो शायद किसीको ही विश्वास हुआ हो तो हुआ हो। परन्तु उसका फल आज तो प्रत्यक्ष ही देखनेमें आता है। क्योंकि उदयपुरके राना ओंका देश और धर्म जो उस समय था। आज भी बना हुआ है और खुरसाण अर्थात् मुगल जो उनको दुख देते थे कभीके खप गये हैं। हिन्दी और विशेष करके राजपूतानेकी भाषा कवितामें खुरसाण शब्द मुसलमानोके वास्ते आता है। जैसे संस्कृतमें

रहीमके कुछ और दोहे (१) भड़ौआ संग्रहके चौथे खण्डसे उद्धृत—

जो रहीम छोटे बढ़ैं बढ़त करत उतपात।
प्यादेसों फरजी भयो तिरछो तिरछो जात।१।
धनद रा अरु सुतनमें रहत लगाये चित्त।
क्यों रहीम खोजत नहीं गाढ़े दिनको मित्त।२।
गहि सरनागत रामकी भवसागरकी नाव।
रहि मन जगत उद्धारको औरन कछु उपाव।३।
छमा बडनको उचित है छोटनको उतपात।
कहु रहीम प्रभुका घट्यो जो भृगुमारी लात।४।
कहि रहीम नहि लेत है रह्यो विषय लपटाय।
घास चरै पसु आपतें गुरलों लाये खाय।५।
गति रहीम बड नरन की ज्यों तुरङ्ग व्यवहार।
दाग दिखावत आपने सही होत असवार।६।
अब रहीम चुप ह्वै रही समझि दिननको फेर।
जब दिन नीके आय हैं बनतन लागि देर।७।
यों रहीम तन हाटमें मनुआ गयो बिकाय।
ज्यों जलमें काया परे छाया भीतर नाय।८।

यवन, सबसे पहले यूनानी भारतमें आये थे तो यहां उनको यमन कहते थे फिर अरब लोग भी उधरसे ही अर्थात् पश्चिम समुद्रके तटसे आये तो वे भी यमन ही समझे गये। फिर तुर्क महमूद गजनवी वगैरा खुरासानकी तर्फसे आये तो उस समय मुसलमानों का नाम खुरसाण और खुरसाणी हो गया। तुर्क और मुगल शब्द पीछे चला है परन्तु कविलोग तीनो शब्दोंमें जो कवितामें आजावे वही ले आते हैं।

१। यह ग्रन्थ हमारे मित्र डुमरांव निवासी नकछेदी तिवारी जीका बनाया हुआ है।

जगत जाकी किरण सों अथवत ताही कांति ।
त्यों रहीम दुख सुख सबै बढत एकही भांति ॥९॥
छोटे काम बडे करें तौ न बडाई होय ।
ज्यों रहीम हनुमन्तको गिरधर कहैं न कोय ॥१०॥
अनुचित उचित रहीम लघु करहि बडनके जोर ।
ज्यों ससिके संजोग तें पचवत आगि चकोर ॥११॥
मांगे घटत रहीम पद कितो करो बढि काम ।
तीन पैर बसुधा करी तऊ बावने नाम ॥१२॥
रहिमन अब वे बिरछ कहं जिनकी छांह गम्भीर ।
बागन बिच बिच देखियत सेंहुड कुढज करीर ॥१३॥
होय न जाकी छांह ढिग फल रहीम अति दूर ।
बाढ्यो सो बिन काज हीं जैसे तार खजूर ॥१४॥
नाद रीझ तन देत मृग नर धन हेत समेत ।
ते रहीम पसुतें अधिक रीझे कछू न देत ॥१५॥
जाल परे जल जात बहि तज मीननको मोह ।
रहिमन मछरी नीरको तऊ न छाड़ति छोह ॥१६॥
रहि मन पानी राखिये बिन पानी सब सून ।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून ॥१७॥
बड़े बड़ाई ना तजें लघु रहीम इतराइ ।
राइ करौंदा होत है कटहर होत न राइ ॥१७॥
करत निपुनई गुन बिना रहिमन निपुन हजूर ।
मानो टेरत बिटप चढि इहि प्रकार हम कूर ॥१८॥

खानखानाकी इमारतें ।

मारवाडी कहावत है कि "गीतडा नाम कैं भीतडा नाम" अर्थात् मनुष्यका नाम यातो गीतों (कविताओं)में रहता है या भीतों (इमारतों)में रहता है सो खानखानाका नाम दोनोंमें ही रहा है। खानखानाकी बनाई कविता तो हम कुछ लिख ही चुके हैं और कुछ दूसरे कवियोंकी आगे लिखेंगे जिससे खान

खान का नाम अमर हो गया है यहा तो उनकी बनाई हुई इमारतोंका हाल लिखते है।

खानखाना जहा २ रहे वहां उन्होंने बडी २ हवेलिया बनायी थी, बाग लगाये थे, महल भुकाये थे, परन्तु बहुत वर्ष व्यतीत हो जानेसे अब उन सबका पूरा २ पता नहीं लगता।

हमने इस विषयकी भी बहुत खोजना की है और जो थोडा सा हाल सुना है या तवारीखकी पुस्तकोंमें लिखा मिला है वह यहां लिखे देते हैं।

खानखानाकी हवेली।

खानखानाने अपने रहनेके वास्ते १ बडी हवेली आगरेमें बनायी थी। जिसमें एक सुन्दर और सुडौल सिंहासन भी निर्माण कराया था उस पर चांदी और सोनेकी चोबों पर जरीका सामियाना खिंचा रहता था जिसमें मोतियोंकी झालरें झिल मिलाया करती थी। उसके नीचे बढ़िया गलीचे और कालीन बिछे रहते थे। किसीने चुगली खायी कि खानखाना तो बाद शाहोंकी भांति तखत पर बैठता है और चवर कराता है, बादशाहने पूछा कि यह सच है? उसने अर्ज की कि उसकी हवेलीमें तखत चवर और छत्र मौजूद ही हैं इसके सिवाय और क्या प्रत्यक्ष प्रमाण होगा।

एक दिन बादशाह खानखानाकी हवेली पधारे देखते २ वहां भी पहुंचे कि जहां यह राज्य चिह्न धरे थे। बादशाहने चुगलखोरका यह कहना सच मान कर-पूछा कि मिरजा ये चीजें यहा क्यां है? उन्होंने अर्ज की कि जहांपनाहके लिये हैं विराजिये जो यह न होती तो आज मुझे लज्जित होना पडता।

बादशाह प्रसन्न होगये और खानखानाकी बुद्धिकी बहुत प्रशंसा की। चुगलखोर अपना सा मुंह लेकर रह गया।

फतह बाग।

अहमदाबादसे ३ कोस सरखेच गावकी सीमामें साबरमतीके तटपर जहां खानखानाने सुलतान मुजफ्फर गुजरातीको जीता था वहां एक सुरम्य बाग लगाया जो गुजरातमें उस समयके सब बागोंसे अच्छा था। और पीछे भी बहुत वर्षों तक उसकी शोभा वैसी ही बनी रही थी २५ वर्ष पश्चात् सन् १६१७ में जहांगीर बादशाहने इस बागको देखा था। और जो हाल उसका अपनी तुजुकमें लिखा वह हमलं यहां उद्धृत करते हैं।

गुरुवार ६ बहमनको मैं फतह बाग देखने गया जो एक सुंदर स्थानमें लगा है १५०००) रुपये रस्तेमें लुटाये।

यह बाग जिस जगह है वहां सिपहसालार खानखाना अब्दुलरहीमने मुजफ्फरको लड़ाईमें हराकर फतह पायी थी। इस लिये इसका नाम फतह बाग रक्खा। गुजरातके लोग इसे फतह बाड़ी कहते हैं।

मेरे बापने इस फतहके पारितोषिकमें पांच हजारी मनसब खानखानाका खिताब और गुजरातका सूबा मिरजाखांको (१) दिया था।

खानखानाने जो बाग लड़ाईकी जगह बनाया वह साबरमतीके किनारे पर है और उसके योग्य एक विशाल भवन भी बुर्जों सहित जो नदीके ऊपर है निर्माण किया है। बागका कोट चूने और पत्थरोंका बहुत मजबूत बना है। यह बाग १२० जरीबमें अच्छी सुहावनी जगह पर है। २ लाख रुपये इसमें लगे होंगे मेरा तो बहुत दिल लगा। यह कह सकते हैं कि सारे गुजरातमें इस जैसा दूसरा बाग न होगा। मैंने गुरुवारका उत्सव वहीं करके निज सेवकोंको प्याले दिये और रात वहां रह

(१) मिरजाखां भी खानखानाका नाम था—

कर शुक्रवारको पिछले दिनसे शहरमें आया १०००) रुपये रस्तेमें निछावर किये।

इस समय बागवानने पुकार की कि चम्पाके कई वृक्ष जो चबूतरे पर थे मुकर्रबखाके नौकरने काट लिये हैं यह सुनकर मेरा चित्त उदास हो गया और खुद निर्णय किया। जब निश्चय हो गया कि यह कुकर्म उसने किया है तो हुक्म दिया कि उसके दोनों अंगूठे काट डालेजावें। जिससे दूसरों को भय हो जावे (१) मुकर्रबखांको इस बातकी खबर न हुई नहीं तो वह तुरन्त दण्ड दे देता।

दूसरे गुरुवारको बादशाह फिर इस बागमें आये जिसका हाल यों लिखते हैं कि गुरुवार २२ को फतह बागमें जाकर गुलाब वाडो देखी गयी। एक क्यारी तो बहुत ही खूब खिली हुई थी। इस देशमें गुलाब बहुत कम होता है। एक जगह इतना होना गनीम तथा गुल लाला भी बुरा न था। अंजीर पके हुए भी थे कई अंजीर मैंने अपने हाथसे तोडे जो सबसे बड़े थे उनमेंसे एकको तोला तो ७॥ तोलेका हुआ। ४ दिन भोग विलासमें व्यतीत करके सोमवार २३ वी की रातको इस बागसे शहरमें आया।

तीसरे गुरुवार २४ वीं अमरदादको फिर बादशाह फतहबागमें गये २ दिन तक वहां मौज उड़ाते रहे शनिवारको पिछले दिनसे दौलतखानेमें पधारे।

उस समयसे १५० वर्ष पीछे गुजरातकी तवारीख (२) मिरआत अहमदी बनी है उसमें फतहबागका यह हाल लिखा है। कि अब कुछ मकान और कोट तो बना हुआ है खेती होती है बाग पना जाता रहा। इति।

१। मुकर्रबखा उस समय गुजरातका सूबेदार था—

२। यह गुजरातकी बहुत अच्छी तवारीख सन् ११७[illegible] में बनी है।

अब फतेवाडीका यह हाल है कि सानन्द गाम एक छोटेसे रजवाडेकी सीमामें आयी हुई है। सानन्द अहमदाबादसे ७।८ कोस है फतहवाडी अहमदाबादसे ४ कोस और सरखेजसे ३ कोस दखन पच्छमके कोनेमें है। बाग और बगीचेका तो कुछ पता नहीं है कोट कुछ बाकी रह गया है जो आदमीके बराबर ऊंचा है। इसमें कोलीभील और रेबारियोंके घर हैं। और वही लोग यहां रहते हैं। नदीके ऊपर जो महल थे वे भी गिरा दिये गये हैं क्योंकि कोलीभील और रेबारी चोरी धाडा करके उन महलोंमें छिप जाते थे और चोरी धाडेका माल हम्मामोंमें छिपा देते थे। हम्माम सात थे उनके भीतर भी महल और मकान बने हुए थे जिनमें अब चमचेडें बहुत भरी रहती हैं। कोलीभील और रेबारी जो फतहवाडीमें रहते हैं किसीको अन्दर नहीं आने देते हैं, क्योंकि उनको यह भय बना रहता है कि कोई उनके चोरी धाडेका भेद लगानेको न आया हो।

फतहवाडीमें अब कोई चीज देखनेके लायक नहीं है। नाम मात्र रह गयो है। कहते हैं कि फतहवाडीसे हम्मामोंसे अहमदाबादके किले तक जिसको भद्र कहते हैं जमीनके अन्दर ही अन्दर रस्ता था पर अब उसका भी कुछ पता नहीं है।

शाहवाडी।

फतहवाडीसे १ कोस शाहवाडी थी वहा भी अच्छे २ महल बने थे जिनका अब कुछ निशान रह गया है। शाहवाडी अहमदाबादकी अंग्रेजी अमलदारीमें अहमदाबादसे ३ कोस पर है उसमें अबरेवोन्यू कमिश्नर रहता (१) है।

अलवरमें तिरपोलीया।

खानखानाने कुछ इमारतें अलवरमें भी बनाई थी जहां

---

(१) फतहवाडीकी वर्तमान दशाका हाल जो ऊपर आया है अहमदाबादके पुरोहित पूनमचन्दजीने कृपा करके इस पुस्तकके वास्ते लिख भेजा था।

उनका नाना जमालखां मेवाती रहता था, अब उन इमारतोंमें तिरपोलिया बहुत मशहूर है यह एक आलीशान मकबरा (कब्रस्तान) था। इसके ३ तरफ ३ बड़ी बड़ी खुली हुई पोलें थीं। चौथी तरफकी पोल बन्द थी इसीसे तिरपोलिया कहलाता है। ऊपर सदावका बड़ा गुम्बद है। कहते हैं कि इतना बड़ा गुम्बद सदावका कहीं देखनेमें नहीं आता। शायद यह खानखानाकी माकी कबर पर बनाया गया हो। अब तो इसमें कोई कबर नहीं है। चारो दरवाजे खुले हुए हैं और चारों तरफ चौपड़का बाजार बना हुआ है। जिसमें रात दिन सैकड़ों हाथी घोड़े बग्घी रथ तिरपोलियेमें होकर आते जाते (१) हैं।

यह तिरपोलीया अब भी खानखानाका कहलता है। इसके बाबत एक राजीनामेका फोटू तीवारी नकछेदीलाने मेरे पास भेजा है। उससे मालूम होता है कि २०० वर्ष पहिले औरङ्गजेब बादशाहके राजमें यह तिरपोलीया खानखानाकी जायदादकी मालकनी मजीबुलनिसा बेगमके कबजेमें था और उसकी एक पोल और पोलके आगेकी जमीन यारमोहम्मद नामके एक शख्सने दबा ली थी। उसीके बाबत यह राजीनामा हुआ था। हम इस राजीनामेका कुछ साराश यहां इस अभिप्रायसे लिखते हैं कि जिससेपाठकोंको उस समयकी अदालती काररवाईका हाल भी मालूम हो जाये।

राजीनामेका साराश।

हम रफीक और आलम जो खानखानाका (२) मरहूमके विरसेकी (३) मालकिनी नजीबुल निसा बेगमकी सरकारके वकील हैं। इस बातका सही इकरार करते हैं कि खानखानाका मरहूमका तिरपोलीया जो कसबेअलवरके बाजारमें चौरस्ते पर बना है उसका

१। यह वृत्तान्त अलवर निवासी मित्रवर मु॰ रघुबरदयालजी इन्सपेक्टरके पत्रसे लिया गया है जो उन्होंने मेरे पूछने पर छापा करके लिखा था। २। मरे हुए। ३। सम्पत्ति।

एक बन्द दरवाजा सैय्यद कमाल मोहम्मदके पोते सैयद मुजफ्फरके बेटे सैयद यार मोहम्मद (१) मिलकोकी हवेलीके पास था। उस दरवाजे और उसके आगेके जमीन पर सैयद यार मोहम्मदने कबजा कर लिया था। हमने इस प्रसङ्गमे कि तिरपोलीया खानखाना मरहमको इमारतोंमेंसे है। खानखानाको (२) वारिसानी मजीबुन्निसा बेगमको तरफसे (३ वकालतन दरवाजे और आगेको जमीनको बाबत खानवाला शान सैयद वजीउद्दीनखा फोजदार चकले सैरतके नायब सैयद शाह मोहम्मदके हजूरमें दावा किया तो सैयद यार मोहम्मदने वह दरवाजा और १६ गज जमीन जो दरवाजेके पास थी अपने कबजेसे निकाल कर छोड़ दी। अब फिर हमको सैयदयार मोहम्मदकी हवेलीमें कुछ दावा नहीं रहा है। हम उससे राजी हैं। इस वास्ते यह राजीनामा लिख दिया है सो काम पड़ने पर सनद होवे। १० शवाल सन् (४) ४० जलस मैमन तमानूस मुताबिक सन् ११९४ हिजरी नीचे ऊपर और हाशिये पर मोहरे और दसखत गवाहोंके हैं। (५) दसखत हिन्दी में भी हैं। मगर हिन्दी हर्फ ऐसे अयुक्त बिना मात्राके लिखे हैं कि कुछ समझनेमें नहीं आता है कि इनका क्या मतलब है।

रफीक और आलमखांके हाथकी कटारी बनी हुई है। इससे मालूम होता है कि वे लिखे पढ़े नहीं थे।

खानखानाका भी मकबरा अलवरमें है। मगर अधूरा कबर अन्दर मौजूद हैं उनकी माके बनाये हुए तालाब और मकबरे भी वहां हैं।

खानखानाका मकबरा दिल्लीमें।

खानखानाका मकबरा (समाधि स्थान) कि जहां उनको

१। जागीरदार। २। मालिकनी। ३। वकीलकी तौर पर।
४। यह वर्ष औरङ्गजेब बादशाहके जलूसके हैं।
५। सुब रकोंसे मिला हुआ।

उनका नाना जमालखां मेवाती रहता था, अब उन इमारतोंमें तिरपोलिया बहुत मशहूर है यह एक आलीशान मकबरा (कब्रस्थान) था। इसके ३ तरफ ३ बड़ी बड़ी खुली हुई पोलें थीं। चौथी तरफकी पोल बन्द थी इसीसे तिरपोलिया कहलाता है। ऊपर सदावका बड़ा गुम्बद है। कहते हैं कि इतना बड़ा गुम्बद सदावका कहीं देखनेमें नहीं आता। शायद यह खानखानाकी माकी कबर पर बनाया गया हो। अब तो इसमें कोई कबर नहीं है। चारो दरवाजे खुले हुए हैं और चारों तरफ चौपड़का बाजार बना हुआ है। जिसमें रात दिन सैकड़ों हाथी घोड़े बग्घी रथ तिरपोलियेमें होकर आते जाते (१) हैं।

यह तिरपोलीया अब भी खानखानाका कहला'ता है। इसके बाबत एक राजीनामेका फोटू तीवारी नकछेदीजीने मेरे पास भेजा है। उससे मालूम होता है कि २०० वर्ष पहिले औरङ्गजेब बादशाहके राजमें यह तिरपोलीया खानखानाकी जायदादकी मालकनी मजीबुन्निसा बेगमके कबजेमें था और उसकी एक पोल और पोलके आगेकी जमीन यारमोहम्मद नामके एक शख्सने दबा ली थी। उसीके बाबत यह राजीनामा हुआ था। हम इस राजीनामेका कुछ सारांश यहां इस अभिप्रायसे लिखते हैं कि जिज्ञासुपाठकोंको उस समयकी अदालती कारखाईका हाल भी मालूम हो जावे।

राजीनामेका सारांश।

हम रफीक और आलम जो खानखानाका (२) मरहूमके वि सेकी (३) मालकिनी मजीबुन्निसा बेगमकी सरकारके वकील हैं। इस बातका सही इकरार करते हैं कि खानखानाका मरहूमका तिरपोलीया जो कसबे अलवरके बाजारमें चोरस्ते पर बना है उसका

१। यह वृत्तान्त अलवर निवासी मित्रवर मु० रघुवरदयालजी इन्सपेक्टरके पत्रसे लिया गया है जो उन्होंने मेरे पूछने पर कृपा करके लिखा था। २। मरे हुए। ३। सम्पत्ति।

एक बन्द दरवाजा सैय्यद कमाल मोहम्मदकी पोते सैयद मुजफ्फरके बेटे सैयद यार मोहम्मद (१) जिनकीको हवेलीके पास था। उस दरवाजे और उसके आगेकी जमीन पर सैयद यार मोहम्मदने कबजा कर लिया था। हमने इस प्रसङ्गमें कि तिरपोलीया खानखाना मरहूमकी इमारतोंमेंसे है। खानखानाकी (२) वारिसानी नजीबुन्निसा बेगमकी तरफसे (३ वकालतन दरवाजे और आगेकी जमीनकी बाबत खानखाना शान सैयद वजीउद्दीनखां फौजदार अकलेमेरतके नायब सैयद शाह मोहम्मदके हजूरमें दावा किया तो सैयद यार मोहम्मदने वह दरवाजा और १६ गज जमीन जो दरवाजेके पास थी अपने कबजेसे निकाल कर छोड़ दी। अब फिर हमको सैयदयार मोहम्मदकी हवेलीमें कुछ दावा नहीं रहा है। हम उससे राजी हैं। इस वास्ते यह राजीनामा लिख दिया है सो काम पड़ने पर सनद होवे। १० शवाल सन् (४) ४७ जलूस मैमन तमानूस मुताबिक सन् १११४ हिजरी नीचे ऊपर और हाशिये पर मोहरें और दसखत गवाहोंके हैं। (५) दसखत हिन्दी में भी हैं। मगर हिन्दी हर्फ ऐसे अशुद्ध बिना मात्राके लिखे हैं कि कुछ समझनेमें नहीं आता है कि इनका क्या मतलब है।

रफीक और आलमखांके हाथकी कटारी बनी हुई है। इससे मालूम होता है कि वे लिखे पढ़े नहीं थे।

खानखानाका भी मकबरा अजमेरमें है। मगर अधूरा कबर अन्दर मौजूद हैं उनकी मांके बनाये हुए तालाब और मकबरे भी वहां हैं।

खानखानाका मकबरा दिल्लीमें।

खानखानाका मकबरा (समाधि स्थान) कि जहां उनको

१। जागीरदार। २। मालिकनी। ३। वकीलकी तौर पर।
४। यह वर्ष औरङ्गजेब बादशाहके जलूसके हैं।
५। सुब रफीसे मिला हुआ।

गाड़ा था पुरानी दिल्लीमें खण्डहर पड़ा है। जिसके देखनेसे बहुत अफसोस होता है कि जो मनुष्य उम्रभर लोगोंसे भलाई करता रहा था। लोग उसकी कबरके पत्थर तक खोदले गये किसीने सच कहा है कि "सब टाटारके होनागू होते है"।

किताब (१) आसार उलसनादीदमें जो सन् १८६३ सवत् १८०३ में बनी है। इस मकबरेका यह हाल लिखा है।

यह मकबरा शाह जहानाबादसे ४ मील निजामुद्दीन औलियाकी दरगाह और बारिपुलेके पास है। इसको खानखानाने अपने बीबीके वास्ते बनाया था पर उसको तो यहां दफन होना नसीब न हुआ, आप दफन हुए।

यह मकबरा भी किसी जमानेमें बहुत तोफा बना हुआ था, इसके बुर्ज तमाम सङ्गमरमरके थे जगह जगह लाल पत्थरसे सफेद पत्थरकी धारियां लगी हुई थीं और बेलबूटे बने थे। पर अफसोस है कि यह बिल कुल उजड गया है। इसका तमाम सङ्गमरमर उखाडकर बेच डाला और ऐसे उमदा मकबरेको ढहा डाला। कहते है कि आसिफुद्दौलाके वक्तमें इसका तमाम पत्थर उखाडकर लखनऊमें गया है। यह मकबरा बिल कुल लुण्डा रह गया है इस मकबरेका (२) तावीज भी उखाडकर ले गये हैं। अब इसमें गाय भैंसें बन्धती हैं और गोबरकी बदबूसे अन्दर जाना मुशकिल होता है।

देखो, क्या (३) अजमत, और यान (४) थी खानखानाकी, और अब क्या हाल है। खानखानाके नाम निशानके लिये यह मकबरा

१। सर सैयद अहमदखाने इसमें दिल्लीकी इस रतोंका हाल लिखा है।

२। कबरका चिह्न

३। महत्व

४। आतङ्क

था। सो यह भी न रहा—जिसके दिवानखानेमें सैकडों मन गुलाब छिडका जाता था अब उनके मकबरेमें हजारों जानवरोंका मूत्र पड़ा है।"

जौनपुरका पुल।

जौनपुरके प्रसिद्ध पुलको भी बहुत लोग इन्हींका बनाया समझते हैं। परन्तु इनका बनाया नहीं है। खानखाना मुनअमखांका बनाया है जो इनके बापके पीछे खानखाना हुआ था।

उस पुलके लेखमें मुनअमखांका नाम खुदा है तो भी जौनपुरके (१) भूगोलमें भूलसे यादस्तकथा सुनकर इनके गुलाम फहीमको मुनअमखांका गुलाम और उस पुलका बनानेवाला लिख दिया है सो गलत है। वह पुल तो मुनअमखां खानखानाने ही बनाया है जो सन् ९७२ से ९७५ तक बनकर तैयार हुआ था।

फिर जौनपुर हमारे खानखानाकी जागीरमें भी सन् ९९८ से लेकर कई वर्ष पीछे तक रहा था। उस समय फहीम भी वहां रहा होगा जिससे वहांके साधारण लोगोंको उसका नाम याद रह गया।

खानखानाकी जन्मपत्री।

जन्म पत्री भी इतिहासमें कामकी चीज होती है कि उससे यथार्थ समय विदित होजाता है। मुसलमानोंमें हिन्दुओंके समान तो जन्म पत्रीकी प्रथा नहीं है तो भी कोई कोई बडे आदमी जन्म पत्री बनवाते हैं। इसी विचारसे हमने खानखानाकी जन्मपत्रीकी भी खोजनाकी तो एक कुण्डली बीकानेरकी ख्यातमें मिली। दूसरी एक ज्योतिषीकी पोथीमें पायी और तीसरी एक मित्रके पुस्तकालयसे पायी। परन्तु पहिली पिछली दोनोंसे नहीं मिलती इष्टमें ४ पहरका अन्तर रहता है।

१। इस भूगोलको जिले जौनपुरकी पाठशालाओंके डिपटी इन्सपेक्टर मौलवी जुलफिकार अलीने सन् १८७४ संवत् १९३१ में बनाया था।

न १

संवत् १६१२ मगसर सुदी १४ खानखानाका जन्म

न २

संवत् १६१२ मगसर सुदी १४ सोम ७० घटी २०।१७
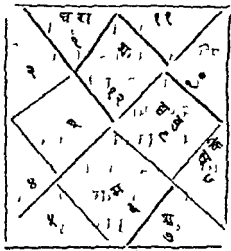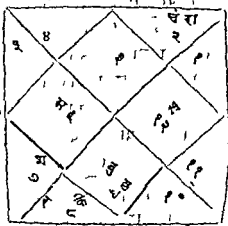
खानखानाका जन्म

नम्बर ३

संवत १६१३ मगसर सुदी १४ सोमे उ० घं० ३ खानखानाका जन्म।
घस्त विश्वा ८ घय घशा।
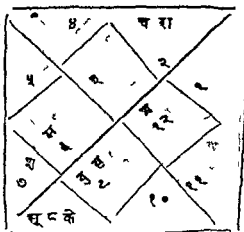
शङ्का समाधानके लिये संवत १६१३ का (१) चण्डूपञ्चाग देखा गया तो मगसर सुदी १४ का यह विवरण निकला।

मार्ग सितात् संवत १६१३ शाके १४७८ तिथि १४ चन्द्र ४।३४ क्र २५।१५ यि २२।५६ वृश्चमे १३।४७ म० ४।२४ उ० चन्द्रस्य ग्रहण ग्रस्तो

१। चण्डू पञ्चाङ्ग मारवाड और गुजरातादि देशोंमें प्रचलित है। इसको चण्डूजी ज्योतिषीने चलाया था जो संवत् १५५० में जन्मे थे और संवत् १६२२ में काल प्राप्त हुए। पहिला पञ्चाङ्ग कब चला था इसका पता तो हमको नहीं मिला परन्तु १६०५ से अब तकके पञ्चाङ्ग हमने संग्रह कर लिये हैं। जिनसे जन्म पत्रियों और इतिहासोंके वर्ष तिथि वारके शुद्ध करनेमें बहुत सहायता मिलती है।

सू च म बु इ गु श रा के इसके अनुसार कुण्डली मिथुन
८ २ ६ ८ ८ ७ १ २ ८

लग्नकी यह होती है।
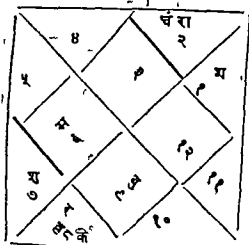
इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चांगमें मेषका और उन दिनोंमें शनि वक्री भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृश्चकका हो था। फिर पोष बदी १२ को धनका आया। उस पञ्चागमें कि जिससे वह जन्मपत्री बनी है ममसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड और दिल्लीके पचागमें उदयास्तके विपर्य्ययसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुन खोजगाकी गयी तो (१) श्रीपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्री खानखानाकी मिली जिसको श्रीपतिके टीकाकार श्रीवत्सलदेवमिश्र (२) कृष्ण देवज्ञने जो खानखानाका आश्रित मालूम होता है ग्रह और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसकी यह है।

१। ग्रन्थ श्रीपति शाके ८६१ में बना था। चन्द्रागमन्दोनयकी इति वचनात्। २। एक कृष्णपण्डितका नाम आईन अकबरीमें भी लिखा है जो बादशाही पण्डितोंमें नोकर था।

संवत् १६१३ शा० १४७८ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ चन्द्र घ० १५ पल ३७ परतो पूर्णिमा कृत्तिका-नक्षत्रे घ० २६।४६ शिव योगे घ० २४।२० इष्ट दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत घ० २।५५ मिथुन लग्ने लाभपुरे श्रीमत् खानखाना महाशया नामजनि रभूत (१)

अथ लग्न कुण्डली।
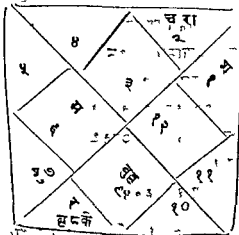
अथ भावकुण्डली।
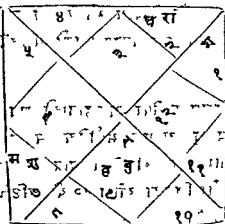
१। खानखानाके जन्मकाल तक जो वर्ष और दिन व्यतीत हो चुके थे-उनको सख्या भी रुणभट्टने जन्म पत्रिकामें धरदी है। जिसको उपयोगी समझकर हम भी यहां लिख देते हैं।

इसमें सब ग्रह चण्डू पञ्चांगसे मिल जाते हैं बृहस्पतिका भी अन्तर नहीं रहता। सो इसका यह कारण है कि इन दोनोंकी गणितका आधार एकही करण ग्रन्थ अर्थात् ब्रह्म तुल्यके ऊपर था।

१ श्रीश्वेत वाराह कल्प प्रवृत्ते यातावद् वृन्द १९७२९४८६५०
२ सृष्टितो गताब्दगण १९५५८८४६५०
३ गत कलि ४६५७
४ विक्रमस्य राज्याद्गताब्दगण १६११
५ शालि वाहन शकाब्दा १४७८
६ ब्रह्म तुल्य गताब्दा ३७३
७ कल्पाद्यहर्गण ७२०६३६१४३९५६
८ सृष्ट्यहर्गण ७१४४०३९२७८६९
९ कल्यहर्गण १७०१२४२
१० ब्रह्मतुल्याहर्गण १३५६०४

अब यहां यह शङ्का होती है कि घड़ी पल क्यों नहीं मिलते सो इसका यह उत्तर है कि चण्डूपञ्चांगमें ब्रह्म तुल्यसे अधिक व चण्डू ज्योतिषीकी गणितके बीज भी मिलाये जाते हैं। जिससे ब्रह्मतुल्यकी गणितमें और चण्डूपञ्चांगकी गणितमें घड़ी पलका अन्तर रह जाता है।

यों इतना परिश्रम करनेपर खानखानाकी शुद्ध जन्म पत्रीका पता मिला है परन्तु जो एक महीनेका अन्तर खानखानाकी जन्म तिथिमें फारसी तवारीखके हिसाब और इस जन्मपत्रीके लेखसे आता है और जिसका ब्योरा ४२ वीं पृष्टके नीचे दिया गया है अभी बाकी है।

इस जन्मपत्रीकी शोधमें जो सफलता हुई तो उससे और जन्म पत्रियोंके ढूंढनेका भी साहस हुआ। और थोड़ेही दिनोंमें कई सो जन्मपत्रियां उन राजाओं बादशाहों और अमीरोंकी हस्तगत हो गयीं कि जिनके नाम इतिहासमें देखे जाते हैं।

खानखानाके बेटोंकी जन्मपत्रियां।

१ मिरजा एरचकी जन्मपत्री

संवत १६४३ ज्येष्ट सुदी १ सोमे उदयात तघटी ११।

मिरजाएरच जन्म
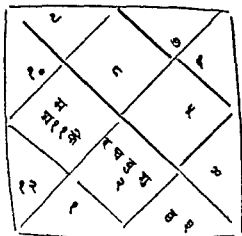
२ मिरजा दारावकी जन्मपत्री।

संवत १६४४ असाढ बदी ४ बुधे उदयात घटी ३।२५।

मिरजा दाराव जन्म
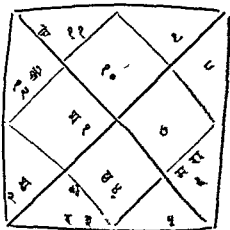
३ मिरजा रहमानदादकी जन्म पत्री

संवत १६५७ श्रावण सुदी ७ बुधे उदयात घटी २।०।।

मिरजारहमानदाद जन्म।
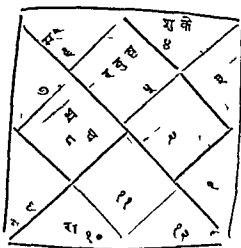
४मनुचहरकी जन्मपत्री

संवत १६५८ कातिक बदी १२ शनौ रात्रौ गत घटी २६।०

२६ १ एसच सुत मनुचहर जन्म भयभा ४३।२०

खानखानाकी सन्तान।
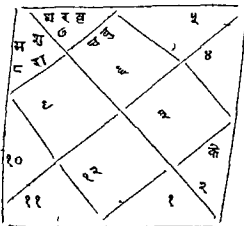
एरजमिरजा संवत १६४३ में जन्मा था। यह भी बड़ा वीर पुरुष था। जहांगीर बादशाहने इसको शाहनवाज खांकी पदवी दी थी। वह संवत १६७५ में जियादा शराब पीनेसे बीमार पड़कर मर गया। उसके दो बेटे मनूचहर और तुगरल थे।

दूसरा दाराबखां संवत १६४४ में पैदा हुआ। यह बापके साथ दक्षिणमें रहा करता था। संवत १६८० में जहांगीर बादशाहके हुक्मसे महाबतखांने इसको मारा। इसकी बेटीसे सन् १०२६ में (१) शाहजहांका ब्याह हुआ था।

तीसरा कारन मगसर सुदी ८ संवत १६४७ को जन्मा था। इन तीनों लड़कोंके जन्मनेका भविष्य कथन पहिलेसे बादशाहने कर दिया था और तीनोंके नाम भी रख दिये थे। इनके पीछे दो लड़के और हुए जिनके नाम खानखानाने रहमानदाद और अमरुल्लाह रखे। पहिले नामका अर्थ ईश्वरका दिया हुआ और दूसरेका ईश्वरका हुक्म है। ऐसे नाम रखनेसे खानखानाकी विद्वत्ता और वाक्य चातुरी पायी जाती है और यह ध्वनि निकलती है कि बादशाहने तो तीन ही पुत्र होनेको कहा था। ईश्वरने दो और भी दिये। रहमानदाद संवत १६५७ में पैदा हुआ और संवत १६७६ में मरा।

चौथा अमरुल्लाह था। इसकी जन्म तिथि नहीं मिली। इसने बुरहानपुरसे गोंडवानेमें जाकर हीरोंकी खान फतहकी थी। जहांगीर बादशाहने इस हालको इस तरह लिखा है—

गुरुवार १० वीं (अमरदाद सन् १२)को राव भाराने (कच्छके स्वामी) हाथी हथनी, जड़ाऊ तलवार, लाल याकूत, पीले याकूत, नीलम और पन्नेकी ४ अंगूठियोंकी बखशिश मिलनेसे मान पाया। इससे पहिले खानखानाने (मेरे) हुक्मसे एक फौज अपने बेटे अमरुल्लाहके साथ गोंडवानेकी तरफ हीरोंकी खान लेनेके वास्ते भेजी

१। १०२६ पौष सुदी २ संवत १०७३ को लगा था।

थी जो खानदेशके जमींदार पजूके पास थी। इस दिन उसकी अर्जी पहुंची कि पंजूने बादशाही लशकरसे लड़नेकी अपनेमें सामर्थ्य न देखकर खान देदी और बादशाही दारोगा उस पर बैठ गया। वहांका हीरा सब प्रकारके हीरोंसे सुथरा और स्वच्छ होता है।

खानखानाकी बेटियां।

१ जानाबेगम जो शाहजादे दानियालकी व्याही थी। उससे एक लड़का हुआ था परन्तु जिया नहीं।

२ खैरउन्निसा बेगम बड़ी चतुर थी। जब जहांगीर बादशाह गुजरातको गये थे तो यह भी साथ थी और यही बादशाहको फतह बागमें,ले गयी थी। "तवारीख मिरआत अहमदी"में लिखा है कि खानखानाकी बेटी खैरउन्निसा बेगमने बादशाहसे प्रार्थना की कि बाप फतहपुरमें खानखानाका बाग है, मैं चाहती हूं कि उस बागमें हजरतकी जियाफत करके प्रतिष्ठा प्राप्त करूं। बादशाहने स्वीकार किया परन्तु वह समय पतझड़का था वृक्ष ठुंडे हो गये थे, बागकी शोभा जाती रही थी, तो भी उस सुवह बेगमने जैसे फल फूल और पत्ते जिस वृक्षके थे वैसे ही रंगीन कागज और मोमके कारीगरोंसे बनवाकर उन वृक्षोंमें ऐसी युक्तिसे लगवा दिये कि जब बादशाह आये तो बागकी छटाको देखते ही मोहित होकर उन कृत्रिम पुष्पों और पातोंके तोड़नेको झुके। उस समय उस अद्भुत कारीगरीको बालाका जानकर अति प्रसन्न हुवे। बेगमकी बुद्धिकी बहुत तारीफ करके प्रतिष्ठा और जीविका बढ़ाई।

मिरजाखां मनूचहर।

खानखानाके पीछे उनके घरानेमें मनूचहर ही ऐसा हुआ कि जिसने बापदादेके नामको फिरसे चमकाया। वंशप्रभावके अनुसार इसमें भी पौरुष पराक्रम और दूसरे सद्गुण थे।

लड़ाइयोंमें घायल होनेसे मादक पदार्थोंका सेवन यह भी करता था, परन्तु विशेष करके नहीं। इसको नौकरी दादाके समयसे दक्षिणमें बाकी हुई थी। जब जहांगीरके १८ वे वर्षमें

(१)अम्बरने अहमदनगरके पास युद्ध करके मगकरखांको बहुतसे बादशाही अमीरोंके साथ पकड़ लिया था तो यह उस लड़ाईमें खूब लड़ा। जखमोंमें चूर होकर दुश्मनोंके हाथ पड़ा और बहुत दिनोंतक दौलताबादमें कैद रहा। जब छूटकर आया तो जहांगीर बादशाहने उस बहादुरीके बदलेमें इसको मिरजाखांका खिताब ३ हजारी ३० हजार सवारका मनसब और नक्कारा निशान दिया।

शाहजहांकी इसपर कृपादृष्टि रही। उनके ८ वें वर्ष में निजाब तखांकी जगह जो श्रीनगरपर चढ़ाई करके लड़ाईमें हार गया था इसको कांगड़ेके पहाड़की फौजदारी और जागीर मिली।

८ वें (२) सालके अन्तमें यह बावला होकर कुछ समय तक अप्रा होन रहा, किन्तु अच्छा होनेपर अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया। फिर उसे मांडूकी फौजदारी और जागीर मिली।

२५ वें वर्ष में एलिचपुरका हाकिम हुआ।

२८ वें वर्षमें शाहजादे औरङ्गजेबने बापके हुक्मसे इसको देवगढ़के जमींदार कोरतसिंहके ऊपर भेजा जिसने कई वर्षसे कर नहीं भेजा था।

जब यह वहां पहुंचा तो कोरतसिंह इससे मिला और पिछला रुपया देना अङ्गीकार कर लिया। तब उसको २० हथियों सहित कि (इतनेही उसके पास थे) शाहजादेकी सेवामें औरंगाबाद ले गया।

३० वें वर्ष, गोलकुण्डेकी चढ़ाईमें शाहजादे औरंगजेबके साथ गया और उत्तरके मोरचेपर नियत होकर शत्रुओंको हराता रहा। जब अब्दुल्लाह कुतुबशाहने सन्धिकर ली और शाहजादा औरंगाबादको लौटा तो यह उससे विदा होकर एलिचपुरमें आगया।

फिर जो लड़ाइयां औरंगजेबने राज्य प्राप्तिके लिये अपने भाइयोंसे कीं उनमें यह उसके साथ नहीं रहा। इसलिये या किसी

१। संवत् १६८१

२। संवत् १६९३—९४

और कारणसे इसका काम और मनसब उतर गया जिससे यह बहुत वर्षों तक घर बैठा रहा। निदान औरंगजेबके १० वें वर्षमें (१) शेख अबुलमतीफ बुरहानपुरीकी भक्तिसे जिसका भाव बादशाहको भी था, ३ हजारी ३ हजार सवारके मनसब पर फिर नियुक्त हुआ और ऐरचकी फौजदारीपर (२) भेजा गया।

१६ वें वर्ष सन् १०८३ में (३) कालवश हुआ। इसने एक बहुत अच्छा बाग बुरहानपुरमें लगाया था।

मुहम्मद मुनव्वर।

मनूचहरका बेटा मुहम्मद मुनव्वर भी सुयोग्य पुरुष था। और वह औरंगजेबके साथ दक्षिणसे हिन्दुस्थानमें आया। डेढ़ हजारी मनसब और खानका खिताब पाकर बादशाहकी बन्दगोमें रहा।

दूसरे सालमें दाराबकी जगह अहमदनगरका किलेदार हुआ।

यहां तक हाल इन दोनों बाप बेटोंका मआसिरुल उमरामें लिखा था सो इस ग्रन्थमें दिया गया। नजीबुन्निसा बेगम शायद इसीकी बेटी हो।

खानखानाकी प्रशंसाके कवित्त।

खानखानाकी प्रशंसामें जैसे फारसी भाषाके अनेक कवियोंने कविता की है वैसे ही हिन्दी भाषाके कवियोंने भी की थी। हमने उसको भी खोज लगायी तो १४ कवित्त मिले जिनमें ३ कवि गङ्गके हैं १ मण्डनका है, १ अनो कुलीका, १ हरनाथका, और १ तारा कविका। बाकी कवित्तोंमें कवियोंके नाम नहीं हैं हम उनको यहां क्रमसे लिखते हैं।

१। सन् १०७७

२। बुन्देलखण्डमें

३। संवत् १७२८।२०

कवि गङ्गके कवित्त।

छहरे छबीलो छुनि छटक छमर काढ्यो,
औरन धरत धुन सुनत निसाना की।
मक्कमको ठाट ठट्यो मलेसो पलट्यो गङ्ग,
खुरासान अस्फहान लगत एक आना की।
बीबन,उमीठे बीठे मीठे मीठे महबूब,
छिये भर न छेरियत छावट मदाना की।
तोपे खाने फीलखाने खजाने हरमखाने।
खाने खाने खबर नवाब खानखाना की॥१॥

गवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
परी है खलक खैल भैल जहँ तहँ जू।
राजनको रजधानी डोली फिरे बन बन,
नैठनकी दैठे बैठे भरैं बेटी बहू जू।
चढ़ गिरि राहैं परी समुद्र अथाहै अब।
कहै कवि गङ्ग अब चलो और चहू जू॥
भूमि चली सेस घर सेस चल्यो कच्छ घर।
कच्छ चल्यो कोल घर कोल चल्यो काहू जू॥२॥

बैरमको खानखाना बिरच्यो बिराने देश,
दच्छिन फौजें मारी खग्ग सुख जो परी॥
माते माते हाथिनके हलका हलाय डारे,
मानो महा मारुत झकोर डारी झोंपरी॥
लोहके पले लै गङ्ग गिरजा गले लै देत,
चोंथ चोंथ खात गीध अबँ सुख चोपरी॥
तियन समेत प्रेत छाके देत बीर खेत,
खबल खबल हसे खलनकी खोपरी॥३॥

छप्पय

चकित भँवर रह गयो गवन नहि करत कमल वन।
अहि फनि मनि नहीं लेत तेज नहीं बहत पवन घन॥

इस मानसर तज्यो चक्र चक्री न मिले अति।
बहु सुन्दरि पद्दमनि पुरुष न चहै न करे रति ॥
खल भलित सेस कवि गङ्ग भनि रमित तेज्र रवि रथ खस्यो।
खानाखान बैरम सुवन जिदिन क्रोध कर तङ्ग कस्यो ॥४

दोहा

गग गोंछ मोंछे जमुन, अधरन सरसुती ।राग।
प्रकट खानखाना भयो, कामद बदन प्रयाग ॥१॥

मण्डनका कवित्त।

तेरे गुन खानखाना परे ते दुनीके कान,
एह तेरे काम गुन आपनो धरत है।
तू तो खग खोल खोल खलन पै वार लेत,
एह तां सो वार लेत नेकं न डरत है।
मण्डन सुकवि तू चढत नवखण्ड पर,
यह तेरे भुज दण्ड चढी न परत है।
आहुटी अटल खान साहसी तुरकमान,
तेरो एक मान तीनों लोप सो करत है ॥५॥

अलाकुलीका कवित्त।

कहा लायो लूट किधों सिंहलको लूट लूट।
हाथी घोड़े छूटे एते पाए ते खजीने हैं।
अला कुली कविको कुबेर ते मिताई कीनी,
धनतुले धन मांपे नग धो नगीने हैं।
पाई है तें खान लघ भई पहचान भूल,
रह्यो है जहां नदी समान कहाकीने हैं ॥
पारसते पायो किधों पाराते कमायो किधों।
समुद्रहुते लायो किधों खानखाना दीने हैं ॥ ६ ॥

तारा कविका कवित्त।

ओर वर अब ओर रचिये केसे ओर बनी,
बनी ओर देखे दीठ ओर रखियत है।

हैन कोवि वैया ऐसो है नको दिवैया ऐसो,
दान खानखानाको लहे तें सचितु है।
तन मन डारे बाजी हेतन सम्हारे जात,
ग्रौर पधिकाई कही कासो कहियतु है।
ग्रौनकी बडाई बरनत सब तारा कवि,
पूरो न परत याते ग्रौन कहिय तु है ॥ ७ ॥

प्रसिद्ध कविका कवित्त।

सात दीप सात सिन्धु थरक थरक करें,
जाके डर तूटत अखूट गढ राना के।
कपत कुबेर बेर मेर मरजाद छोड,
एक एक रोम भार पड़े हनुमानाके।
धरनि धसक धस सुसुक धसक गई,
भगत प्रसिद्ध खम्भ डोले खुरसानाके।
सेस फन फूट टूट चूर चकचूर भये,
चले पेसखानांजू नवाब खानखानाके ॥ ८ ॥

हरनाथ कविका कवित्त।

वैरमके तने खानखाना ताके अनुदिन,
दोउ प्रभु सहज सुभाये ध्यान ध्याये हैं।
चाहे हरनाथ सातों दीपको दीपत करि,
नौहू खण्ड करवाय ताकसे बनाये हैं॥
ये तनी भगति दिल्लीपतिको अधिक देखी,
पूजत नयेको भाये ताते भेद पाये हैं।
धरि सिर साजे जहांगीरके पगन तर,
टूटे फूटे फाटे सिव सीस पे चढाये हैं ॥ ८ ॥

विना कवि-नामके कवित्त।

काहरे करजदार भगरत बार बार,
नेक दिल धीरधर जान दतबारीसे।
देह दर हाल माल लिखली सवाई साल,

देखना विहास मत जानना भिखारीसे ॥
सेवा खानखानाकी उमेदवारी दानकीतें ।
मह्र महानको सुद्दोत धनधारीसे ॥
मम बरषत माझ पहर द्वै पहर माझ ।
भाल काल के हैरे हजारी है से ॥ १० ॥

छप्पय ।

मदनरूप तनत वस, बीरवाहन गल गज्जइ ।
बहु सनाह पाखरी, -द्दार दुन्दुभी वहु बज्जइ ॥
वहु साहस उत्थपन, फेर थप्पन समर्थवर ।
सहनसाह सिर छत्र, ताह रक्खन समर्थनर ॥
खानान खान वैरम सुतन चित्त सहरस रत्तयौ ।
धनमद जोवन राज मद एकहि मदन मत्तयौ ॥

कवित्त ।

नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
बैरी बिडराने धुनि सुनिकै निसानकी ।
तिहुनकी रानी फिरैं थकी बिलखानी सब,
छूटी रजधानी सुध खानकी न पानकी ।
काहू मिली हाथिन हिरन बानरन,
तिनही तैं रछा भई उनहीके प्रानकी ।
सची जानी गजन भवानी जानी केहरन,
मृगन मयंक रानी जानी कपि जानकी ॥१२॥
दच्छनको जुज्झ (१) खानखाना जू तिहारो सुनि,
होत है भचक्की राजा राना उमरायकै ।
एक दिन एक रात भौ द्यौस धथियैं उगी,
आये जे सुकाम न ले गये निरवायकै ।
वारसके समर हमीरहूके परैतैं,

१ । युध ।

भिदै रविमण्डलको मारै जैतरायकै।
रजनीके जूझे सूर सूरजको पैडौ पाइ,
रात राहगीर दरवाजे ज्यों सरायकै ॥१३॥

नगर ठठाको रजधानी धुरधामी कीनी
धरक्यो धधारो खानपानी ना ह्वलकासैं।
छांडे है तुषार थो बुखार न उधार भरे,
उजबक उजरके गयो है पलकामैं।
पौर पौर परे रौर ठौर ठौर पौर टरे,
खानखाना ध्याये तैं नवाज है खलकामैं।
पिय भाजे तिय छांडि तिया करे पीव पीव,
बाबो बाबो बिलखात बालका बलकामैं ॥१४॥

दियैके हुकम भागी दौये रहे मासमीके,
देहके कहेते राख्यो देहको पखत है।
बखतके नाम नाम राखत निशान माहि,
धमके सबद धम धमजे कहत है।
खानखानाजूको जब ऐसी बखसीस भई,
बाको बखसीस पौर बखसीस हत है।
हाथिनके नाम हाथी रहत तबेलनमें,
घोरा दिये घोरा सतरनमें रहत हैं ॥१५॥

काहूको सिकार खोल खोमनकी खेल होत,
काहूको सिकार मृगमार मुखमानो है।
काहूको सिकार साथ सिकारा सिचान बाज,
काहूको सिकार देखो बारणं मस्तानो है।
खानखानाको सिकार सिधु पैके वारपार
छन्द बन्द फन्द घट बरनयो ठानो है।
अवही सुनोगे मास दोय तीन चार माम
कौनहू दिसाको पतसाह बाध भानो है ॥१६॥

दोहा। (मारवाड़ी भाषामें)

खानखान न जाचियो, जहां दारिद्र न जाय।
कूप नीर अट्टे बिना, नीम्नो धरा न पाय॥१॥
खानाखान न वावतें बाड़ी खग उज्जाल।
मुदफर पड़े न छूटियो, जैसे पाखा डाल॥२॥
खानाखान नवावतें हम मगायो येम।
मुदफर पड़े न ऊठियो, गयो जोबसो जेम॥३॥
खानाखान नवाव हो, तुम धुर खे चम हार।
सेतां सेती नहि खिचे, इस दरगहका भार॥४॥

अकबरके फरमान खानखानाके नाम।

अकबर और खानखानामें जो सम्बन्ध सेवक और स्वामि वृत्ति का था उसका पता जहांतक इतिहासोंसे लगा, वह तो पहिले लिखा जा चुका है। अब यहां उक्त स्वामी और सेवकके उस सप्रेम वार्तालापका भी कुछ नमूना दिखाया जाता है जो पत्र व्यवहारके द्वारा होता था॥

अकबरकी ओरसे जो नामें और फरमान अर्थात् पत्र और परवाने समकालीन बादशाहों तथा हिन्दुस्तानी अमीरों को लिखे जाते थे उनका विशेष करके शेख अबुलफजल लिखा करता था जो बड़ा जबरदस्त मुन्शी था और जिसकी लेखन शक्तिकी प्रशंसामें इतना कहना ही बहुत होगा कि ईरान नरेश शाह अब्बास कहा करता था कि जितना मुझको अबुलफजलकी "कलम"का लगता है उतना अकबरकी तलवारका नहीं लगता।

अबुलफजल एक गरीब शेख नागोरका रहनेवाला था परन्तु भाग्यबलसे पहिले सन ९८२में (१) अकबरका मीर मुन्शी हुआ। फिर अपनी योग्यता और बादशाहकी गुणग्राहकतासे बढ़ती बढ़ते मुख्य मन्त्रीके महत् पदको पहुंच गया था अकबर

१। संवत् १६३१।

नामा जो एक विशाल और गम्भीर इतिहास उक्त सम्राटका है। इसी अबुलफजलका बनाया हुआ है और आईन अकबरीका भी यही कर्त्ता है जिसमें इस नीतिवान और विचारशील राजराजेश्वरके सुप्रबन्धका वर्णन भारतवर्षका भूगोल और शास्त्रोंका साराश है।

अबुलफजल खरा आदमी था। शाहजादोंकी भी खुशामद नहीं करता था। इसलिये शाहजादे सुलतान सलीमने सन् १०११ में (१) उसको मरवा डाला और सन् १०१५में (२) उसके भानजे अबदुल समदने उसके लेखोंको बड़े परिश्रमसे हस्तगत करके एक पुस्तकमें एकत्र किया जिसका नाम "मुनशियात अबुल फजल" है। इसके ३ खण्ड हैं।

पहिले खण्डमें बादशाहकी ओरसे लिखे हुए पत्र और फरमान हैं।

दूसरे खण्डमें वे पत्र हैं जो स्वय अबुलफजलने अपनी ओरसे लिखे थे।

तीसरे खण्डमें फुटकर लेख और अरबी फारसी ग्रन्थोंकी समालोचना है।

खानखानाके नामके केवल २ फरमान प्रथम खण्डमें हैं। पहिला दूसरेसे कुछ बड़ा है और दोनोंका पूरा अक्षरार्थ न तो हिन्दी लेखमें समा सकता है और न इस पुस्तकके वास्ते कुछ उपयोगी है। इसलिये आवश्यक भावार्थ लिखना ही उचित समझा।

पहिला फरमान।

पहिला फरमान हस्तलिखित प्रतिके पूरे ८ पृष्ठोंमें है। बादशाहने बहुत लम्बी चौड़ी उपमामें खानखानाका नाम लिखकर वसी ही लम्बी चौड़ी उपमा राजा बीरबरके वास्ते भी दी है और पठानोंकी लड़ाईमें उनके काम आजानेका हार्दिक शोक प्रगट करके

१। सवत् १६६०। २। स १६६४।

शब्दोंमें प्रकाश करके लिखा है कि ईश्वर इच्छा विलक्षण है हमने भी उसका कुछ उपाय न देखकर सन्तोष किया और तुम भी अब सन्ताप न करो। उस मरनेवालेकी जीवनावस्थामें भी तुम हमारे परम मित्र और गुप्त भावोंके ज्ञाता थे और तुमको हम ईश्वरके दिये हुवे अलभ्य पदार्थोंमेंसे जानते थे। अब तो तुम आप जान सकते हो कि तुम्हारा गनीमत होना कितने अंशोंमें बढ़ गया है। परमेश्वर तुमको हमारी छत्रछायामें बना रखे। हमने राजा तोडरमलको पठानोंके ऊपर भेजा था। उसने वीरता और बुद्धिमानीसे उनको दण्ड देकर खात और बाजोडका देश जीत लिया। परमेश्वरका धन्यवाद है कि अब इधरके कामोंसे मन वाञ्छित सफलता प्राप्त करके हम आगरेको पधारते हैं।

तुम्हारी अर्जी पढ़ी। उससे तुम्हारी स्वामिभक्ति विदित होकर प्रसन्नता प्राप्त हुई। दक्षिण विजय करनेके विषयमें जो तुमने अपने विचार लिखे थे उससे हम भी सहमत हैं। तुम्हारी बुद्धि और वीरताका हमको ऐसा ही भरोसा है कि तुम शीघ्रही गुजरात मण्डलके प्रबन्धसे खचित होकर दक्षिणको जीतो और वहाके समग्र हाथी और पदार्थ हमारे भेट करो।

खङ्गारके अपराध क्षमा करने, जगनाथ और शाहमखानादिके नाम कृपाकार भेजनेकी जो तुमने प्रार्थनाकी थी सो स्वीकृत होकर कृपापत्र भेजे जाते हैं। खङ्गारको जो धरती दी वह सेवा और समयके अनुसार होनी चाहिये।

अमीनखांके बेटोंके वास्ते जाम बेग और खङ्गारके लिये जो तुम उचित समझो सो करो।

भरोसेके सहायतोंको भेजनेकी जो अर्जीकी थी सो मञ्जूर हुई और शेख इब्राहीमको बुलाया सो जब हम आगरेको आते हैं और जब इधरको जमींदारोंके काम उसको सौंपे हुए हैं तो उसके भेजनेमें इतना लाभ नहीं जान पड़ता है कि जिसके वास्ते इन कामोंको योंही छोड दिया जावे।

और जो तुमने अपने बेटोंके बाबत लिखा कि जब दक्षिणको जाऊं तो उन्हें कहां छोड़ जाऊं या हजूरमें भेज दूं, सो तुम्हारा और तुम्हारी सल्तनतका सम्बन्ध इस घरमें ऐसा नहीं है कि जब किसी कामपर न होवे तो क्षणभर भी आंखोंसे दूर रहे। तुम हमारे पधारनेके समाचारों पर कान लगाये रहो। यदि हमारा आना आगरेमें जल्दी ही जावे तब तो उत्तम बात यही है कि लड़कोंको हजूरमें भेज दो और जो यह निश्चय हो जावे कि हम अभी पंजाबमें ही विहार करेंगे जो गुजरातसे बहुत दूर है तो तुम वहीं किसी भरोसेकी जगहमें उनको रखकर दक्षिणको चले जाना।

दूसरा फरमान।

दूसरा फरमान ७ पृष्ठोंमें है। इसके प्रारम्भमें बहुत दूरतक तो वसन्तऋतुकी शोभाका वर्णन है। फिर लड़ाइयोंमें विजय प्राप्त होनेकी प्रसन्नता और तूरानके बादशाह अबदुल्लाखां उजबकके भेजे हुए कबूतरोंके रङ्ग रूप और उड़ानकी प्रशंसा है। इसीमें कबूतरबाज़ जो कबूतरोंके साथ आया था, उसकी तुलना बादशाहने अपने अद्वितीय इतिहासवेत्ता नकीबखांसे करके लिखा है कि जैसे नकीबखां मनुष्योंके वंश जानता है वैसे ही हबीब कबूतरोंकी कुली पहचानता है। उनके शरीरकी दशा जाननेमें जालीनूस हकीमके समान है तो उनके गुणोंके पहचाननेमें अफलातून हकीमके सदृश है।

इसके आगे कबूतरोंके उड़नेकी विचित्रताका बखान करके लिखा है कि हम सदा ही और विशेष करके हर्ष और आनन्दके समयमें तुमको अधिक याद किया करते हैं। इसलिये जिस दिन वे कबूतर हमारे दृष्टिसे निकलते थे और हम इनको देख देखकर प्रसन्न होते थे उस समय हमको तुम्हारी इस काम सम्बन्धी बातोंकी बहुत याद आती थी जिससे इन "परीजादों"के मनमें एक भ्रम उपजा और इन्होंने अपनी बोलीमें अपना मनोरथ

कहा जिसका सारांश यह है कि परमेश्वरने हमारा मनशा पूर्ण करके हमको इस दरबारमें पहुंचाया है, तो यहांके सब सेवकोंसे और विशेष करके खानखानासे जो बादशाहका निज शिष्य है यह चाहते हैं कि हममेंसे किसीको भी बादशाहसे मांगकर हमारा कुटुम्ब भङ्ग न करे। क्योंकि हम सब बादशाहकी छत्र छायामें ही रहनेकी आशा करते हैं सो अब इनकी यह इच्छा है तो हम भी अपने हितैषियोंसे और विशेषकरके तुमसे क्योंकि तुम सबसे अधिकतर मांगने वाले हो,यही चाहते हैं कि इनके मांगनेका आग्रह न करोगे जिससे हमारे आनन्द और उछाहमें विघ्न न पड़े और इनके वियोगको सहन करके इन्हें एक दूसरेसे बिछड़नेका दुख न दोगे। इनके बच्चे भी तुम्हारी न्यायशीलतासे यही आशा करते हैं कि जब तक हम बड़े होकर बादशाहको अपने उड़नेका कौतुक न दिखा लेवें तब तक हमको हमारे मा बापसे अलग न करें।

और तुम्हारा एक नया पाहुना (१) भी रास्ता चल रहा है उसके पहुंचने तक ठहरो। हम तुमको अच्छे अच्छे कबूतर प्रदान करेंगे और उस मिजमानका भी इनके बच्चोंमेंसे भाग मिलेगा। कदाचित् विलम्ब हुआ तो जो कुछ तुमने अपने वास्ते सोचा होगा उससे कम मिलेंगे।

शेख अबुलफजलके पत्र खानखानाको।

मुनशियात अबुलफजलके दूसरे खण्डमें भी कई पत्र अबुल

१। यह एक संकेत इस बातका है कि उस समय खानखानाकी बेगमके गर्भ था। इसलिये बादशाह लिखते हैं कि नये महमानके आने पर अर्थात् बालक जन्मनेपर हम तुमको कबूतर देंगे और तुम्हारे लड़केको भी कबूतरोंके बच्चे इनायत करेंगे और जो बालकके होनेमें देर हुई तो तुम्हें अपने वास्ते जितने कबूतर मिलनेकी आशा की होगी उससे कम मिलेंगे। यह एक दिल्लगी बादशाहकी खानखानासे थी।

फजरतो तारफने ख़ानखानाके नाम लिखे मिलते हैं। उनमेंका भी जह पत्र जो इतिहास और राजनीतिसे सम्बन्ध रखता है यहां लिखा जाता है।

पहिला पत्र।

पहिला पत्र जो २० पृष्ठोंमें है अरबीके एक पदसे प्रारम्भ होता है। अबुलफ़ज़ल खानखानाको लिखता है कि तुम्हारे मिलनेकी लालसा उतनी ही अधिक है जितनी कि तुम्हारी जय प्राप्तिकी प्रसन्नता है। मैं क्या कहूं कि इन दिनोंमें चित्तको कैसी कुछ चिन्ता रही। इधर तो वियोगका दु:ख उधर गुजरातसे बुरे समाचारोंके पहुंचनेका उद्वेग और इनसे कष्टकी यह बात कि बहुत दिनोंसे तुम्हारा न कोई दूत आता था और न पत्र पहुंचा था। इन सबसे बढ़कर शत्रुओंकी दुष्टता थी जो निन्दा करके मित्रोंका दुख बढाते थे जिन्होंने ऐसा अवस्थामें जीनेसे मरना उत्तम समझ रखा था। परन्तु बादशाहके तेज प्रतापसे अब वह दुर्दशा व्यतीत हो गयी और शीघ्रही अच्छे दिन आगये।

इसलाफकी बात यह है कि तुमने बडी ही वीरताकी। यह काम तुमसे ही बन आया और पुरुषसिंह ऐसा ही किया करते हैं। तलवारों और कमानोंको यदि बोलनेकी शक्ति हो तो वे तुम्हारे भुजबलका हजार बार बखान करें।

शत्रु और मित्र मन्त्रियोंकी बहुतसी सलाह और खैंचतान होनेके पश्चात् जिसका कुछ वृत्तान्त आपका अपने वकीलोंकी लिखा पढीसे विदित हुआ होगा, १६ बहमन माहजलालो तदनुसार १७ मुहर्रमको बादशाहने इलहाबाससे फतहपुरकी ओर पयान किया। विचार यह था कि शीघ्रतासे राजधानीमें पहुंचकर विशेष कटक तो वहीं छोड़ दवे और छडी सवारीसे अहमदाबादके ऊपर धावा करें जिससे सेवकोंकी पुष्टि हो जावे और रिपु दल दब जावे।

इतनी बहुत गडबड़से बादशाहके शान्त चित्तमें कुछ भी घबरा-

हट नहीं हुई और ऐसी बडो दूरको लम्बी यात्राको पुष्प वाटिका समझकर मन्द मन्द गतिसे अति प्रसन्नमन और प्रफुल्लित चित्त हो पधारते थे। परम स्वामिभक्त अनुचरों के साथमें मैं भी था।

बहमन महीनेकी अन्तिम मितिको जोकि प्रथम तिथि (१) सफरकी थी बादशाही कटक कोडा घाटमपुरमें उतरा ही था कि किसना चौधरीके कासिद (धावक) बधाई लेकर पहुंचे। श्रीमानों ने ईश्वरको प्रणाम करके दुन्दभी बजानेकी आज्ञाकी। इतना आनन्द और उत्साह हुआ कि जिसकी यथार्थ अवस्था वर्णन करनेको मैं समर्थ नहीं हूं। तुम इसीसे अनुमान करलेना कि इस प्रसन्नताने समभावसे शत्रुओ और मित्रों में एकता कर दी थी।

इसके पीछे कल्याणराय, एतमादखां, निजामुद्दीन अहमद और शहाबुद्दीन अहमदखांकी अर्जियां क्रमसे पहुंचीं जिनसे तुम्हारी पूरी बहादुरी बादशाहको विदित हुई। श्रीमानोंने प्रसन्न होकर परम कृपासे बहुत शाबाशी और खानखानाकी बपौती पदवी तुमको दी।

ईश्वरको धन्यवाद है कि उसने अपनी दयालुतासे तुमको वह पदवी दिलायी जो पंचहजारी मनसबवालों की मन वांछित कामनाओं की अन्तिम सीमा होती है।

तुम्हारे पंचहजारी होनेको बहुत लोग असम्भव समझते थे और प्रत्यक्षमें कुछ उसका उद्योग भी नहीं था। हकीम अबुलफतह या कुछ दूसरे सन्मित्रों ने कदाचित कुछ यत्न किया होगा। वास्तवमें ईश्वरने तुम्हारा वह प्रभाव प्रगट किया है कि जो

१। फतह १३ मुहरम सन् ९९२ को हुई थी और बधाई १८ दिनमें बादशाहके पास एक सफरको पहुंची। इधर बादशाह भी १४ दिनमें ४० तथा ५० कोस ही चले थे। उस समय डाक और सवारी इतनी धीमी चलती थी। अहमदाबादसे आगरा २५६ कोस था और आगरेसे घाटमपुर ५० या ६० कोस होगा।

बडे बडे विचक्षण पुरुषों की तीक्ष्ण दृष्टिसे छिपा हुआ था।

समय अवकाश देनेमें बहुत कजूस है इसलिये इस विषयमें विशेष नहीं लिख सकता इतनेके वास्ते ही बडी भीख मांगनेसे अवसर मिला है।

निदान अति प्रतीक्षा करनेके पीछे ता० २५ सफर सन् ९८२को फौलाद दीवानेका भला आदमी पहुंचा और तुम्हारा कृपापत्र लाया जिसके पढनेसे असीम प्रसन्नता हुई और आश्चर्य्य भी बहुत हुआ। ऐसी बडी विजय प्राप्त करके वहां स्थिर हुए बिना इधर आनेका विचार करते हो और जिसकी प्रार्थना करनेके वास्ते मुझको शपथ भी लिखी थी। अन्तमें वह बात सन्मित्रों के मध्यसे बादशाहके कानों तक पहुचायी गयी तो श्रीमान्‌को भी बडा अचम्भा हुआ। हकीम अबुल्फतहने वाक्य पटुतासे वह प्रार्थना स्वीकार भी करा ली। परन्तु मुझे जो आश्चर्य्य था वह अभी दूर न हुआ था कि दो तीन दिन पीछे फौलाद दीवानेने तुम्हारी अर्जी श्रीमानोंके चरण कमलोंमें अर्पित की जिसमें श्रीमानो के गुजरातमें पधारने और राजा टोडरमलके भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी। इससे और भी मेरा चित्त विक्षिप्त हुआ। पुराने समयके कर्म्मचारियोंकी सलाहसे तुमने ऐसा किया हैं। जब कि इस बृहत राज्यको परमेश्वरने अपने संरक्षणमें रख छोडा है तो इसके शुभचिन्तक भी सर्व प्रकारसे सामाजिक शोकसन्तापसे बचे रहेंगे। इसपर भी ज्ञानका अनुभव न होने और मायामें लिप्त रहनेसे चिन्तातुर होना पडता है।

मैंने जो कुछ ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था, अफसोस है कि उसको तुम्हारे प्रेममें आसक्त होकर कुछ दिनोंके लिये खो बैठा, नही तो मैं कहा और तुम जैसोंकी प्रीति कहा और ये उद्वेग कहां? निदान तुम्हारे आग्रहपूर्व्वक लिखनेसे मैंने अपनी समझ अलग रखकर सुहृद स्नेहियोंकी सम्मतिसे बहुतसी कहा सुनी करके, जिसका वृत्तान्त आपको अपने मित्रोंसे विदित

हुआ होगा श्रीमानोंने मेष सक्रान्तिके उत्सवके पीछे मालवे जाना, खजाना भेजना और उन सब कार्य्यों का सम्पादन करना स्वीकार कराया है जिनका व्यौरा उस फरमानमें लिखा गया है जो मखूतालिब और फौलाद दीवानेके हाथ जा चुका है, आशा है कि सब अच्छा होगा।

क्या करूं यह मेरा स्वभाव है कि जो उत्तम विचार मनमें उत्पन्न होते हैं उनको लिखे बिना चित्तको शान्ति नहीं होती और इसी हेतु इतना बहुत लिखकर तुम्हें कष्ट दिया है। आशा है कि मन और शरीरके विचारों और कामोंकी भीड़ तुमको इसके पढ़नेसे न रोकेगी।

मैं इस पत्रको तुम्हारी तन्दुरुस्तीकी "दुआदर" समाप्त करना ही चाहता था कि चौधरी किसना, शहाबुद्दीन अहमदखां और नवाब कोकाकी अर्जियां जो ता० ५ रबीउलअव्वलको शादीतमें लिखी गयी थी, रेवारियोंके हाथ पहुंचीं उनसे शुभ समाचार नयी फतहके मिले। यद्यपि इसके पहिले मुजफ्फरके खम्भातसे भागने और उसके पीछे फौजके जानेकी खबर कई मनुष्योंकी लिखावटसे जानी गयी थी परन्तु सविस्तर अब मालूम होकर चिन्ता और व्याकुलता प्रसन्नतासे बदल गयी।

परमेश्वर नित्य ही तुम्हारी ऐसी जय किया करे। श्रीमानोंको जो प्रसन्नता तुम्हारी इस लगातार जीतसे हुई है उसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। क्या दरबारमें और क्या एकान्तमें तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं जिससे शत्रु दुःखी और मित्र सब सुखी हैं।

श्रीमान कई बार कह चुके हैं कि जो चाकर गुजरातमें भेजे गये हैं उनके मनसब अर्ज करो तो बढ़ाये जावें और उनको कृपापत्र भी भेजें। परन्तु श्रीमान न्याय और राजनीतिकी परिपाटीसे सब काम आप देखकर करते हैं। तुम्हारी खानखानीका फरमान, खासा खिलअत पेटी तलवार और घोड़ेके छांटनेमें दिन लग जानेसे इतनी देरसे लिखा गया था तो दूसरा फरमान किस तरह लिख

जा सकता था जब कि नये दिनोंके आजानेसे उसका उत्सव राज रीतिसे किया जाता है और मेष सङ्क्रान्तिके दिन तो सब छोटे बड़ोंको यथोचित न्याय पूर्वक मान और सम्मान दिया जाता है और प्रजके ता हरेकको उसका पाओसे अधिक देना है। मेख सङ्क्रान्ति दूर नहो है। ईश्वरने चाहा तो इन सब कामोंसे फुरसत हो जाने पर दूसर फरमान तुम्हारे पास पहुंचेगा।

आपसे यह बात छिपी न होगी कि सच्चे सखा वेही हैं जो दिलसे यह चाहते हों कि मित्रोंके छोटे और बड़े अवगुण जताकर उनसे त्याग करावें न कि खुशामदियोंकी भांति अवगुणोंको ही गुण बताकर अपनेको हितैषी बतावें जैसाकि संसारमें हो रहा है और उनका यह कपट थोड़े ही दिनोंमें प्रकट होकर लोक और परलोक बिगाड़ देता है। सो बुद्धिमान लोग जानते ही हैं। जब आप यहां थे तो मिलनेके समय इन बातोंकी कहा सुनो हो जाती थी। परन्तु अब आप दूर हैं इसलिये चाहता हूं कि चिट्ठियोंमें ऐसी मनोवृत्तियां लिखी जाया करें। आशा है कि आपको भी ऐसी ही इच्छा होगी।

मैं चाहता था कि इसी पत्रमें पहिले तो कुछ प्रकरण गूढ़ रहस्यका लिखू जो साराश सब मतमतान्तरों और शास्त्रों का है।

दूसरे यह प्रार्थना करू कि आप न्यायदृष्टिसे खूब देखभाल कर निरूपण कर लेवें कि ये बातें निरन्तर सब विद्वानो की मानी हुई हैं तो भी आपके विशाल चित्तमें कैसी जचती हैं और जब कि यह निश्चय हो जावे कि अति उत्तम हैं तो जो इसके विपरीत हैं वे सर्वथा वृथा हैं।

तीसरे यह चाहता हू कि नित्य और जो नित्य न बने तो सप्ताहमें और जो सप्ताहमें न हो सके तो एक महीनेमें और जो महीनेमें भी बन न पड़े तो एक वर्षमें अपनी आयुभरका दफतर स्मृति जबसे सम्हाली हो देख लिया करें और बिना किसीकी सम्मतिके अपने हृदयमें विचार करके देखे कि पिछले वर्षोंमें क्या

अच्छा किया है और क्या बुरा किया है। यद्यपि भूतकालकी असावधानियोंका अब कुछ उपाय नहीं हो सकता है तो भी इतना हो सकता है कि अकलतको छोटसे जानकर आगेको दुष्कर्मोंमें समय व्यतीत न करे और इस शेषावस्थाको इन्द्रियोंके विषयोंमें न खोवे। परन्तु मुझमें न तो इतनी योग्यता है कि इस गूढ बातोंका लिखूं और न इतना समय है कि जैसे तैसे लिखकर भी अपनोंको दुष्टोंका निम न बनाऊं और तुमको कष्ट दूं। परन्तु हार्दिक प्रेरणासे जो कुछ आवश्यक और उचित जचता है लिखता हूं।

परमेश्वरने अपनी क्रिया कुशलतासे जैसे समय शरीरका प्रबन्ध एक जीवके अधीन किया है वैसे ही पृथिवीका प्रबन्ध भी नीति विशारद मनुष्योंके अधिकारमें दिया है। जीवात्मा यदि शरीर और मनकी शक्तियोंका शासन, जो उसके कर्मचारी हैं न्याय और नीति पूर्वक करता है तो व्यापार बना रहता है नहीं तो उसमें विघ्न पड़कर नाशको प्राप्ति होती। ऐसे ही जो किसी देश या राज्य-का स्वामी सावधानी और बुद्धिमानीसे कामोंको सम्हालता रहै तो सब प्रजाको वशमें कर ले और किसी प्रकारकी हानि न पड़ने दे, नहीं तो राज शीघ्र ही भ्रष्ट हो जावे जिसकी स्थिति इन ५ बातोंके ऊपर निर्भर है—

१। सावधानी, यानी सब लोगोंका हाल भरोसेके मनुष्यों तथा कई ऐसे आदमियोंके द्वारा जानते रहना, जो एक दूसरेको न जानते हों, राज्य, नगर और घरसे सावधान रहना, सच्ची झूठी खबरोंको बुद्धिसे तौलकर जान लेना।

२। प्रजागणके अपराध क्षमा करना और उन अपराधोंको उनकी अज्ञानतासे जानकर क्रूर न होना।

३। जिनपर अन्याय हुआ हो उनका न्याय करना और दुष्टोंका (जो अपने सम्बन्धी हों तो भी) पक्ष न करना।

४। संसार असार है, ऐसा सबको निश्चय कराना और बिना

कहे हो दीन दुःखी लोगोंके मनोरथ समझकर सिद्ध कर देना, प्रजाके धन हरनेकी आकांक्षा न करना, ऐश्वर्य्यको अपने पुरुषार्थसे न समझना।

५। न्याय पथका अवलम्बन करना, द्वेषका त्याग करना जो लोग अपने मतके न हो उनसे वैरभाव न रखना हां जो समझ सकें तो अपना मत नम्रता पूर्व्वक उनको समझावे। केवल मत विरोधसे उनपर अन्याय न करे और उनके धन धान्य धरा और धामका पूरा पूरा संरक्षण करता रहै।

प्रियवर! ये वाक्य प्राचीन बुद्धिमानोंके है जो उन्हो ने कृपा करके लोक हितार्थ कहे हैं।

बुद्धिमानोके उपदेश तो सर्वथा चमत्कार ही होते हैं। परन्तु अहोभाग्य उनका है कि जो सुनते हैं और उनका साधन करते हैं। और निःसन्देह ऐसी बातो का प्रतिपादन करना पुरुष सिंहों का ही काम है जो इनके द्वारा कांटोंको फूल बनाकर मित्रों और शत्रुओं में समभावसे रहते हैं, और हकीम अनवरीके इस वाक्य को, कि जो शत्रुओंसे निर्वाह कर सके और जो मित्रो में रह सके वही पुरुष सिद्ध है, परलोकका साधन बना कर सन्तुष्ट होते हैं।

मैं अब ऐसे प्रकरणो के कहनेसे कि जिनसे अपनेको तो सुधारा हो नहीं है चुप रहता हूं और इससे अधिक अपनेको और दूसरे लोगोंको कष्ट न दूंगा। क्योंकि ईश्वरका ऐसा नियम है कि सदुपदेश जब तक किसी सत्पुरुषसे न दिया जावे कुछ फल नहीं देता है। परमात्मा हमको और तुमको सन्मार्गपर लगाकर परम पदको पहुंचावे।

दूसरा पत्र।

यह ८ पृष्ठो में है। आदि अन्तमें तो वेदान्त, राजनीति, धर्म्मनीति और प्रेम प्रीतिके रहस्यका विषय है। बीचमें जो समाचार लिखे हैं उनका यह साराश है कि शहबाजखाने घोडाघाटसे (१ समुद्र

१। बङ्गालेका एक नगर है।

तक सब देश और टापू जीत लिये। शत्रु नष्ट हो गये ईसाकी नावमें बैठकर भागा सो पानीमें डूब गया।

वजीरखां और सादिकखांने टांडे और वर्दवानसे उडीसेतक दिग्विजय करके उन देशोंपर अधिकार कर लिया, दुष्टोंको हटाकर सब जगह अमन चैनकर दिया। "कतलू लोहानी"ने जो पठानोंके उपद्रवका अधिष्ठाता था सेवा स्वीकार करके अपने पोतेको मदोन्मत्त हाथियों और बढ़िया पदार्थों सहित बादशाहके चरणोंमें भेजा।

उधर मुहम्मद हकीम (४) मिरजाकी मृत्यु हो गयी जो बड़े बड़े बलवाइयोंके साहसका हेतु था।

निजामुद्दीन कुलीचखांने जो अर्जी तुम्हारी दूसरी फतहके सविस्तर हालकी दरबारमें भेजी थी उसमें उसने अपना बहुत अनुग्रह तुम्हारे प्रति प्रकट किया है।

उर्दीबहिश्त महीनेकी तीसरी और रबीउस्सानीकी ११ वीं तारीखको जो उत्सवका दिन था और श्रीमान् बहुत प्रसन्न थे, तुम्हारी दूसरी अर्जी भी पहुंची जिसमें दूसरी फतहके समाचार थे उनको सुनकर श्रीमानोंने बहुत प्रशंसा की। तुम्हारे और तुम्हारे साथके लोगोंके मनसब पद) बढ़ानेकी फिर आज्ञा दी। विलम्ब हो जानेसे समाचारी धमकाये गये। अब शीघ्रही सब कामोंके पूर्ण हो जानेकी आशा है।

चौथी उर्दीबहिश्तकी रातको तुम्हारा पत्र हकीम अबुलफतहके नाम पहुंचा। ऐसा पाया जाता है कि दूसरी फतह होनेसे पहिले लिखा गया होगा। क्योंकि कई बातें उसमें चिन्ता और व्याकुलताकी लिखी हुई थीं जिनसे चित्त बहुत विक्षिप्त हुआ। तुम बुद्धिमान हो सब कामोंका पूर्वापर देखना चाहिये। यह जगत ईश्वरका बनाया बाग है कांटा पर दृष्टि देनेसे पहिले इसके फूलोंको देखना चाहिये और प्रसन्न होना चाहिये। आयु जो

४। यह अकबर बादशाहका भाई था।

गैंग्रासे बीतो चली जाती है और जिसका कोई बदला नहीं मिल सकता है उसको इसी खुशीमें पूरो करनी चाहिये। साधारण मनुष्यो को भांति हर्ष और शोक करना तुम्हारा काम नहीं है।

यद्यपि मैं जानता हूं कि ऐसी बातें व्याकुलताकी दशामें किसीको नहीं सुहाती, वर्तमान कालके लोगों को तो बहुत ही कड़वी लगती हैं, परन्तु तुम विद्वान हो और सच्चे बचनों से सन्तुष्ट होते हो इसलिये मैंने ऐसा लिखा है।

तीसरा पत्र।

इस पत्रका यह आशय है कि खानखानाने अबुलफजलसे ब्रह्म विद्याके विषयमें पूछा और उसने उत्तरमें अपना सिद्धान्त लिखा है।

चौथ पत्र।

इस पत्रका साराश यह है कि मैं वह नहीं हूं कि ज अज्ञानोसे कह वह दिलमें न हो। तुम जानते होगे कि मैं ठेटसे विरक्त मन था और गृहस्थोमें आया जब भी वही हाल था। लोग मुझस मित्रता किया चाहते थे। मैं दूर भागता था। निदान हकीम अबुलफतहने, जो मर चुका है, और तुमने मुझको अपनी दोस्तीक जालमें फांसा। मैं कुछ समय तक तुमको उपदेश करता रहा तुम मानते रहे जो कभी कोई सच्ची बात कडवी भी लगी तो तुम अपने मनको वशमें रखकर सदुपदेशकी चाहना करते रहे। परन्तु अब थोडे दिनो से वह इच्छा नहीं पायी जाती और मैंने भी लिखना छोड दिया तो भी यथाशक्ति दिलसे तुम्हारे सुधारनेके उद्योगमें बद्धकटि हूं, पर हां इस कामका उस्ताद नहीं हूं जिससे इसके कइ साधन छूट भी जाते हैं। एक विशेष कारण यह भी था कि इन दिनो मेरे भाई शेख अबुलफेज फैजोका देहान्त हो गया और इस दुःखसे मुझको अवकाश नहीं मिला।

तीन महीने पीछे महमूदखां पहुंचा उसने बने बनाये सुगम कामको बहुत कठिन बताया। मैंने जैसा कि मेरा कर्त्तव्य प्रीति और हितकी परिपाटीसे था बहुत परिश्रम किया परन्तु वहांका

यथार्थ वृतान्त श्रीमानोंको निश्चय हो चुका था, इसलिये बहुत कुछ मैंने तुम्हारी ओरसे कहा और तुम्हारी सराहना भी बहुत की पर लज्जित ही होना पड़ा और क्यों नहीं लज्जित होता, जब कि तुमको अपना परम मित्र बतलाया था। निदान यहां तक नौबत पहुंची कि मुझपर भी कोप हुआ जिसको मैंने सह लिया क्यों कि मैं ही उसका कारण हुआ था।

मैं जानता हूं कि मांग्नियोंने तुमसे दगा की। यदि शाहजादा अंधियारी और बड़ाईके उन्मादमें नम्रताके रास्ते पर न चला था तो हे विलक्षण विद्वान्! तेरी विचक्षण बुद्धिको क्या हुआ था? तू क्यों डर गया और मोटी हुए बड़प्पनकी बोझमें दबकर असफल कर बैठा? कितनासा काम था जो तेरे करनेसे नहीं होता? तूने अपने स्वामीकी प्रसन्नताके लिये शाहजादेका मन क्यों नहीं मनाया? इन ३ वर्षोंमें उन्मत्ततासे तूने बात भी न सुनी, सीधा रास्ता छोड़ दिया और अब तक भी सचाईके मार्गको ग्रहण नहीं करता है। मैं चाहता हूं कि कोप करूं और १००० गालियां दूं परन्तु जीभ एक पुनीत अङ्ग है, उसको गालियोंसे बिगाड़ना बड़ा अनर्थ कारक है।

मैंने माना कि तू मूर्ख था पर बुद्धि नहीं थी तो भक्ति कहां चली गयी थी? यह स्वामिधर्मपनेकी बातें क्या हुई? क्यों काममें बेपरवाई की जिससे ऐसा हुआ? यदि सौगन्दें खाना मेरी समझमें पाप न होता तो मैं १००० सौगन्दें खाता जो इस बड़े काम के योग था। दुश्मनोंके इस मनवाञ्छित काम करनेपर भी मुझे विश्वास था कि तू बावला और मदोन्म[illegible]।। तो भी मुझे देखकर सचेत हो जायेगा और [illegible] कर [illegible]

लेगा। इसलिये मैंने अनेकबार [illegible] कि [illegible]

प्रकृतिके स्वभावसे जो भूल हुई सो हुई [illegible] अपनी

मित्रताका ऐसा दो[illegible]

रहे और उनको [illegible] करें।

और इस दार्थतासे मुझपर भी खफा हुए। परन्तु मेरे मनमें उसका कुछ विचार न हुआ और मैं उसी तरह हठ संगन्य हूं।

और जो हुआ सो हुआ, मुझ सब हितैषीको सलाह यही है कि अपने वचनोंका पालन करके श्रीमानोंके चित्तको शान्त करो श्रीमान तो तुमसे वह आशा रखते हैं जो अपने किसी पुत्रसे भी न रखते हों। अब आप बुलानेको ता प्रार्थना न करें और बड़पने (अर्थात् मूर्खता)से अलग होकर उसी सेवामें दिल लगावे। श्रीमान् बुलावें भी तो यही उचित है कि इसी सेवाकी प्रार्थना करें क्योंकि श्रीमानोंका चित्त यही चाहता है कि यह काम तुम्हींसे हो और जो ए स्थलमें मेरे आनेको उचित समझे तो भजो भेजे सो फिर मेरे उद्योग करनेका आधार हो। मैं कहां और यह काम कहां ? परन्तु यह लालसा है कि श्रीमानोंके कोमल हृदय पर जो भार है उसको दूर करें। ईश्वरको सहस्रों धन्यवाद हैं कि बराड रह गयो। इसका मैं तुम्हारे परिश्रमका फल जानता हूं। इससे वह भार कुछ हलका हुआ। आशा है कि बिलकुल जाता रहे। जो दुष्ट जन खुशी मना रहे थे वे अब शोकमें बैठे हैं। यदि मूलमन्त्र (१) जाननेमें एक दो बार मुझसे भूल हो जाती तो मुझे अपनी समझका विश्वास नहीं रहता। मैं जानता हूं कि ये बातें साधारण हैं। सच तो यह है कि श्रीमानोंके परम पवित्र हृदयमें कभी मलीनता आती ही नहीं। (२)

प्रेमी वह नहीं है कि जो संयोगकी वाञ्छासे अपना मन अर्पण करे। प्रेमी वही है कि जो निष्काम होकर सर्वस्व योंही दे दे दोनों लोकोंकी फूलोंकी २ डालियां जाने, उनकी छड़ी बनावे और मनुष्यों को बख्श दे।

१। यथार्थ अभिप्राय।

२। यह अन्तमें शेखने खानखानाको तसल्ली को है कि बादशाह वास्तवमें तुमसे अप्रसन्न नहीं हैं।

बात बहुत है अवसर थोड़ा। समय बाधक और मन विरक्त, इसी पर समाप्त करता हूं।

तेरी आंखें खुली हैं और मन चेतन्य है तू सबसे अधिक अपनी लज्जा रख†

पांचवें पत्रका साराश

"परमेश्वर तुम्हारी मनकामना सफल करे। आज दैवयोगसे कि जिसका कारण पूत्यसमें सच्चे हितैषियोंकी सम्मतिका विरोध या अल्प बुद्धि सहचरोंका दुर्मंत्र हो सकता है तुमने कन्धार लेनेका विचार छोड़ दिया और ठट्टा फतह करनेका इरादा किया या किसी दूसरे तात्पर्यसे विशेष परिश्रम करने और बहुत समय तक कष्ट उठानेकी इच्छा हुई (क्योंकि कन्धार लेना सुगम था और ठट्टा कठिन) और फिर मुझसे पिछले पत्रोंमें गिला लिखनेकी टीका पूछते हो। सो मैंने जो कुछ लिखा वह प्रीति रीतिकी अधिकतासे लिखा था। वह गिला ऐसा न था जो हमारे तुम्हारे स्नेह या सज्जन पुरुषोंके प्रेमके विरुद्ध हो। तुम्हारी बेपरवाई देखते हुए तो मैंने कुछ भी गिला नहीं किया है और न परेखा। जब कि मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति सिद्ध हो चुकी है फिर गिलेकी जगह कहां रही? तुम जितने सज्जनतामें बढ़ते जाते हो उतना ही मैं मूर्ख बनता और तुम्हारी मित्रतामें वृद्धि करता जाता हूं। तुम्हारे पास तो इस समय आत्मश्लाघी लोग भरे हुए हैं जो मुझे अपनेको उनमें गिनानेकी लज्जा न आती होती तो मैं भी अपने दिल जलाने, तुम्हारे काम निकालनेमें बादशाहसे झगड़ने, और अपनी हानिका सोच न करनेकी थोड़ी सी कथा लिखता।

---

† यह पत्र उस समय लिखा गया था जब कि शाहजादे मुराद और खानखानाकी अनबनसे दक्षिणका देश फतह नहीं हुआ था वरन दक्षिणियोंने कुछ भाग बादशाही राज्यका ले लिया था और बादशाह शाहजादेके लिखनेसे खानखाना पर कोपायमान हुए थे।

मैं तो ठेठसे विरक्त मन था, मुझे प्रारब्धने पकड़ा और अमात्य पदमें जोत दिया। तो अब इसका धर्म भी निबाहना पड़ा इसीलिये कुछ इस सम्बन्धके विषयको भी कहता हूं कि बादशाह तुमसे इतने प्रसन्न हैं कि जिसका वर्णन इन पत्रोंमें नहीं समा सकता है। तुम्हारी सब सेवाएं मौकूफ हो गयी है। सारे अमीरो और मनसबदारोंने तुम्हारे कामोंके बखान बहुत अच्छी तरहसे लिखे हैं जो अपने स्थान (१) पर स्थिर हो गये हैं और शीघ्र ही उनका फल तुमको मिलनेवाला है।

जङ्गी नावोंके वास्ते हुक्म हो गया है, तोपें और उनको सामग्री पीछेसे पहुंचेगी।

दौलतखांके वास्ते पूरी सिफारश कर दी गयी है, वह अपनी मुरादको पहुंच जावेगा।

अमीर लोग राज्यके अनेक प्रान्तोंसे विजयके पत्र भेज रहे है आशा है। कि तुम भी शीघ्र ही इस बड़े कामको सम्पादन करके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करोगे। मुझे इतनी भी फुरसत, नहीं है कि परमेश्वरसे अपनी कुछ कहूं, विषयवासनाने घेर रखा है। सत्सङ्ग कम होता है। भाई हकीम हमामसे तो मिलता रहता हूं वह भी कामोंमें डूबा हुआ है। कभी ग्रामनामा चङ्गेजनामा और शाहनामा (२) पढ़ा करो। बात चीत उनके

१। बादशाहके मनमें

पर्चाका समय नहीं मिलता कि जिससे मनका विकार कुछ सुधारा जावे। हाथी घोड़े धन मालका मुझे कुछ मोद नहीं है। भाई हकीम अबुल फतहको खोही चुका हूं, तुमसे जुदा हूं, फिर मेरे दिल पर क्या बीत रही है सो जान लेना चाहिये। मैं तुमको खैरखाहीसे अनेक बार लिख चुका हूं कि अफर

२। जफरनामेमें अमीर तैमूरका, चङ्गेजनामेमें चङ्गेजखांका और शाहनामेमें इरानके पुराने बादशाहोंका इतिहास है।

अनुसार किया करो। अकेलेमें सदा अपने कर्मों की गिनते रहो नीतिकी पुस्तकोंमेंसे अहयाके (१) उत्तर भागको पढ़ा करो। निष्कपट और निर्लोभी मनुष्योंकी खोज रखो, जो सच्चे शब्द कहें। झूठे खुशामदियोंसे बचे रहो।

छठे पत्रका साराश।

आपापत्र पहुंचा। सज्जनता पायी गयी। मुझसे उपदेश चाहा मैं आप ही शिचाहीन हूं फिर क्या शिचा करूं? परन्तु भाग्य अच्छे थे जिसने बादशाहकी सेवामें डाला जिनके दर्शनोंसे ज्ञान चक्षु खुले। आशा है कि शिचा देनेके योग्य हो जाऊं। अब जो कुछ मैंने समझा है तुमको भी लिखता हूं।

इसके आगे नीति, न्याय और ज्ञान मार्गकी बातें लिखी हैं।

समुच्चय।

ऐसेही और भी कई पत्र हैं जिनमें खानखानाकी कश्मीर, सिंध और दक्षिण सम्बन्धी भूल चूकको अबुलफजलने पकड़ा है और खानखानाने जो उसके उत्तर दिये हैं वे भी काटे हैं। बादशाहकी नाराजी जताकर भी यही लिखा है कि बादशाह दिलसे तुम पर अप्रसन्न नहीं हैं।

एक पत्रमें खानखानाने बादशाहकी नाराजीके विषयमें लिखा तो यह उत्तर दिया कि यहां तो कुछ भी नहीं है। सदा तुम्हारे भाव और भक्तिकी चर्चा दरबारमें और एकान्तमें होती रहती है। कभी हुक्म न हुआ कि कोई फरमान चाहे वह खफगीका ही हो, बगैर यार वफादारकी उपाधिके न लिखा जावे और आज मखाको तो तुम्हारी सहायताके वास्ते भेजा था इससे तुमको इतना अंदेशा नहीं चाहिये था।

फिर एक और पत्रमें जो ता॰ २ रमजान (२) सन् ९८२ को

१। अहयाउलउलूम मुसलमानोंकी धर्मनीतिका ग्रन्थ है।
२। भादों सुदी ३ संवत् १६४१

बाशीरसे लिखकर भेजा था, यह शिक्षा लिखी है कि बाद शाहके फरमानके जवाबमें। जो अफगोंका है अपराध स्वीकार करके अपनी हानियां सुधार लो। तुम्हारी अर्जीका पढनेसे बाद शाहकी नाराजी १००० अशोंमें १ अंश पर आ रही है परन्तु तुम एक को ही १००० जानकर उसके दूर करनेका प्रयत्न करो।

इसके आगे पत्रमें लिखा है कि ता० ६ जमादिउलअव्वलको तुम्हारा खत मिरजा अमी बहादुर ल या। पढकर शोक हुआ। आनेका इरादा न फरमानके अनुसार है और न तुम्हारी समझके योग्य। जब कि तुमको उसी कामके करनेकी प्रेरणा की गयी थी तो उससे अपनी बुलानेका तात्पर्य्य समझ लेनको क्या कहा जावे ?। अब इधर आनेकी इच्छा न करो। आगरेमें १ वर्ष तक ठहरनेकी मरजी बादशाहकी न थी। तुम श्रीमानोंके मनको बहुत करके दक्षिणकी फतहमें लगा हुआ जानकर आनेकी बात छोड दो और उस देशके जीतनेमें जिसका उत्तम अवसर यही है विलम्ब मत करो जैसा कि पहले कई बार कर चुके हो।

सिंध और दक्षिण फतह करनेका धन्यवाद भी कई पत्रोंमें है। काधार खुरासान और ईरानकी तरफ बढनेकी भी उत्तेजना है

इन सब पत्रोंमें सरकारी कामोंसे निज व्यवहारकी, बातें अधिक हैं और उनमें विशेषतर अध्यात्म शिक्षाकी हैं। अबुलफजल एक प्रकारका वेदान्ती था। उसमें आत्मशिक्षा और वैराग्यकी बातें जैसी खानखानाको लिखी थीं वैसी ही उस समयके दूसरे बड़े बडे अमीर मिरजा, आजम, जैनखा कोका और राजा मानसिंहको भी लिखी हैं। वह बादशाहका वजीर, सुशी और सुसाहिब था इस वास्ते सब लोग उससे पत्र व्यवहार रखते थे। और वह सबको यथार्थ बातें उनके हितकी, जिनसे इस लोक परलोकका कल्याण हो लिखा करता था परन्तु उसके लेख बहुत क्लिष्ट हैं और आशय भी गूढ, जिससे उसका अभिप्राय समझनेमें बहुत मुश्किल पडती है। जो फारसी भाषाका पुरा व्याकरणी, वेदान्ती, नीतिज्ञ

इतिहास वेत्ता और कवि हो वही उसके लेखोंका यथार्थ सारगर्भित आशय समझकर आनन्द प्राप्त कर सकता है।

खानखाना और शेखकी भेट

मआसिरुल उमरामें लिखा है कि जिस समय शेख अबुलफजल प्रधान मन्त्रीके पूर्ण अधिकार में था एक दिन खानखाना और मिरजा जानी उससे मिलने गये थे। शेख पलंग पर लेटा हुआ अकबरनामेके पत्र देख रहा था, इनका कुछ स्वागत नहीं किया केवल इतना ही कहा कि आओ मिरजा बैठो।

मिरजा जानी वेगको सिन्धकी बादशाहीका घमण्ड था इस लिये वह उठ गया।

दूसरी बार फिर खानखाना मिरजाको मनाकर शेखके स्थान पर ले गये तो शेख पोस तक लेनेको आया। बहुत आदर सत्कार किया और कहा कि हम लोग तो आपके सेवक और प्रजा हैं।

मिरजाको बडा अचम्भा हुआ कि या तो वह घमण्ड था या यह विनय।

खानखानाने कहा कि उस दिन तो मुख्य मन्त्रीपना इसकी दृष्टिमें था और आज भाई चारेका बर्ताव है।

———०———

परिशिष्ट।

मआसिर रहीमी।

यह खानखानाके जीवनचरित्रका ग्रन्थ है जो उनके जीते जी हो ईरानके एक विद्वान अब्दुल बाकीने बनाया था। यह मेरे देखनेमें तो नहीं आया परन्तु मौलाना शबलीने बङ्गाल एशियाटिक सोसाइटीके पुस्तकालयमें इसकी एक पुरानी प्रति देख कर उस परसे कुछ आशय उर्दूके पत्र "नुदवासि" छपवाया था उसीका साराश यहा लिखा जाता है।

यह ग्रन्थ २००० पृष्ठोंमें पूर्ण हुआ है। अर्धांशमें तो खानखानाके पूर्वजोंका वृत्तान्त है और शेषमें खानखानाका चरित्र है जिसमें मुख्य बातें इतनी हैं—

१ जन्म और शिक्षा।

२ बादशाही दरबारकी सेवा बन्सम और दिग्विजय।

३ खानखानाको अरबी, फारसी, और तुरकी भाषाओंमे निपुणता और प्रत्येकमे गद्य पद्य लेख और काव्य रचना।

४ शील स्वभाव।

५ गुप्त विद्याके चमत्कार।

६ लोकहित और सुखके काम।

७ कृषिकार्य्यमे उन्नति।

८ खानखानाके दरबारी शिल्पकारोंकी नयी नयी कारीगरियोंके आविष्कार।

९ खानखानाका पुस्तकालय।

१० खानखानाके दरबारके कवि।

११ आलिम (विद्वान्) हकीम और सुलेखक।

न० १ और २ को छोड़कर (जिनका बहुत सा विषय इससे इस ग्रन्थमें आ चुका है) मौलाना शिबलीने अपना लेख न०३ अर्थात् खानखानाकी विद्वत्तासे आरम्भ किया है। वे लिखते हैं कि खानखाना कई भाषाओंको जानते थे, उनकी अरबी, फारसी, और तुर्की कविताका नमूना मूल ग्रन्थमें दिया है। तुरकी और फारसी तो उनकी मातृभाषा थी लेकिन अरबी भाषाकी कविता भी कुछ कम नहीं है। शोक और महाशोक है कि ग्रन्थकर्त्ताने जो इरानी था, खानखानाकी हिन्दी भाषाकी कविताका एक भी नमूना नहीं दिया है, नहीं तो इस बातका पता लगता कि उर्दूका हिन्दी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ने लगा था।

खानखानाको अरबी भाषामें यह अभ्यास था कि जो कहींसे कोई लिखावट आती थी तो मूल भाषाको पढ़े बिना ही उसका उल्था इस प्रकारसे करते चले जाते थे कि मानो वह उल्था ही लिखा हुआ उनके हाथमें है।

एक बार मक्केके शरीफने (महतने) अकबरको पत्र भेजा था जिसमें अरबीके कठिन कठिन शब्द भर दिये थे। अकबरने अबुलफजल, फतहउल्ला शीराजी और खानखानाको हुक्म दिया कि फारसीमें अनुवाद करके लाये। अबुलफजल और फतहउल्ला तो कोषोंकी सहायता लेनेके लिये उस चिट्ठीको साथ ले जाने लगे, परन्तु खानखाना वहीं दीपकके पास जाकर पढ़ने लगे और साथ साथ तरजुमा भी करते गये।

फारसी भाषामें आज भी उनकी बनायी हुई एक पुस्तक मौजूद है अर्थात बाबर बादशाहने जो अपने वृत्तान्त तुरकी भाषामें लिखे थे उनका तरजुमा अकबरके कहनेसे खानखानाने फारसीमें किया है जो बहुत सरल और सरस है।

खानखानाका फारसी दीवान अर्थात फारसी भाषाकी कविताका संग्रह तैयार करना मूल ग्रन्थमें तो लिखा है परन्तु वह कहीं